किशोर ऊर्जा को उजागर करना

रूही संस्थान

पुस्तक 5

किशोर ऊर्जा को उजागर करना

रूही संस्थान

श्रृंखला की पुस्तकें :

रूही संस्थान द्वारा विकसित इस श्रंखला की वर्तमान पुस्तकों की सूची नीचे दी गई है। इन पुस्तकों का उददेश्य युवाओं व व्यस्कों द्वारा अपने समुदायों की सेवा करने की क्षमता बढ़ाने के क्रमबद्ध प्रयासों में पाठयक्रम की मुख्य धारा में उपयोग किया जाना है। रूही संस्थान इस श्रंखला की तीसरी पुस्तक जो बहाई बच्चों की कक्षा के शिक्षकों को प्रशिक्षित करने से संबंधित है, की शाखा के रूप में एक पाठ्यक्रम तथा किशोर समूहों के अनुप्रेरकों को विकसित करने हेतु पुस्तक पाँच की शाखा के रूप में भी एक पाठ्यक्रम विकसित कर रहा है । इन्हें नीचे दी गई सूची में इंगित भी किया गया है। यह तथ्य ध्यान में रखने योग्य है कि क्षेत्र में हुये विकास के अनुभवों के आधार पर सूची में बदलाव भी हो सकता है। इसमें नई पुस्तकों को सम्मिलित किया जायेगा जब पाठयचर्या संबंधी तत्व विकसित होकर ऐसे स्तर पर पहुँच जायेंगे जब उन्हें वृहद स्तर पर उपलब्ध कराया जा सके।

पुस्तक 1	दिव्य जीवन : एक चिन्तन
पुस्तक 2	सेवा का संकल्प
पुस्तक 3	बच्चों की कक्षा, ग्रेड 1
	बच्चों की कक्षा, ग्रेड 2 (शाखा पाठ्यक्रम)
	बच्चों की कक्षा, ग्रेड 3 (शाखा पाठ्यक्रम)
	बच्चों की कक्षा, ग्रेड 4 (शाखा पाठ्यक्रम)
पुस्तक 4	युगल अवतार
पुस्तक 5	किशोर ऊर्जा को उजागर करना
	प्रारम्भिक संवेग : पुस्तक 5 का प्रथम शाखा पाठ्यक्रम
	बढ़ता दायरा : पुस्तक 5 का दूसरा शाखा पाठ्यक्रम
पुस्तक 6	प्रभुधर्म का शिक्षण
पुस्तक 7	सेवा के पथ पर साथ–साथ चलना
पुस्तक 8	बहाउल्लाह की संविदा
पुस्तक 9	एक ऐतिहासिक परिदृश्य प्राप्त करना
पुस्तक 10	जीवंत समुदायों का निर्माण
पुस्तक 11	भौतिक साधन
पुस्तक 12	परिवार और समुदाय
पुस्तक 13	सामाजिक क्रिया में संलग्नता
पुस्तक 14	जनसंवाद में भागीदरी

कॉपीराईट © 2016, 2023 रूही फाउंडेशन, कोलंबिया
सर्वाधिकार सुरक्षित। संस्करण 1.1.2.PE प्रकाशित अप्रैल 2016
संस्करण 2.1.1.PE मई 2023
ISBN 978-628-95545-3-3

Liberando los poderes de los prejóvenes के रूप में स्पेनिश में मूल प्रकाशन
कॉपीराईट © 2006, 2014, 2022 रूही फाउंडेशन, कोलंबिया
ISBN 978-628-95102-2-5

रूही संस्थान
काली, कोलंबिया
ई-मेल : instituto@ruhi.org
वेबसाईट : www.ruhi.org

विषय सूची

सहशिक्षकों के लिए कुछ विचार v

जीवन का बसंतकाल 5

संभावनामय आयुवर्ग 49

एक अनुप्रेरक के रूप में सेवा 89

सहशिक्षकों के लिए कुछ विचार

1970 के प्रारंभिक दशकों में अपने प्रारंभ के समय से ही, रूही संस्थान अपनी शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से, 12 से 15 वर्ष के बीच के उम्र के नवयुवाओं, जिन्हें अधिकतर "किशोर" कहा जाता है, की सेवा का प्रयत्न करता रहा है, जो समाज के एक विशेष वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। जैसे–जैसे संस्थान ने इस आयु वर्ग के बहुत सारे सदस्यों की ऊर्जा व आदर्शवादिता को देखा, वह उन्हें ऐसे अनेक विषयों तथा अवधारणाओं का अनुसंधान करने का अवसर उपलब्ध कराने की आवश्यकता के महत्व के प्रति आश्वस्त हो गया, जो उन्हें जीवन की जटिलताओं का सामना करने, सभी ओर मजबूत हो रही नैतिकता के पतन की शक्तियों से लड़ने तथा सामाजिक बदलाव के सक्रिय नायक बनने के योग्य बनायें। अगले अनेक दशक कार्य व समीक्षा की अवधि थे जो विश्व भर में अनेक पृष्ठभूमियों से आये किशोरों के प्रति की गई सेवा से प्राप्त अनुभवों से सतत् बढ़ता हुआ लाभ प्राप्त करते रहे, जिसमें विकास के क्षेत्र में प्रयास शामिल थे, मुख्यतया साक्षरता के क्षेत्र में। वर्ष 2000 के आसपास, किशोरों के आध्यात्मिक सशक्तिकरण की अवधारणा और इसके साथ, तीन वर्ष के कार्यक्रम के विभिन्न पहलू भी उभरे जिनका उद्देश्य मानवता की सेवा में उनकी बौद्धिक और आध्यात्मिक शक्तियों को निर्मुक्त करना है।

रूही संस्थान के अन्य प्रयासों की तरह, किशोर आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम दूरस्थ शिक्षा की एक प्रणाली के माध्यम से तृणमूल स्तर पर उपलब्ध कराया जाता है, जिसमें तीन प्रमुख तत्व सम्मिलित हैंः "किशोर समूह", "अनुप्रेरक", और सामग्रियों का एक विशिष्ट समुच्चय। संस्थान के मुख्य अनुक्रम में पांचवीं पुस्तक, *किशोरो शक्तियों को निर्मुक्त करना,* का उद्देश्य उन लोगों की सहायता करना है जो कार्यक्रम में अपने गांव या पड़ोस से नवयुवाओं के एक समूह को शामिल करने की इच्छा रखते हैं। यह पाठ्यक्रमों की श्रृंखला में पहला है, जो मुख्य अनुक्रम से अलग हो रहा है, जो व्यक्तियों को ''अनुप्रेरकों'' के रूप में सेवा करने के लिए आवश्यक क्षमताओं को विकसित करने में मदद करेगा – एक पदनाम जो स्वयं ही सेवा कार्य की प्रकृति को दर्शाता है। जहां पुस्तक का अध्ययन करने वाला हर व्यक्ति इस प्रयास के क्षेत्र में प्रवेश नहीं करेगा, यह आशा की जाती है कि सभी संबोधित विषय–वस्तुओं से प्रेरणा प्राप्त करेंगे और किशोरों की महान आकांक्षाओं पर उचित ध्यान देने के महत्व को पहचानेंगे। यह एक ऐसी संस्कृति के निर्माण का एक अनिवार्य पहलू है जो आज के समाज में प्रचलित युवा लोगों के प्रति दृष्टिकोण से भिन्न बढ़ावा देता है। ऐसे वातावरण में, कार्यक्रम में प्रत्यक्ष रूप से शामिल नहीं होने वाले व्यक्ति भी इसकी बढ़ती गतिविधियों को अपना समर्थन देने के लिए तैयार होंगे।

जो लोग पुस्तक 5 के लिए सहशिक्षक के रूप में कार्य करते हैं, उन्हें यह स्वीकार करना चाहिए कि, प्रतिभागियों के बीच, बीस वर्ष के आस–पास की आयु के कई ऐसे युवा होंगे जिन्होंने एक अनुप्रेरक के रूप में सेवा करने की व्यक्त इच्छा तथा ऐसा कर पाने के लिए अन्तर्निहीत क्षमता के साथ पाठ्यक्रम के मुख्य अनुक्रम में प्रवेश किया होगा। कुछ लोग अपने ऐसे साथियों के साथ विचार–विमर्श के माध्यम से प्रभुधर्म के संपर्क में आए होंगे जिन्होने युवा पीढ़ियों को शिक्षित करने में उनकी भूमिका पर बल दिया होगा। अन्य लोग किशोर युवा के रूप में स्वयं आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम से गुजरे होंगे और उसके तुरंत बाद पुस्तक 1 का अध्ययन शुरू किया होगा। चाहे जो भी पथ उन्हे संस्थान प्रक्रिया में लाया हो, अब वे अपने गांव या पड़ोस में, इसकी बेहतरी के लिए प्रतिबद्ध व्यक्तियों के बढ़ते नाभिक का हिस्सा बनेंगे और इस संदर्भ में, प्रभुधर्म के लिए केंद्रीय विषयों – पुस्तक 2 में संबोधित सेवा कार्य की परिवारों के साथ खोज करने के लिए गृह–भ्रमण का अनुभव प्राप्त करेंगे। इस नाभिक के हिस्से के रूप में, उनमें

से एक अच्छी संख्या इलाके में किशोरों के कम से कम एक समूह के साथ निकटता से जुड़ी होगी और विभिन्न गतिविधियों को करने में अनुप्रेरक की मदद कर रही होगी और कार्यक्रम से संबंधित अवधारणाओं और दृष्टिकोणों पर चर्चा करने के लिए माता–पिता के नियमित दौरे में उसका साथ दे रही होगी। इस बिंदु पर, उन सभी के पास बहाई शिक्षाओं का काफी ज्ञान होगा, जो उनके द्वारा पुस्तकों 3 और 4 के अध्ययन के माध्यम से गहन हो गया होगा, और दोस्तों और पड़ोसियों के साथ सार्थक बातचीत शुरू करने और बनाए रखने के लिए आवश्यक कौशल, क्षमताओं, दृष्टिकोण और आध्यात्मिक गुणों को प्रदर्शित करेगा। विशेष रूप से यहाँ, जब वे पुस्तक 5 तक पहुँचते हैं, कि रूही संस्थान के पाठ्यक्रमों के मुख्य अनुक्रम में निहित क्षमता–निर्माण प्रक्रिया का महत्व – सेवा के मार्ग पर चलने के संदर्भ में कल्पना की गई प्रक्रिया स्पष्ट हो जाएगी। अपने आध्यात्मिक सशक्तिकरण के लिए तीन साल के कार्यक्रम में किशोरों के एक समूह को शामिल करना सेवा का एक माँगपूर्ण कार्य है, और ऐसा करने के लिए नवोदित अनुप्रेरकों के प्रयास, बड़ी मात्रा में उस क्षमता पर निर्भर होंगे जो उन्होंने इस पथ पर अब तक सतत विकसित की है।

इस पुस्तक की प्रथम इकाई "जीवन का बसंतकाल" उन गुणों पर ध्यान केन्द्रित करती है जो प्रभुधर्म की शिक्षाओं के अनुसार इस युवा काल को विशिष्ट बनाते हैं। किए गए विश्लेषण से, धीरे–धीरे युवाओं की प्रत्येक पीढ़ी द्वारा ईश्वर और मानवता की सेवा में किए गए योगदान के बारे में एक परिकल्पना सामने आती है। सहशिक्षक यह सुनिश्चित करना चाहेगा कि इकाई का अध्ययन करने आये प्रतिभागी इस अनावृत्त होती परिकल्पना से प्रभावित होकर कार्य करने के लिए प्रेरित हों क्योंकि यह वही परिकल्पना है जो किशोर आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम को प्रेरणा देती है और जिसे युवाओं को अपनी गतिविधियों में शामिल करने के उनके प्रयासों को दिशा देनी चाहिए।

वास्तव में, इकाई प्रारंभ में प्रतिभागियों से यह सोचने के लिए कहती है कि वे क्या आशा करते हैं कि किशोर 15 वर्ष की आयु – जिसे बहाई शिक्षाओं में परिपक्वता की दहलीज के रूप में देखा जाता है – में तीन वर्ष के कार्यक्रम को पूरा करने के बाद किन विशेषताओं का विकास कर चुके होंगे और अपने युवा काल के आरंभ में होंगे। सहशिक्षक को यह समझना चाहिए कि इस अभ्यास का उद्देश्य कार्यक्रम के ब्यौरो में डूबना या किशोरों की अन्तर्निहीत संभावनाओं पर विचार करना नहीं है, इनका अन्वेषण पुस्तक की क्रमशः तीसरी और दूसरी इकाइयों में किया जायेगा। इसके बजाय, इसका इरादा एक ऐसे युवा व्यक्ति की छवि को तत्काल ध्यान में लाने का है जो उन लोगों की अगली पीढ़ी के बीच एक स्थान ग्रहण करने के लिए तैयार है जो प्रभुधर्म के समर्थक बनेंगे और स्वयं को सभ्यता की उन्नति के लिए समर्पित करेंगे। यह अभ्यास प्रतिभागियों के लिए उस गतिविधि की प्रकृति की उनकी सराहना को बढ़ाएगा जो वे जल्द ही अनुप्रेरकों के रूप में करेंगे और उनकी बाद की चर्चाओं को और अधिक गहन अर्थ प्रदान करेंगे।

तब, इस दृष्यावलि के समक्ष, यह इकाई पवित्र लेखों से कई ऐसे अंश प्रस्तुत करती है जो युवा काल से संबंधित कुछ अवधारणाओं को स्पष्ट करते हैं। इकाई के आरंभ में बताई गई अवधारणाओं में से कुछ सेवा, शिक्षा और भविष्य के लिए तैयारी के बीच परस्पर क्रिया है, एक ऐसा मुद्दा जो कभी–कभी युवा मस्तिष्क को घेरे रह सकता है। जो स्पष्ट किया गया है वह यह है कि, जब जीवन को संपूर्ण रूप में देखा जाता है, तो इसके विभिन्न पहलू, एक–दूसरे के साथ संघर्ष करने से दूर, एक–दूसरे को सुदृढ़ करने का काम कर सकते हैं। भाग 10 में अभ्यास प्रतिभागियों को यह विचार करने में मदद करेगा कि इसका व्यावहारिक अर्थ क्या है। सावधानी बरतने की जरूरत है, कहीं ऐसा न हो कि वे यांत्रिक रूप से इस अभ्यास को करें और यह समझने में विफल रहें कि जीवन के कुछ विकल्प और सोचने के तरीके काल्पनिक द्विभाजन और उनके द्वारा पैदा किए जाने वाले तनाव को कैसे आकार दे सकते हैं।

इकाई में संबोधित एक और अवधारणा, जो इसके उद्देश्य के केंद्र में है, एक दोहरे नैतिक उद्देश्य की है। बेशक, प्रतिभागी पहले की किताबों के अपने अध्ययन के कारण इस अवधारणा से परिचित होंगे।

यहाँ इसे बहुत अधिक गहराई से लिया गया है, और उन्हें इसकी खोज के लिए समर्पित भागों पर विशेष ध्यान देना चाहिए, जो बहाई लेखों में बताए व्यक्ति के स्तर पर और समाज की संरचना में दोहरे परिवर्तन का वर्णन करते हुए प्रारंभ होते है। इस आलोक में, यह इकाई सुझाव देती है कि युवा लोगों को अपने स्वयं के बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास की जिम्मेदारी लेने और समाज की प्रगति में स्थायी योगदान देने के उद्देश्य की एक मजबूत भावना से ओत–प्रोत होना चाहिए। इसके अलावा, यह दावा करती है कि नैतिक उद्देश्य के ये दो पहलू एक दूसरे के पूरक और मौलिक रूप से अविभाज्य हैं, क्योंकि व्यक्तियों के मानक और व्यवहार उनके वातावरण को आकार देते हैं और बदले में, सामाजिक संरचनाओं और प्रक्रियाओं द्वारा ढाले जाते हैं। कुछ प्रतिभागियों को इस दावे के निहितार्थों की सराहना करना चुनौतीपूर्ण लग सकता है, जिनकी जांच भाग 16 के अभ्यास में की गई है। प्रमुख विश्व नज़रिये – जो एक ओर, व्यक्तिवाद और व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर बहुत अधिक जोर देते हैं या दूसरी ओर, सामाजिक ताकतों और राजनीतिक प्रक्रियाओं के महत्व को बढ़ा–चढ़ाकर पेश करते हैं – अनेक बार अप्रत्यक्ष रूप से वास्तविकता को तोड़–मरोड़ सकते हैं और विश्वासों और विचारों के पैटर्न को आकार देते हैं। एक समूह के साथ इस अभ्यास को करते समय, सहशिक्षक को इसके द्वारा सामने रखी गई चुनौती के बारे में पता होना चाहिए और उन वाक्यों को पहचानने में अपने सदस्यों की मदद करनी चाहिए जो इस भाग में उद्धृत धर्मसंरक्षक के कथन के अनुरूप नहीं हैं। एक दोहरे उद्देश्य की अवधारणा का अन्वेशण तब, इस कथन के साथ समाप्त होता है, कि केवल सेवा के क्षेत्र में ही इस उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है। इकाई का तर्क है कि सेवा समाज की उन्नति के साथ व्यक्तिगत क्षमता की पूर्ति को जोड़ती है।

दूसरी इकाई का शीर्षक है "संभावनामय आयुवर्ग", और यह किशोरों और उनकी विशाल अन्तर्निहीत क्षमताओं के बारे में है। यह इकाई, इसको पढ़ने वालों के मस्तिष्क में इस समझ को दृढ़ कर देना चाहती है कि किशोर एक विशेष आयु वर्ग के सदस्य हैं, जिनकी अपनी अलग विशिष्टतायें हैं – विशिष्टतायें जो इस बात में कोई संशय नहीं छोड़तीं कि इनसे बच्चों की भांति व्यवहार करना एक त्रुटि होगी। उतना ही भ्रमित उन्हे उस तरह की वयस्कता की नकल करने के लिए प्रोत्साहित करना होगा जो अपने सार में ही छिछला हैए जिसे आजकल अधिक से अधिक स्थानों पर जड़ जमाते हुए देखा जा सकता है। यह इकाई, यह स्पष्ट करने की आशा करती है कि इस आयु वर्ग के प्रति बहाई समुदाय द्वारा अपनाये गए दृष्टिकोण को प्रभुधर्म के लेखों द्वारा आकार दिया गया है और युवा रूहुल्लाह जैसे उदाहरणों द्वारा सज्जित किया गया है और यह प्रचलित मान्यताओं और सिद्धांतों पर आधारित उन दृष्टिकोणों से मौलिक रूप से भिन्न हैं, जो अनेक किशोरों को विद्रोही और संकट प्रवृत के रूप में चित्रित करते हैं।

उपरोक्त लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए, इकाई प्रारंभिक किशोरावस्था की प्रकृति पर एक संक्षिप्त नजर डालती है और फिर प्रतिभागियों से इस आयु सीमा में युवाओं की बढ़ती जागरूकता को उचित रूप से निर्देशित करने की चुनौती पर विचार करने के लिए कहती है। इसमें, इकाई एक चेतावनी देती हैः इस तरह के प्रयासों को कुछ उन कार्यक्रमों द्वारा की जा रही हानि से बचना चाहिए, जो जीवन के इस प्रारंभिक चरण में लोगों की बढ़ती आत्म–जागरूकता को दूसरों की निस्वार्थ सेवा की ओर निर्देशित करने के बजाय, इसे "स्व" में बदल देते हैं और, दुख की बात है, अंत में उन्हें "आग्रही स्व" में बंदी बना देते हैं। भाग 5 से 9, प्रतिभागियों को बहाई लेखों से प्रासंगिक उद्धरणों की एक श्रृंखला के माध्यम से इस हानि के कुछ बारीक खतरों के प्रति सचेत करने का प्रयास करते हैं। यह इकाई प्रारंभिक किशोरों के जीवन पर सामाजिक परिवेश के प्रभावों पर आगे विचार करती है, एक "किशोर समूह" की अवधारणा को पारस्परिक समर्थन के वातावरण के रूप में प्रस्तुत करती है, और सेवा करने के लिए उठ खड़े होने वाले ऐसे समूहों के सभी अनुप्रेरकों द्वारा अपनायी जाने वाली मुद्रा को परिभाषित करती है।

तीसरी इकाई, "एक अनुप्रेरक के रूप में सेवा", एक प्रकार से वहाँ से प्रारंभ होती है, जहां दूसरी इकाई समाप्त होती है और प्रतिभागियों को सेवा के इस कार्य की प्रकृति से परिचित कराने का प्रयास

करती है। किशोर समूह की कुछ विशेषताओं की समीक्षा करने के बाद, इकाई सामग्री की चर्चा शुरू करती है, जिसका अध्ययन कार्यक्रम के मूल का प्रतिनिधित्व करता है। इस चर्चा के लिए इकाई का अधिकांश भाग दिया गया है, और सहशिक्षक को इसके उद्देश्य को अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए, जो प्रतिभागियों के लिए केवल पाठ्य सामग्री का वर्णन करने के लिए नहीं है बल्कि इस बारे में अंतदृ र्ष्टि प्रदान करना है कि आध्यात्मिक सशक्तिकरण की प्रक्रिया में क्या सम्मिलित है और पाठ्य सामग्री कैसे इसकी गतिशीलता को बढ़ावा देना चाहती है। सामग्रियों से उद्धरण सभी जगह उपयोग किए गए हैं, लेकिन दो पुस्तकों का संपूर्ण विश्लेषण किया गया है – *संपुष्टि की सुरभि* और *आस्था की चेतना* – और प्रतिभागियों को इन पुस्तकों को अपने पास रखने की आवश्यकता होगी।

सामान्य तौर पर, आध्यात्मिक सशक्तिकरण के प्रश्न को, सहशिक्षकों द्वारा बहुत अधिक विचार और चिंतन की आवश्यकता है। वास्तव में, संस्थान के पाठ्यक्रमों द्वारा शुरू की गई शैक्षिक प्रक्रिया को, अंतिम विश्लेषण में, नैतिक और आध्यात्मिक सशक्तिकरण के एक साधन के रूप में देखा जा सकता है, एक ऐसा साधन जिसके माध्यम से सभी वर्गों और पृष्ठभूमियों के लोग उठ खड़े होने और एक बेहतर विश्व का निर्माण करने में भाग लेने में सक्षम होते हैं। यहां उपयोग की गई शक्ति की अवधारणा उन प्रचलित परिभाषाओं से बहुत भिन्न है जो इसे दूसरों पर हावी होने की नियत से जोड़ती हैं या अपनी इच्छाओं और मांगों को दूसरों से स्वीकार कराने के लिए प्रेरित करती हैं। इसकी बजाए, यहाँ लक्ष्य, मानव चेतना की शक्तियों के प्रवाह के लिए माध्यम बनना है, जैसे एकता की, प्रेम की, विनम्र सेवा की, शुद्ध कर्मों की शक्ति। इस तरह की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने ही नही बल्कि त्वरित करने के लिए आवश्यक गतिविज्ञान में योगदान कैसे करें – यह एक सहशिक्षक के रूप में सेवा करने के कार्य के केंद्र में है, और पाठ्यक्रमों के अध्ययन में समूह के बाद समूह में हुए अनुभव के साथ, प्रत्येक सहशिक्षक इसमें शामिल कई अंतःक्रियात्मक कारकों की झलक देख पाने में सक्षम हो जाता है, जिनमें से कोई भी कारक सच्ची समझ का पोषण करने से अधिक शक्तिशाली नहीं है।

इस पुस्तक में, निश्चित रूप से, सहशिक्षक की चिन्ता और आगे अगली पीढ़ी तक और शैक्षिक प्रक्रिया की प्रकृति तक बढ़ जाती है, जो किशोरों को अपनी उभरती शक्तियों को फलदायी रूप से प्रयोग करने में सक्षम बनाएगी। इस प्रक्रिया के केंद्र में विचार और अभिव्यक्ति को परस्पर प्रबल करती शक्तियाँ हैं। अमूर्त विचार में संलग्न होने की मन की शक्ति, जो प्रारम्भिक किशोरावस्था के दौरान नाटकीय रूप से बढ़ जाती है, किशोरों में और अधिक मजबूत हो जाती है जब वे अपने आसपास की दुनिया के विश्लेषण के लिए और समाज पर कार्य करने के अपने प्रारम्भिक प्रयासों के लिए प्रासंगिक वैज्ञानिक, नैतिक और आध्यात्मिक अवधारणाओं को लागू करना सीखते हैं। तथापि, तर्कसंगत विश्लेषण की शक्ति कितनी भी महत्वपूर्ण क्यों न हो, इसे आध्यात्मिक बोध की आवश्यकता होती है। इससे, समझ के ऐसे माध्यम खुल जाते हैं, जो मात्र मानसिक शक्तियों के प्रयोग से उपलब्ध नहीं होते हैं। किशोरों को यदि ठोस नैतिक विकल्प चुनने हैं तो उनके द्वारा सामना की जाने वाली परिस्थितियों में उन्हे आध्यात्मिक शक्तियों को समझने और आध्यात्मिक सिद्धांतों की पहचान करने में उनकी मदद की जानी चाहिए। इस संकल्पित शैक्षिक प्रक्रिया का मूल आधार है कि किसी व्यक्ति के विचारों और व्यवहार को नियंत्रित करने वाला नैतिक ढांचा उस भाषा की संरचना से निकटता से जुड़ा हुआ है जिसमें वह अपने विचार व्यक्त करता है। पुस्तक 5 की पहली दो इकाइयों ने इस प्रक्रिया में जो भी अंतर्दृष्टि प्रदान की हो, तीसरी इकाई के भाग 5 से 19, कार्यक्रम में उपयोग किए गए पाठों से आवश्यकतानुसार उदाहरण लेते हुए, इसके विभिन्न आयामों को स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं। प्रत्येक सहशिक्षक के लिए अच्छा होगा कि समूह का मार्गदर्शन उनसे करने की तैयारी करते समय वह इन भागों की सावधानी से समीक्षा करे। यह आशा की जाती है कि प्रतिभागी अपने अध्ययन से विविध संस्कृतियों में किशोरों को सशक्त बनाने में पाठ्य सामग्री की क्षमता को समझ पा पाएंगे।

तब, इस चर्चा के प्रकाश में, प्रतिभागियों को दो पूरे पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण करने का अवसर दिया जाता है, एक जो "बहाई–प्रेरित" की श्रेणी में आती है और दूसरी जो कार्यक्रम के स्पष्ट रूप से बहाई घटक का प्रतिनिधित्व करती है। इन दो श्रेणियों का परिचय प्रतिभागियों को इकाई के आरंभ में दिया गया है, और *संपुष्टि की सुरभि* और *आस्था की चेतना* के उनके पुनरीक्षण का उद्देश्य उन्हें यह देखने में मदद करना है कि कैसे दोनों सामग्रियों में संबोधित विषय तथा अवधारणायें और उपयोग की गई भाषा, ऊपर वर्णित कार्यक्रम के लक्ष्यों में योगदान करते हैं। उदाहरण के लिए, पहली पाठ्यपुस्तक में सम्पुष्टि की अवधारणा – कि यदि कोई योग्य लक्ष्यों के लिए प्रयास करता है, तो वह दिव्य संपुष्टि को आकर्षित करेगा – हर जगह के युवा जनों के हृदय और मस्तिष्क के लिए प्रासंगिक है। पाठ्य सामग्री के अध्ययन के माध्यम से वे जो समझ प्राप्त करते हैं, वह नए और चुनौतीपूर्ण कार्यों को करते समय, घबराहट और आत्मविश्वास की कमी जो अक्सर इनके साथ होती है, दूर करने में मदद करती है, बगैर किसी आक्रामक व्यवहार को उत्पन्न किए जो "स्व" पर बहुत अधिक जोर देने का संकेत है। इस तरह, पुस्तक में प्रकट होने वाली सरल लेकिन गहन कहानी, आमतौर पर किशोरों द्वारा पढ़ी जाने वाली पहली कहानियों में से एक है, जो अनेक लोगों को एक ऐसे रास्ते पर ले जाती है, जो समाज के ताने–बाने को तोड़ने वाले बलों से कम से कम आंशिक रूप से तो उनकी रक्षा करती है, बल जो उन्हें सज्जन जनों के रूप में उनकी सत्य पहचान से वंचित कर देंगी।

इसी तरह, *आस्था की चेतना* में प्रदान की गई अवधारणाओं का स्पष्टीकरण, किशोरों को हर पृष्ठभूमि से दार्शनिक मुद्दों पर गहराई से प्रतिबिंबित करने में सहायता करता है जो जीवन के इस चरण के दौरान उनके दिमाग में आना शुरु हो जाते हैं और आध्यात्मिक और भौतिक के मध्य जटिल संबंधों को देखने में मदद करता है। इन अवधारणाओं में, उदाहरण के लिए, भौतिक क्रमविकास और मानव चेतना का प्रकट होना है। सहशिक्षक को इस बात की सराहना करनी चाहिए कि पुस्तक 5 का अध्ययन करने वाले और अनुप्रेरक बनने की इच्छा रखने वाले कई युवाओं के लिए, यदि उन्होने किशोरों के रूप में स्वयं आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम को पूरा नहीं किया हो तब भी, *आस्था की चेतना* की पुनरीक्षण उनके लिए प्रस्तुत अवधारणाओं का व्यवस्थित रूप से अन्वेशण करने का पहला अवसर प्रदान करेगी और इसके निहितार्थों पर सोचने के लिए उन्हें आवश्यक समय दिया जाना चाहिए।

इस पुनरीक्षण के निष्कर्ष पर, प्रतिभागियों को विज्ञान और धर्म के बीच सामंजस्यता के सिद्धांत पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, पाठ में स्पष्ट रूप से दी गई अवधारणा के रूप में नहीं बल्कि इसमें की गई संपूर्ण चर्चा के आधार के रूप में। जो सुझाव दिया गया है वह यह है कि विज्ञान और धर्म को ज्ञान और अभ्यास की दो पूरक प्रणालियों के रूप में देखा जा सकता है जिसके माध्यम से सभ्यता आगे बढ़ती है। इस समीक्षा के महत्व को प्रतिभागियों, विशेष रूप से सेवा के इस क्षेत्र में प्रवेश करने की तैयारी करने वालों को खोना नहीं चाहिए। अंततः, यदि वास्तविकता की अधिक संपूर्ण समझ प्राप्त करना आध्यात्मिक सशक्तिकरण की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है, तो किशोरों के लिए पाठय सामग्री अनिवार्य रूप से ज्ञान के इन दोनों स्रोतों पर आधारित होनी चाहिए।

यद्यपि पाठ्य सामग्री का अध्ययन कार्यक्रम में भाग लेने वाले किसी भी समूह के केंद्र में सर्वप्रथम होगा, वे साथ–साथ अन्य गतिविधियां भी करेंगे। इनमें सेवा परियोजनाएं, खेल, कला व शिल्प,और सामयिक विशेष कार्यक्रम शामिल हैं। भाग 25 और 26 इन गतिविधियों से संबंधित कुछ सिद्धांतों और विचारों को प्रस्तुत करते हैं, लेकिन बहुत अधिक विस्तार में जाने से बचते हैं, यह ध्यान रखते हुए कि उन्हें समय के साथ स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार उभरना होगा। तथापि, यह आशा की जाती है कि सेवा परियोजनाओं के निर्माण और कार्यान्वयन पर कार्यक्रम में जोर दिया जाएगा, क्योंकि सेवा एक ऐसा क्षेत्र प्रदान करती है जिसमें पहले ही उल्लेख किया गया दोहरा नैतिक उद्देश्य प्रकट हो सकता है। इसमें प्रतिभागियों को यह समझना चाहिए कि इस तरह के उद्यम साथी अनुप्रेरकों के साथ होने वाली बैठकों में बार–बार परामर्श का विषय होंगे।

इकाई अनुप्रेरक के काम से संबंधित कई मामलों पर चर्चा करके इस बारे में अंतर्दृष्टि साझा कर समाप्त होती है कि एक किशोर समूह बनाने में कैसे मदद करें, पहली कुछ बैठकें कैसे करें, और कार्यक्रम की प्रकृति और उनके बेटे और बेटियों की प्रगति के बारे में माता–पिता के साथ कैसे बातचीत करें। शुरू से ही, प्रतिभागियों को यह पहचानना चाहिए कि एक अनुप्रेरक के रूप में प्रभावी ढंग से सेवा करने के लिए आवश्यक क्षमताएं समय के साथ पुस्तक 5 के शाखा पाठ्यक्रमों के निरंतर अनुभव और अध्ययन के माध्यम से विकसित होती हैं। यह किशोरों की उस शिक्षा के प्रति प्रतिबद्धता के एक स्तर की मांग करती है, जिस शिक्षा को कई युवावस्था के शुरुआती वर्षों – उनके जीवन का वसंतकाल – में प्राप्त करने की क्षमता का प्रदर्शन किया है। इन्हीं में से, फिर, उन लोगों की बढ़ती संख्या उभर कर आएगी जो सेवा के इस विशेष पथ का पालन करेंगे, आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम में समूहों को शामिल करेंगे, और जो इस तरह से सुनिश्चित करेंगे कि अगली पीढ़ी का वादा पूर्ण हो।

जीवन का बसंतकाल

उद्देश्य

युवाओं को विशिष्ट बनाने वाले कुछ लक्षणों की समझ प्राप्त करना,
जो किशोरों को उनके आध्यात्मिक सशक्तिकरण
के कार्यक्रम में लाने की पूर्व आवश्यकता है

भाग 1

12 से 15 वर्ष की आयु के बीच का समय किसी भी व्यक्ति के जीवन में एक खास समय दर्शाता है, क्योंकि इन्हीं वर्षों में वह बचपन को पीछे छोड़ कर गहन परिवर्तन से गुज़रता है। युवावस्था में अभी पूरी तरह से कदम नहीं रख चुके इस आयु वर्ग के लोगों को अनेक बार "किशोर" कहा जाता है। इन किशोरों का ऐसे कार्यक्रमों में संलग्न कराना जो उनकी आध्यात्मिक और बौद्धिक क्षमताओं को बढ़ाना और उन्हें समुदाय के कामों में प्रभावशाली ढंग से हिस्सा लेने के लिये तैयार करना चाहती हैं, सेवा के क्षेत्र में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य है। इस पुस्तक की तीन इकाइयाँ उन कुछ अवधारणाओं, कुशलताओं, गुणों एवं अभिवृत्तियों पर केन्द्रित हैं, जिन्हे अनुभव ने दर्शाया है है कि रूही संस्थान द्वारा किशोरों के आध्यात्मिक सशक्तिकरण के लिये तय किये गये कार्यक्रम को लागू करने की इच्छा रखने वालों के लिए आवश्यक होते हैं।

गतिविधियां जो कार्यक्रम का भाग हैं, वे सामान्यतया स्थानीय स्तर पर छोटे समूहों में संचालित होती हैं। इन समूहों के प्रयत्नों को अनुप्रेरित करते हुए आप कई ऐसे किशोरों के आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास के प्रति चिंतित होंगे जो अपेक्षाकृत थोड़े ही समय में 15 वर्ष के होकर परिपक्वता की दहलीज़ पर पहुँच जायेंगे, जब वे नये उत्तरदायित्वों का वहन करने लगेंगे। इस प्रथम इकाई में किशोरों की विशेषताओं पर बहुत अधिक विचार न करते हुए हम ऐसे युवाओं पर विचार करेंगे जैसा प्रभुधर्म के पवित्र लेखों के अनुसार उन्हें बड़ा होकर बनना चाहिये। जिन अंशों का आप अध्ययन करेंगे, उनसे यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि ऐसी कई विशेषताएँ हैं जो प्रत्येक युवा पीढ़ी को विशिष्टता प्रदान करती हैं और ऐसी खास शक्तियाँ हैं जिनसे उनका जीवन अवश्य ही आकार पाए। निःसंदेह, यह भी सम्भव है कि आप स्वयं एक युवा हैं, 20 वर्ष की आयु के आस पास और ऐसी स्थिति में इस इकाई में प्रस्तुत सामग्री आपको अपने लक्ष्यों और प्राथमिकताओं की भी परख कर सकने का अवसर प्रदान करेगी।

भाग 2

आरम्भ करने के लिये, आप उस किशोर समूह के बारे में सोचें जिनके साथ आप जल्दी ही काम करेंगे। अगले तीन वर्षों में आप उनसे बार–बार मिलेंगे, एक सच्चे मित्र की भांति तथा साथ में अध्ययन एवं विचारों का अनुसंधान करने, सामान्य सेवा कार्यों की योजना बनाने व लागू करने, इस प्रकार के अनुभवों से समूहों द्वारा प्राप्त सीख की समीक्षा करने में उनकी सहायता करेंगे। यह उपयुक्त होगा कि आप अभी कुछ समय निकालें और अगले तीन वर्ष बाद के समापन बिन्दु पर विचार करें जब उन्होंने यह कार्यक्रम समाप्त कर लिया होगा। वे गुण जो आप आशा करते हैं, आपके युवा मित्रों को अलग पहचान देंगे, उनके बारे में अपने मन में स्पष्टता प्राप्त करने में मदद पाने के लिए, इस पाठ्यक्रम के अपने सहभागियों के साथ नीचे दिया अभ्यास करें।

1. जिन युवाओं की आप कल्पना कर रहे हैं, क्या वे उद्देश्य के उच्च बोध के कारण विशिष्ट होंगे ? उनके अनुसार यह उद्देश्य क्या होगा ? ____________________

   ____

   ____

2. आपकी क्या आशा है कि वे अपनी अधिकांश ऊर्जा किस पर केन्द्रित करेंगे ? __________

   ____

   ____

3. अपने आदर्शों की दिशा में कार्य करने हेतु उन्हें क्या प्रेरित करेगा ? ________________

____

____

4. आपकी आशानुसार वे मानवता के समक्ष आज विद्यमान चुनौतियों से कितना परिचित होंगे ? क्या उन्हें विश्वास होगा कि वे विश्व को बेहतर स्थान बनाने में वास्तविक योगदान दे सकते है ?

____

____

____

____

5. आप स्वाभाविक ही चाहेंगे कि आपके युवा मित्र, आपके साथ के दौरान सीखने की ओर एक निश्चित मुद्रा प्राप्त कर लें। यह मुद्रा निम्न कथनों में परिलक्षित होती है। क्या आप दो–तीन और जोड़ सकते हैं ?

- वे अध्ययनशील होंगे और सीखी गई बातों पर अमल करने का प्रयास करेंगे।
- उनमें अपने कार्य के परिणामों की समीक्षा करने की आदत होगी।
- वे खुले विचार के होंगे तथा सीखने की पहल विनम्रता से करेंगे।
- मानवता की सेवा करने के लिये अपनी क्षमताओं को विकसित करने की उनकी तीव्र इच्छा होगी।
- वे जो भी करेंगे, उसमें उत्कृष्टता प्राप्त करने की उनमें ललक होगी।
- विज्ञान और कला के विभिन्न विषयों के अध्ययन के लिए उनमें उत्कट इच्छा होगी।
- मानवजाति की उन्नति से सम्बन्धित कार्यों के विषय में सीखकर उन्हें उतनी ही प्रसन्नता होगी जितनी स्वयं अपने व्यक्तिगत बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास से।
- ____
- ____
- ____

6. अपने मन में विद्यमान नवयुवकों से जिस प्रकार के आचरण की आप अपेक्षा करते हैं, निम्न में से कौन सा उसको दर्शाता है ?

____ उनके मापदंड लगभग वही होंगे जो आमतौर पर वैश्विक प्रचलनों और फैशन द्वारा युवाओं के लिए तय किए जाते हैं।

____ वे अपने जीवन को प्रशासित करने के लिये प्रचलित मीडिया के मापदंडों की ओर उन्मुख होंगे।

____ वे उनके पदचिन्हों पर चलेंगे जो विकट चुनौतियों के बावजूद उच्च नैतिक मापदंडों पर चलने का प्रयास करते हैं।

____ जब उनके कार्य उनके मत के विरोध में हों तो वे इस विरोधाभास की पहचान कर पायेंगे।

____ वे ऐसे आदर्शों जैसे मानवमात्र की एकता, स्त्री पुरूष की समानता, और न्याय में विश्वास तो करेंगे, परन्तु उनके कार्य समाज के स्वीकृत मापदंडों को अधिक समीपता से दर्शायेंगे जो ऐसे आदर्शों की बात तो अधिक करता है पर वास्तव में उन्हें पूरा करने में असफल रहता है।

____ आरामपूर्ण जीवन बिताने के लिये वे ऐसे उच्च मापदंडों को छोड़ देंगे जिन्हें सामाजिक वातावरण अपनाता नहीं है।

7. नीचे कई कथन दिये गये हैं जो एक शुद्ध और पवित्र जीवन के निहितार्थों को समझने में आपकी मदद करेंगे। आप जिन नवयुवकों की कल्पना कर रहे हैं वे किस हद तक इस प्रकार के निहितार्थों की समीक्षा कर पायेंगे ? क्या आप इस सूची में कुछ और जोड़ सकते है ?

- अपने व्यवहार में क्षुद्र ना होना
- तुच्छ और भ्रामक सुख से अनासक्त
- उच्च उददेश्यों से अपना ध्यान सांसारिक सुखों द्वारा विचलित नहीं होने देंगे
- वे फैशन और दिखावे का अनुसरण नहीं करेंगे यदि वे पवित्रता के मानदंडों के विपरीत हों ?
- यह ना सोचना कि पवित्रता का अर्थ केवल विवाह के बाहर यौन सम्बन्ध न रखना है
- अपने पहनावे में संयम बरतना
- अपनी बातचीत में संयम बरतना
- उन गतिविधियों में संयम बरतना जिनमें वे मनोरंजन के लिये भाग लेते हैं
- अपनी भद्रता और विनम्रता के कारण विशिष्ट
- ईर्ष्या और जलन से मुक्त
- अपनी शुद्धता, शालीनता और स्वच्छ विचारों के कारण विशिष्ट
- अपने निम्नतर आवेगों पर नियंत्रण पाने के प्रति सतर्क

- ____________________
- ____________________
- ____________________

8. आपके द्वारा अपने युवा मित्रों के साथ बिताये गये वर्षों के दौरान आप कितनी घोर अपेक्षा रखते हैं कि उनकी बौद्धिक और आध्यात्मिक शक्तियां दोनों विकसित होकर

   - चुनौतियों पर विजय प्राप्त करेंगी ?
   - अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के अपने प्रयासों में अध्यवसायी होंगी ?
   - ऐसे दबावों का प्रतिरोध करेंगी जो उनसे उच्च मापदण्डों के विपरीत कार्य करने की माँग करते हों ?

भाग 3

आइए अब हम पवित्र लेखों के कुछ अंशों की ओर मुड़ें और जाँचें कि वे एक युवा का वर्णन किस प्रकार करते हैं। अब्दुलबहा कहते हैं :

> **"हे अब्दुल बहा के प्रियजनों ! मानव जीवन का अपना बसंतकाल होता है, जो अद्‌भुत महिमा से विभूषित है। युवावस्था शक्ति और ऊर्जा के कारण विशिष्ट होती है तथा मानव जीवन के सर्वोत्तम समय के रूप में उभर कर आती है। अतः, तुमको दिन–रात प्रयत्न करना चाहिए ताकि स्वर्गिक शक्ति से प्रदत्त, अलौकिक उद्देश्यों से प्रेरित एवं परमेश्वर की स्वर्गिक शक्ति एवं दैवीय अनुग्रह तथा सम्पुष्टि से सहायता पाकर, तुम मानव जगत के आभूषण बन सको तथा उन लोगों में सर्वाधिक प्रमुख बन सको जो वास्तविक ज्ञान तथा प्रभु–प्रेम की ओर प्रवृत्त हैं। मनुष्यों के बीच अपनी शुद्धता और अनासक्ति, उद्देश्य की महानता, उदारता, दृढ़संकल्प, नेकनीयत, दृढ़ता, अपने लक्ष्यों की उच्चता और आध्यात्मिक गुणों के कारण तुमको विशिष्ट होना चाहिए, ताकि तुम प्रभुधर्म के उन्नयन और इसकी महिमा का साधन बन सको तथा इसके स्वर्गिक आशीषों की पावन स्थली बन सको; ताकि 'आशीर्वादित सौंदर्य' – मेरा जीवन उसके प्रियजनों के लिए अर्पित हो जाये – की सलाहों एवं निर्देशों के अनुरूप तुम आचरण करो तथा बहाई गुणों एवं विशेषताओं को प्रतिबिम्बित करते हुए, तुम औरों से विशिष्ट दिखो। अब्दुल बहा की व्यग्र प्रत्याशा है कि तुम में से प्रत्येक, मानवीय पूर्णताओं की भूमि पर विचरण करते हुए एक निर्भीक सिंह और सद्‌गुणों की धरती पर बहने वाली कस्तूरीमय बयार की तरह बने।"**[1]

1. नीचे लिखे वाक्यों को ऊपर दिये गये उद्धरण के आधार पर पूरा करें :

   क. मानव जीवन का बसंतकाल ____________________ से विभूषित है।

   ख. युवावस्था __________ और __________ के कारण विशिष्ट होती है।

   ग. युवावस्था मानव जीवन के ____________________ उभर कर आती है।

घ. युवावस्था के दौरान हमें दिन–रात प्रयत्न करना चाहिए ताकि ____________________ से प्रदत्त, ____________________ से प्रेरित, एवं परमेश्वर की ____________________ एवं ____________________ और ____________________ से सहायता पाकर, हम मानव जगत के ________________ बन सकें।

ङ. युवावस्था के दौरान हमें दिन–रात प्रयत्न करना चाहिए ताकि हम उन लोगों में सर्वाधिक प्रमुख बन सकें जो ________________ तथा ________________ की ओर प्रवृत हैं।

च. युवावस्था के दौरान अपनी ________________ और ________________________ के कारण हमें विशिष्ट होना चाहिए।

छ. युवावस्था के दौरान हमें अपने उद्देश्य की ____________________ के कारण हमें विशिष्ट होना चाहिए।

ज. युवावस्था के दौरान अपनी ____________________, ____________________, ________________________ अपने ________________________ की उच्चता और ____________________ गुणों के कारण हमें विशिष्ट होना चाहिए।

झ. युवावस्था के दौरान हमें _______________ के उन्नयन और महिमा का __________ बनना चाहिए तथा उसके ____________________ की ________________ बनना चाहिए।

ञ. युवावस्था के दौरान आशीर्वादित सौन्दर्य की _______________ एवं ________________ के ____________________ हमें आचरण करना चाहिए।

ट. अब्दुल बहा की व्यग्र प्रत्याशा है कि प्रत्येक युवा ________________________ की भूमि पर ________________________ और ________________________ की धरती पर ____________________________ बयार की तरह बनें।

2. इस लोकप्रिय मान्यता पर एक या अनेक कथन शायद आपने सुने होंगे कि युवाओं को मज़े करने पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि जल्द ही उन्हें जीवन की गम्भीर बातों का सामना करना पड़ेगा। स्पष्ट रूप से यह मान्यता अब्दुल बहा के उपरोक्त कथन से मेल नहीं खाती। यह लोकप्रिय विचार किन कुछ मान्यताओं पर आधारित है ? मित्रों के जिस समूह के साथ आप आज अध्ययन कर रहे हैं उनके साथ इस प्रश्न पर चर्चा करें और अपने कुछ निष्कर्षों को यहाँ लिखें।

____

____

____

____

____

____

____

भाग 4

निम्नलिखित प्रार्थना में अब्दुल बहा बहाई युवाओं के लिये अपनी कुछ पसंदीदा आशाएँ अभिव्यक्त करते हैं :

> **"हे दयालु प्रभु ! इन नन्हे पक्षियों में से प्रत्येक को दिव्य पंखों का एक जोड़ा प्रदान करने की कृपा कर और उन्हें आध्यात्मिक शक्ति दे कि वे इस अन्तहीन अंतरिक्ष में उड़ान भर सकें और आभा साम्राज्य की ऊँचाइयों में विचरण कर सकें।**
>
> **"हे स्वामी ! इन कोमल पौधों को शक्ति दे ताकि इनमें से प्रत्येक, हरीतिमा से भरा एवं विकासशील एक फलदार वृक्ष बन सके। अपनी दिव्य सेनाओं के सामर्थ्य से इन आत्माओं को विजयी बना ताकि वे त्रुटि और अज्ञानता की ताकतों को कुचल सकें और लोगों के बीच भाईचारे तथा मार्गदर्शन की ध्वजा फहरा सकें; कि वे बासंती जीवनदायिनी श्वास की भाँति, वृक्ष रूपी मानव आत्माओं को नवस्वफूर्ति और नवजीवन प्रदान कर सकें और अभिनव वर्षा की तरह उन क्षेत्रों की भूमि को हरा–भरा और उपजाऊ बना सकें।**
>
> **"तू सर्वशक्तिशाली और बलशाली है। तू प्रदाता और सर्वप्रेममयी है।"[2]**

1. ऊपर दिये गये उद्धरण के आधार पर नीचे दिये गये वाक्यों को पूरा करें :

   क. अब्दुल बहा किशोरों की तुलना उन नन्हे पक्षियों से करते हैं जिन्हें ______________ के जोड़े की जरूरत है और ईश्वर से याचना करते हैं कि उन्हें ______________ दे ताकि वे इस अन्तहीन अंतरिक्ष में ______________ भर सकें और आभा साम्राज्य की ऊँचाइयों में __________ कर सकें।

   ख. वह किशोरों की कोमल __________ से तुलना करते हैं और ईश्वर से उन्हें सशक्त बनाने की याचना करते हैं ताकि उनमें से प्रत्येक ______________ से भरा हुआ एवं ______________________ बन सकें।

   ग. वह ईश्वर से उन्हें विजयी बनाने को कहते हैं ताकि वे ______________ और ______________ की ______________ को कुचल सकें और __________ तथा ______________ की ______________ फहरा सकें।

   घ. वह प्रार्थना करते हैं कि वे, ______________ जीवनदायिनी ______________ की भांति, वृक्ष रूपी ______________ को नवस्फूर्ति और ______________

प्रदान करें और ____________________ की तरह उन क्षेत्रों को ________________________ और ______________________ बना दें।

2. इस प्रार्थना में अब्दुलबहा ईश्वर से कहते हैं कि वह युवाओं को आध्यात्मिक शक्तियों का वरदान दे। निम्नलिखित में से किन्हें आप आध्यात्मिक शक्ति से सम्बन्धित मानते हैं ?

____ उद्देश्य की उच्चता

____ ईश्वर पर निर्भरता

____ पवित्रता

____ धूर्तता

____ प्रतिस्पर्धा का भाव

____ एकजुटता

____ सद्चरित्रता

____ सांसारिक महत्वाकांक्षा

____ सामाजिक प्रतिष्ठा की लालसा करना

____ ईश्वर के प्रति प्रेम

____ विलासिता के प्रति प्रेम

____ सदाशयता

____ तड़क भड़क

____ कार्य पूर्ण करने की प्रतिबद्धता

____ कुलीन मस्तिष्क

____ उदारता

____ दूसरों पर प्रभुत्व की इच्छा

____ दृढ़ता एवं कृत संकल्प

____ विनम्रता

____ स्वयं की उपलब्धियों में गर्व

____ अहंकार

____ नीयत की शुद्धता

3. इस प्रार्थना में अब्दुल बहा ईश्वर से याचना करते हैं कि वे युवाओं को त्रुटि और अज्ञानता की ताकतों को कुचलने के योग्य बनाए। निर्णय करें कि ऐसी शक्तियों से संघर्ष करने में निम्नलिखित में से कौन–सी योग्यताएँ युवाओं की सहायता करेंगी :

____ गलत से सही को पहचानने की योग्यता

____ दूसरों से छलावा करने की योग्यता

____ गहन विचारों को स्पष्टता से व्यक्त करने की योग्यता

____ पूर्वाग्रह को पहचान कर उस पर विजय पाने की योग्यता

____ भौतिक साधनों का सही उपयोग करने की योग्यता

____ दूसरों को नियंत्रित कर अपना काम निकालने की योग्यता

____ अपने निम्न आवेगों को दमित करने की योग्यता

____ विचारों की एकता में योगदान देने की योग्यता

____ अपने निर्णय में निष्पक्ष होने की योग्यता

____ न्याय को बढ़ावा देने की योग्यता

4. इस प्रार्थना में अब्दुल बहा ईश्वर से कहते हैं कि वे युवाओं को भाईचारे तथा मार्गदर्शन की ध्वजा फहराने की योग्यता प्रदान करे। निर्णय करें कि निम्नलिखित में से कौन–सी योग्यताएं ऐसे प्रयासों में युवाओं की सहायता करेंगीं ?

____ मित्रता के बन्धन स्थापित करने की योग्यता

____ दूसरों की बात ध्यान से सुनने की योग्यता

____ कठिनाईयों का सामना शांति तथा धैर्य के साथ करने की योग्यता

____ दूसरों की बुराईयों और कमियों को ढूंढ़ निकालने की योग्यता

____ दूसरों की बुराईयों और कमियों को अनदेखा करने की योग्यता

____ निस्वार्थ भाव से समाज की सेवा करने की योग्यता

____ दूसरों की सफलता में आनन्दित होने की योग्यता

____ दूसरों में आशा जगाने की योग्यता

____ दूसरों के साथ सहयोग करने की योग्यता

____ दूसरों की भलाई की परवाह किये बगैर अपने हित को बढ़ावा देने की योग्यता

____ अपने समुदाय के हितों को बढ़ावा देने की योग्यता

भाग 5

पिछले दो भागों में हमने जिन उद्धरणों का अध्ययन किया उनसे हमें कुछ ऐसी विशेषताओं की अन्तर्दृष्टि मिलती है जो एक बहाई युवा को प्राप्त हो जानी चाहिए। यह स्पष्ट है कि 15 वर्ष की आयु तक पहुँच जाने पर नवयुवकों से बहुत सी अपेक्षाएँ होंगी। अवश्य ही, हम जानते हैं कि पवित्र लेख, 15 वर्ष की आयु का वर्णन परिपक्वता के प्रारम्भ के रूप में करते हैं। इस आयु में ही व्यक्ति पर प्रार्थना और उपवास सम्बंधी बहाई नियम लागू हो जाता है। परिपक्वता की ओर बढ़ने के विषय में अब्दुल बहा कहते हैं :

> **"जब तक उसका शरीर परिपक्वता की आयु तक नहीं पहुँच जाता, एक दूध–पीता बच्चा, प्रत्येक चरण में बढ़ता और विकास करता हुआ विभिन्न शारीरिक चरणों से गुज़रता है। इस चरण पर पहुँच कर वह आध्यात्मिक एवं बौद्धिक पूर्णताएँ प्रदर्शित करने की क्षमता प्राप्त करता है। बोध, बुद्धि और ज्ञान के प्रकाश उसमें प्रत्यक्ष रूप से दिखने लगते है तथा उसकी आत्मा की शक्तियाँ अनावृत होती हैं।"[3]**

अब्दुल–बहा हमें बताते हैं कि जब कोई व्यक्ति वय–परिपक्व हो जाता है, तो,

"वह चीजों की वास्तविकताओं और आंतरिक सच्चाइयों को समझता है। वास्तव में, परिपक्वता के बाद उसकी समझ में, उसकी भावनाओं में, उसके निगमनों में, उसकी खोजों में, उसके जीवन का हर दिन उससे पूर्व के एक वर्ष के बराबर है।"[4]

1. युवा के विषय में अनेक विचारों को अब्दुल बहा के उपरोक्त कथनों के आधार पर परखा जा सकता है। निम्न में से कौन सा कथन आपके अनुसार 15 वर्षीय नवयुवक या युवती पर लागू होगा ?

____ जीवन और मृत्यु के अर्थ पर विचार करने की आध्यात्मिक क्षमता उसमें होती है।

____ गम्भीर विषयों के बारे में केवल तब ही सोच पाता है जब उन्हें मजाक के रूप में प्रस्तुत किया जाये।

____ अपने जीवन को प्रभावित करने वाली शक्तियों को पहचानने तथा विश्लेषण कर पाने की बौद्धिक क्षमता रखता है।

____ कार्यों को कर्मठता से पूरा करने की क्षमता रखता है।

____ कठिन चुनौतियों पर विजय पाने की आध्यात्मिक क्षमता रखता है।

____ बच्चों के लिये आध्यात्मिक शिक्षा की कक्षाओं का संचालन करने की क्षमता रखता है।

____ वाग्मिता और विश्वास के साथ प्रभुधर्म की शिक्षाओं और सिद्धान्तों को समझाने की क्षमता रखता है।

____ उसको अपने माता–पिता के सहारे और प्यार की जरूरत नहीं होती।

____ बहाई विधानों के अनुपालन के दायित्व को निभा सकता है।

____ सामाजिक प्रक्रियाओं को समझने की बौद्धिक क्षमता रखता है।

____ समाज की अर्थपूर्ण सेवा में संलग्न हो सकता है।

2. निम्नलिखित प्रार्थना को आप कंठस्थ करना चाहेंगे।

"हे ईश्वर, इस युवक को तेजस्वी बना और इस दीन–हीन प्राणी को अपनी उदारता का दान दे। इसे ज्ञान प्रदान कर, हर सुबह इसे अतिरिक्त शक्ति से सम्पन्न बना और अपने संरक्षण के आश्रय में इसे सुरक्षा दे, ताकि यह दोषों से मुक्त हो सके, पथभ्रष्टों को राह दिखला सके, दुःखी व्यक्ति को प्रसन्न की ओर ले चले, दासों को मुक्त कर सके और नासमझों को जगा सके। ऐसा वर दे कि तेरे स्मरण और गुणगान से सभी धन्य हो सकें। तू सर्वसमर्थ और शक्तिसम्पन्न है।"[5]

भाग 6

कुछ शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक शक्तियां ध्यानाकर्षण करने लगती हैं, जब नवयुवक 15 वर्ष की आयु पर परिपक्वता की दहलीज़ को लांघते हैं। बचपन की अभिवृत्तियों, विचारों, और आदतों को पीछे छोड़ कर उन्हें नई क्षमताओं का विकास करना होता है। प्रभुधर्म की सेवा की ओर इन शक्तियों के प्रचालन का प्रारम्भ व्यक्ति की युवावस्था में ही होना है। बहाउल्लाह कहते हैं :

> **"वह धन्य है जो अपनी युवावस्था के उत्कर्ष में तथा अपने जीवन के यौवनकाल में ही आदि एवं अंत के स्वामी के धर्म की सेवा के लिए उठ खड़ा होता है तथा अपने हृदय को उसके प्रेम से सुसज्जित करता है। ऐसी कृपा का प्रकटीकरण स्वर्ग एवं पृथ्वी की रचना से अधिक महान है। धन्य हैं वे जो दृढ़ हैं तथा उनका कल्याण होगा जो अडिग हैं।"[6]**

युवाओं की प्रत्येक पीढ़ी द्वारा अर्पित की गयीं सेवाएँ प्रभुधर्म के विकास के लिये अपरिहार्य हैं। उनके द्वारा किए गए योगदान के महत्व को रेखांकित करते हुए शोगी एफेन्दी की ओर से लिखे गये पत्र के अनुसार, वे प्रभु धर्म के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए श्रम करने वालों के मध्य "निस्वार्थ सेवा की चेतना को बनाए रखने का समस्त दायित्व उन्हीं के कंधों पर रखते हैं। पत्र आगे कहता है कि "इस चेतना के अभाव में कोई भी कार्य सफलतापूर्वक प्राप्त नहीं किया जा सकता।"

जहाँ तक उन विशिष्टताओं का प्रश्न है जो युवाओं को सेवा के क्षेत्र में विशेष रूप से उपयुक्त बनाती हैं, विश्व न्याय मंदिर ने सभी राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं को सम्बोधित एक संदेश में लिखा हैं :

> **"कठिन परिस्थितियों में युवाओं की सहनशक्ति, उनकी सक्रियता एवं ऊर्जा तथा स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल अपने आप को ढाल पाने, नई चुनौतियों का सामना करने और जिनसे भी वे मिलें उन्हें अपनी उत्सुकता तथा गर्मजोशी प्रदान करने की योग्यता के साथ–साथ, बहाई युवा द्वारा अनुमोदित आचरण का मापदण्ड, उन्हें अपेक्षित परियोजनाओं के निष्पादन के लिए सक्षम साधन बनाते हैं। वास्तव में, अपने विशिष्ट गुणों के द्वारा वे किसी भी उद्यम में अग्रणी बन सकते हैं और जिस किसी कार्य में वे भाग लेंगे, उसका प्रेरक बल बन सकते हैं, चाहे वह स्थानीय स्तर पर हो या राष्ट्रीय। हमारी आशा भरी निगाहें बहाई युवाओं पर टिकी हैं।"[7]**

और, विश्वभर के युवाओं को संबोधित करते हुए, विश्व न्याय मन्दिर आगे समझाते हैं :

> **"यद्यपि आपकी वास्तविकताओं को व्यापक रूप से विविध परिस्थितियों ने आकार प्रदान किया है, फिर भी सकारात्मक बदलाव लाने की चाह तथा अर्थपूर्ण सेवा की क्षमता, ये दोनों, जीवन की आपकी अवस्था की विशेषताएँ हैं, जो न तो किसी जाति या राष्ट्रीयता तक सीमित है, न ही भौतिक संसाधनों पर निर्भर हैं। युवावस्था की यह उज्ज्वल अवधि जिसके आप सभी सहभागी हैं, सभी के द्वारा अनुभव की जाती है ..."[8]**

1. ऊपर दिये गये उद्धरण के आधार पर इन वाक्यों को पूरा करें :

   क. जो अपनी युवावस्था के आरम्भ में ही प्रभुधर्म की सेवा के लिये उठ खड़े होते हैं तथा अपने हृदय को उसके प्रेम से सुसज्जित करते हैं, वे ____________________ हैं।

   ख. प्रभु धर्म को आगे बढ़ाने के लिए श्रम करने वालों के मध्य ____________________ की ____________________ को बनाए रखने का समस्त दायित्व युवाओं के कंधों पर है।

ग. निःस्वार्थ सेवा की चेतना के बिना, जिसके अनुरक्षण का दायित्व युवा के कंधों पर है, कोई भी काम ____________________ नहीं हो सकता।

घ. कठिन परिस्थितियों में युवाओं की ____________________ और उनकी ________________ एवं ________________ उन्हें योजनाओं तथा परियोजनाओं के निष्पादन के लिये सक्षम साधन बनाते हैं।

ङ. योजनाओं तथा परियोजनाओं के निष्पादन के सक्षम साधन के रूप में, युवा अपनी योग्यता का उपयोग स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल स्वयं को ____________________ पाने में, नई चुनौतियों का ____________________ करने में, और मिलने वालों को अपनी गर्मजोशी तथा उत्सुकता ____________________ करने में कर सकते हैं।

च. अपने विशिष्ट गुणों के माध्यम से युवा किसी भी उद्यम में ____________________ बन सकते हैं और जिस किसी भी कार्य में वे भाग लेते हैं उसका ______________________ बन सकते हैं।

छ. विश्वभर में युवाओं की वास्तविकताओं को जो भी परिस्थितियां आकार प्रदान करती हैं, __________________________________ की चाह और ____________________ की क्षमता उन सभी की विशेषता हैं जो जीवन की इस अवस्था से गुज़र रहे हैं।

भाग 7

युवाओं द्वारा की गई सेवाओं के साथ सामान्यतः कई अवधारणाएँ जुड़ी होती हैं, जिनमें सहज स्वाभाविकता, उत्तेजना तथा कल्पनातीत सम्भावनाओं को पाने की स्वतंत्रता शामिल हैं। यद्यपि इन अवधारणाओं को सेवा के साथ जोड़ने में कुछ वैधता है, फिर भी हमें ध्यान देना होगा कि हम इन पर आवश्यकता से अधिक बल न दें। ऐसी आदत का शिकार होना प्रायः आसान होता है जिसमें हम युवाओं की गतिविधियों को उत्तेजनापूर्ण घटनाओं की कड़ी मात्र तक ही सीमित कर देखते हुए प्रक्रिया के स्वरूप को समझने के महत्व को भूल जाते हैं और प्रणालीबद्ध पहल के लिये आवश्यक अनुशासन को सीख पाने की ज़रूरत को नज़रअन्दाज करने लगते हैं। उन व्यवस्थित प्रक्रियाओं के बारे में सोचें जिनके माध्यम से प्रभुधर्म की शिक्षाओं और सिद्धांतों को गांवों और पड़ोस की आध्यात्मिक नींव को मजबूत करने के लिए लागू किया जा रहा है – उदाहरण के लिए, बच्चों की आध्यात्मिक शिक्षा, सामुदायिक जीवन का दृढ़ीकरण और मानव संसाधनों का विकास। अब, इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने वाले अपने मित्रों के साथ, युवाओं द्वारा किए जा सकने वाले सेवा के कुछ कार्यों को सोचें जो इन प्रक्रियाओं में योगदान करते हैं। क्या यह कार्य आनंद प्रदान करने में सहायक नहीं होते ? क्या वे स्वाभाविकता को उचित अंश तक अनुमति नहीं प्रदान करते ? क्या वे अनुशासित तरीके से पहल करने के अभ्यास के माध्यम से रचनात्मकता को प्रोत्साहित नहीं करते हैं ?

____

____

____

भाग 8

हम अक्सर सुनते हैं कि युवावस्था तैयारी करने का समय होता है। यह कथन वास्तव में सत्य है। आज विश्व में बदलाव की आवश्यकता को संदर्भित करते हुऐ विश्व न्याय मन्दिर ने लिखा है, "समाज की कार्यप्रणाली में अपेक्षित रूपान्तरण, निश्चय ही, बहुत हद तक, युवाओं द्वारा उन्हें विरासत में मिलने वाले विश्व के लिए की जाने वाली तैयारियों की प्रभावशीलता पर निर्भर करता है।" फिर जो हमें पूछना चाहिए वह है कि युवा उन उत्तरदायित्वों को निभाने के लिए जो वे विरासत में पायेंगे, स्वयं को कैसे तैयार करेंगे। विश्व न्याय मन्दिर द्वारा लिखा गया एक प्रपत्र यह समझाता है :

> **"किसी भी व्यक्ति के लिए, चाहे वह बहाई हो या नहीं, उसके युवावस्था के वर्ष एक ऐसा समय होते हैं जिसमें वह ऐसे कई निर्णयों को लेगा जो उसके जीवन की दिशा को तय करेंगे। इन्हीं वर्षों में सर्वाधिक संभावना है कि वह अपने पेशे का चयन करेगा, अपनी शिक्षा पूर्ण करेगा, अपना जीविकोपार्जन करेगा, विवाह करेगा और अपने परिवार का पालन पोषण करना प्रारंभ करेगा। सर्वाधिक महत्वपूर्ण यह है कि, इसी अवधि के दौरान मन–मस्तिस्क परम अन्वेषी होता है और किसी व्यक्ति के भविष्य के व्यवहार को मार्गदर्शण करने वाले आध्यात्मिक मूल्यों को अपनाया जाता है।"**[9]

इसके प्रकाश में, धर्मसंरक्षक की ओर से लिखा गया एक पत्र अपने भविष्य की तैयारी के भाग के रूप में, युवाओं के लिए बौद्धिक और आध्यात्मिक क्षमताओं को विकसित करने की आवश्यकता को संदर्भित करता है। "तुम्हें पूर्ण रूप से तैयार होना ही होगा," यह पत्र कहता है। "तुम्हें अपने बौद्धिक के साथ–साथ आध्यात्मिक पहलू को भी समान रूप से विकसित करना ही चाहिए।"

अक्सर, तैयारी का प्रश्न अन्य प्रश्नों को जन्म देता है जो शिक्षा – चाहे वह औपचारिक हो, व्यावसायपरक हो या पेशेवर हो – और प्रभुधर्म की सेवा के बीच संबंध से संबंधित होते हैं। ख़ासतौर पर, कभी–कभी यह स्पष्ट नहीं होता कि युवाओं को इनमें से प्रत्येक के लिए अपनी कितनी ऊर्जा लगानी चाहिये। एक अति यह सलाह देना है कि युवा पूरी तरह से अपनी शिक्षा को समर्पित हों और सेवा के एक या अधिक क्षेत्रों में पूरी गम्भीरता से संलग्न होने से पहले जीवन में और अधिक अनुभव प्राप्त करने की प्रतीक्षा करें। यह भी सच है कि, "सभी मामलों में, अपने लिए जो भी संभव हो उसके अंतर्गत शिक्षा प्राप्त करने और एक व्यवसाय अथवा पेशे में लगने के कार्य को, जिसके माध्यम से अपना जीविकोपार्जन किया जा सके, आवश्यक महत्व दिया जाना चाहिए।" लेकिन, जैसा कि विश्व न्याय मन्दिर स्पष्ट करते हैं, युवा के फलदायी वर्षों को सिर्फ एक व्यवसाय अथवा पेशे के लिए तैयारी करने के चरण के रूप में परिभाषित करना

"युवाओं को इतनी प्रचुरता में उपलब्ध रचनात्मक ऊर्जाओं को अनदेखा करना होगा। आखिरकार, प्रभुधर्म के बहुत सारे प्रारंभिक शूरवीर वे युवा और युवतियां थी जो अपने प्रियतम के पथ में महान कार्यों की प्राप्ति के लिए उठ खड़े हुए थे।"[10]

दूसरी अति उन्हें किसी भी औपचारिक शिक्षा अथवा व्यावसायिक प्रशिक्षण को पूरी तरह दरकिनार कर अपनी ऊर्जाओं को सेवा क्षेत्र में पूर्णतया लगाने को प्रोत्साहित करना है, विशेषकर अवसर भरे इस काल में। कई अनुच्छेदों, जिनमें से कुछ का अध्ययन हमने पिछले भागों में किया, से यह स्पष्ट है कि सेवा सभी युवाओं के जीवन के केंद्र में होनी चाहिए। यह प्रत्यक्ष रूप से स्पष्ट है कि सेवा की एक सघन अवधि, चाहे इसके लिए शिक्षा में रूकावट शामिल हो या नही, "उनकी तैयारी का एक मूल्यवान संघटक" हो सकता है। इसके साथ ही, विश्व न्याय मन्दिर यह बताते हैं :

"यद्यपि जिनके पास सेवा के पथ पर देने के लिए बहुत कुछ है उनसे महान कार्यों की अपेक्षा सही है, मित्रों को एक संकीर्ण दृष्टिकोण अपनाने से चौकन्ना रहना होगा कि परिपक्वता की ओर विकास की आवश्यकता क्या है। आवागमन की स्वतंत्रता तथा समय की उपलब्धता कई युवाओं को इस प्रकार सेवा देने योग्य बनाती है जो समुदाय की आवश्यकताओं से सीधे सम्बन्धित है, पर जब वे जीवन के दूसरे दशक में बढ़ते हैं उनका क्षितिज बढ़ जाता है ...। उनके सामने उपलब्ध सम्भावनाओं के अनुसार अनेक के लिये तात्कालिक प्राथमिकता, आगे की अकादमिक अथवा व्यावसायिक शिक्षा होगी तथा उनके समक्ष समाज के साथ पारस्परिक क्रिया के नये क्षेत्र खुल जाते हैं ...। अपने वयस्क जीवन को दिशा देने के उनके महत्वपूर्ण निर्णय, यह तय करेंगे कि ईश्वर के धर्म के प्रति उनकी सेवा, उनके युवा काल का केवल एक संक्षिप्त तथा यादगार अध्याय था अथवा पृथ्वी पर उनके अस्तित्व का नियत केन्द्र बिंदु, एक लेंस जिसके द्वारा सभी कार्य केन्द्रीभूत हो जाते हैं।"[11]

इससे पहले कि हम शिक्षा और सेवा के बीच के संबंध के बारे में और अधिक विचार करें, आप यहाँ थोड़ा रूक कर एक संक्षिप्त कथन लिख सकते हैं जो आपकी समझ को व्यक्त करे कि युवा अवधि तैयारी का समय होने का क्या अर्थ है।

भाग 9

इसमें कोई संदेह नहीं कि पिछले खंड में आपने जो वक्तव्य लिखा वह इस बात पर बल देता है कि युवाओं की शैक्षणिक शिक्षा या व्यावसायिक प्रशिक्षण को लेकर स्वयं को इस संसार के जीवन के लिए तैयार करना कितना महत्वपूर्ण है। लेकिन इस बात पर भी आपने निश्चित रुप से ध्यान दिया होगा कि शैक्षणिक शिक्षा के दौरान प्रभुधर्म की सेवा को "स्थगित" नहीं रखा जा सकता। ऐसी प्रवृत्ति समय बीतने के साथ–साथ भविष्य में स्थायी बन जाती है और हो सकता है कि सेवाकार्यों के लिए उचित समय की प्रतीक्षा करते जीवन का अंत हो जाये। शैक्षणिक शिक्षा और सेवा कार्यों के बीच सम्बंध का ऐसा मुद्दा तभी उठता है जब हम शिक्षा को केवल पुस्तकों तक सीमित मानते हैं। किंतु जब हम सेवा को एक ऐसी कर्मभूमि के रूप में देखते हैं जिसमें ज्ञान के उपयोग से बुद्धि कौशल विकसित होता है तो इस तरह की सोच बड़ी आसानी से ख़त्म हो सकती है और सेवा कार्य, भविष्य की तैयारियों की प्रक्रिया का न केवल एक भाग बल्कि किसी उचित प्रक्रिया का एक केंद्र बिन्दु बन सकता है। निश्चित रूप से जब प्रभुधर्म की सेवा युवावस्था में ही आरम्भ कर दी जाती है तो यह जीवन भर के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत बन जाती है और व्यक्ति को योग्य बनाती है कि वह उचित मार्ग चित्रित करे और अपनी दिशा स्पष्ट रखे।

इस बोध से स्वाभाविक रूप में यह प्रश्न खड़ा होता है कि युवाओं को प्रभुधर्म के सेवा–कार्यो के लिये अपनी क्षमताएँ बढ़ाने के लिये किस तरह की तैयारी की आवश्यकता है। यह सोचना आसान होगा कि बहाई समुदाय की विभिन्न घटनाओं और गतिविधियों में भाग लेकर, उन्हें भी सम्मिलित कर जिनके साथ मिलजुलकर आनंद मनाने की स्वाभाविक इच्छा तृप्त होती है, युवा लोग अपनी क्षमताओं को बढ़ा सकते हैं और प्रभुधर्म की सेवा के समर्पित जीवन के लिये स्वयं को तैयार कर सकते हैं। इसके बावजूद पवित्र लेखों का परामर्श है कि इस तरह की अनौपचारिक, शैक्षणिक प्रक्रिया आवश्यक होते हुए भी पर्याप्त नहीं है।

यदि हम सावधानी से उनके संदेशों को देखें तो पायेंगे कि शोग़ी एफेन्दी ने आशा व्यक्त की है कि युवाओं को प्रभु संदेशों में "अच्छी तरह शिक्षित और प्रशिक्षित" होना चाहिये व प्रभुधर्म का "सम्पूर्ण" व "ठोस" ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। इसके अतिरिक्त वह उन्हें प्रोत्साहित करते हैं कि अपने समुदाय की गतिविधियों में "सजग, पूर्ण हृदय से तथा सतत प्रतिभागिता" के द्वारा सीखें। इस संदर्भ में वह समझाते हैं कि सामुदायिक जीवन एक "अपरिहार्य प्रयोगशाला" उपलब्ध कराता है जहां युवा जन धर्म के अध्ययन से प्राप्त नियमों को "जीवंत एवं सृजनात्मक" कार्यों में बदल सकते हैं। वह इंगित करते हैं कि इस "जीवंत संघटन का हिस्सा बन कर ही वे बहाई शिक्षाओं में प्रवाहित हो रही वास्तविक चेतना को हासिल कर सकते हैं।" अतः एक औपचारिक शैक्षिक प्रक्रिया की आवश्यकता जिससे युवा जन स्वयं को सेवा के उपयुक्त कर सकें, सेवा जो सामुदायिक जीवन की वास्तविकता में निहित है। गतिविधि मात्र गतिविधि के लिए, अध्ययन मात्र अध्ययन के लिये, आवश्यकता की पूर्ति नहीं करता।

विश्व न्याय मंदिर के अनेक संदेश भी इसी प्रकार की बात कहते हैं। एक संदेश स्पष्ट करता है कि जब शैक्षणिक शिक्षा तथा सेवा, जोड़कर, साथ–साथ की जाती हैं, समझ में अत्यंत वृद्धि होती है। संदेश आगे कहता है "सेवा के क्षेत्र में, ज्ञान की परख होती है, अभ्यास के दौरान प्रश्न जन्म लेते हैं तथा समझ के नये स्तरों को प्राप्त किया जाता है।" पूरे विश्व में प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना की गई है, इस स्पष्ट उद्देश्य के साथ कि अध्ययन के औपचारिक पाठयक्रम के द्वारा धर्म के मानव संसाधनों को विकसित किया जा सके। हर जगह बढ़ती संख्या में लोग प्रणालीबद्ध शैक्षिक प्रक्रिया में शामिल होकर सेवा की क्षमता में वृद्धि कर रहे हैं तथा युवा जन लगातार इस प्रक्रिया के अग्रिम मोर्चे पर रहे हैं। प्रशिक्षण संस्थान की एजेंसी के संबंध में विश्व न्याय मंदिर की ओर से लिखे पत्र में स्पष्ट किया गया हैः

"यह व्यक्ति को एक शैक्षिक प्रक्रिया में सम्मिलित करने का प्रयास करता है जिसमें सच्चरित्र, व्यवहार तथा स्व–अनुशासन सेवा के संदर्भ में विकसित किये जाते हैं, जीवन के ऐसे आनंददायक तथा सामंजस्यपूर्ण प्रतिमानों का पोषण किया जाता है जो अध्ययन, पूजा, शिक्षण, समुदाय निर्माण का ताना–बाना बुनते हैं, साधारण रूप में ऐसी दूसरी प्रक्रियाओं में सम्मिलित होते हैं जो समाज को रूपांतरित करना चाहती है। शैक्षिक प्रक्रिया के हृदय में ईश्वरीय शब्द से संबंध स्थापित करना है जिसकी शक्ति प्रत्येक व्यक्ति के अपने हृदयों को स्वच्छ करने तथा 'अनासक्ति के कदमों' से सेवा के मार्ग पर चलने के प्रयासों को बल प्रदान करती है।"[12]

विश्व न्याय मंदिर की ओर से लिखे एक अन्य पत्र में बताया गया :

"... संस्थान के पाठ्यक्रमों का उद्देश्य व्यक्ति को ऐसे पथ पर ले जाना है जहां गुण तथा अभिवृत्तियां, कुशलतायें तथा योग्यतायें धीरे–धीरे सेवा के द्वारा प्राप्त की जाती हैं – सेवा जो स्वयं के आग्रही अहं को समाप्त कर, व्यक्ति को उसकी चहारदीवारी से निकाल समुदाय निर्माण की सक्रिय प्रक्रिया में स्थापित करना चाहती है।"[13]

पूरे विश्व में युवा जनों के समूहों को संदर्भित करते हुए विश्व न्याय मंदिर ने लिखा है :

"बारीकियों से अलग, वे सभी अपनी ऊर्जा तथा समय, योग्यतायें तथा प्रतिभायें अपने समुदायों की सेवा में अर्पित करने की इच्छा व्यक्त करेंगे। अनेक, जब अवसर दिया जायेगा, प्रसन्नतापूर्वक विकसित हो रही पीढ़ियों की आध्यात्मिक शिक्षा के उपायों पर अपने जीवन के कुछ वर्ष न्योछावर कर देंगे। विश्व के युवाओं में समाज का रूपांतरण करने की क्षमता का ऐसा ऊर्जा भंडार प्रतीक्षा कर रहा है जिसका उपयोग करने की आवश्यकता है। इस क्षमता को मुक्त करना प्रत्येक संस्थान को पवित्र दायित्व समझना चाहिये।"[14]

भाग 10

जैसा हमने पिछले दो भागों में देखा, हमें किसी भी स्थिति पर विचार करते समय इस बात का ध्यान रखना होगा कि हम उसे इस तरह अलग–अलग तोड़कर न देखें कि हम अपने जीवन के विभिन्न पक्षों को ही खंड–खंड करने लगें, जो अन्ततः अनावश्यक विरोधाभास सामने ले आयें। आमतौर पर मानव मस्तिष्क की प्रवृत्ति इस जगत को विभिन्न पक्षों में बाँटने की होती है। भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक वास्तविकता इतनी विस्तृत है कि इसे समग्रता में समझ पाना कठिन है। समझने के उददेश्य से इसे कई भागों में बांट देना गलत नहीं होगा। हालाँकि जब यह विभाजन वास्तविकता की समग्रता को ध्यान में रखे बग़ैर किया जाता है तो कठिनाइयाँ सामने आती हैं। विभिन्न नस्ल, रंग, राष्ट्रीयता और धर्म के लोगों के बीच संघर्ष इन अनेक समस्याओं में से कुछ के उदाहरण हैं जो अस्तित्व की खंडित धारणा के कारण उपज सकती हैं, क्योंकि मनुष्य जाति की एकता वास्तविकता है और विभिन्न नस्लीय, जातीय और राष्ट्रीय आधार पर इनका विभाजन मनुष्य के मस्तिष्क की उपज और ऐतिहासिक परिस्थितियों का परिणाम है।

यदि हम सतर्क नहीं रहते हैं और अपने जीवन के प्रति खंडित दृष्टिकोण अपनाते हैं तो ऐसे अनेक विरोधाभास पैदा हो सकते हैं जो पूरी तरह काल्पनिक होंगे। कार्य, अवकाश, पारिवारिक जीवन, आध्यात्मिक जीवन, शारीरिक स्वास्थ्य, बौद्धिकता की तलाश, व्यक्तिगत विकास, सामूहिक विकास वे टुकड़े बन जाते हैं जो मिलकर हमारे अस्तित्व का निर्माण करते हैं। जब हम इन भागों को वास्तविकता मान लेते है तो जीवन के विभिन्न पक्षों की उन बातों का उत्तर देने में जिन्हें हम इनकी मांग समझते हैं, स्वयं को अनेक दिशाओं में खिंचता हुआ अनुभव करते हैं। परस्पर विरोधी प्रतीत होने वाले लक्ष्य हमें असमंजस में डाल देते हैं : क्या प्रभुधर्म की सेवा के लिए मुझे अपने पारिवारिक जीवन का बलिदान कर देना

चाहिये ? क्या प्रभुधर्म की सेवा में लगने से बच्चों को पालने पोसने और बड़ा करने के मेरे दायित्व पर असर नहीं पड़ेगा ? ये मन में उठने वाले असंख्य प्रश्नों में से दो उदाहरण हैं।

अपने ही द्वारा सृजित इन विरोधाभासों का अंत करने के लिये हम कभी–कभी अपने समय को विभिन्न दायित्वों में बराबर–बराबर बाँटने की कोशिश करते हैं। कभी–कभी हम दायित्वों की प्राथमिकता तय कर लेते हैं और अपनी ऊर्जा एक खास समय में सबसे महत्वपूर्ण दायित्व में लगाते हैं। समय और ऊर्जा का सतर्क विभाजन निःसंदेह आवश्यक है, लेकिन यह लाभदायक तभी होगा जब हम अपने जीवन के विभिन्न पक्षों के अंर्तसंबंध को हमेशा ध्यान में रखें। यदि हम समग्रता को देखने, समझने में असफल रहते हैं तो विभिन्न खंडों के बीच उपजा संघर्ष, तनाव और असमंजसता को जन्म दे सकता है।

नीचे जीवन के विभिन्न पक्षों के कुछ ऐसे जोड़े दिये जा रहे हैं जिन्हें एक दूसरे को प्रबलित करना चाहिये लेकिन अक्सर इन्हें एक दूसरे के लिये बाधक मान लिया जाता है। प्रत्येक जोड़े के बाद दिये गये वाक्यों के बारे में सोचें कि क्या यह जीवन के एकीकृत रास्ते को सुदृढ़ करने वाली सोच है या फिर उसके खंडित विभाजन को दर्शाने वाली सोच। प्रत्येक एकीकृत के लिए "ए" तथा खंडित विभाजन के लिए "ख" चिन्हित करें।

1. परिवार और कार्य

____ यदि मैं अपने व्यवसाय में अधिक मेहनत करुँगा/करुँगी तो मेरे पारिवारिक जीवन पर प्रतिकूल असर पड़ेगा।

____ अक्सर मैं अपने परिवार के साथ अपने व्यवसाय के कार्यों को पूरा करने और कार्य स्थल की चुनौतियों की चर्चा करता हूँ।

____ स्त्रियाँ, निःसंदेह अपना व्यवसायिक पेशा बना सकती हैं लेकिन इसका मूल्य उनके बच्चों को चुकाना पड़ता है।

____ यदि मुझे अपने बच्चों का पालन–पोषण अच्छी तरह से करना है तो मुझे अपने व्यवसाय को भूलना होगा।

____ मैं अपने व्यवसाय में उत्कृष्टता प्राप्त करने का प्रयत्न कर सकता हूँ और अपने पारिवारिक दायित्वों को भी सजगता से निभा सकता हूँ।

2. शिक्षा और प्रभुधर्म की सेवा

____ प्रभुधर्म की सेवा के क्षेत्र में उतरने के पूर्व शैक्षणिक उपलब्धियां प्राप्त करना अनिवार्यता है।

____ अपनी शिक्षा के माध्यम से जो ज्ञान मैं प्राप्त करता हूँ वह सेवा के क्षेत्र के लिये बहुमूल्य है और सेवा के क्षेत्र से प्राप्त अनुभव मेरे ज्ञान को बढ़ाता है।

____ यदि हम वास्तव में प्रभुधर्म के लिए स्वयं को समर्पित करना चाहते हैं तो हमें अपनी पढ़ाई छोड़नी होगी।

____ हमारी महानतम आकांक्षाओं में से एक है कि हम प्रभुधर्म की शिक्षाओं का अध्ययन करें और उन उद्यमों में उपयोग करें जो विश्व की उन्नति को बढ़ावा देते हैं।

____ अपने समुदाय के हितों को बढ़ावा देने के सेवा पथ पर जो क्षमताएं हम विकसित करते हैं वे हमें उपयुक्त शिक्षा क्षेत्र चुनने में मदद करेंगी।

3. बौद्धिक और आध्यात्मिक गुणों का विकास

____ सत्य की स्वतंत्र खोज के लिए बौद्धिक विकास के साथ आध्यात्मिक गुणों की प्राप्ति भी आवश्यक है।

____ बौद्धिक विकास के लिए न्यायप्रियता, ईमानदारी और पूर्वाग्रहों का अंत आवश्यक है।

____ आध्यात्मिक रुप से उन्नत होने के लिये, बौद्धिकता को परे रखना होगा।

____ हमारेमन और मस्तिष्क एक दूसरे से अलग नहीं हैं, यह एक वास्तविकता के ही पूरक हैं और जो परस्पर सम्बन्धित पक्षों को अभिव्यक्त करती है – वह है हमारी आत्मा।

____ सजग ज्ञान और उत्तम कार्यों को अपनाने से ही आध्यात्मिक योग्यताओं का विकास सम्भव है।

4. भौतिक जीवन और आध्यात्मिक जीवन

____ आध्यात्मिकता के उन्नयन के लिए मुझे भौतिक सुखों का त्याग करना होगा।

____ आध्यात्मिक विषयों को वृद्धावस्था आने तक परे रखना चाहिये, युवावस्था के दौरान हमें भौतिक प्रगति के प्रत्येक अवसर का लाभ उठाना चाहिये।

____ आध्यात्मिकता की ओर ध्यान देने के लिए तैयार होने से पहले लोगों की भौतिक आवश्यकताएँ पूरी होनी चाहिये।

____ इस भौतिक जगत में जीवन का उद्देश्य आध्यात्मिक योग्यताओं और शक्तिओं का विकास करना है।

____ इस भौतिक जगत में जीवन का उद्देश्य सतत विकसित होती सभ्यता को आगे बढ़ाना है।

____ हमें इस जगत के समस्त उपहारों का आनंद उठाना चाहिये किन्तु भौतिक अभिलाषाओं को हृदय पर हावी होने देने और हमें ईश्वर के निकटतर जाने से रोकने की अनुमति नहीं देनी चाहिये।

भाग 11

इस इकाई में हम किशोरों के उन गुणों पर उतना अधिक विचार नहीं कर रहे हैं जो उन्हें परिभाषित करते हैं वरन् उन विशेषताओं पर विचार कर रहे हैं जो पवित्र लेखों के परामर्श के अनुसार उनके युवक–युवतियों में विकसित होने पर होनी चाहिये। इसकी शुरुआत हम दो उद्धरणों पर विचार के साथ कर चुके हैं जिन्होने हमें इनमे से कुछ विशेषताओं के बारे में बतलाया। तब हमने देखा कि 15 वर्ष

की उम्र किसी भी व्यक्ति के जीवन की एक महत्वपूर्ण अवस्था है क्योंकि यह परिपक्वता की दहलीज़ है, जहाँ से नई शक्तियाँ और क्षमताएँ सामने आती हैं। हम जानते हैं कि युवा प्रभुधर्म के क्षेत्र में कितनी बड़ी भूमिका निभा सकते हैं और उनकी असीम क्षमताओं को मानवता की सेवा की ओर दिशा देना कितना महत्वपूर्ण है। हमने युवाओं के भावी जीवन की सजग तैयारी की आवश्यकता को स्वीकारा है और देखा है कि सेवा स्वयं में इस तैयारी के लिये आवश्यक है, जैसा कि उनकीशिक्षा दोनों आजीविका अर्जित करने के लिए ज्ञान और कौशल प्राप्त करने और अपने समुदाय की सेवा करने के लिये अपनी योग्यताएँ बढ़ाने में।

यहाँ तक आपने जो कुछ भी अध्ययन किया है, ठहरकर उसकी समीक्षा करना आप उपयोगी पा सकते हैं। नीचे कई कथन दिये हैं। प्रत्येक को पढ़ें और निर्णय करें कि क्या ये सही है। हालाँकि इनमें से कुछ के उत्तर बिल्कुल स्पष्ट हैं किन्तु फिर भी आशा है कि आप पूरे अभ्यास पर पर्याप्त ध्यान देंगे। इनसे आपको ऐसे विचार क्रम से गुज़रने का अवसर मिलेगा जो अब तक पढ़ी गयी सामग्री पर आपके अपने विचारों को व्यवस्थित करने में मदद करेगा।

____ एक व्यक्ति के लिये 15 वर्ष की आयु में प्रवेश का अर्थ है परिपक्वता की उम्र में पहुँचना। किन्तु यह कथन सांकेतिक अधिक है और किसी के भी जीवन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं डालता।

____ अधिकांश युवा अपरिपक्व होते हैं और महत्वपूर्ण दायित्व वहन नहीं कर सकते। बड़ी आसानी से उन्हें दिग्भ्रमित किया जा सकता है और उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता।

____ युवा प्रभुधर्म के कार्यों का दायित्व उठाने को उत्सुक रहते हैं किन्तु अनुभवहीनता और अपरिपक्वता के कारण वे बहुत कुछ नहीं कर पाते।

____ युवाओं में प्रभुधर्म तथा मानवता की सेवा सततता तथा निस्वार्थता के साथ करने की क्षमता विद्यमान है।

____ युवा अपने समुदाय के कार्यों को प्रणालीबद्ध रूप से सम्पन्न करने की इच्छा शक्ति और समर्पण प्रदर्शित कर सकते हैं।

____ जो अपनी युवावस्था के श्रेष्ठकाल में ही प्रभुधर्म की सेवा के लिये उठ खड़े होते हैं वे आशीर्वादित हैं।

____ युवाओं को अपना अधिकांश समय अध्ययन में लगाना चाहिये, अतिरिक्त समय वे प्रभुधर्म के सेवाकार्यों में लगा सकते हैं।

____ उच्चतम स्तर का शैक्षणिक प्रशिक्षण प्राप्त किये बगैर युवा समाज की प्रभावकारी सेवा नहीं कर सकते।

____ मानवीय प्रयासों के सभी क्षेत्र बहाई युवाओं के लिए खुले हैं, उन्हें अपनी प्रतिभा और परिस्थितियों के अनुसार क्षेत्रों का चयन करना चाहिये, सेवाभाव से उनमें प्रवेश करना चाहिये और उत्कृष्टता हासिल करने का प्रयास करना चाहिये।

____ युवाओं में अपने मिलने वालों से प्रभुधर्म के बारे में अर्थपूर्ण संवादकरने के लिये अपेक्षित पर्याप्त अनुभव और ज्ञान नहीं होता है, बेहतर होगा कि वेअन्य क्षेत्रों में सेवा दें।

____ युवाओं में अपने मिलने वालों से प्रभुधर्म के बारे में अर्थपूर्ण संवाद करने के लिये अपेक्षित पर्याप्त अनुभव और ज्ञान नहीं होता है, इसके बजाय उन्हें मात्र उच्च व्यवहार प्रदर्शित करने के लिये प्रोत्साहित किया जाये।

____ युवाओं में प्रभुधर्म की शिक्षाओं को समझने तथा उन्हें अपने साथियों के साथ बांटने की अपार क्षमता है।

____ युवाओं में प्रभुधर्म की शिक्षाओं को समझने तथा उन्हें सभी वर्ग के लोगों, युवा और वृद्धजन, दोनों के साथ बांटने की अपार क्षमता है।

____ युवा प्रभुधर्म की शिक्षाओं को दूसरों के साथ बांटने के लिये आवश्यक ज्ञान और योग्यता प्राप्त करने को उत्सुक रहते हैं।

____ युवा प्रभुधर्म के महानतम संसाधनों में से एक हैं, उचित प्रशिक्षण कार्यक्रम और लगातार प्रोत्साहन के माध्यम से, अपने समुदायों और मानवता की सेवा करने योग्य बनने में उनकी मदद की जानी चाहिये।

____ युवाओं को कुछ विशेष गतिविधियों में लगाना आवश्यक है जिसमें वे आमोद प्रमोद भी कर सकें, क्योंकि लम्बे समय तक किसी कार्य में गम्भीर बने रहना उनके लिये कठिन होता है।

____ व्यवस्थित होना सीखना, जीवन में बाद में सम्भव होता है जब सहज चंचलता समाप्त हो जाती है।

____ कठिन परिस्थितियों को सहन करने तथा नई स्थितियों के योग्य बन जाने की उनकी क्षमता उनके समक्ष सेवा के कई नये क्षेत्र खोल देती है।

____ अपने जीवन में बहाई लेखों में वर्णित उच्च नैतिक आदर्शों को अपनाकर कठिन से कठिन परीक्षाओं में विजयी होने की क्षमता युवाओं में है।

____ युवाओं के पास खोजी मन मस्तिष्क है और वे सामुदायिक जीवन में सम्पूर्ण भागीदारी से अपने समस्त प्रश्नों के उत्तर पा सकते हैं।

____ हमारे समुदायों में छिपी अपार क्षमताएँ, युवाओं द्वारा दर्शाये निःस्वार्थ सेवा भाव से ही सामने आ सकती है।

____ ईश्वर के शब्द की शक्ति युवाओं को पवित्रता और अनासक्ति के साथ सेवा के मार्ग पर चलने में मजबूत करती है।

____ संस्थान के पाठ्यक्रमों का अध्ययन करके और सेवा के संबंधित कार्यों में संलग्न होने से युवाओं में जो दृष्टिकोण और आध्यात्मिक गुण, कौशल और क्षमताएं विकसित होती हैं, वे सामुदायिक निर्माण की गतिशील प्रक्रिया में उनका निर्णायक योगदान देना संभव बनाती हैं।

____ ईश्वर के शब्द की शक्ति युवाओं को पवित्रता और अनासक्ति के साथ सेवा के मार्ग पर चलने में मजबूत करती है।

____ संस्थान के पाठ्यक्रमों का अध्ययन करके और सेवा के संबंधित कार्यों में संलग्न होने से युवाओं में जो दृष्टिकोण और आध्यात्मिक गुण, कौशल और क्षमताएं विकसित होती हैं, वे उनके लिए सामुदायिक निर्माण की गतिशील प्रक्रिया में निर्णायक योगदान देना संभव बनाती हैं।

____ विश्व के युवाओं में निहित समाज को बदलने की क्षमता के भंडार को एक व्यवस्थित शैक्षिक प्रक्रिया में उनकी भागीदारी के माध्यम से उपयोग किया जा सकता है जो अध्ययन और सेवा को जोड़ता है। ।

भाग 12

आशा की जाती है कि पिछले भाग से आपको युवावस्था की अवधि के बारे में अपनी सोच को सुदृढ़ करने और यह समझने में मदद मिली होगी कि जीवन की यह अवस्था सक्रिय सेवा व पढ़ाई – दोनों की भविष्य के लिये कठिन परिश्रम के साथ तैयारियों की है। आइये, हम इस विषय पर आगे विचार करें।

सेवा, शिक्षा और भविष्य की तैयारियों की अंर्त–पारस्परिक क्रिया के बारे में जो विचार विमर्श हम कर चुके हैं उसे एक विशेष संदर्भ में अनावृत होने की आवश्यकता है। इसे विशेषकर बहाई लेखों में वर्णित रूपांतरण की दो प्रक्रियाओं में योगदान देना चाहिये। व्यक्ति का बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास तथा समाज का रूपांतरण। हम जानते हैं कि बहाउल्लाह के प्रकटीकरण का "सर्वोच्च और विशिष्ट उद्देश्य" है "नयी मानवजाति के अस्तित्ववान होने के आहवान के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं" और हममें से प्रत्येक प्रतिदिन अपने विचारों और कार्यों में पावन लेखों में वर्णित मनुष्य के अनुरुप एकरुपता लाने का प्रयास करता है। बहाई लेखों में समाज की संरचना में भी समान और गहन रूपांतरण पर महत्व दिया गया है। "जल्दी ही वर्तमान विश्व व्यवस्था को समेट लिया जायेगा" बहाउल्लाह कहते हैं "और एक नई विश्व व्यवस्था इसका स्थान लेगी।" वे स्पष्ट करते हैं "सभी मनुष्यों का सृजन सदा विकसित हो रही सभ्यता को आगे ले जाने के लिये हुआ है।"

यह दोहरा रूपांतरण केवल सजग प्रयासों से ही सम्भव है और यह आवश्यक है कि युवा अपने जीवन में इसके निहितार्थों को समझें और उद्देश्य के सुदृढ़ बोध से सम्पन्न हों, अपने व्यक्तिगत विकास का प्रभार लेने और समाज के रूपांतरण में योगदान का दायित्व लेने के लिये भी, ऐसे दोहरे नैतिक उददेश्यों को सेवाकार्यों को समर्पित जीवन में ही अभिव्यक्ति मिलेगी।

नीचे के उद्धरण हमारे अपने बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास से जुड़े नैतिक उददेश्यों की इस भावना के एक पहलू पर प्रकाश डालते हैं :

> **"एक सत्य ईश्वर के प्रकट होने का उद्देश्य मानवजाति का सच्चाई और निष्ठा, साधुता और विश्वासपात्रता के पथ पर आह्वान करना है, प्रभु की इच्छा के प्रति समर्पण की भावना का संचार करना है, सहनशीलता और परोपकारिता, न्यायनिष्ठता और बुद्धिकौशल की राह पर ले चलना है। उसका उद्देश्य प्रत्येक मनुष्य को साधुसरीखे चरित्र की ओर प्रवृत्त करना और उसे पवित्र तथा सद्कर्मों के आभूषण से विभूषित करना है।"[15]**

"प्रभु के मार्ग में समर्पित जीवन की आधारशिला है नैतिक उत्कृष्टता को प्राप्त करना और प्रभु को प्रिय गुणों से युक्त चरित्र का अधिग्रहण।"[16]

"मनुष्य का कर्त्तव्य है ज्ञान की प्राप्ति, महान आध्यात्मिक परिपूर्णता प्राप्त करना, छिपे सत्य की खोज और ईश्वर के दिव्यगुणों को भी अपने आचरण में उतारना ...।"[17]

"मनुष्य को उत्पन्न करने के पीछे प्रभु का उद्देश्य उसे इस योग्य बनाने का है और सदा रहेगा कि वह अपने स्रष्टा को जान सके और उसका सान्निध्य प्राप्त कर सके।"[18]

1. ऊपर के उद्धरणों के आधार पर नीचे के वाक्यों को पूरा करें :

   क. उस एक सत्य ईश्वर को प्रकट होने का उद्देश्य मानवजाति का ____________

   ____

   ____

   ______________________________________ राह पर ले चलना है।

   ख. परमेश्वर का उद्देश्य है प्रत्येक मानव को ______________________ की ओर प्रवृत करना और उसे ______________________ आभूषण से विभूषित करना।

   ग. प्रभु के मार्ग में समर्पित जीवन की आधारशिला है ______________________ ______________________ और ______________________।

   घ. मनुष्य का कर्त्तव्य है ______________________ प्राप्ति, ______________________ प्राप्त करना, ____________ की खोज, और ______________________ आचरण में उतारना।

   ङ. मनुष्य को उत्पन्न करने के पीछे प्रभु का उद्देश्य ______________ और सदा रहेगा कि वह ______________________________ ______________________ सके।

2. मनुष्य की आत्मा में निहित सम्भावनाओं की समझ, व्यक्ति के उददेश्य के बोध को आकार देने और उसे राह दिखाने के लिये महत्वपूर्ण होती हैं। क्या आप बता सकते हैं, ऐसा कैसे होता है ?

   ____

   ____

   ____

3. एक व्यक्ति का उद्‌देश्य का बोध इस समझ से प्रबलित होता है कि यह भौतिक जीवन ईश्वर के समक्ष पहुंचने की दिशा में की जा रही शाश्वत यात्रा का एक छोटा भाग है। क्या आप बता सकते हैं कि क्यों ?

____

____

____

____

उद्धरणों का अगला समूह नैतिक उद्देश्य की इस भावना के अन्य पहल, अर्थात सामाजिक परिवर्तन में योगदान पर प्रकाश डालता है :

"यह अपकृत साक्षी देता है कि जिस उद्देश्य के लिए नाशवान जनों ने, पूर्ण शून्यता से, अस्तित्व के इस जगत में कदम रखा है, वह यह है कि वे विश्व के उत्थान के लिए कार्य कर सकें और एक साथ समझौते एवं सामंजस्यता में रह सकें।"[19]

"व्यक्ति की प्रतिष्ठा और विशिष्टता इसी में है कि वह विश्व के निवासियों के मध्य समाज के हित का साधन बन जाये। क्या इससे बढ़कर सुख–संतोष की कोई और बात हो सकती है कि व्यक्ति अपने भीतर झांककर पाये कि प्रभु की कृपा से वह अन्य मनुष्यों के लिये सुख–शांति और कल्याण का माध्यम बन सका ? नहीं, एक सत्य ईश्वर की सौगंध इससे बढ़कर अन्य कोई कृपा नहीं और इससे बढ़कर आनंद की बात दूसरी कुछ नहीं।"[20]

"मनुष्य कितना उत्कृष्ट और कितना सम्माननीय है यदि वह अपने दायित्वों को पूरा करने के लिये उठ खड़ा होता है; और कितना अधम और घृणित है यदि वह समाज के हित की ओर से आँखें मूंद लेता है और अपना बहुमूल्य जीवन अपने व्यक्तिगत स्वार्थों और हितों की पूर्ति में गँवा देता है।"[21]

"तुम अपने ही में उलझे मत रहो। अपने विचार उस ओर लगाओ जो मानव के भाग्य पुनर्वास करे और उसकी आत्मा तथा हृदयों को पवित्र बनाये।"[22]

"जो ईश्वर के जन हैं उनकी कोई और अभिलाषा नहीं, सिवाय इसके कि विश्व का पुनरुत्थान हो, इसका जीवन उदात्त हो आझैर इसके लोगों के बीच नवस्फूर्ति का संचार हो।"[23]

1. ऊपर के उद्धरणों के आधार पर इन वाक्यों को पूरा करें :

क. हमारे अस्तित्वविहीनता से अस्तित्व में आने का उद्देश्य है कि हम ____________ ________________________________ और ____________ ________________________________।

ख. मानवमात्र की प्रतिष्ठा और विशिष्टता इस बात में है कि वह ____________ ________________________________ ________________________________।

ग. इससे बड़ी सुख–संतोष की बात और कुछ नहीं कि व्यक्ति अपने भीतर झांककर यह पाये कि ________________ से वह ________________________ ________________________________ बन सका।

घ. वह मनुष्य कितना सम्माननीय है जो ______________________ ______________________ उठ खड़ा होता है और कितना अधम और घृणित है यदि ______________________ आँखें मूंद लेता है और ______________________।

ङ. हमें अपने आप में ______________________ नहीं रहना चाहिये बल्कि ______________________ ______________________ ______________________ ह्रदय को पवित्र बनाने में लगाना चाहिऐ।

च. वे जो प्रभु के जन है उनकी कोई और ______________________ सिवाय इसके कि ______________________ ______________________ नवस्फूर्ति का संचार हो।

2. अब जबकि मानवता का एक संयुक्त परिवार में बंधना एक सच्ची संभावना है, विकास के इस चरण पर मानवता के समक्ष उपलब्ध महान अवसरों की अभिकल्पना रखना, एक व्यक्ति के उददेश्य के बोध को आकार देने और उसे राह दिखाने के लिये महत्वपूर्ण होता है। क्या आप बता सकते हैं, ऐसा कैसे होता है ?

____
____
____

3. यह ज्ञान कि मानवता दिव्य सभ्यता की ओर ले जाने वाले एक लंबे विकास पथ पर चल रही है, व्यक्ति के उददेश्य के बोध को प्रबलित करता है। क्या आप बता सकते हैं कि ऐसा क्यों है ?

____
____
____
____

भाग 13

जैसा पिछले खंड के अभ्यासों में सुझाया गया था, पवित्र लेखों में वर्णित व्यक्ति और समाज में बदलावों की प्रकृति की समझ ही युवाओं के उददेश्य के बोध का आधार है। उन रत्न समान गुणों को प्राप्त करने के लिये जो “उनके सत्य एवं गहनतम स्व की खान में छिपे हैं” और भौतिक तथा आध्यात्मिक रूप से समृद्ध विश्व सभ्यता के सृजन में योगदान के लिए उन्हें बहाउल्लाह द्वारा आहवान किये गये परिवर्तन के परिमाण को समझना और उसे सराहना भी होगा। आज विश्व में हर जगह लोग परिवर्तन

की आवश्यकता की बात कर रहे हैं। किन्तु हमें यह समझना होगा कि बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के सीधे प्रभाव से व्यक्ति और समाज के अस्तित्व में आने वाला परिवर्तन लोगों की कल्पना से भी कहीं बढ़कर होगा।

आईये, नीचे दिये गये उद्धरणों के आधार पर हम व्यक्ति के स्तर पर आने वाले परिवर्तन की व्यापकता की एक झलक भर पाने का प्रयास करें। बहाउल्लाह कहते हैं :

> **"एक ऐसी मानवजाति उभर कर सामने आएगी, जो अपने आचरण में अतुलनीय होगी, और निर्लिप्त भाव से, स्वर्ग तथा धरती पर, जल और मिट्टी से सृजित हर–एक तक पवित्रता का सम्बल बनेगी।"[24]**

एक उद्धरण में वे कहते हैं :

> **"कहो; बहा के लोगों में वह नहीं गिना जाता है, जो सांसारिक इच्छाओं का दास है अथवा अपना हृदय सांसारिक वस्तुओं की ओर लगाता है। मेरा सच्चा अनुयायी वह है जो यदि विशुद्ध सोने की घाटी में भी आ जाये तो बादल की तरह उसे सीधे पार कर जायेगा और पीछे मुड़कर भी नहीं देखेगा, न ठहरेगा। ऐसा व्यक्ति निश्चित रूप से मेरा भक्त है। उसके वस्त्रों से स्वर्ग के निवासी पावनता की सुरभि प्राप्त कर सकते हैं।"[25]**

एक अन्य उद्धरण में वे कहते हैं :

> **"वर्तमान समय में, ईश्वर को वह प्रिय है, जो संसार के लोगों में परिवर्तन ला सके, उन्हें ऐसी विश्वसनीयता, ऐसी निष्ठा, ऐसे अध्यवसाय, ऐसे कार्य और ऐसे चरित्र का आदर्श प्रस्तुत करना चाहिये जिससे विश्व के लोग लाभ उठा सकें।"[26]**

और वे बतलाते हैं :

> **"ऐसी शुद्ध और पवित्र आत्माओं की प्रत्येक श्वांस में अनन्त सम्भावनाएँ छिपी हैं। ये सम्भावनाएँ इतनी प्रबल है कि हर सृजित वस्तु पर अपना प्रभाव डालती हैं।"[27]**

अब्दुलबहा बतलाते हैं :

> **"ओ ईश्वर के मित्रों ! ऐसा शक्तिशाली प्रयास करो कि विश्व के सभी जन तथा निवासी, शत्रु तक भी, तुममें अपना भरोसा, विश्वास तथा आशा रख सकें। यदि कोई आत्मा सैकड़ों–हजार गलत कार्य भी करे, तथापि वह क्षमा की आशा कर सके तथा निराश एवं दुःखी न हो। ऐसा हो बहा के जनों का व्यवहार तथा आचरण। ऐसी है उच्चता के पथ की नींव। तुम्हारा व्यवहार तथा शिष्टाचार अब्दुल बहा के परामर्श के अनुकूल हो।"[28]**

पवित्र लेखों में वर्णित इस "मानव की नई जाति" के गुणों की भव्यता चमत्कृत कर देने वाली होगी और इसकी जिन क्षमताओं और शक्तियों की झलक भी हमने देखी वे अभिभूत कर देने वाली हैं। इन उद्धरणों को पढ़कर हमारी अलग–अलग ढंग से प्रतिक्रिया हो सकती है। हम यह सोच सकते हैं कि पवित्र लेखों में जो आदर्श प्रस्तुत किया गया है वह हमारी पहुँच से इतना परे है कि इसके अनुसार जीवनयापन के लिये अत्यधिक प्रयास करना व्यर्थ है, परिणाम स्वरूप सामान्य व्यवहार में उतर जाते हैं; इस प्रकार की अवस्था में अपने को यह समझने के लिये तैयार कर लेते हैं कि अनुचित व्यवहार से स्वयं

को दूर रखना ही पर्याप्त है। किन्तु जब व्यक्ति सुदृढ़ उददेश्य के बोध से संपन्न होता है तो ऐसे उद्धरण उसे निरन्तर प्रेरित करते रहेंगे और नयी ऊँचाइयों तक ले जायेंगे।

यह हमारा सौभाग्य है कि हमारे समक्ष बहाउल्लाह की शिक्षाओं के सम्पूर्ण आदर्श के रूप में अब्दुल बहा के व्यक्तित्व का प्रेरणा स्त्रोत भी उपलब्ध है। यह जानते हुए भी कि अब्दुल बहा का एक अपना अलग स्थान है तथा कोई व्यक्ति उस गरिमामय स्थान तक पहुँच पाने की कभी आशा भी नहीं कर सकता, उनमें हम समस्त बहाई आदर्शों को साकार देखते हैं और उनके द्वारा प्रस्तुत आचरण के मापदंड की दिशा में आगे बढ़ने को लालायित रहते हैं। इस पाठ्यक्रम का अध्ययन कर रहे आप और आपके मित्रों के लिये यह लाभदायक रहेगा कि आप ऊपर दिये गये उद्धरणों से वाक्यों को चुनें और अब्दुल बहा के जीवन के उन हिस्सों के बारे में सोचें जो इन गुणो को प्रकट करते हैं। उदाहरण के तौर पर जब हम "मोह के बंधनों से मुक्त पगो" का ध्यान करते हैं तो उनके जीवन की वे कथाएँ स्मरण हो आती है जो हमें बतलाती है कि सारी रचित वस्तुओं से अनासक्त जीवनयापन करने का अर्थ क्या है। जब हम "पावनता की सुगंध" के बारे में सोचते हैं तो यह पाते हैं कि उनके "वस्त्रों" से "स्वर्गिक सभासदों" को माधुर्य की सुगंध मिल जाती है और हमें वे कहानियाँ भी स्मरण हो आती हैं जो उनकी सर्वोत्कृष्ट पावनता का बखान करती हैं।

भाग 14

आईये, अब हम विचार करें रूपांतरण की उस गहन प्रक्रिया पर जिसे सामाजिक स्तर पर घटित होना है। बहाउल्लाह कहते हैं :

> **"मेरी सौगंध, वह दिन निकट आ रहा है जब हम विश्व और जो कुछ भी उसके भीतर है को समेट लेंगे, और उसके स्थान पर एक नई व्यवस्था बिछा देंगे।"[29]**

वे आगे कहते हैं :

> **"संसार का संतुलन इस परम महान, इस नई विश्व व्यवस्था के तरंगित कर देने वाले प्रभाव से अस्त–व्यस्त हो गया है। मनुष्य का व्यवस्थित जीवन इस अद्भुत, इस विस्मयकारी प्रणाली की संस्था द्वारा उद्वेलित हो उठा है, एक ऐसा उद्वेलन जिसे नश्वर नेत्रों ने कभी नहीं देखा।"[30]**

और अब्दुल बहा पुष्टि करते हैं :

> **"... विश्व को धार्मिकता और न्याय घेर लेंगे; शत्रुता और घृणा विलुप्त हो जाएगी; मनुष्यों, नस्लों और राष्ट्रों के बीच जो कुछ भी विभाजन का कारण है, वह मिटा दिया जाएगा; और जो एकता, सौहार्द और सद्भाव सुनिश्चित करता है उसे बढ़ावा दिया जाएगा। लापरवाह लोग सजग हो उठेंगेय दृष्टिहीन देखने लगेंगे, बहरे सुनने लगेंगे, मूक बोलने लगेंगे, रोगी स्वस्थ हो जायेंगे और मृत उठ खड़े होंगे। युद्ध के स्थान पर शांति स्थापित होगी, शत्रुता पर प्रेम की विजय होगी, लड़ाई–झगड़े और संघर्ष के मूल कारण पूरी तरह समाप्त हो जायेंगे और मानव जाति को सच्चा सुख प्राप्त होगा। यह विश्व, स्वर्गिक साम्राज्य का दर्पण बन जायेगा; धरा दिव्यता का सिंहासन बन जाएगी।"[31]**

एक अन्य उद्धरण में वे स्पष्ट करते हैं :

"मानवजाति के आरम्भिक इतिहास के दौरान जो वस्तुएं मनुष्य के लिये आवश्यक थीं वे आज के समय के नये दौर की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकतीं। मानवजाति आज अपने आरम्भिक प्रशिक्षण और सीमाओं से बहुत आगे निकल आयी है। मनुष्य को आज नये गुणों, क्षमताओं, नैतिक मूल्यों और शक्तियों से विभूषित होना होगा। नई कृपाएँ, आशीष और परिपूर्णताएँ उसकी प्रतीक्षा में हैं और उस पर उतरने भी लगी हैं।"[32]

और वे आगे आवाहन करते हैं :

"... हमें हृदय और आत्मा से कठिन परिश्रम करना होगा ताकि विश्व में छाया यह अंधकार दूर हो सके, समस्त क्षितिजों पर आभा साम्राज्य का आलोक दीप्त हो उठे, मानवजाति आलोकित हो उठे, मानव के हृदय रुपी दर्पण में प्रभु की छवि प्रतिबिम्बित हो, प्रभु के विधान भलीभाँति स्थापित हों और विश्व के समस्त क्षेत्र ईश्वर की समान सुरक्षा में शांति, और सुख–चैन का आनंद उठायें।"[33]

एक व्यक्ति के नाते हमारे लिये अस्तित्व में आने वाली निर्धारित सभ्यता की पूर्ण भव्यता की कल्पना कर पाना भी कठिन होगा। वास्तव में इसकी विशेषताओं का वर्णन भी शायद ही सम्भव हो। वांछित रूपांतरण की व्यापकता और व्यापकता से हम इतने अभिभूत भी नहीं हो सकते कि यह मान लें कि यह हमारे बिना किसी प्रयास के करिश्माई ढंग से अस्तित्व में आ जायेगा। बस हमारी दृष्टि बहाउल्लाह की विश्व व्यवस्था पर केंद्रित होनी चाहिये और हमें समझना चाहिये कि हमारा छोटे से छोटा कार्य भी इसकी संरचना में योगदान कर सकता है। समाज में आने वाले इस परिवर्तन की व्यापकता पर आगे विचार के लिए नीचे दिये शब्दों में से सही शब्द चुनकर वाक्यों के खाली स्थानों को भरें :

नष्ट, समेट, बिछा, घेर, विलुप्त, समाप्त, प्रकट, स्थापना,
विजय, उपलब्ध, दर्पण, दूर, आलोकित, दीप्त, स्थापित, आनंद

क. वह दिन निकट आ रहा है जब यह विश्व और इसकी समस्त वस्तुएँ ____________ ली जायेगी।

ख. वह दिन निकट आ रहा है जब वर्तमान व्यवस्था के स्थान पर एक नई विश्व व्यवस्था ____________ दी जायेगी।

ग. विश्व को न्याय और धर्मपरायणता ____________ लेंगे।

घ. शत्रुता और घृणा ____________ हो जायेंगे।

ङ. मनुष्यों, नस्लों और राष्ट्रों के बीच विभाजन के सभी कारण ____________ हो जायेंगे।

च. जो एकता भाई–चारे और सौहार्द को सुनिश्चित करता है उसे ____________ दिया जाएगा।

छ. युद्ध के स्थान पर शांति की ____________ होगी।

ज. शत्रुता पर प्रेम की ______________________ होगी।

झ. लड़ाई झगड़े और संघर्ष के कारण पूरी तरह ______________________ हो जायेंगे।

ञ. सच्ची प्रसन्नता ______________________ होगी।

ट. यह विश्व स्वर्गिक साम्राज्य का ______________________ बन जायेगा।

ठ. विश्व में छाया अंधकार ______________________ होगा।

ड. मानवजाति ______________________ हो उठेगा।

ढ. आभा साम्राज्य का आलोक समस्त क्षितिजो पर ______________________ हो उठेगा।

ण. प्रभु के विधान भलीभांति ______________________ हो।

त. विश्व के समस्त क्षेत्र प्रभु की समान सुरक्षा में शांति और सुख–चैन का ______________ उठायेंगे।

भाग 15

पिछले दो भागों में दिये गये उद्धरण और अभ्यास हमें उस गहन परिर्वतन के बारे में अंर्तदृष्टि देते हैं जो बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के परिणामस्वरूप व्यक्ति और समाज के स्तर पर घटित होंगे। उनके द्वारा परिकल्पित परिवर्तन की व्यापकता पर आगे विचार करने के लिये नीचे दिये गये वक्तव्यों को पढ़ें। प्रत्येक में व्यक्ति या समाज के न्याय, निष्पक्षता या प्रेममय दयालुता जैसे कुछ प्रशसंनीय गुणों का वर्णन है। पूर्व भागों के उद्धरणों से इस बारे में कोई शंका नहीं रह जाती है कि बहाउल्लाह ने व्यक्तिगत और सामूहिक आचरण के अधिक ऊँचे आदर्शों के लिये मनुष्य जाति का आह्वान किया है। नीचे दिये गये प्रत्येक वाक्य को इस तरह दुबारा लिखने का प्रयास करें कि ये बहाउल्लाह के प्रकटीकरण द्वारा स्थापित मापदंडों को अधिक स्पष्टता से प्रकट कर सकें। आपकी सहायता के लिये पहले कथन को उदाहरण के रूप में दिया जा रहा है।

क. प्रत्येक व्यक्ति को ईर्ष्या की अपनी भावना पर नियंत्रण रखना चाहिये और उसकी गिरफ्त में नहीं आना चाहिये।

ख. हमें अपने हृदय से ईर्ष्या का नामोनिशान मिटा देना चाहिये तथा दूसरों की उपलब्धियों में वास्तविक आनंद का अनुभव करना चाहिये।

क. अपने प्रत्येक मिलने वाले के प्रति शिष्ट होना पर्याप्त है, चाहे वे मित्र हों या अजनबी।

ख. ____

____

क. ईश्वर ने हमें जो धन–सम्पदा दी है, उसके लिये हमें कृतज्ञ होना चाहिये और मांगे जाने पर सदैव सेवा कार्यों में योगदान के लिये तत्पर होना चाहये।

ख. ____

____

क. किसी से भी लड़ाई–झगड़े में पड़ने से बचने का प्रयास करना चाहिये।

ख. ____

____

क. एक नैतिक जीवन जीने का अर्थ है कि हम किसी को भी हानि न पहुँचायें।

ख. ____

____

क. शांतिपूर्वक जीने के लिये हमें विविध संस्कृति, पृष्ठभूमि और धर्मों के लोगों को सहन करना सीखना चाहिये।

ख. ____

____

क. लोगों को अपने अधिकारों के लिये उठना सीखना होगा।

ख. ____

____

क. यह सरकारों के लिये आवश्यक है कि भविष्य के नेताओं के मन–मस्तिष्क को प्रशिक्षित करने वाले स्कूलों को सर्वोत्तम कार्यक्रम तैयार करने के लिये आवश्यक संसाधन उपलब्ध करायें।

ख. ____

____

क. अपराधियों के पुनर्वास के लिये कारागारों को आधुनिक बनाया जाना चाहिये।

ख. ____

____

अब आपने जो वाक्य लिखें हैं उन्हें नीचे दिये गये उद्धरण के संदर्भ में देखें । पहला उद्धरण हमें इस बात पर विचार करने को कहता है कि हमारे हृदयों को भौतिक लिप्साओं से कितना परिशुद्ध होना चाहिये :

"हे धरती के पुत्र ! वस्तुतः यह समझ ले कि ऐसा हृदय जिसमें लेशमात्र भी ईर्ष्या के चिह्न अभी तक समाए हुए हैं मेरे अनन्त लोक में प्रवेश नहीं करेगा और न ही पवित्रता के मेरे साम्राज्य से उठती हुई सुवासों की सुमधुर सुरभि को वह अपने भीतर ले पाएगा।"[34]

एक दूसरे के प्रति आचरण के बारे में नीचे दिया गया उद्धरण कुछ अंर्तदृष्टि देता है :

"प्रेम और स्नेहिल दयालुता की भावना इतनी प्रबल हो कि अपरिचित अपने लिये एक मित्र पा जाये और शत्रु सच्चा भाई, उनके बीच में किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव न रहे।"[35]

यह उद्धरण देने के प्रति उचित अभिवृत्ति के बारे में बतलाता है :

"हे धूल की संतानों ! धनिकों को निर्धन की अर्द्धरात्रि की आहों से परिचित कराओ, कहीं प्रमाद उन्हें विनाश के मार्ग पर न पहुँचा दे और उन्हें 'धन वैभव के वृक्ष' से विहीन न कर दे। दान देना तथा उदार रहना मेरे गुण हैं, कल्याण हो उसका जो स्वयं को मेरे गुणों से अलंकृत करता है।"[36]

दूसरों के प्रति हमारे पारस्परिक आचरण के बारे में हम पढ़ते है :

"प्रेम दूत बनो तथा सम्पूर्ण मानवजाति के प्रति दयालु बनो। मानवपुत्रों से प्रेम करो और उनके दुःखों को बांटो। शांति को बढ़ावा देने वालों के आत्मीय बनो, उनसे मैत्री करो, स्वयं को उनके विश्वास के योग्य बनाओ। हर एक के कष्टों के लिए मरहम बनो, स्वयं को प्रत्येक रोग के लिये औषधि बनाओ। सभी आत्माओं को एक सूत्र में आबद्ध करने का प्रयास करो। उन्हें आवश्यक मार्गदर्शन उपलब्ध कराओ। प्रभु की प्रार्थना में व्यस्त रहो और लोगों को सही राह दिखाने को तत्पर रहो। उन्हें आवश्यक शिक्षण प्रदान करो और अपने मुख को प्रभु प्रेम की आभा से दीप्त होने दो। स्वयं को एक क्षण का भी विश्राम न दो, आराम की एक श्वास तक स्वीकार न करो। इस तरह तुम प्रभु प्रेम के चिह्न और प्रतीक तथा उनकी महिमा के ध्वज बन सकोगे।"[37]

और नैतिक आचरण के संदर्भ में यह उद्धरण हम पढ़ते है :

"वे दिन बीत चुके हैं जब व्यर्थ पूजा प्रशंसित मानी जाती थी। अब समय आ गया है जब विशुद्ध पावन कर्मों में प्रकट पवित्र भावना ही उस सर्वाधिक सर्वोच्च शक्ति के सिंहासन तक पहुँच सकती है और उसे स्वीकार्य हो सकती है।"[38]

विभिन्न पृष्ठभूमियों के लोगों से व्यवहार के लिये यह उद्धरण हमें अंर्तदृष्टि प्राप्त कराता है :

"विश्व के समस्त राष्ट्रों, समस्त जातियों और समस्त धर्मों के साथ परम सत्यवादिता, न्याय, विश्वसनीयता, दयालुता, सौहार्द और मैत्री भाव के साथ रहो; ताकि सम्पूर्ण जगत का अस्तित्व बहाउल्लाह की महिमा के आनंदातिरेक से परिपूर्ण हो उठे; ताकि अज्ञान, शत्रुता, घृणा और द्वेष का अंत हो, और संसार के राष्ट्रों और मानव कुटुम्बियों के बीच मौजूद वैमनस्य का अंधकार दूर होकर एकता और भाईचारे का प्रकाश फैले। यदि अन्य लोग और राष्ट्र तुमसे विश्वासघात करें तो उनमें निष्ठा और भरोसा व्यक्त करो, वे तुम्हारे प्रति अन्यायी हों तो उनके प्रति न्याय करो, यदि वे तुमसे अलग–थलग रहें तो उन्हें अपने प्रति आकृष्ट करो, यदि वे शत्रुता प्रकट करें तो उनसे मित्रता करो, वे तुम्हारे जीवन को विषाक्त कर दें तो उनकी आत्मा में मिठास भर दो, यदि वे तुम्हें घाव दें तो उनके ज़ख्मों पर मरहम लगाओ। ये गुण निष्ठावान के हैं ! ये एक सत्यवादी के गुण हैं।"[39]

नीचे दिया गया उद्धरण यह समझने में आपकी मदद करेगा कि किस तरह मानवजाति की एकता की भावना सामाजिक सम्बंधों को प्रभावित करती है :

"मैं आशा करता हूँ कि तुम में से प्रत्येक व्यक्ति न्याय का पक्षधर बनेगा, और अपने विचारों को मानवजाति की एकता पर केंद्रित करेगा; तुम कभी भी अपने पड़ोसी का अहित नहीं करोगे और न ही किसी के विरुद्ध बुरा बोलोगे, तुम सभी लोगों के अधिकारों का सम्मान करोगे और अपने हितों से बढ़कर दूसरों के हितों की चिन्ता करोगे।"[40]

निम्नलिखित उद्धरण शिक्षा की उपलब्धता के विषय को संबोधित करता है :

"बहाउल्लाह ने कहा है कि अज्ञान और शिक्षा का अभाव मनुष्य मनुष्य के बीच विभेद का मुख्य कारण है इसलिये सभी को शिक्षण और प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिये। इसके द्वारा ही आपसी समझदारी की कमी दूर होगी और मानवजाति की एकता सुदृढ़ होगी। सार्वभौमिक शिक्षा एक सार्वभौमिक विधान है।"[41]

न्याय के प्रशासन के बारे में हम निम्नलिखित पढ़ते है :

"दिव्य सभ्यता समाज के प्रत्येक सदस्य को इस तरह प्रशिक्षित करेगी कि, कुछेक नगण्य लोगों को छोड़कर, कोई भी कभी किसी अपराध में लिप्त नहीं होगा। हिंसक और प्रतिरोधक उपायों से अपराध रोकने और लोगों को प्रशिक्षित कर अपराध को रोकने में बहुत बड़ा अंतर है। लोगों को प्रबुद्ध व आध्यात्मिक बनाया जाये तो वे बिना किसी भय व बदले के अपनी समस्त आपराधिक गतिविधियाँ रोक देंगे। वास्तव में वे अपराध में लिप्त होने को बहुत बड़ा कलंक मानेंगे जो स्वयं अपने आप में सबसे कठोर दण्ड है।"[42]

उपरोक्त उद्धरण पर विचार करने के पश्चात आप अपने लिखे कथनों की समीक्षा करना चाह सकते हैं और विचार कर सकते हैं कि आप उन्हें और विस्तार कैसे दे सकते हैं।

भाग 16

हमने दोहरे नैतिक उददेश्य के विषय में बातें की जो व्यक्ति को अपने आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास का दायित्व लेने और समाज के हित में योगदान देने को प्रेरित करता है। हमने देखा कि उद्देश्य का यह बोध, जो आज युवाओं के लिये अत्यधिक आवश्यक है, पवित्र लेखों में परिकल्पित व्यक्ति और समाज के रूपांतरण की व्यापकता और प्रकृति को समझ लेने से किस तरह और सुदृढ़ होता है। हमें यह भी अच्छी तरह समझना होगा कि परिवर्तन की ये दो प्रक्रियाएँ परस्पर गहराई से जुड़ी हैं। अपनी क्षमताओं को बढ़ाना, साथ ही समाज के हित के लिए कार्य करना, इन दोनों को अलग–अलग नहीं किया जा सकता क्योंकि एक व्यक्ति की नैतिक मान्यताएँ और व्यवहार मिलकर ही उसका सामाजिक वातावरण सृजित करते हैं और बदले में इससे नितांत प्रभावित होते हैं। धर्मसरंक्षक की ओर से लिखे गये एक पत्र में कहा गया है :

"हम मानव हृदय को उसके वाह्य वातावरण से पृथक नहीं कर सकते और न ही यह कह सकते हैं कि इनमें से एक के सुधार से सारी चीज़े सुधर जायेंगी। विश्व के साथ मनुष्य जैविक रूप से जुड़ा है। व्यक्ति का आंतरिक जीवन उसके वातावरण को भी प्रभावित करता है और स्वयं भी उससे गहनता से प्रभावित होता है। ये एक दूसरे पर कार्य करते हैं और मनुष्य के जीवन के सारे लागू परिवर्तन इनकी परस्पर प्रतिक्रियाओं का ही परिणाम है।"[43]

उपर दिये गये उद्धरण के आधार पर निर्णय करें कि क्या नीचे दिये गये कथन सही हैं :

____ एक व्यक्ति में परिवर्तन तभी सम्भव है जब समाज पूरी तरह सुधर जायेगा।

____ सामाजिक बुराइयाँ पूर्णतया तभी विलुप्त होंगी जब इसका प्रत्येक सदस्य आध्यात्मिक बन जायेगा।

____ व्यक्ति चाहे कैसा भी आचरण क्यों न करें जब न्यायपूर्ण कानून बनेंगे तो समाज से उत्पीड़न दूर हो जायेगा।

____ समाज तभी उत्पीड़न से मुक्त होगा जब इसका प्रत्येक सदस्य न्यायशील बनने का प्रयत्न करेगा।

____ यदि समाज में लागू कानून प्रणाली पक्षपातपूर्ण हो तो भी उसके सभी सदस्य न्यायपूर्ण हो सकते हैं।

____ एक व्यक्ति का आचरण समाज के वातावरण को प्रभावित करता है।

____ व्यक्तियों को निष्पक्ष व्यवहार करने तथा सत्य की खोज करने में शिक्षित कर तथा न्यायपूर्ण ढांचों के निर्माण का प्रयास करने का परिणाम होगा एक न्यायपूर्ण समाज।

____ कोई भी अपने सामाजिक वातावरण के प्रभावों से बच नहीं सकता।

____ अपनी आध्यात्मिक शक्तियों की सहायता से ही मनुष्य सामाजिक वातावरण के नकारात्मक प्रभावों का सामना कर सकता है।

____ यदि सभी लोग मनुष्यजाति की एकता को स्वीकार कर लें तो सारे पूर्वाग्रह मिट जायेंगे।

____ समस्त पूर्वाग्रहों का अंत तभी होगा जब समाज अपने विधानों और संस्थाओं में भेदभाव का नामोनिशान मिटा दे।

____ न्यायपूर्ण विधान लागू करने तथा लोगों को सत्य की खोज करने, प्रत्येक से प्रेम और भाईचारे से जुड़ने का प्रशिक्षण देकर ही हर प्रकार का पूर्वाग्रह मिटाया जा सकता है।

____ जब प्रत्येक व्यक्ति विश्वास करेगा कि मानवजाति एक है, तभी एकता स्थापित होगी।

____ विश्व में एकता की स्थापना के लिये आवश्यक है व्यक्ति और सामाजिक ढ़ाँचे का रूपांतरण।

भाग 17

पिछले भाग में प्रस्तुत विचार फिर हमें सेवा के प्रश्न पर वापस ले आते हैं क्योंकि सेवा के क्षेत्र में ही हम अपनी क्षमताओं का विकास करते हैं और समाज में परिवर्तन को प्रभावित करते हैं। इस बात को और स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं है कि सामाजिक रूपांतरण की प्रक्रिया में भाग लेना ही सेवा को समर्पित जीवन को अभिव्यक्ति देना है। हालाँकि जिस तरीके पर अधिक विचार करने की आवश्यकता है

वह है सेवा तथा व्यक्ति के बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास में संबंध। नीचे कुछ क्रियाकलापों की सूची दी गई है। इनमें से प्रत्येक को करने तथा इसकी प्रभावकारिता सुनिश्चित करने के लिये अनेक आध्यात्मिक गुणों को साथ होने की आवश्यकता होती है। इस विशिष्ट अभ्यास को करने के लिये, एक या दो गुणों तथा अभिवृत्तियों को चुनें, जो प्रत्येक क्रियाकलाप के लिये विशेषकर प्रासंगिक लग रहे हों और इसको बताने का प्रयास करें कि वे किस प्रकार इसको करने की एक व्यक्ति की क्षमता में योगदान देते हैं।

क. एक गांव अथवा पड़ोस में नियमित भक्तिपरक सभा का आयोजन करना : ____________

____

____

ख. मित्रों तथा पड़ोसियों के गृह भ्रमण हेतु निरंतर चलते कार्यक्रम में भाग लेना ताकि प्रभुधर्म की शिक्षाओं से ली गई आध्यात्मिक विषयवस्तुओं पर विचार विमर्श और मित्रता के संबंधों को प्रगाढ़ किया जा सके : ____

____

____

ग. पड़ोस अथवा गांव में बच्चों की आध्यात्मिक शिक्षा की नियमित कक्षाओं का आयोजन करना :

____

____

____

घ. एक लंबी अवधि तक एक किशोर समूह के प्रयासों में, इनकी गतिविधियों का मार्गदर्शन कर रहे अनुप्रेरक के साथ सहायता प्रदान करना : ___________________________

____

____

ङ. संस्थान द्वारा प्रवर्तित शैक्षिक कार्यक्रमों के किशोरों के माता–पिता का नियमित भ्रमण करना और उन्हें उनके पुत्रों और पुत्रियों के विकास पर केंद्रित विषयवस्तुओं पर बातचीत में शामिल करना : ____

____

ऊपर दिये अभ्यास ने यह सोचने में हमारी मदद की है कि आध्यात्मिक गुण तथा अभिवृत्ति किस प्रकार सेवा कार्य को करने में एक व्यक्ति की क्षमता में योगदान देते हैं। परन्तु यह भी उतना ही सही है कि सेवा करने पर व्यक्ति इन गुणों को विकसित तथा सुदृढ़ करता है। नीचे कुछ आध्यात्मिक गुण दिये गये हैं जिन्हें हम सब स्वयं में विकसित करने का प्रयास कर रहे हैं। प्रत्येक समूह के लिये ऊपर दिये गये क्रियाकलापों में से एक को चुनें और बतायें कि यह क्रियाकलाप कर्ता के गुणों के विकास में किस प्रकार योगदान करता है।

क. सत्यवादिता, विश्वासपात्रता और न्याय : ________________________________

____

ख. सहनशीलता और दयालुता : ______

ग. पवित्रता, निष्ठा और कांतिवान : ______

घ. साहस, ईश्वर में भरोसा, और विनम्रता : ______

ङ. ईश्वर की इच्छा के प्रति स्वीकारिता एवं समर्पण : ______

भाग 18

सेवा हमारे आस्तित्ववान होने से अंतरंग रूप से जुड़ी है। जब हम निःस्वार्थ सेवा की भावना से सक्रिय होते हैं तो प्रत्येक व्यवहार जो हम करते हैं, समुदाय के सदस्य के रूप में, हमारी प्रत्येक गतिविधि व्यावसायिक जीवन में हमारी प्रत्येक गतिविधि, अन्य लोगों के साथ हमारा सम्पर्क, सब इससे प्रभावित होते हैं। तथापि हम कोई भी सेवा कर रहे हों, हम सदैव ही इस तथ्य के प्रति सजग रहते हैं कि विश्व जनों हेतु बहाउल्लाह के संदेश के प्रसार के लिये एक सुव्यवस्थित योजना है, एक संदेश जो मानवता की एकता की घोषणा करता है, इसके एक होने की मांग करता है, विधि–विधान तथा आध्यात्मिक एवं सामाजिक शिक्षायें उपलब्ध कराता है जो अकेले ही भविष्य के समाज के ऐसे मूलतः भिन्न प्रतिमान स्थापित कर सकता है जिन्हें पहले कभी देखा ही नहीं गया। स्वयं अब्दुल बहा द्वारा प्रदत्त यह योजना विश्व के आध्यात्मिक पुर्ननिर्माण से कम नही चाहती। जैसे–जैसे यह विभिन्न निश्चित स्तरों पर सतत

प्रकट हो रही है, इसे लागू करने में अधिकाधिक लोग भाग ले रहे हैं, समाज के परिचित संघर्षो का एक दृश्यमान विकल्प उभर रहा है। इस दैवीय योजना के प्रति हमें स्वयं को समर्पित करना चाहिये। इसे धर्म संरक्षक संदर्भित करते हैं "सर्वशक्तिशाली योजना जो महानतम नाम की सर्जनात्मक शक्ति से प्रकट हुई"। वह बताते है कि यह "अग्र प्रयाण कर रही है",

"... हर गुज़रते दिन के साथ गति पकड़ती हुई, विभिन्न देशों में भिन्न–भिन्न लोगों और नस्लों के बीच समस्त व्यवधानों को तोड़ती हुई, अनवरत अपने कल्याणकारी कार्यक्रमों का दायरा अप्रतिरोध्य रूप से बढ़ाती हुई और समग्र पृथ्वी पर आध्यात्मिक विजय की दिशा में आगे बढ़ती हुई अपनी अंतर्निहित शक्तियों के सतत प्रबलतर संकेतों को प्रकट कर रही है ...।"[44]

हम जानते है, दिव्य योजना के माध्यम से बहाउल्लाह के प्रकटीकरण की चेतना विश्व के समस्त क्षेत्रों को अनुप्राणित करेगी, व्यक्ति और समाजिक जीवन में परिवर्तन लायेगी। शोग़ी एफेन्दी पुष्टि करते हैं कि

"... मानवजाति के लिये स्वयं ईश्वर द्वारा रचित इस योजना के विकास–क्रम का अंतिम चरण, एक नयी विश्व व्यवस्था के जन्म का संकेत सिद्ध होगा। अपनी व्यापकता, अपनी प्रकृति और अपनी क्षमता में अतुलनीय, मानवजाति के इतिहास में एक ऐसी सभ्यता, जिसे भावी पीढ़ी एक स्वर से बहाउल्लाह के युगधर्म के स्वर्णिम युग का सर्वोत्तम प्रतिफल मानेगी।"[45]

दैवीय योजना का अनावृत होता प्रत्येक चरण प्रभुधर्म–प्रमुख द्वारा प्रारम्भ वैश्विक योजनाओं में किसी एक द्वारा चिन्हित होता है। प्रत्येक योजना की की कुछ आवश्यकताएं होती हैं और पिछली योजना में प्राप्त उपलब्धियों और सीखे गए पाठों पर आगे निर्माण करती है। जिस उद्यम में हम लगे हुए हैं, उसमें "विभिन्न सिद्धांत, अवधारणाएं और सार्वभौमिक प्रासंगिकता की रणनीतियाँ" क्रमिक योजनाओं पर किए गए प्रयासों के माध्यम से "कार्रवाई के एक ढांचे" में सुघटित हो गयी हैं। यही वह ढांचा है जो हमारी सामूहिक कार्रवाई को आकार देता है और यह सुनिश्चित करता है कि हम जो करते हैं उसमें सुसंगत रहें। आपके पास भविष्य के पाठ्यक्रमों में इस विकसित होते ढांचे की प्रकृति का पता लगाने का अवसर होगा। अभी के लिए, यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि इसका अस्तित्व "व्यक्तियों के बढते नाभिक" को स्थानीय स्तर पर जन समुदाय को "नई विश्व व्यवस्था के लक्ष्य की ओर" गति प्रदान करने में सक्षम बनाता है। इस प्रकाश में पूरे विश्व में 2013 में आयोजित युवा सम्मेलनों की श्रृंखला को संबोधित विश्व न्याय मंदिर का संदेश स्पष्ट करता है :

"कई दशकों के बाद, बहाउल्लाह के प्रकटीकरण की पर्याप्त समझ प्राप्त करने की और उसमें निहित सिद्धांतों को लागू करने की इस व्यापक समुदाय की विश्व–व्यापी मेहनत के परिणाम स्वरूप कार्य की रूपरेखा उभर कर आयी है जो अनुभव के साथ परिशुद्ध हुई है। आप भाग्यशाली हैं कि आप इसकी पद्धतियों और तरीकों से परिचित हैं, जो अब बहुत अच्छी तरह से स्थापित हो चुके हैं। इनके क्रियान्वयन में दृढ़ रहने से आप में से कई ने स्वयं अब तक इन दिव्य शिक्षाओं की समाज–निर्माणकारी शक्ति के चिह्न देखे होंगे। जिस सम्मेलन में आप भाग लेंगे, उस में आप को उस योगदान के संबंध में विचार करने के लिये आमंत्रित किया जा रहा है जो हर उस युवा द्वारा दिया जा सकता है, जो बहाउल्लाह के आह्वान का प्रत्युत्तर देना चाहता है और उस शक्ति को प्रसारित करने में सहायता करना चाहता है।"[46]

इसी संदेश में आगे कहा गया है :

"सामूहिक कार्य से उत्पन्न होने वाली सम्भावनाएँ समुदाय–निर्माण के कार्य में विशेष रूप से स्पष्ट दिखायी देती हैं, जो एक ऐसी प्रक्रिया है जो दुनिया भर में ऐसे कई क्लस्टरों में, तथा मुहल्लों और गाँवों में संवेग प्राप्त कर रही है जो सघन गतिविधि के केन्द्र बन चुके हैं। ऐसे परिवेशों में

काम के मामले में युवा प्रायः सबसे आगे होते हैं – न केवल बहाई युवा, बल्कि ऐसी ही सोच रखने वाले अन्य युवा भी, जो बहाईयों द्वारा शुरू किये गये कार्य के सकारात्मक प्रभावों को देख सकते हैं तथा एकता और आध्यात्मिक परिवर्तन की मूलभूत दूरदृष्टि को समझ सकते हैं। ऐसे परिवेशों में, ग्रहणशील ह्रदयों के साथ बहाउल्लाह का प्रकटीकरण साझा करने की, तथा आज के विश्व के लिये उनके संदेश के निहितार्थ को समझने का प्रयत्न करने की अनिवार्यता गहराई से महसूस की जा रही हैं। जब समाज में इतना कुछ निष्क्रियता और उदासीनता को आमंत्रित करता है या, इससे भी बदतर, स्वयं अपने और दूसरों के लिये हानिकारक आचरण को प्रोत्साहन देता है, तो उन लोगों द्वारा एक सुस्पष्ट विपरीतता पेश की जाती है जो सामुदायिक जीवन के एक आध्यात्मिक रूप से समृद्ध करने वाले ढाँचे का विकास करने और उसे बनाए रखने के लिए एक जन समुदाय की क्षमता बढ़ा रहे हैं।"[47]

एक अन्य संदेश में विश्व न्याय मन्दिर बहाई युवाओं और सेवा के जीवन की ऊंचाइयों को छूने में उनके साथ सम्मिलित होने की इच्छा रखने वालों की दृष्टि विस्तारित करते हैं :

"युवा अनुयायियों की प्रत्येक पीढ़ी के समक्ष मानवजाति के भविष्य के लिए योगदान करने का एक अवसर आता है, जो उनके जीवन काल के संदर्भ में अद्वितीय होता है। वर्तमान पीढ़ी के लिए वह समय आ गया है जब वे विचार करें, प्रतिज्ञाबद्ध हों, स्वयं को सेवामय जीवन में समर्पित कर देने के लिए, जिससे प्रचुरता में आशीष प्रवाहित होंगे। पावन देहरी पर अपनी प्रार्थनाओं में हम 'प्राचीनतम सौन्दर्य' से निवेदन करेंगे कि वे पथ से विचलित और दिग्भ्रमित मानवजाति के बीच से, वे स्पष्ट दृष्टि वाली पवित्र आत्माओं को अलग करें : ऐसे युवा जिनकी निष्ठा और ईमानदारी दूसरों के दोषों पर ध्यान केन्द्रित करके कमज़ोर नहीं पड़ती, और जो अपनी स्वयं की कमियों के कारण गतिहीन नहीं होते; ऐसे युवा जो मार्गदर्शन के लिए 'मास्टर' की ओर उन्मुख होंगे तथा 'उन लोगों को अंतरंग मित्रों के दायरे में लायेंगे जो बाहर कर दिये गये हैं'; ऐसे युवा, जिनकी समाज की असफलताओं की समझ उन्हें इसके परिवर्तन की दिशा में काम करने को प्रेरित करेगी, न कि इससे दूर भागने को, ऐसे युवा जो किसी भी कीमत पर, असमानता के हर रूप को अस्वीकार करेंगे और हर सम्भव श्रम करेंगे कि 'न्याय का प्रकाश पूरी पृथ्वी पर अपनी कांति फेला सके"[48]

उपरोक्त उद्धरणों से इस बात में कोई संदेह नहीं रह जाता कि आज युवाओं के लिए अनिवार्य है कि वे दिव्य योजना की सेवा को समर्पित निष्ठावान लोगों की अग्रिम कतार तक पहुँचे। इस भाग के समापन के लिये लैटिन अमेरिकी देशों मे 2000 में आयोजित युवा सम्मेलन को सम्बोधित विश्व न्याय मन्दिर के इस संदेश पर मनन करना सहायक होगा :

"युवाओं की आपकी पीढ़ी को सामाजिक कार्यों के निष्पादन का दायित्व स्वीकार करने पर भ्रमित करने वाले विरोधाभासों का सामना करना पड़ेगा। एक ओर तो आपका क्षेत्र बौद्धिक, तकनीकी और आर्थिक क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियों पर गर्व कर सकता है, लेकिन दूसरी ओर यह व्यापक निर्धनता को कम करने मेंया हिंसा के उस उफनते समूह को रोकने में, जो लोगों को डुबो देने का खतरा बनकर उपस्थित है, नाकाम रहा है। क्यों ? और यह प्रश्न सीधे सहज पूछा भी जाना चाहिये कि क्या यह समाज अपनी तमाम सम्पदा के बावजूद अपने ताने–बाने को छिन्न–भिन्न कर रहे अन्याय को अलग–थलग कर पाने में शक्तिहीन हो गया है ?

"इस प्रश्न का उत्तर, जैसा विवादास्पद इतिहास के दशक साक्षी हैं, न तो राजनैतिक आवेगों में है, न ही वर्गों के परस्पर विरोधी हितों में और न ही तकनीकी उपलब्धियों में। इसके लिये आवश्यक है एक आध्यात्मिक रूपान्तरण, जो राजनीतिक, आर्थिक और तकनीकी यंत्रों के सफल और सुचारू संचालन की पूर्व–शर्त है। किन्तु यहाँ आवश्यकता है एक उत्प्रेरक की। विश्वास

करें कि अपनी छोटी संख्या के बावजूद, आप ही वह माध्यम हैं जिसके द्वारा ही ऐसा उत्प्रेरक उपलब्ध कराया जा सकता है।"[49]

1. यह पिछला संदेश पूछता है कि बौद्धिक, तकनीकी और आर्थिक सम्पदा से परिपूर्ण समाज क्यों छिन्न भिन्न करते अन्यायों को दूर करने में असमर्थ रहा है, यह संकेत करता है कि इसका उत्तर राजनीतिक आवेगों, वर्ग हितों के विरोधाभासी कथनों या तकनीकी उपलब्धियों में नहीं पाया जा सकता। आप उस समाज के बारे में सोचें जिसमें आप रहते हैं और नीचे दिये गये प्रत्येक के लिए एक उदाहरण दें :

   क. एक राजनैतिक आवेग जो समाज को चित्रित करता है : ____________________

   ____

   ____

   ____

   ख. समाज में वर्ग हितों को लेकर विरोधाभासी कथन : ____________________

   ____

   ____

   ____

   ग. एक तकनीकी उपलब्धि जिसका समाज ने अनुसरण किया : ____________________

   ____

   ____

   ____

2. विश्व न्याय मन्दिर के अनुसार समाज में बुराईयों को समाप्त करने के प्रयासों में राजनीतिक, आर्थिक और तकनीकी यंत्र के सफल संचालन के लिए क्या पूर्वापेक्षायें है ? ____________

   ____

3. विश्व न्याय मन्दिर के अनुसार समाज के आध्यात्मिक पुनरुत्थान के लिये क्या आवश्यक है ?

   ____

   ____

4. विश्व न्याय मन्दिर ने प्रभुधर्म के संदेश को मानवता तक पहुंचाने के लिये किसे माध्यम बताया है ?

   ____

   ____

अब उपरोक्त विचारों को ध्यान में रखते हुये इस पाठयक्रम को करने वाले अपने मित्रों के साथ इस पर विचार करें कि दिव्य योजना के क्रियान्वयन में भागीदारी किस तरह युवाओं को समाज के आध्यात्मिक पुनरुत्थान के माध्यम के रूप में कार्य करने में सक्षम बनाती है।

भाग 19

पिछले भाग के अंत में की गई चर्चा ने निःसन्देह आपको प्रभुधर्म की प्रगति में नवयुवकों द्वारा निभाये जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में सोचने को विवश किया होगा। *गॉड पासेज़ बाई* से लिये गये निम्न उद्धरण में शोगी एफेन्दी प्रभुधर्म के उन आरम्भिक शूरवीरों का एक चित्रमय वर्णन प्रस्तुत करते हैं जिनके वीरतापूर्ण कारनामे युगों–युगों तक मानवजाति को प्रेरित करेंगे। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुये कि उनमें से अधिकांश खुद नवयुवक थे, धर्मसंरक्षक द्वारा उनके उत्कृष्ट गुणों के वर्णन के लिये प्रयोग किये गये शब्दों पर मनन करना यहाँ लाभदायक होगा। यह करने से पहले, निम्नलिखित शब्दावली को पढ़ना आपके लिये उपयोगी होगा :

उल्का की भाँति :	एक उल्का की तरह; एक चमकीला तारा जो आकाश में नज़र आता है और तीव्रता से आर पार हो जाता है
विषादपूर्ण :	अंधकारमय और उदास
अवनत :	अस्त होना
उपग्रह :	एक खगोलीय पिंड जो एक दुसरे बडे माप के पिंड की परिक्रमा करता है
तारक–पुंज :	तारों का एक विशाल समूह
मदहोश :	नशे में धुत्त
प्रदीप्त :	प्रकाश की किरणें निकालता; प्रकाशित
उद्दीप्त :	अत्यन्त ऊष्मा के साथ प्रज्वलित होता; असाधारण रुप से उजला
नवजात :	हाल ही में अस्तित्व में आया हुआ
संघर्ष :	जीत के लिये परिश्रम
द्रुतता :	तीव्रता
अग्रणी :	पथप्रदर्शक
षडयंत्र :	गुप्त साज़िश
दुराचार :	भ्रष्टता; दुष्टता
व्यापक :	विस्तृत विभिन्नता वाला; ज़बर्दस्त
भक्ति :	ईश्वर के प्रति श्रद्धा और धार्मिक कर्तव्य के प्रति निष्ठा
सरगर्मी :	भावना की प्रबलता
आत्मोत्सग :	स्वयं को त्याग देना
वाग्मिता :	वाक चातुर्य
संकल्प :	पक्का उद्देश्य
चट्टान भांति :	दृढ़ता और स्थिरता में अटल
विस्मयकारक :	आश्चर्य जनक रुप से विशाल

धर्म संरक्षक लिखते हैं :

> "उदात्त नाटक के इस पहले भाग की कड़ियों का निरीक्षण करते हुऐ, हम देखते हैं, इसके निपुण नायक बाब को, उल्का की भाँति शीराज़ के क्षितिज के ऊपर उदय होते, फारस के विषादपूर्ण आकाश में दक्षिण से उत्तर की ओर जाते, शोक जनक वेग के साथ अवनत होते, और महिमा की ज्वाला में समाप्त होते। हम देखते हैं, उनके उपग्रहों को, ईश्वरीय प्रेम में मदहोश तारक–पुंज, उसी क्षितिज के ऊपर उठते, उसी उद्दीप्त प्रकाश से प्रदीप्त होते, बिल्कुल उसी द्रुतता के साथ अपने आपको प्रज्ज्वलित करते, और अपनी बारी आने पर निरंतर गति पकड़ते ईश्वर के नवजात धर्म को अतिरिक्त बल प्रदान करते ...
>
> "इस भीषण आध्यात्मिक संघर्ष के अभिलेख में वे नायक, जिनके कारनामे चमक रहे हैं – जिसमें शामिल थे लोग, पुरोहितवर्ग, सम्राट और सरकार, वे थे बाब के चुने हुऐ अनुयायी, जीविताक्षर और उनके सहयोगी, इस नवयुग के अग्रणी, जिन्होने इन षडयंत्रों, अज्ञानता, दुराचार, निर्दयता, अंधविश्वास और कायरता का विरोध किया, एक ऐसे जोश के साथ जो बुलंद, अदम्य और अति–प्रेरणादायक था, एक ऐसे ज्ञान के साथ जो आश्चर्यजनक रुप से गहन था, एक ऐसी वाग्मिता के साथ जिसकी शक्ति व्यापक थी, एक ऐसी भक्ति के साथ जिसकी सरगर्मी बेमिसाल थी, एक ऐसे साहस के साथ जो अपनी प्रचंडता में सिंह जैसा था, एक ऐसे आत्मोत्सर्ग के साथ जो अपनी पवित्रता में संत जैसा था, एक ऐसे संकल्प के साथ जो अपनी दृढ़ता में चट्टान की भांति था, एक ऐसी परिकल्पना के साथ जो अपने विस्तार में विस्मयकारक था, पैगम्बर और उनके इमामों के प्रति एक ऐसी श्रद्धा के साथ जो उनके अपने विरोधियों के लिये परेशानजनक था, एक ऐसे अनुनय की शक्ति के साथ जो उनके प्रतिद्वंद्वी के लिये भयप्रद था, आस्था का एक ऐसा मानदण्ड और एक ऐसी आचरण संहिता के साथ जिसने उनके देशवासियों के जीवन को चुनौती दी और उसमे क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया।"[50]

1. नीचे दिये गये वाक्यों को पूरा करें :

    क. जीविताक्षर और उनके सहयोगी एक संघर्ष में व्यस्त थे।

    ख. यह संघर्ष ______________________________ और ______________ के बीच लड़ा गया।

    ग. प्रभुधर्म के आरम्भिक शूरवीरों ने षडयंत्र, अज्ञानता, दूराचार, निर्दयता, अंधविश्वास और कायरता का विरोध

    – जोश के साथ __________, ____________________,
    – ज्ञान के साथ ____________________,
    – वाग्मिता के साथ ____________________,
    – भक्ति के साथ ____________________,
    – साहस के साथ ____________________,
    – आत्मोत्सर्ग के साथ ____________________,
    – संकल्प के साथ ____________________,

– परिकल्पना के साथ ________________________________,

– पैगम्बर और उनके इमामों के प्रति श्रद्धा के साथ, ____________________________,

– अनुनय की शक्ति के साथ ____,

– आस्था का एक ऐसा मानदण्ड और एक ऐसी आचरण संहिता के साथ ____।

2. ऊपर के उदाहरण में धर्मसंरक्षक ने प्रभुधर्म के आरम्भिक महानायकों के आध्यात्मिक संघर्ष में प्रवेश करने का क्या उद्देश्य बतालाया है ? ______________________________________

____

____

____

3. क्या वर्तमान युग के बहाई युवा जो दिव्य योजना के निष्पादन में भाग ले रहे हैं, अपने पूर्ववर्तियों की तरह किसी आध्यात्मिक संघर्ष में रत हैं ? ______________________________________

4. उनके संघर्ष और प्रभुधर्म के आरम्भिक महानायकों के संघर्ष में क्या समानता है ? ________

____

____

____

5. आज के युवा किस तरह सुनिश्चित कर सकते हैं कि अपने पूर्ववर्ती शौर्य युग के भाई–बहनों की तरह वे भी अपने आध्यात्मिक संघर्ष में विजयी रहेंगे जिसमें वे कार्यरत है ? __________

____

____

____

अगले भाग पर जाने से पूर्व आप विश्व न्याय मंदिर के संदेश के निम्न अंश पर विचार करना चाहेंगे :

"जब बाब का महान व्यक्तित्व, महज 25 वर्ष की आयु में, विश्व को अपना क्रांतिकारी संदेश देने के लिये उठ खड़ा हुआ, तब जिन लोगों ने उनकी शिक्षाओं को स्वीकारा और प्रसारित किया, उनमें से कई युवा थे, यहाँ तक कि स्वयं बाब से भी कम उम्र के थे। उनकी वीरता, जिसकी चकित कर देने वाली प्रबलता को पूर्ण रूप से *शहीदों की गाथा* में अमर किया गया है, सदियों तक मानव इतिहास की कथा को प्रकाशित करती रहेगी। इस प्रकार एक ऐसे प्रतिमान की शुरूआत हुई जिससे, प्रत्येक युवा पीढ़ी ने, विश्व को नये सिरे से गढ़ने के लिये उसी दिव्य आवेग से प्रेरणा लेते हुए एक विकासशील प्रक्रिया के नवीनतम चरण में योगदान देने के अवसर को कस कर थाम लिया है जो मानवजाति का जीवन रूपांतरित करेगी। यह वह प्रतिमान है जिसमें 'बाब' के काल से वर्तमान तक कोई क्रम भंग नहीं हुआ है।"[51]

भाग 20

संकट और विजय के उत्तरोत्तर चक्रों में प्रत्येक पीढ़ी के युवाओं ने शहीदों द्वारा आलोकित पथ का अनुसरण किया है और स्वयं को पूरे विश्व में मानव एकता का संदेश फैलाने वाली बहाई गतिविधियों की अग्रिम पंक्ति में रखा है। विश्व न्याय मन्दिर ने लिखा है :

> "बहाई युग के बिल्कुल आरम्भ से ही युवाओं ने प्रभु के प्रकटीकरण की घोषणा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, बाब ने जब अपने मिशन की घोषणा की तब उनकी उम्र केवल 25 वर्ष थी। कई जीविताक्षर तो उनसे भी छोटे थे। मास्टर ने भी बिल्कुल छोटी उम्र से ही ईराक और तुर्की में अपने पिता की सेवा में भारी दायित्वों का सहर्ष वहन किया था, और उनके भाई पवित्रतम शाखा ने सर्वाधिक महान कारागार में केवल 22 वर्ष की उम्र में ही अपना जीवन प्रभु को समर्पित कर दिया था ताकि प्रभु के सेवक तत्पर हो सकें और धरती पर रहने वाला सम्पूर्ण मानव समुदाय संगठित हो सके। शोग़ी एफेन्दी उस समय ऑक्सफोर्ड में विद्यार्थी ही थे तब ही उन्हें धर्मसंरक्षक का पद सम्भालने के लिये बुला लिया गया था, और बहाउल्लाह के अनेक शूरवीर, जिन्हें दस वर्षीय योजना के दौरान अक्षय यश प्राप्त हुआ था, बहुत ही कम उम्र के थे।"[52]

1984 में लिखे एक अन्य संदेश में विश्व न्याय मन्दिर ने अभी हाल के नायकों को श्रद्धांजलि अर्पित की है :

> "उदाहरण के तौर पर पिछली गर्मियों को शीराज़ की घटना पर विचार करें जिसमें 18 से 25 वर्ष तक की छः युवतियों को फाँसी के फंदे पर लटका दिया गया। उन्हें अपने धर्म से मुकरने के लिये बार–बार फुसलाया गया; उन सबने अपने प्रिय प्रभु को नकारने से इन्कार कर दिया। उन बच्चों और युवाओं द्वारा बार–बार प्रदर्शित अद्भुत धैर्य पर भी विचार करें जिन्हें अपने शिक्षण और मुल्लाओं की लगातार पूछताछ और प्रताड़ना का शिकार होना पड़ा और अपनी आस्था में सुदृढ़ रहने के कारण स्कूल से निकाल दिया गया। किन्तु यह ध्यान देने योग्य है कि अपने समुदाय पर क्रूरता से लगाये गये प्रतिबंधों के बावजूद युवाओं ने अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा से देश भर में बहाई संस्थानों के निर्देशों के अनुरूप, उल्लेखनीय सेवाएँ उपलब्ध करायीं। किसी भी शब्द में इतनी सामर्थ्य नहीं कि उनके संकल्प और निष्ठा की मिसाल दे सके। निःस्वार्थ भाव और समर्पण से किये गये उनके पावन कार्य ही सबसे बड़े साक्ष्य हैं। सच कहा जाये तो इस धरती पर और किसी भी स्थान में प्रभुधर्म के लिये इतनी बड़ी कीमत नहीं चुकायी गई। ईरान के पराक्रमी बहाई युवाओं से बढ़कर त्याग और बलिदान के लिए लालसा से दीप्त तत्पर और उत्सुक युवा और कहीं नहीं मिलेंगे। तो क्या यह उम्मीद नहीं रखी जाये कि आप इस असाधारण समय–काल में रह रहे युवा, जो अपने ईरानी साथियों के पराक्रम के ऐसे अनूठे प्रेरक उदाहरणों को देख रहे हैं और कहीं भी आने जाने की आज़ादी का उपभोग कर, प्रभुधर्म की सेवा के क्षेत्र में हैं 'निर्बंध' की तरह बढ़ नहीं चलेंगे ?"[53]

विश्व भर में बहाई युवाओं के जीवन में घटित महत्वपूर्ण घटनाओं पर विचार करने के अवसर, हर युवा पीढ़ी के लिये अपने मिशन को समझने में सहायक होंगे। बचपन से ही बहाई कक्षाओं और घर में सुनी गयी कहानियों के माध्यम से इन विशिष्ट व्यक्तियों के साथ एक सम्बन्ध बन चुका होता है लेकिन 12 से 15 वर्ष की अवस्था और निश्चित ही पूरी युवावस्था के दौरान इस आवश्यकता को पूरा करने के लिये विशेष प्रयास की ज़रूरत होती है। सतर्कतापूर्वक चुने गये उदाहरणों – कुछ नाट्य रुप में कुछ अन्य से, साहस, संकल्प, उत्साह, और निःस्वार्थ भाव जैसे दिव्यगुणों को दर्शाया जा सकता है, जिनके अनुकरण का हर सम्भव प्रयास युवाओं को करना हैं।

1. प्रभुधर्म के आरम्भिक इतिहास से या हाल के समय से कुछ ऐसे प्रकरण चुनें जिन पर, आपके विचार में, युवाओं को मनन करना चाहिय । ____________________

2. इन विशिष्ट प्रकरणों के चयन के लिये अपने तर्क दें। ____________________

भाग 21

ऊपर दिये गये संदेशों में से मात्र कुछ पर ध्यान देने से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रभुधर्म के आरम्भिक और उनके बाद के धर्म पराक्रमियों तथा साहसिक आत्माओं में उद्देश्य का बोध बिल्कुल स्पष्ट था। यह भी उतना स्पष्ट है कि उनमें से प्रत्येक अपने ऐतिहासिक कालों के महत्व से पूरी तरह अवगत थे और साथ ही मानवता से आपेक्षित परिवर्तन की व्यापकता को लेकर भी उनका दृष्टिकोण बिल्कुल स्पष्ट था। यह भी स्पष्ट है कि इस उददेश्य के बोध ने दैवीय संदेश के प्रसार में समर्पित जीवन में अभिव्यक्ति पाई। जब हम उनके साहसिक कार्यों और उनमें से अनेक के महान बलिदानों का स्मरण करते हैं तो सहज यह विश्वास नहीं होता कि केवल ये गुण ही उन पावन आत्माओं का सम्पूर्ण व्यक्तित्व निरूपित करते हैं। तो फिर वह कौन सा गुण था जिसने उन्हें सर्वाधिक विशिष्टता प्रदान की ? वे किस आवेग की दासता में थे और निःस्वार्थ सेवा की ऐसी ऊँचाइयों का स्पर्श करने के लिये किससे संचालित हुये। क्या वह प्रभु का प्रेम नहीं था जो पूरी दीप्ति से उनके हृदयों में प्रज्ज्वलित था ? क्या वे अपने प्रियतम प्रभु के सौन्दर्य से मदहोश नहीं थे ? क्या आप युवाओं की अगली पीढ़ी के आध्यात्मिक सशक्तिकरण में योगदान की कल्पना तक कर सकते हैं यदि हम उनमें सौन्दर्य के प्रति आकर्षण नहीं जगाते, यदि हम सत्य ज्ञान की बहती सरिता से पान करने की उनकी आंतरिक कामना को पोषित नहीं करते, यदि हम उनके रचयिता से अंतरंग संबंध विकसित करने में उनकी मदद नहीं करते ? आइये इस इकाई का समापन निम्नलिखित शब्दों में स्वयं को डुबो कर करें :

> **"क्योंकि जब सच्चा प्रेमी और समर्पित मित्र उस प्रिय की उपस्थिति में पहुँचेगा तो उस परमप्रिय का कौंधता सौन्दर्य तथा प्रेमी की हृदयाग्नि एक ज्वाला उत्पन्न करेगी और सभी पर्दों और आवरणों को भस्मसात कर देगी। हाँ, जो कुछ उसके पास है वह सब, हृदय से लेकर त्वचा तक, प्रज्ज्वलित हो उठेगा ताकि उस 'मीत' के अतिरिक्त कुछ भी शेष न रह जाये।"[54]**

> **"हे मित्रों। एक नाशवान सौन्दर्य के लिए अनन्त सौन्दर्य का परित्याग न कर और मिट्‌टी के इस नाशवान संसार से अनुराग न रख।"[55]**

> **"तू यह जान ले कि सत्य ही वह ज्ञानवान है जिसने मेरे प्रकटीकरण को पहचाना है और मेरे ज्ञान के महासागर से जिसने पान किया है और मेरे प्रेम के गगन में जिसने विचरण किया है और मेरे अतिरिक्त अन्य सब का परित्याग कर दिया है और मेरी विस्मयकारी वाणी के साम्राज्य से जो भेजा गया है उसके प्रति दृढ़प्रतिज्ञ रहा है। सत्यतः, वह मानव के नेत्र के समान है और समस्त सृष्टि के शरीर के जीवन की चेतना के समान है। सर्वदयालु का यशोगान हो, जिसने**

उसे ज्ञान दिया है और अपने शक्तिशाली धर्म की सेवा करने के लिये उसे उठ खड़े होने की शक्ति दी है। सत्य ही, ऐसे व्यक्ति को स्वर्ग के देवदूतों के आशीष प्राप्त होते हैं और उनके आशीर्वाद भी मिलते हैं जो महिमा की छत्रछाया तले निवास करते हैं, जिन्होंने मुझ सर्वव्यापी, सर्वशक्तिशाली के नाम की मदिरा का पान किया है।"[56]

"हे ईश्वर की सेना ! जब भी तुम किसी व्यक्ति को देखो जिसका पूरा ध्यान ईश्वर के धर्म की ओर है; जिसका उद्देश्य मात्र यह है, ईश्वर के शब्द को प्रभावी बनाना; जो दिन और रात, शुद्ध नीयत से, धर्म को सेवा दे रहा है; जिसके व्यवहार से गर्वित जन अथवा निजी प्रयोजनों का लेशमात्र संकेत भी नहीं दिखाई पड़ता–जो इससे विलग, ईश्वर के प्रेम के बियावन में व्यग्र विचरण करता है, तथा मात्र ईश्वर के ज्ञान के प्याले से पान करता है, तथा पूर्णतया व्यस्त हैं ईश्वर की मधुर गंध को फैलाने में, तथा अनुरक्त है ईश्वरीय साम्राज्य के पवित्र छंदों में–निश्चित रूप से तुम यह जान लो कि यह व्यक्ति स्वर्ग से सहायता तथा सबलता पाता है भोर के सितारे की भाँति, वह सदा ही शाश्वत भव्यता के आकाशों में चमकेगा। किंतु यदि वह स्वार्थी इच्छाओं तथा स्व–प्रेम का रंचमात्र भी धब्बा प्रदर्शित करे तो उसके प्रयास कुछ भी प्राप्त नहीं करेंगे तथा वह नष्ट हो जायेगा और अंत में आशाहीन रह जायेगा।"[57]

"तुम इसे अच्छी तरह जान लो कि दिव्य विधाता के हाथों ने तुम्हें उस साम्राज्य के सिंहासन की ओर आकर्षित किया है और दिव्य शुभ संदेश ने तुम्हें इतनी प्रसन्नता दी है कि तुमने दिव्य सौन्दर्य के मुखड़े से पर्दा तथा आवरण हटा लिया है, अपनी अन्तर्दृष्टि के सहारे उस दैदीप्यमान मुखड़े के दर्शन किये हैं और इस दिव्य धर्म में सन्निहित पवित्रता और शुद्धता के रहस्यों का ज्ञान पाया है।

"अब ईश्वर के प्रेम के आनंद से विभोर पूरी प्रसन्नता के साथ ईश्वर से याचना करो और इस मार्गदर्शन तथा उच्च उपहार के लिये ईश्वर को धन्यवाद दो। तुम यह जान लो कि जब तुम्हारे पाँव प्रभु–पथ पर दृढ़ता के साथ बढ़ चलेंगे, सत्य ही, तुम्हारे प्रभु के उपहारों के रक्षक तुम्हें चारों तरफ से सुरक्षा प्रदान करेंगे।"[58]

"हे मेरे ईश्वर ! हे मेरे प्रभु ! तेरा यह सेवक तेरी ओर बढ़ चला है, तेरे प्रेम की मरूभूमि में भावावेश में भटक रहा है, तेरी कृपा की आस लिये तेरी आशीषों की उम्मीद लिये, तेरे साम्राज्य पर भरोसा रखते हुए और तेरे उपहार की मदिरा से मदहोश हो तेरी सेवा के पथ पर चल रहा है। हे मेरे ईश्वर, तेरे प्रति उसके स्नेह, तेरी स्तुति के प्रति उसकी सततता और तेरे प्रेम के प्रति उसके उत्साह में वृद्धि कर।

"सत्य ही, तू सर्वाधिक उदार है, असीम अनुकम्पाओं का स्वामी है, तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, तू है क्षमादाता, दयावान।"[59]

संदर्भ

1. ‘Abdu’l-Bahá, in *Bahá’í Prayers and Tablets for the Young* (Wilmette: Bahá’í Publishing Trust, 1978), no. 38, p. 30.

2. ‘Abdu’l-Bahá, in *Bahá’í Prayers: A Selection of Prayers Revealed by Bahá’u’lláh, the Báb, and ‘Abdu’l-Bahá* (Wilmette: Bahá’í Publishing Trust, 2002, 2017 printing), pp. 246–47.

3. *Selections from the Writings of ‘Abdu’l-Bahá* (Wilmette: Bahá’í Publishing, 2010, 2015 printing), no. 225.9, p. 394.

4. ‘Abdu’l-Bahá, cited in a letter dated 11 April 1985 written on behalf of the Universal House of Justice to an individual, published in *Messages from the Universal House of Justice, 1963–1986: The Third Epoch of the Formative Age* (Wilmette: Bahá’í Publishing Trust, 1996), no. 426.3a, p. 665.

5. ‘Abdu’l-Bahá, in *Bahá’í Prayers*, p. 248.

6. Bahá’u’lláh, cited in the Riḍván 1982 message to the Bahá’ís of the world, published in *Messages from the Universal House of Justice, 1963–1986*, no. 321.5a, p. 538.

7. From a message dated 25 May 1975 written by the Universal House of Justice to all National Spiritual Assemblies, ibid., no. 162.34, p. 310.

8. From a message dated 1 July 2013 written to the participants in the forthcoming 114 youth conferences throughout the world, published in *Framework for Action: Selected Messages of the Universal House of Justice and Supplementary Material, 2006–2016* (West Palm Beach: Palabra Publications, 2017), no. 27.3, p. 176.

9. From a message dated 10 June 1966 written to the Bahá’í youth in every land, published in *Messages from the Universal House of Justice, 1963–1986*, no. 37.2, p. 92.

10. From a letter dated 23 February 1995 written on behalf of the Universal House of Justice to selected National Spiritual Assemblies.

11. From a message dated 29 December 2015 written to the Conference of the Continental Boards of Counsellors, published in *Framework for Action*, no. 35.39, p. 226.

12. From a letter dated 23 April 2013 written on behalf of the Universal House of Justice to a National Spiritual Assembly, ibid., no. 52.3, p. 296.

13. From a letter dated 19 April 2013 written on behalf of the Universal House of Justice to a small group of individuals, ibid., no. 51.9, p. 293.

14. From a message dated 12 December 2011 written by the Universal House of Justice to all National Spiritual Assemblies, ibid., no. 20.21, p. 138.

15. *Gleanings from the Writings of Bahá’u’lláh* (Wilmette: Bahá’í Publishing Trust, 1983, 2017 printing), CXXXVII, par. 4, p. 338.

16. From a letter dated 8 December 1923 written by Shoghi Effendi to a Bahá'í community, in "Trustworthiness: A Cardinal Bahá'í Virtue", compiled by the Research Department of the Universal House of Justice, published in *The Compilation of Compilations* (Maryborough: Bahá'í Publications Australia, 1991), vol. 2, no. 2075, p. 345.

17. *'Abdu'l-Bahá in London: Addresses and Notes of Conversations* (London: Bahá'í Publishing Trust, 1987), p. 66.

18. *Gleanings from the Writings of Bahá'u'lláh*, XXIX, par. 1, p. 78.

19. Bahá'u'lláh, in "Trustworthiness", published in *The Compilation of Compilations*, vol. 2, no. 2032, p. 332.

20. 'Abdu'l-Bahá, *The Secret of Divine Civilization* (Wilmette: Bahá'í Publishing, 2007, 2016 printing), par. 5, p. 5.

21. Ibid., par. 6, p. 6.

22. *Gleanings from the Writings of Bahá'u'lláh*, XLIII, par. 4, p. 105.

23. Ibid., CXXVI, par. 2, p. 306.

24. Bahá'u'lláh, cited by Shoghi Effendi, *The Advent of Divine Justice* (Wilmette: Bahá'í Publishing Trust, 2006, 2018 printing), par. 48, p. 47.

25. *Gleanings from the Writings of Bahá'u'lláh*, LX, par. 3, p. 133.

26. Bahá'u'lláh, cited by Shoghi Effendi, *The Advent of Divine Justice*, par. 39, p. 34.

27. Ibid., par. 39, pp. 34–35.

28. *Tablets of Abdul-Baha Abbas* (New York: Bahá'í Publishing Committee, 1915, 1940 printing), vol. 2, p. 436. (authorized translation)

29. *Gleanings from the Writings of Bahá'u'lláh*, CXLIII, par. 3, p. 354.

30. Ibid., LXX, par. 1, p. 154.

31. 'Abdu'l-Bahá, in *Some Answered Questions* (Wilmette: Bahá'í Publishing, 2014, 2016 printing), no. 10.8, p. 58.

32. From a talk given on 17 November 1912, published in *The Promulgation of Universal Peace: Talks Delivered by 'Abdu'l-Bahá during His Visit to the United States and Canada in 1912* (Wilmette: Bahá'í Publishing, 2012), par. 4, p. 618.

33. From a talk given by 'Abdu'l-Bahá on 29 August 1912, ibid., par. 4, p. 405.

34. Bahá'u'lláh, *The Hidden Words* (Wilmette: Bahá'í Publishing Trust, 2003, 2012 printing), Persian no. 6, p. 24.

35. *Will and Testament of ‘Abdu’l-Bahá* (Wilmette: Bahá’í Publishing Trust, 1944, 2013 printing), pp. 26–27.

36. *The Hidden Words*, Persian no. 49, p. 39.

37. *Selections from the Writings of ‘Abdu’l-Bahá*, no. 10.2, pp. 41–42.

38. The Báb, cited in *The Dawn-Breakers: Nabíl’s Narrative of the Early Days of the Bahá’í Revelation* (Wilmette: Bahá’í Publishing Trust, 1932, 2018 printing), p. 93.

39. *Will and Testament of ‘Abdu’l-Bahá*, pp. 27–28.

40. From a talk given on 17 November 1911, published in *Paris Talks: Addresses Given by ‘Abdu’l-Bahá in 1911* (Wilmette: Bahá’í Publishing, 2006, 2016 printing), no. 49.17, pp. 199−200.

41. From a talk given by ‘Abdu’l-Bahá on 1 September 1912, published in *The Promulgation of Universal Peace*, par. 7, p. 417.

42. *Selections from the Writings of ‘Abdu’l-Bahá*, no. 105.2, p. 186.

43. From a letter dated 17 February 1933 written on behalf of Shoghi Effendi to an individual, in *Social Action: A Compilation Prepared by the Research Department of the Universal House of Justice* (Wilmette: Bahá’í Publishing Trust, 2020), no. 90, p. 44.

44. From a message dated April 1955 written by Shoghi Effendi, published in *Messages to the Bahá’í World, 1950–1957* (Wilmette: Bahá’í Publishing Trust, 1971, 1999 printing), p. 76.

45. From a letter dated 4 May 1953 written by Shoghi Effendi, ibid., p. 155.

46. From a message dated 1 July 2013 written by the Universal House of Justice to the participants in the forthcoming 114 youth conferences throughout the world, published in *Framework for Action*, no. 27.2, p. 175.

47. Ibid., no. 27.6, p. 177.

48. From a message dated 8 February 2013 written by the Universal House of Justice to the Bahá’ís of the world, ibid., no. 22.4, p. 147.

49. From a message dated 8 January 2000 written to the friends gathered at the youth congress in Paraguay, published in *Turning Point: Selected Messages of the Universal House of Justice and Supplementary Material, 1996–2006* (West Palm Beach: Palabra Publications, 2006), no. 20.3–4, pp. 123–24.

50. Shoghi Effendi, *God Passes By* (Wilmette: Bahá’í Publishing Trust, 1974, 2019 printing), pp. 4–6.

51. From a message dated 1 July 2013 written by the Universal House of Justice to the participants in the forthcoming 114 youth conferences throughout the world, published in *Framework for Action*, no. 27.1, p. 175.

52. From a message dated 10 June 1966 written to the Bahá'í youth in every land, published in *Messages from the Universal House of Justice, 1963–1986*, no. 37.1, p. 92.

53. From a message dated 3 January 1984 written by the Universal House of Justice to the Bahá'í youth of the world, ibid., no. 386.6, p. 616.

54. *The Call of the Divine Beloved: Selected Mystical Works of Bahá'u'lláh* (Haifa: Bahá'í World Centre, 2018), no. 2.76 p. 46.

55. *The Hidden Words*, Persian no. 14, p. 26.

56. *Tablets of Bahá'u'lláh Revealed after the Kitáb-i-Aqdas* (Wilmette: Bahá'í Publishing Trust, 1988, 2005 printing), no. 14.4, pp. 207–8.

57. *Selections from the Writings of 'Abdu'l-Bahá*, no. 35.7, pp. 103–4.

58. *Tablets of Abdul-Baha Abbas* (New York: Bahá'í Publishing Committee, 1909, 1930 printing), vol. 1, p. 182.

59. 'Abdu'l-Bahá, in *Bahá'í Prayers*, p. 173

संभावनामय आयुवर्ग

उद्देश्य

बारह से पन्द्रह वर्ष के नवयुवाओं की असीम संभावनाओं का अन्वेषण करना और उनके आध्यात्मिक सशक्तिकरण में सहायक वातावरण उपलब्ध कराने की महत्ता समझना।

भाग 1

पिछली इकाई में हमने उन कुछ विशेषताओं पर विचार किया जो युवाओं को विशिष्ट बनाती हैं। इस इकाई का उद्देश्य किशोरों की असीम क्षमताओं तथा उन शक्तियों पर विचार करना है, जो उनके जीवन को आकार देती हैं। जिन अवधारणाओं का आप यहां परीक्षण करेंगे उन्हें कई दशकों के अनुभव से संघटित किया गया है। बारह से पंद्रह वर्ष के आयु वर्ग की विशेष आवश्यकताओं की पहचान बहाई समुदाय लंबे समय से करता आया है। इस आयु वर्ग के सदस्यों को शिक्षित करने के प्रारंभिक प्रयासों तथा उसके पश्चात उनकी क्षमताओं को निर्मुक्त करने तथा उनकी बलखाती ऊर्जा को निर्दिष्ट करने के प्रयत्नों से धीरे–धीरे इस किशोर आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम ने आकार लिया जिसे इस पुस्तक में हम यहां समझ रहे हैं। जब आप अपेक्षाकृत युवा थे, अपने किसी मित्र के साथ किशोरों के समूह के साथ काम करते हुए, या दूसरों के साथ, इसके तरीकों और विषय–वस्तुओं पर चर्चा करने के लिए अपने गांव या पड़ोस में माता–पिता से मुलाकात की हो तो आप इस कार्यक्रम से पूर्व परिचित हो सकते हैं। जो सामग्री आप इस समय पढ़ रहे हैं यह आपको प्रारंभ में तीन वर्षों को समर्पित करने में आपकी मदद करने का आशय रखता है पर सेवा के इस पवित्र कार्य में कहीं अधिक, आपको इस योग्य बनाकर कि आप संभावनाओं से पूर्ण ऐसे आयु वर्ग के सदस्यों को उनके जीवन के महत्वपूर्ण काल में मार्गनिर्देशन कर सकें

किशोर आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम के संबंध में विश्व न्याय मंदिर लिखता है :

> **"किशोरों के आध्यात्मिक सशक्तिकरण के कार्यक्रम का तेजी से प्रसार बहाई समुदाय की सांस्कृतिक प्रगति का एक दूसरा उदाहरण है। जहाँ आज पूरी दुनिया में इस उम्र के बच्चों को आमतौर पर मुश्किलें और समस्या पैदा करने वाले, उग्र भौतिक एवं भावनात्मक परिवर्तन की वेदना में खोया हुआ, गैर जिम्मेदार और आत्मकेन्द्रित मानने का प्रचलन है, वहीं बहाई समुदाय किशोरों के लिये उपयोग की जा रही भाषा तथा उठाये जाने वाले कदमों से निश्चय ही विपरीत दिशा में जा रहा है। बहाई समुदाय किशोरों में सच्चाई, निष्ठा, न्यायप्रियता, ब्रहमाण्ड के विषय में बहुत कुछ सीखने की उत्सुकता और एक बेहतर दुनिया के निर्माण में सहयोग देने की उत्कट इच्छा पाता है। आज पूरे विश्व में जिस तरह नवयुवाओं ने किशोर सशक्तिकरण कार्यक्रमों में अपने विचारों को अभिव्यक्त करना शुरू किया है वह इस सोच को सही प्रमाणित करता है। यह स्पष्ट है कि यह कार्यक्रम उनकी बढ़ती चेतना को वास्तविकता की ऐसी खोज में संलग्न करता है जिससे वे समाज में कार्यशील, सृजनात्मक एवं विध्वंसकारी शक्तियों का विश्लेषण कर अपने विचारों एवं कार्यों पर होते इनके प्रभाव की पहचान कर सकें; अपने आध्यात्मिक बोध को प्रखर कर, अभिव्यक्ति की क्षमता को बढ़ा कर ऐसे नैतिक मूल्यों को सशक्त करें जो उनके पूरे जीवन में साथ देंगे। इस उम्र में जब बौद्धिक, आध्यात्मिक, शारीरिक क्षमताएँ प्रचुरता में उन्हें उपलब्ध होती हैं, उन्हें ऐसे संसाधनों से सुसज्जित किया जा रहा है जिनसे वे उन ताकतों का मुकाबला कर सकें जो एक कुलीन मानव के रूप में उनकी पहचान मिटाने और मानवता के हित के लिए काम करने से रोकने पर आमादा हैं।"[1]**

ऊपर उद्धरण में विश्व न्याय मंदिर द्वारा बताई गई अवधारणायें व विचार इस अध्ययन इकाई के केन्द्र में हैं। जैसे–जैसे आप इन से गुजरेंगे यह आपके मस्तिष्क में और अधिक स्पष्ट होते जायेंगे। अभी तो आप नीचे दिये प्रश्नों का उत्तर देना चाह सकते हैं :

1. वैश्विक रुझान किशोरों के आयु वर्ग के संबंध में क्या छवि दर्शाते हैं ? ____________________

   ____

2. इससे अलग, बहाई समुदाय इस आयु वर्ग में क्या देखता है ?

3. वास्तविकता की खोज में किशोरों की बढ़ती चेतना को शामिल करके, उनके आध्यात्मिक सशक्तिकरण के लिए कार्यक्रम उन्हें क्या करने में मदद करता है ?

4. कार्यक्रम के माध्यम से किशोरों को प्राप्त साधन उन्हें क्या करने में सक्षम बनाते हैं ?

5. आपके अनुसार 12 से 15 साल के किशोर इतने विशेष समूह का प्रतिनिधित्व क्यों करते हैं ?

6. उपरोक्त के प्रकाश में और आप जिन किशोरों से परिचित हैं, उनको ध्यान में रखते हुए, क्या आप इस कमतर युवा पीढ़ी की विशिष्ट आवश्यकताओं की पहचान कर सकते हैं ?

7. सेवा के इस विशेष क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए आपको क्या अभिप्रेरित करता है ?

भाग 2

बहाउल्लाह हमें बतलाते हैं कि व्यक्ति 15 वर्ष का होने पर परिपक्वता के आरम्भ में पहुँच जाता है, जब अनिवार्य प्रार्थना और उपवास जैसे विधान बाध्यकारी हो जाते हैं। इस दृष्टि से देखा जाये तो, इसके तुरन्त पूर्व के वर्ष विशेष महत्व धारण कर लेते हैं। यह बाल्यावस्था से युवावस्था की ओर बढ़ने की अवधि है, जो सामान्यतः, आकस्मिक एवं तीव्र बदलाव के कारण विशिष्ट होती है। शारीरिक, बौद्धिक एवं भावनात्मक परिवर्तन का व्यवहार पर कई रूपों में प्रभाव पड़ता है।

12 वर्ष की आयु तक परिवर्तन के चिन्ह प्रकट होने लगते हैं। अगले तीन से चार वर्षों के दौरान कई किशोर अपने जीवन के किसी अन्य चरण की तुलना में शारीरिक रूप से अधिक बढ़ेंगे। वे लम्बाई में बढ़ेंगे, शरीर की मांसपेशियाँ विकसित करेंगे और हार्मोन सम्बधी परिवर्तन अनुभव करेंगे। लड़कों की आवाज़ गहराने लगेगी और लड़कियाँ एक युवती की शारीरिक बनावट विकसित करेंगी। दोनों ही यौवन का आरम्भ करेंगे और बच्चे पैदा करने की शारीरिक क्षमता प्राप्त करेंगे।

विकास के इस चरण में व्यक्ति द्वारा अनुभव किये जाने वाले शारीरिक और भावनात्मक बदलाव अर्न्तसम्बन्धित होते हैं। नई शारीरिक शक्तियों के उभरने से जहाँ एक ओर उत्तेजना रहती है, वहीं दूसरी ओर बेढंगेपन, संवेदनशीलता एवं चिन्ता का मनोभाव भी होता है। ऐसे मनोभाव व्यक्ति के व्यवहार में विरोधाभास उत्पन्न कर सकते हैं। व्यक्ति कभी शर्मीला प्रतीत हो सकता है, तो कभी काफी मिलनसार; कभी अकेला छोड़ दिये जाने की इच्छा व्यक्त कर सकता है, लेकिन साथ ही यह भी चाहता है कि उस पर लोग ध्यान दें; कुछ परिस्थितियों में तो वह अदम्य साहस दिखला सकता है और अन्य में कुछ डरा हुआ प्रतीत हो सकता है। इस अवधि में धीरे–धीरे आत्म–बोध का एक नया स्तर प्रकट होने लगता है तथा स्वयं की प्रतिभाओं और योग्यताओं के प्रति, विशेषकर अपनी हम उम्र वाले साथियों तथा वयस्कों के साथ सम्बंधों के संदर्भ में बढ़ती चिन्ता प्रकट होने लगती है। यह महत्व रखने लगता है कि लोग उनके रूप–रंग को कैसा पाते हैं और उनके विचारों के प्रति कैसी प्रतिक्रिया प्रकट करते हैं।

15 वर्ष की आयु तक पहुँचने से पूर्व के कुछ साल ऐसे होते हैं जिनके दौरान हमारे मन में व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन सम्बन्धी मौलिक अवधारणाएँ बनने लगती हैं। हमारी विश्लेषण की शक्तिमजबूत होने लगती है, और हम पूर्व में सिखायी गयी बहुत सी बातों के औचित्य के बारे में प्रश्न करने लग सकते हैं और उन अन्तर्विरोधों को देखने लगते हैं जो हमारे चारों ओर विद्यमान हैं, जो पूर्व में ध्यान में नहीं आते थे। वयस्कों द्वारा निर्धारित किये गये मापदण्डों को बिना सोचे–समझे मानने के लिए, हम पहले जितना इच्छुक नहीं होते। बदलाव की इस अवधि में व्यक्ति सदा अपने प्रश्नों के उत्तर ढूंढ़ता रहता है जो प्रायः दार्शनिक होते हैं और एक नई चेतना तेज़ी से विकसित होती है।

उनकी उभरती हुई शक्तियों का लाभ उठाने में यदि किशोरों की सहायता की जाती है तो, यह परमावश्यक है कि उनके साथ हम ऐसा व्यवहार करने से बचें जो एक ओर उनकी बाल्यावस्था को और अधिक लम्बी खींचे और दूसरी ओर व्यस्कता की ऐसी स्थिति की नकल करे जो अपने अनेक पक्षों में कृत्रिम है। यह ऐसी प्रवृत्ति है जो दुर्भाग्यवश अनेकानेक समाजों में जड़ पकड़ रही है। अब्दुल बहा कहते हैं :

> **"कुछ समय पश्चात् वह युवावस्था में प्रवेश करता है जिसमें उसकी पुरानी अवस्थाओं एवं आवश्यकताओं का स्थान, नयी आवश्यकताएँ ग्रहण करने लगती हैं जो उसके विकसित स्तर के लिये उपयुक्त हैं। अवलोकन करने की उसकी क्षमताएं विस्तृत और गहन होने लगती हैं, उसकी बौद्धिक क्षमताएँ प्रशिक्षित एवं जागृत होती हैं, बचपन की सीमायें और वातावरण, उसकी ऊर्जा एवं उपलब्धियों पर अब अधिक प्रतिबन्ध नहीं लगा पाते।"**[2]

बाल्यावस्था और युवावस्था की आयु के बीच भिन्नता की अपनी समझ को बढ़ाने के लिए, निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार करें :

1. अवलोकन करने की क्षमताओं के विस्तृत और गहन होने का क्या अर्थ है ? क्या आप अपनी टिप्पणी को कुछ उदाहरणों की सहायता से स्पष्ट कर सकते हैं ? ____________________

____

____

____

____

2. एक किशोर की बौद्धिक क्षमताएँ किसी बच्चे की बौद्धिक क्षमताओं से किस प्रकार भिन्न होती हैं ?

____

____

____

____

____

3. बाल्यावस्था की वे कौन सी सीमाएँ हैं, जो किशोर की ऊर्जा पर अब प्रतिबन्ध नहीं लगातीं ?

____

____

____

____

भाग 3

15 वर्ष की आयु के तुरन्त पहले के वर्षों में, प्रत्येक व्यक्ति को ऐसी शिक्षा और पोषण पाने की आवश्यकता होती है जिससे युवा में छिपे हुये गुण उजागर हो सकें। इस प्रकार की शिक्षा की महत्ता इसलिये भी स्पष्ट हो जाती है जब यह पहचान लिया जाता है कि 15 वर्ष की अवस्था तक व्यक्ति के विचार और व्यवहार के अनेक प्रतिरूप निर्धारित हो चुके होते हैं। जैसा कि अब्दुल बहा ने कहा है,

> **"किशोरावस्था पार हो जाने के बाद किसी व्यक्ति को सीख देना और उसके चरित्र को परिष्कृत करना अत्यधिक कठिन हो जाता है। तब तक, जैसा कि अनुभव दिखलाता है, यदि उसकी कुछ प्रवृत्तियों में, किंचित् परिवर्तन लाने का प्रयास भी किया जाये तो कुछ भी लाभप्रद नहीं होता। हो सकता है वह शायद आज थोड़ा सुधर भी जाये; परन्तु कुछ दिन बीत जाने दीजिए, और वह भूल जाता है, तथा आदत पड़ी हुई अवस्था और अभ्यस्त तौर–तरीकों की ओर पुनः लौट जाता है।"**[3]

आप "तरूण" शब्द से परिचित ही हैं जिसे अनेक बार साधारण रूप से बारह से अठारह वर्ष के नवयुवकों के लिये उपयोग किया जाता है। कभी–कभी इस प्रारंभिक–तरूण शब्द का उपयोग उस आयु वर्ग की पहचान के लिये किया जाता है जिन्हें सामान्यतया किशोर कहा जाता है। इन तकनीकियों पर

अधिक जोर न डालते हुए हम यहां पर इन शब्दों का उपयोग 12 से 15 आयुवर्ग के युवा जनों के लिए अदल–बदल कर करते हैं। तरूणाई के दौरान शिक्षा के महत्व पर विचार करने के लिये निर्णय लें कि क्या निम्न कथन सही हैं :

____ अगर बाल्यकाल में समुचित शिक्षा का अभाव भी रहा हो, तब भी इन कुछ वर्षों के दौरान पाया गया उचित सम्पोषण, बचपन में ग्रहण की गयी अवांछित आदतों को सुधारने में सहायक सिद्ध होता है।

____ केवल वे व्यक्ति जिन्हें बचपन में आध्यात्मिक शिक्षा मिली हो, अपनी पूर्णक्षमताओं को विकसित कर पाते हैं।

____ किशोरावस्था में समुचित ध्यान एवं देख–भाल के बगैर व्यक्ति आसानीसे भटक सकता है, भले ही बाल्यावस्था के दौरान उसने नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा ग्रहण की हो।

____ किशोरावस्था के दौरान ही, व्यक्ति का रुझान या तो संघटन की प्रक्रियाओं में सम्मिलित होने की ओर होता है, अथवा सामाजिक विघटन की ताकतें उसे बहा ले जाती हैं।

भाग 4

किशोरावस्था में बढ़ती हुई जागरुकता को दो सीमाओं की ओर मोड़ा जा सकता है। एक दिशा ईश्वरीय इच्छा के प्रति अधीनता तथा मानवजाति के प्रति आत्मत्यागी सेवा की ओर ले जाती है और दूसरी, स्वार्थ और वासना रूपी कारावास के बन्धन की ओर। अब्दुल बहा कहते हैं :

> **"प्रत्येक सृजित वस्तु की वैयक्तिक्ता दिव्य विवेक पर आधारित होती है, क्योंकि ईश्वर की रचना में कोई दोष नहीं होता। फिर भी, व्यक्तित्व स्थाई नहीं होता। यह मनुष्य में, किंचित रूप से परिवर्तनीय है जिसे दोनों में से किसी भी दिशा में मोड़ा जा सकता है। क्योंकि, अगर वह प्रशंसनीय गुणों को आत्मसात करता है, तो यह मानव की वैयक्तिक्ता को प्रबल तथा उसकी छिपी शक्तियों का आह्वान करेगा; लेकिन अगर वह अवगुणों को धारण करता है, तो उसकी वैयक्तिक्ता का सौन्दर्य और सादगी उससे छिन जाएगी और इसके ईश्वर–प्रदत्त गुण स्वार्थ के घृणित वातावरण में दब जाएँगे।"[4]**

हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं जब आक्रमणशील भौतिकवादी संस्कृति समाज के प्रत्येक भाग को प्रभावित कर रही है। जैसे ही हम किशोरों को उनकी क्षमताओं को विकसित करने में सहायता करने का प्रयास करते हैं वैसे ही, स्व के साथ सीमा से अधिक व्यस्तता, जो इस व्यापक संस्कृति के ताने–बाने में बुन दी गयी है, हमारे समक्ष बहुत सी चुनौतियाँ प्रस्तुत करती है। युवाओं की क्षमताओं को उजागर करने वाले ईमानदार प्रयास भी एक ऐसी सांसारिक सोच के नकारात्मक प्रभाव से ग्रसित हो सकते हैं जो अपने मूल में व्यक्तिपरक है। समस्या जटिल है। वर्तमान विश्व प्रणाली बहुतों से उददेश्यपूर्ण जीवन जीने की उनकी सहन शक्ति छीन लेती है; अतः व्यक्ति की नैतिक शक्ति में विश्वास सम्बोधित करने योग्य मुद्दा है। यह लोगों के उच्च आमंत्रण को धुंधला देती है, अतः व्यक्ति की कुलीन अभिलाषाओं को प्राप्त करना एक वैध चिंता है। यह असंख्य लोगों को आत्मा के जीवन के प्रति अचेत कर देता है, अतः व्यक्ति की वास्तविक क्षमता के अन्वेषण पर ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है। फिर भी यह जरूरी नहीं, कि ऐसे कार्यक्रम जो "स्व" पर बल देते हों, स्थिति का समाधान करें। जो अधिकतर होता है, वह है स्व–बोध, स्व–खोज, स्वाभिमान के नाम पर यह कार्यक्रम व्यक्ति पर रोमानी रंग चढ़ा देते हैं और उसके अहं को बढ़ावा देते हैं। युवाओं में सच्ची आध्यात्मिक ग्रहणशीलताओं का पोषण करना हमारी

चुनौती है, ताकि उनके कोमल हृदय परम महान सौन्दर्य के प्रति आकर्षण द्वारा अनुप्राणित हो उठें तथा प्रभुधर्म की निःस्वार्थ सेवा के उच्च आदर्शों की ओर उन्मुख हो जायें। उनके जीवन की इस निर्माणात्मक अवस्था में क्षमताओं और प्रतिभाओं के विकास की ओर हमें इस प्रकार ध्यान देना चाहिये कि आग्रही स्व को हावी होने से रोका जा सके। इस चुनौती के स्वरूप का अन्वेषण करने के लिये अगले कुछ भागों में स्व से सम्बंधित पवित्र लेखों से लिये गये कुछ अंशों पर मनन करने के लिये आपको कहा जा रहा है। लेकिन पहले, यह उपयोगी होगा कि अपने समूह में आप "आग्रही स्व का हावी होना", इस वाक्यांश के अर्थ पर चर्चा करें। कोई यह कैसे सुनिश्चित कर सकता है कि कहीं सेवा वह क्षेत्र न बन जाए जिसमें स्व अपना आधिपत्य स्थापित करता है ?

भाग 5

नीचे दिये गये उद्धरणों का पहला संकलन, हमारे "वैयक्तिकता" के उन पहलुओं से सम्बन्धित है जो ईश्वर को प्रिय हैं और जिन्हें विकसित किया जाना चाहिए :

> **"हे मेरे सेवकों ! यदि तुम इसका बोध कर पाते कि तुम्हारी आत्माओं को मैंने अपनी उदारता और कृपा के किन चमत्कारों को सौंपने की इच्छा की है, तो सत्य ही, तुम स्वयं को समस्त सृजित वस्तुओं की आसक्ति से मुक्त कर लेते और अपने स्वयं का वास्तविक ज्ञान पा लेते, ऐसा ज्ञान जो मेरे स्वयं के अस्तित्व की समझ के समान है। तुम मेरे अतिरिक्त अन्य सबसे स्वयं को स्वतंत्र पाते और अपने आन्तरिक एवं बाह्य नेत्रों द्वारा अपने अन्दर, मेरे देदीप्यमान नाम के प्रकटीकरण की भांति प्रकट रूप में, मेरी प्रेममयी दयालुता और कृपा के सागर को गतिमान होता अनुभव कर पाते।"[5]**

> **"परे, बहुत परे है तेरी महिमा उससे जिसकी पुष्टि नश्वर मानव तेरे बारे में कर सकता है, अथवा जैसे तुझे विभूषित करता है, अथवा जिस प्रकार भी वह तेरी महिमा का बखान कर सकता है ! तेरी तेजस्विता और महिमा का गुणगान करने का तूने अपने सेवकों के लिए जो भी कर्तव्य निर्धारित किया है, वह तेरी कृपा का चिन्ह मात्र है, ताकि वे अपने स्वयं के अन्तरतम अस्तित्व को प्रदत्त उस स्थान की ओर आरोहण करने योग्य बना सकें, जो उनके स्वयं के ज्ञान का स्थल है।"[6]**

> **"मातृग्रन्थ के क्षितिज से उदित हुआ प्रथम तराज़ और पहली दीप्ति है मनुष्य को अपने आप को जानना और उसे पहचानना जो महानता या तुच्छता, महिमा अथवा निकृष्टता, सम्पन्नता या निर्धनता की ओर ले जाता है।"[7]**

> **"हे चेतना के पुत्र ! मैंने तुझे ऐश्वर्यवान उत्पन्न किया, फिर तू स्वयं को दरिद्रता के तल पर क्यों ला रहा है ? मैंने तुझे श्रेष्ठ बनाया है, फिर तू स्वयं को क्यों गिरा रहा है ? ज्ञान के तत्व से मैंने तेरी रचना की है, फिर तू मेरे अतिरिक्त किसी दूसरे से प्रबोधन की कामना क्यों करता है ? प्रेम की मिट्टी से मैंने तुझे गढ़ा, फिर तू स्वयं को अन्य तत्वों में लिप्त क्यों रखे हुए है ? अपनी दृष्टि को स्वयं की ओर फेर ताकि तू, मुझे सर्वशक्तिशाली, सर्वशौर्यवान तथा स्वयंजीवी रूप में अपने भीतर खड़ा पा सके।"[8]**

निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करें :

क. जब हम इसका बोध कर लेंगे कि ईश्वर ने हमारी आत्माओं को अपनी उदारताऔर कृपा के किन चमत्कारों को सौंपने की इच्छा की है, तो हम ________________________

____________________, और ____________________
____
________________________________।

ख. ईश्वर के ________________ हम स्वयं को ________________ पाते और अपनी आन्तरिक एवं वाह्य नेत्रों द्वारा ____________________
____
____________________________________।

ग. उसकी तेजस्विता और महिमा का गुणगान करने का ईश्वर ने हमारा जो भी कर्तव्य निर्धारित किया है, वह उसकी कृपा का चिन्ह मात्र है, ताकि हम ____________
________________________________ योग्य बन सकें।

घ. हमें अपने आप को जानना चाहिए और उसे पहचानना चाहिए जो ____________ या ____________, ____________ अथवा ____________, ____________ या ____________ की ओर ले जाता है।

ङ. हमें ________________ उत्पन्न किया गया है और ________________ बनाया गया है। ____________________ के तत्व से ईश्वर ने हमारी रचना की है, और ____________ की मिट्टी से उसने हमें ____________ है। अपनी दृष्टि को अपनी ओर फेर लेने की वह हमें सलाह देता है ताकि __________
____________________________________।

ऊपर दिये गये सभी उद्धरण हमारे सच्चे स्व के पहलुओं तथा इसके स्वरूप को समझने के महत्व से सम्बंधित हैं। हमें अवश्य ही यह समझ लेना चाहिए कि अपने अस्तित्व की उच्चता का ज्ञान हमें आत्मप्रशंसा की ओर नहीं बल्कि ईश्वर तथा उसके सेवकों के समक्ष विनम्रता की ओर ले जाता है। अपने समूह में चर्चा करें कि हमारे वास्तविक स्व का ज्ञान होना स्व के विरुद्ध अपने संघर्ष में हमारी सहायता करता है।

भाग 6

उद्धरणों का यह दूसरा संकलन स्व से आसक्त होने के परिणामों से सम्बंधित चेतावनी देता हैः

"प्रत्येक दोषपूर्ण आत्मा आत्मकेन्द्रित होती है और केवल अपना ही भला सोचती है।"[9]

"लेकिन, यदि वह स्वार्थपूर्ण इच्छाओं और आत्मप्रेम की हल्की झलक मात्र भी दिखलाये, तो उसके प्रयास निष्फल होंगे और अन्ततः वह नष्ट हो निराश रह जायेगी।"[10]

"विशेषतया तुम आत्म–अभिमान से छुटकारे की इच्छा रखते हो। यह गुण, जो गर्व है, विश्व के अनेक महत्वपूर्ण लोगों का नाशक रहा है। यदि कोई व्यक्ति सभी प्रशंसनीय गुणों का स्वामी हो

पर गर्वीला हो, तब वह सभी गुण तथा उत्तम चिन्ह छिप जायेंगे तथा सबसे बुरी कमियों में परिवर्तित हो जायेंगे।"[11]

"अहम् में तल्लीन रहने से, इहलोक और परलोक दोनों में तुम्हें केवल निराशा ही प्राप्त होगी; धर्मान्धता से, मूर्ख और बुद्धिहीन पर विश्वास करने पर तुम केवल घृणा और दुर्गति की ही फसल पाओगे।"[12]

"आज, दुनिया के सभी लोग आत्महित में मग्न हो रहे हैं और अपने भौतिक हितों को साधने के भरसक प्रयास एवं उद्यम में जुटे हुए हैं। वे अपनी ही पूजा कर रहे हैं, न कि दिव्य वास्तविकता की, और न ही मानवजाति की।"[13]

"जैसा तुमने लिखा है, ये परीक्षाएं हृदय–दर्पण से स्वार्थ के दाग को मिटा देती हैं ताकि सत्य का सूर्य उस पर अपनी किरणें बिखेर सके; क्योंकि अहम् से बढ़कर बाधक और कोई आवरण नहीं होता, और वह कितना ही महीन क्यों न हो, अन्ततः व्यक्ति को पूर्ण रूप से विमुख कर देता है तथा कृपा के उसके भाग से वंचित कर देगा।"[14]

"देखो किस तरह सूर्य सम्पूर्ण सृष्टि पर चमकता है, परन्तु केवल वे सतहें ही उसकी महिमा और प्रकाश को प्रतिबिम्बित कर सकती हैं, जो शुद्ध और परिष्कृत हों। अंधकारमय आत्मा को यथार्थ के महिमामय प्रकाश के प्रकटीकरण का कोई भी अंश प्राप्त नहीं होता तथा अहम् की मिट्टी, उस प्रकाश का लाभ उठा पाने में अक्षम होने के कारण विकास नहीं करने देती ...।"[15]

"कितनी हीन है वह आत्मा जो अहम् और वासना के वशीभूत हो अपने में ही लिप्त होकर इस अंधकार में आनंद पाती है और भौतिक दुनिया की कीचड़ में ही लोटती रहती है !"[16]

"आत्मकेन्द्रित", "आत्मप्रेम", "आत्मपूजा", "आत्म–अभिमान", "आत्महित में मग्न रहना" तथा "अहम् और वासना के वशीभूत" उस वातावरण को जन्म देते हैं जो हमारी वैयक्तिकता को ईश्वर द्वारा दिये गुणों को कुचल देते हैं। उपरोक्त उद्धरणों के आलोक में, कुछ वाक्यों में वर्णन करें कि अहम् में तल्लीनता किस प्रकार आध्यात्मिक तथा नैतिक विकास को रोकती है तथा सेवा के प्रभाव को घटा देती है।

भाग 7

उद्धरणों का तीसरा संकलन, पावन लेखों में आग्रही स्व से निपटने संबन्धी अनेक सलाहों से सम्बन्धित है :

"आज, आभा साम्राज्य की संपुष्टियाँ उन्हें प्राप्त हैं जो स्वयं का परित्याग करते हैं, अपने स्वयं के विचारों को भुला देते हैं, अपने व्यक्तित्वों को अलग हटा देते हैं और दूसरों के कल्याण के बारे में सोचते रहते हैं। जिस किसी ने स्वयं को भुला दिया है, उसने ब्रह्माण्ड और उसके निवासियों को पा लिया है। जो भी अपने आप में व्यस्त रहता है, वह लापरवाही और पश्चाताप की मरुभूमि में भटक रहा होता है। स्व को विस्मृत कर देना ही स्वयं पर विजय पाने की महाकुंजी है। जीवन के प्रासाद का मार्ग परित्याग के पथ से होकर जाता है।"[17]

"ईश्वर ने हमें चीजों की वास्तविकताओं को भेद कर उनके मर्म को समझने की शक्ति दी है; लेकिन हमें आत्मत्यागी होना चाहिये, हमें पवित्र चेतना, पवित्र विचार धारण करना चाहिए और मानव–संसार में रहते हुए ही अनन्त महिमा को प्राप्त करने के लिए हृदय और आत्मा से प्रयत्न करना चाहिए।"[18]

"अतः, शैतानी और अहम् के परदों को प्रेम की ज्वाला में भस्म कर दिया जाना चाहिए, ताकि आत्मा विशुद्ध और परिष्कृत हो सके और इस प्रकार उसके स्थान को समझ सके जिसके बगैर विश्व सृजित ही नहीं होता।"[19]

"स्व के सभी विचार त्याग दो और केवल ईश्वर की इच्छा के प्रति आज्ञाकारी और विनम्र बनने का प्रयत्न करो। केवल इस तरह ही हम प्रभु के साम्राज्य के नागरिक बन पायेंगे तथा शाश्वत जीवन पा सकेंगे।"[20]

"स्व से अनासक्त होने का हर सम्भव प्रयास करो, और स्वयं को उस तेजस्वी मुखमंडल के बन्धन में बाँध लो; और एक बार जब तुम सेवा की ऐसी ऊँचाईयाँ प्राप्त कर लोगे, तो अपनी छाया तले समस्त सृजित वस्तुओं को एकत्रित पाओगे। यह असीम कृपा है; यह सर्वोच्च प्रभुसत्ता है; यह वह जीवन है जो मृत्यु को प्राप्त नहीं होता। इसके अतिरिक्त अन्ततः अन्य सभी कुछ प्रत्यक्ष सर्वनाश एवं महान क्षति है।"[21]

"अतः हे मित्र, स्वयं का परित्याग कर दो ताकि तुम उस अतुलनीय को पा सको। इस नश्वर जगत से परे उड़ान भरो ताकि स्वर्ग–आवास में नीड़ पा सको। शून्य के समान बनो, यदि तुम अस्तित्व की अग्नि को प्रज्ज्वलित करना एवं प्रेम पथ के योग्य बनना चाहते हो।"[22]

"स्वार्थ के हर विचार को हम अपने से अलग कर दें; धरती की सभी चीज़ों की ओर से अपनी आँखें मूंद लें, अपनी पीड़ा का ज्ञान दूसरे को नहीं होने दें, न अपने कष्टों की शिकायत करें। बल्कि हम अपने आप को भुला दें, स्वर्गिक कृपा की मदिरा का पान करते हुए अपनी प्रसन्नता का उद्घोष करें और सर्वमहिमाशाली के सौन्दर्य में स्वयं को बिसरा दें।"[23]

"हे संसार के लोगों ! स्वार्थ के बहकावे का अनुसरण मत करो, क्योंकि यह आग्रहपूर्वक दुष्टता और कामुकता की ओर आह्वान करता है; बल्कि उसका अनुसरण करो जो समस्त सृजित वस्तुओं का स्वामी है, वह जो तुम्हें पावनता दिखाने एवं ईश्वर का भय प्रदर्शित करने का आदेश देता है।"[24]

उपरोक्त उद्धरणों द्वारा सुझाये गये मनोभाव आज के समाज की विशेषता, स्व की पूजा करने तथा आत्म–संतुष्टि की धुन के तीव्र विरोध में खड़ा होता है। स्व के प्रति जिन अभिवृत्तियों को विकसित करना हमें सीखना चाहिए, उनकी पहचान इन उद्धरणों में से करें। उदाहरण के तौर पर :

- हमें स्वयं का परित्याग करना, अपने स्वयं के विचारों को भुला देना, अपने व्यक्तित्वों को अलग हटा देना और दूसरों के कल्याण के बारे में सोचते रहना सीखना चाहिए।

- हमें आत्म–त्यागी होना ______________________ सीखना चाहिए।

- हमें ______________________ सीखना चाहिए।

- हमें ______________________ सीखना चाहिए।

- हमें ______________________ सीखना चाहिए।

- हमें ______________________ सीखना चाहिए।

- हमें ______________________ सीखना चाहिए।

- हमें ______________________ सीखना चाहिए।

अपने समूह में इस बात पर विचार करें कि जिन गुणों पर आपने मनन किया वे एक कुलीन मानव बनने में और प्रभुधर्म के सेवाकार्यों को सक्षमता से निभाने योग्य बनने में मदद करते हैं।

भाग 8

अन्त में, निम्नलिखित उद्धरण हमें आत्मत्याग और सामाजिक परिवर्तन में योगदान करने की निपुणता के बीच पारस्परिक सम्बन्धों की याद दिलाते हैं :

> **"अधिकांश लोग स्व और सांसारिक लालसाओं से ग्रसित हैं और भूलोक के महासागर में आकंठ डूबे हुए हैं तथा प्रकृति के संसार के बन्दी हैं, सिवाय उन आत्माओं के जो भौतिक जगत की ज़ंजीरों और बंधनों से मुक्त हो गयी हैं और जो तीव्रता से उड़ रहे पक्षियों की भांति, इस असीम लोक में उड़ान भर रही हैं। वे जाग्रत और सतर्क हैं, वे प्रकृति के संसार में धुँधलेपन का परित्याग करते हैं, उनकी सर्वोच्च कामना लोगों के मध्य से जीवन–संघर्ष को मिटाने,**

आध्यात्मिकता और उच्च लोक के प्रेम को प्रकाश में लाने, लोगों के बीच सर्वाधिक दयालुता दर्शाने, धर्म और आत्मत्याग के बीच गहरे एवं निकट सम्बंध का बोध कराने तथा आत्म–त्याग के आदर्श का अभ्यास करने पर केन्द्रित होती हैं। तब ही मानव जगत ईश्वर के साम्राज्य में रूपान्तरित होगा।"[25]

"हे प्रभु की सेना ! आज इस संसार में, प्रत्येक जनसमूह अपनी ही मरुभूमि में पथभ्रष्ट हो भटक रहा है, अपनी ही कोरी कल्पनाओं और व्यर्थ इच्छाओं के अनुसार यहाँ–वहाँ विचरण करता हुआ, स्वयं अपनी विशेष सनक के पीछे लगा हुआ है। पृथ्वी के समस्त जनसमूहों के बीच केवल महानतम् नाम का यह समुदाय ही मानवीय षड़यंत्रों से मुक्त और निर्मल है और जिसके पास बढ़ावा देने के लिये कोई स्वार्थपूर्ण उद्देश्य नहीं है। उन सब के बीच अकेले ये लोग ही स्वार्थ से परे उद्देश्यों के साथ उठ खड़े हुए हैं, ईश्वरीय शिक्षाओं का अनुसरण करते हुए, अत्यंत उत्सुकतापूर्वक एक ही लक्ष्य के लिए : इस अधोलोक को उच्च स्वर्ग बनाने, इस संसार को दिव्य साम्राज्य का दर्पण बनाने, इस दुनिया को एक अलग दुनिया में बदलने तथा समस्त मानवजाति को धर्मपरायणता के मार्ग एवं जीवन की एक नवीन पद्धति अपनाने की ओर प्रेरित करने के लिये परिश्रम और प्रयास कर रहे हैं।"[26]

"हे प्रभु के प्रियजनों ! इस बहाई युगधर्म में, ईश्वर का धर्म विशुद्ध चेतना है। उसका धर्म भौतिक जगत का नहीं है। इसका आगमन न संघर्ष और न युद्ध के लिये, न ही अनिष्ट अथवा लज्जित करने वाले कार्यों के लिये हुआ है; यह न तो अन्य धर्मों के साथ झगड़े के लिये है, न ही राष्ट्रों के साथ संघर्ष के लिये। इसकी एकमात्र सेना ईश्वर का प्रेम है, इसका एकल आनंद है उस महान के ज्ञान की निर्मल मदिरा, इसका एकमात्र युद्ध सत्य को प्रतिपादित करना है; इसका एकमात्र धर्मयुद्ध आग्रही स्व तथा मानव ह्रदय के दुष्प्रभावों के विरूद्ध है। इसकी विजय आत्मसमर्पण और समर्पित होने में है तथा उसकी शाश्वत् महिमा निःस्वार्थ बने रहने में है।"[27]

उपरोक्त उद्धरण उन लोगों के विशिष्ट गुणों का वर्णन करते हैं जिन्हें अब्दुल बहा "ईश्वर की सेना" में शामिल मानते हैं, जिनका सम्बोधन वे "ईश्वर के प्रिय" के रूप में करते हैं और जो "भौतिक जगत की जंजीरों और बन्धनों से मुक्त" हैं। इन विशेषताओं पर मनन करते हुए निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करें।

क. अधिकांश लोग ____________________ से ग्रसित हैं, ____________________ में आकंठ डूबे हुये हैं तथा ____ हैं।

ख. वे आत्माएं जो भौतिक जगत की जंजीरों और बंधनों से मुक्त हो गई हैं और जो तीव्रता से उड़ रहे पक्षियों की भांति, इस असीम लोक में उड़ान भर रही हैं। वे ______________________________ और ______________________________ हैं, वे ____ का परित्याग करते हैं, उनकी सर्वोच्च कामना ____ ________________________________ को प्रकाश में लाने, ______________________ ______________________________________ दर्शाने, __________________ का बोध कराने तथा __________________________ अभ्यास करने पर केन्द्रित होती है।

ग. आज इस संसार में, प्रत्येक जनसमूह ________________________ है, ________________________ विचरण ________________ ________________________ करता हुआ, ________________ __________________ लगा हुआ है।

घ. केवल महानतम् नाम का यह समुदाय ही, ________________________ ________________________ है और ________________ __________________ नहीं है। उनसब के बीच अकेले ये लोग ही ______________________ उठ खड़े हुए हैं, ______________ __________________ अनुसरण करते हुए, अत्यंत उत्सुकतापूर्वक __________________ इस ________________________ __________________ को ____________________ बनाने, इस ____________ को ____________________ में बदलने तथा समस्त मानवजाति को प्रेरित करने के लिये ____________________ रहे हैं।

ङ. ईश्वर का धर्म ______________ चेतना है। उसका धर्म ____________ का नहीं है। इसकी एकमात्र सेना ____________ प्रेम है, इसका एकल आनंद है ____________________________ इसका एकमात्र युद्ध ____________________________ है, इसका एकमात्र धर्मयुद्ध ________________________________ है। इसकी विजय __________________________________ में है तथा ______________________________ बने रहने में है।

भाग 9

बहाउल्लाह द्वारा प्रकटित प्रार्थनाओं में से लिये गये निम्नलिखित अंशों को शायद आप कण्ठस्थ करना चाहेगें :

“हे मेरे प्रभु ! अपने अस्तित्व के प्रकटीकरण के समक्ष, उन्हें उनकी शक्तिहीनता का बोध करा तथा अपनी आत्मनिर्भरता व सम्पदाओं के विविध चिन्हों के समक्ष उन्हें अपनी निर्धनता को पहचानने की शिक्षा दे, ताकि वे तेरे धर्म के चतुर्दिक एकत्र हो सकें और तेरी दया के वस्त्र से लिपटे रहें और तेरी इच्छा की सुप्रसन्नता की डोर को थामे रहें।”[28]

“अपने सेवकों को अहम् एवं लालसा के वस्त्रों से दूर रख हे मेरे ईश्वर, या ऐसा वर दे कि उनके नेत्र ऐसी ऊँचाईयों को प्राप्त कर लें कि अपनी ही इच्छा को तेरी महिमा की सुरभि से ओतप्रोत पायें और अपने ह्रदय में स्वयं तेरे कृपालु स्वरूप के प्रकटीकरण के अतिरिक्त अन्य कुछ न पहचानें, पृथ्वी तथा इसमें जो कुछ भी तुझसे अपरिचित विद्यमान है अथवा जो कुछ भी तेरे अतिरिक्त कुछ प्रकट करता है, से स्वच्छ हो सके।”[29]

भाग 10

जैसे–जैसे किशोरों को पोषित करने में आपकी रुचि गहराती जाएगी, वैसे–वैसे आप उन अनेक सिद्धांतों से परिचित होते जायेंगे जो किशोरावस्था का वर्णन करने का प्रयास करते हैं। उनमें से एक शब्द जिससे आपका सामना बार–बार होगा वह है "संकट" – पहचान, बोध, मनोभावों, माता–पिता के साथ सम्बन्ध, अधिकार के प्रति अनुक्रिया आदि से जुड़ा है। आपको ऐसी परिकल्पनाओं की ओर सूक्ष्म दृष्टि से देखने की आवश्यकता है, ताकि संकट की स्थिति को कहीं आप प्रत्येक किशोर की एक आवश्यक अवस्था न समझ बैठें। क्या यह सचमुच आवश्यक है कि प्रत्येक किशोर का जीवन मुख्यतया एक या दूसरे प्रकार की उथल–पुथल से भरा हो ? क्या मानव इतिहास के शुरू से ही किशोर ऐसे संकटों से ग्रसित रहे हैं और क्या आज भी प्रत्येक संस्कृति और समाज में वे इनसे गुज़रते रहते हैं ?

इन प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करते हुए, आपको इस बात से अवगत होना चाहिए कि किशोरावस्था के सम्बन्ध में अधिकांश प्रचलित अध्ययन ऐसे ढाँचों के अंतर्गत किये जाते हैं जो स्व–तुष्टिकरण, शारीरिक परिवर्तनों, यौन सम्बन्धी जागरूकता और भौतिक उपलब्धियों व्यवसाय, आय तथा सामाजिक स्तर पर अधिक बल देते हैं। वे वर्ग, नस्ल और लिंग सम्बन्धी पहचानों पर प्रायः संकुचित रूप से ध्यान देते हुए मानव आत्मा में ईश्वर प्रदत्त गुणों को अनदेखा करदेते हैं। इन अध्ययनों से प्राप्त कुछ अन्तर्दृष्टियाँ अवश्य ही आपको इस आयु वर्ग की विशेषताओं को समझने के आपके प्रयास में सहायक सिद्ध होंगी। लेकिन यह संदेहास्पद है कि इन अध्ययनों से प्रेरित प्रयास, युवाओं को भौतिकवादी समाज के मापदण्डों से सामन्जस्य बैठाने से अधिक कुछ करेंगे, समाज जिसकी मानसिकता, हम जानते हैं कि आध्यात्मिक ग्रहणशीलता को समाप्त कर रही है। दूसरी ओर, किशोरों की वह अवधारणा जिसका आप आलिंगन करेंगे, ऐसे व्यक्तियों की आध्यात्मिक पहचान को विकसित करने की ओर संकेत देती है जो "एक सतत् विकासशील सभ्यता को आगे ले जायेंगे" और जो "एकता के निर्माणकर्ता" तथा "न्याय के सर्वविजेता" बनेंगे।

इस ओर यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि इस युवा उम्र वाले लोगों को जिस प्रकार दूसरे देखते हैं, उसका उन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। अतः, समाज में व्यापक फैली किशोरावस्था की अंधकारमय छवि, आचरण के अनचाहे प्रतिरूपों के प्रसार में सहायक होती है। उदाहरण के लिए, सिगमण्ड फ्रायड से सम्बन्धित इस कथन को लें जिसके अनुसार किशोरावस्था एक अस्थायी मानसिक बीमारी होती है, या फिर एना फ्रायड का यह सुझाव कि किशोरावस्था के दौरान सामान्य बना रहना ही अपने–आप में एक असामान्य बात है। क्या इस तरह के कथन ऐसे आवरण उत्पन्न नहीं करते जिससे किशोरों की सच्ची क्षमता को देखने में लोग असफल रह जाते हैं ? किन प्रमाणों ने इन वैज्ञानिकों को ऐसे व्यापक निष्कर्षों तक पहुँचनेमें सहायता की ? हालांकि अनेक ऐसे शिक्षाविद् भी हैं जिन्होंने किशोरावस्था का अधिक अनुकूल रूप में वर्णन किया है, लेकिन उनके विचार इस परिचर्चा में हावी नहीं रहे हैं। अभिभावकों और शिक्षकों के मन में समान रूप से जो छवियाँ निरन्तर अंकित रहती हैं वे विद्रोह, अविवेक और छिछोरेपन की हैं। तब हम यह पूछ सकते हैं कि ऐसा समाज, जिसकी रगों में इस तरह के विचार प्रवाहित हो रहे हों, भला किस तरह किशोरों को ऐसे युवा बनने में सहायक सिद्ध हो सकता है जिसका वर्णन इस पुस्तक की पहली इकाई में किया गया है ?

भाग 11

उपरोक्त चर्चा के संदर्भ में, हम यह सुझाव देना चाहते हैं कि आप निम्नलिखित दृष्टिकोण अपनाएँ: जब भी किशोरों का एक समूह ऐसा अनुचित आचरण अपना ले जो संकट एवं विजय के स्तरों की सामान्य विकास की प्रक्रिया के स्वाभाविक परिणामों से हटकर हो। तो ऐसे हालात के कारणों को

सामाजिक वातावरण में खोजना चाहिए, या फिर शायद उन सुस्पष्ट विरोधाभासों में जो, जागरूक हो रहे ये तरूण मस्तिष्क, उन वयस्कों के जीवन में देखते हैं जिन पर वे पहले निःसंदेह पूर्ण रूप से विश्वास करते थे, या फिर बचपन की आदतों को पीछे छोड़ने का प्रयास कर रहे व्यक्ति की तार्किकता की पहचान कर सकने की व्यस्कों की अक्षमता में।

निःसंदेह, यह दृष्टिकोण किशोरों के आचरण में उतावलेपन या विद्रोहात्मकता के पूर्ण अभाव की बहस नहीं करता। जो सुझाया जा रहा है वह यह है कि इस आयु से जुड़ी कई नकारात्मक प्रवृत्तियों के लिए अधिकतर सामाजिक परिवेश और बड़ों के व्यवहार जिम्मेदार होते हैं।हमारे द्वारा किये गये दावे के निहितार्थों का विश्लेषण करने के लिए सम्भवतः आप अपने समूह में निम्नलिखित वक्तव्यों के औचित्य के बारे में चर्चा करना चाहेंगे तथा इस विचार को और स्पष्ट करते हुए अन्य वक्तव्य लिखना चाहेंगे :

- किशोर उन वयस्कों के विरुद्ध विद्रोह करते हैं जो उन्हें ऐसे मापदण्डों पर चलने को कहते हैं जिनका वे स्वयं अनुसरण नहीं करते।
- वे ऐसी सलाह के प्रति विद्रोहाभास दर्शाते हैं जिसे उपदेश रूपी भाषा में दिया जाता है।
- वे तब साररहित हो जाते हैं जब दुनिया उन्हें ऐसी सतही गतिविधियों के अतिरिक्त और कुछ नहीं दे पाती जो उनके बौद्धिक विकास को बाधित करने लगते है।
- वे अनुशासन के प्रति अवमानना तब दिखाते हैं जब बड़े उन पर कड़े नियम थोपते हैं, विशेषकर यदि बाल्यावस्था में उन्हें अबाधित स्वतंत्रता मिली हो।
- वे आवेगपूर्ण तब प्रतीत होते हैं जब उनके चारों ओर वयस्क यह नहीं जानते कि उन्हें अपने निर्णयों के दूरगामी परिणामों के बारे में विचार करने के लिये किस प्रकार उनकी सहायता की जाये।
- वे अहंकार तब विकसित करते हैं जब समाज की निःस्वार्थ सेवा के बजाय उन्हें आत्ममहत्ता सिखलायी जाती है।
- वे स्वयं के वशीभूत तब हो जाते हैं जब सतत् अधिप्रचार उन्हें अपनी शारीरिक वासनाओं को पूरा करने का प्रलोभन देता है।

भाग 12

विश्व न्याय मंदिर ने "उन्मुक्त समाज" की "शिथिलता तथा चरित्रहीनता" के बारे में तथा युवाओं को इसके प्रभाव से बचने की आवश्यकता के बारे में बताया है :

> **"... ईश्वर के धर्म को अत्यंत लाभ प्राप्त होगा जब बहाई, विशेषकर बहाई युवा एक उन्मुक्त समाज की शिथिलता तथा चरित्रहीनता के विरूद्ध उठ खड़े होंगे, व्यवहार के उच्च स्तर जिन्हें वे उठाये रखने का प्रयास कर रहे हैं, आध्यात्मिक नियमों में दृढ़ता से जमे हों तथा उन्हें विश्वास, आत्मसम्मान तथा वास्तविक प्रसन्नता दें। दूसरी ओर धर्म को महानतम हानि पहुंचेगी यदि अनुयायी वर्तमान लहर से घिर मात्र जायें।"[30]**

निम्न उद्धरण में, संरक्षक इस प्रकार के समाज के स्वभाव तथा हम सभी पर डाले जा रहे प्रभाव पर गहन अंर्तदृष्टि उपलब्ध कराते हैं :

> **"वास्तव में, आज समाज में व्याप्त बुराईयों का मुख्य कारण आध्यात्मिकता का अभाव है। हमारे युग की भौतिकवादी सभ्यता ने मानवजाति की ऊर्जा और रूचि को इस प्रकार अन्तर्लीन कर लिया है कि आम तौर पर लोग रोजमर्रा के भौतिक जीवन की ताकतों और अवस्थाओं से ऊपर उठने की आवश्यकता महसूस नहीं करते। ऐसी चीजों की माँग अब नहीं रही जिन्हें हम अपने भौतिक अस्तित्व की आवश्यकताओं से अलग, आध्यात्मिक कह सकें।"[31]**

संसार में आज विघटन की प्रक्रियाका वर्णन करते हुए धर्मसंरक्षक नैतिक पतन के अनेक चिन्हों की पहचान करते हैं। अपने पत्रों में वह जिन दशाओं को रेखांकित करते हैं, वे हैं विवाह के प्रति गैर–जिम्मेदाराना रवैया और परिणामतः तलाक की अधिकता, परिवार की एकता का कमजोर पड़ना और अभिभावकों के नियंत्रण में बढ़ता ढीलापन, सांसारिक दम्भ, धन–सम्पत्ति और भोग–विलास का अधिकाधिक अनुसरण, विलासमय तल्लीनता में विलीन होना, कला और संगीत का पतन, साहित्य एवं प्रेस के स्तर में अवनति, जातिगत शत्रुता तथा राष्ट्रीय कट्टरता। जबकि इन बुराईयों के प्रभावों से कोई भी प्रतिरक्षित नहीं है, फिर भी किशोरों को ये खास तौर पर प्रभावित करते हैं। उदाहरण के तौर पर, अधिकांश छोटे बच्चों पर तलाक के प्रभावों का विचार कीजिए। निःसन्देह वे गहन दुख का अनुभव करते हैं और एक संगठित परिवार की सुरक्षा व संरक्षण के लिए तरसते हैं। पर किशोरावस्था के दौरान वे दोष, क्रोध, शर्म और अपमान जैसे मनोभावों से अभिभूत हो जाते हैं जब उनके माता–पिता का विवाह टूट जाता है। जबकि वे अपने माता–पिता को इसके लिए जिम्मेदार ठहराते हैं, फिर भी अपने परिवार के दुर्भाग्य के लिए अपने आप को दोषी मानने से वे स्वयं को रोक नहीं पाते। उनके मन में विवाह एवं पारिवारिक जीवन के प्रति संशय के बीज पड़ जाते हैं और समाज में चारों ओर दिखाई दी जाने वाली तलाक की बढ़ती हुई लहर को देखकर उनके नकारात्मक दृष्टिकोण को पुष्टि मिलती है।

1. आप इस पर मनन करना उपयोगी पाएँगे कि धर्मसंरक्षक द्वारा उल्लेखित कुछ अवस्थाएँ किस तरह किशोरों द्वारा वास्तविकता का बोध, अपने स्वयं के बारे में उनके सोचने के तरीके, जीवन के बारे में उनके विचारों, उनकी भावनाओं एवं मनोभावों, सही और गलत के बीच अन्तर कर पाने की उनकी योग्यता, दूसरों के प्रति उनके व्यवहार तथा समाज की संस्थाओं के प्रति उनके विश्वास को आकार दे सकती हैं। अपने कुछ विचार लिखें :

   क. एक उन्मुक्त समाज की शिथिलता तथा चरित्रहीनता : ____________________________

   ____

   ____

ख. परिवार की एकता का कमजोर पड़ना और अभिभावकों के नियंत्रण में बढ़ता ढीलापन :

ग. सांसारिक दम्भ, धन–सम्पत्ति और भोग–विलास का अप्रतिबन्धित अनुसरण तथा विलासमय तल्लीनता में रमे :

घ. कला और संगीत का पतन और साहित्य एवं प्रेस के स्तर में अवनति :

ङ. जातिगत शत्रुता तथा राष्ट्रीय कट्टरता : ________________________________

____

____

____

____

____

____

____

____

2. किशोरों के जीवन में इन सड़ती हुई सामाजिक दशाओं के गहरे प्रभाव पर मनन करते हुए आप के हृदय व मस्तिष्क में कैसे मनोभाव उत्पन्न होते हैं ? उनकी सच्ची क्षमताएँ विकसित करने में उनकी सहायता करते हुए, इन प्रभावों की जानकारी किस प्रकार प्रकार आपकी मदद कर सकती है ?

भाग 13

एक विघटित होते हुए विश्व के नकारात्मक तत्वों की ओर ध्यान आकर्षित करने का अर्थ उन सकारात्मक शक्तियों के महत्व को नकारना नहीं है जो समाज में आज कार्य कर रही हैं। जो किया जाना आवश्यक है वह है कि किशोरों को ऐसा वातावरण उपलब्ध कराया जाये जिसमें उनकी आध्यात्मिक शक्तियों को पोषित किया जा सके यह सुनिश्चित करते हुये कि इस प्रकार वे उचित सामाजिक शक्तियों से प्रभावित हों। उन्हें समाज के हानिकारक तत्वों से पूर्णतया अलग करने के प्रयत्न व्यर्थ हैं। इसके स्थान पर उनके चारों ओर का विश्व, उनके विचारों और मनोभावों को किस प्रकार प्रभावित करता है, इसका मूल्यांकन और विश्लेषण करने में अवश्य ही उनकी मदद की जानी चाहिए। ऐसे विश्लेषण को चाहिए कि विभिन्न प्रकार के अधिप्रचार पर विशेष ध्यान दें, क्योंकि अधिकांश समाज में अधिप्रचार ही किशोरों के मूल्यों, अभिवृत्तियों एवं विचारों को अधिकाधिक आकार दे रहे हैं। इस बिन्दु को दर्शाने के लिये विज्ञापन की कुछ विशेषताओं की एक झलक पर्याप्त होगी।

अधिप्रचार को नियंत्रित करने वाली भौतिकवादी शक्तियाँ वास्तविकता को विकृत कर देती हैं। उदाहरण के लिए, विज्ञापनों में प्रस्तुत परिपूर्ण किन्तु अप्राप्य छवियाँ, युवाओं के मनोभावों के साथ एक ऐसे समय खिलवाड़ करती हैं जब उनकी आत्म–समझ बढ़ रही होती है। एक के बाद एक सन्देशों में लड़कियों का मुख्य कार्य पुरुषों को आकर्षित करना है। मर्दानगी को केवल शारीरिक बल के सन्दर्भ में परिभाषित करने की प्रवृत्ति बढ़ा–चढ़ाकर बतायी जाती है अनेक बार तो आक्रामक कृत्यों तथा खतरा उठाने को माफ करने तथा यौन गतिविधियों तथा विजय के बिंदु तक दुर्बलता की पहचान वाली हर बात को निर्दयता के साथ नकारा जाता है और आक्रामक व्यवहार का क्रमबद्ध प्रचार किया जाता है। दिलचस्प तथ्य, कि ताकत से संबंधित ब्रांड को आकर्षक रूप से विज्ञापित किया गया जिसका उददेश्य है कि लड़कियां इसे स्वीकार करें।

इसमें कोई संदेह नहीं कि युवाओं की ओर केन्द्रित अधिकांश विज्ञापनों का मुख्य उद्देश्य एक ऐसी संस्कृति का निर्माण करना है जिससे जुड़ने के लिए वे लालायित हों। इस संस्कृति में वे एक समान भाषा बोलने, एक जैसा आचरण करने और सब से बढ़कर, अंतहीन वस्तुओं का उपभोग करना सीखेंगे। इससे बढ़कर, युवाओं को एक विस्तृत मूल्य–प्रणाली में दीक्षित किया जायेगा जो उनके जीवन भर उपभोग

के प्रतिरूपों का निर्धारण करेगा। यह रूचिकर पाया गया है कि ऐतिहासिक तौर पर "टीनेजर" शब्द का आविष्कार कुछ दशकों पूर्व ही, उस लाभप्रद मार्केट का लाभ उठाने के लिए किया गया था जिसका प्रतिनिधित्व समाज का यह वर्ग करता है।

उभर रही इच्छाओं का पूरी तरह शोषण करने के लिए, विज्ञापन द्वारा सृजित संस्कृति किशोरों के जीवन में कामवासना को केन्द्रीय स्थान देती है। अमादक पेय (सौफ्ट ड्रिंक्स) जैसे उत्पादों का प्रयोग, जिनका कामवासना से कोई सरोकार नहीं है, रोमानी सम्बंधों का भ्रम पैदा करने के लिए किया जाता है। व्यक्तिगत अपर्याप्तता की भावनाएँ तथा शरीर की दुर्गन्ध, अपूर्ण त्वचा या अप्रचलित पहनावे के कारण अस्वीकृति की चिन्ता पोषित की जाती है ताकि ऐसे श्रृंगार–उत्पादों (कोस्मेटिक्स) एवं नये तरीकों को बढ़ावा दिया जा सके जो यौन आकर्षण को बढ़ाते हैं और लज्जित होने से छुटकारा दिलाने का वादा करते हैं। यहाँ तक कि कारों का भी "हॉट", "हैंडसम", "हनी टू हैण्डल" जैसे शब्दों द्वारा वर्णन किया जाता है जिनके अर्थ कामुकता से सम्बन्धित हैं। पिछले अनेक दशकों में चूँकि नैतिकता के मापदण्ड गिरे हैं, नैतिक दृष्टि से आपत्तिजनक, विज्ञापन का सारांश और अधिक सुस्पष्ट हो गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि धीरे–धीरे उपभोक्तावाद के कई पहलू अपने आप में कामुक गतिविधियों का रूप लेते जा रहे हैं।

विस्तार पा रहे विश्वव्यापक "टीन" मार्केट (किशोर बाज़ार) में ब्रांडों की भूमिका विशेष उल्लेख के योग्य है। इस मार्केट की सम्भावनाओं का निस्संकोच लाभ उठाने के तरीकों का पता लगाने के लिए किये गये अध्ययन सुझाते हैं कि ब्रॉण्ड रूपी प्रतिमाओं की पूजा अदम्य उपभोक्तावाद का एक शक्तिशाली तत्व है। ऐसा प्रतीत होता है कि किशोरावस्था की अनिश्चित दुनिया में ब्रॉण्ड स्थिरता प्रदान करते हैं और विज्ञापनों द्वारा आकर्षित बनाई जा रही एक विश्वव्यापक संस्कृति में प्रवेश करने हेतु पासपोर्ट के रूप में समझे जा सकते हैं। जिस संस्कृति को ये व्यापारिक विधियां बढ़ावा दे रही होती हैं, वह राष्ट्रों के बीच बढ़ती गरीबी से बेखबर है; यह प्रचुरता की उस समृद्धि की छवि का चित्रण करता है जिसका आनंद मानवजाति का एक अल्पवर्ग ही उठाता है, ताकि हर पृष्ठभूमि के किशोरों को यह विश्वास दिलाया जा सके कि उपभोग्य उत्पाद असीम आनंद के स्त्रोत होते हैं।

"टीन" मार्केट (किशोर बाज़ार) के कुछ अध्ययनों में, विभिन्न प्रकार के उत्पादों को खरीद पाने की योग्यता प्रदान करने वाली प्रवृत्तियों एवं परिस्थितियों के आधार पर युवा जनों का वर्गीकरण किया गया है। उदाहरण के लिए, एक विशेष अध्ययन में उन्हें 6 समूहों में बाँटा गया है : "संतोषी", जो यह मानते हैं कि उनका भाग्य बदल नहीं सकता और जो थोड़े प्रयास से ही काम चलाना चाहते हैं; "मनमौजी", जो भोग–विलास की खोज में रहते हैं और जिनके मन सामाजिक और राजनैतिक चिन्ताओं से मुक्त ब्रांड रूपी प्रतिमाओं की आराधना में शामिल होने को तैयार रहते हैं; "परिश्रमी", जो काफी हद तक पिछले वर्ग की तरह अपनी ऊर्जस्विता एवं श्रम करने की क्षमता में भिन्न होते हैं और जिनके लिए उत्पाद और सेवाएं तरक्की करने तथा प्रतियोगिता में आगे बने रहने के माध्यम मात्र होते हैं; "शांति से उपलब्धि पाने वाले", जो अनुपालक होते हैं, वे राजनैतिक एवं सामाजिक विद्रोह से दूर रहते हैं, अपने परिवारों से निकटतापूर्वक जुड़े रहते हैं तथा किसी उत्पाद की गुणवत्ता और फायदों के आधार पर ही खरीददारी करते हैं; "समर्थनकर्ता", जो अनुसारक भी होते हैं पर अकादमिकता की ओर वे अभिमुख नहीं होते और यह अपने मन को खेल–कूद सम्बन्धी आंकड़ों, टीमों व खिलाड़ियों के नाम आदि से इतना भर लेते हैं कि राजनैतिक एवं आर्थिक मुद्दों के लिए कोई स्थान ही नहीं छोड़ते; और अन्त में आता है "विश्व–रक्षक", जो विश्व में सकारात्मक बदलाव लाना चाहते हैं और जिनका महत्व उनके द्वारा विक्रयकर्ता को प्रदान किये जाने वाले अवसरों से है, ताकि वह सामाजिक मुद्दों को, बेची जाने वाली वस्तुओं में बदल दे।

ऐसा प्रतीत होता है कि सभी वस्तुयें ब्रांडीकरण तथा उपभोक्तावाद की पहुंच में हैं। विशेष रूप से सोशल मीडिया के तेजी से बदलते क्षेत्र में, किसी व्यक्ति के जीवन का हर पहलू उपभोग के लिए सामग्री बन सकता है। स्पष्ट तौर पर "साझा करने", "मित्रता" और "नेटवर्किंग" के माध्यम से दुनिया को एक बेहतर करने के लिए बनाए गए प्लेटफॉर्म वास्तव में विज्ञापनों की एक विस्मयकारी शृंखला के लिए

चौनलों के रूप में, उनकी पहुंच बढ़ाने और उनकी पैठ को गहरा करने का काम करते हैं। तथापि, यहाँ दिया गया संक्षिप्त विश्लेषण अपने आप में विज्ञापन की निन्दा नहीं है। इसका उद्देश्य व्यापारिक, राजनैतिक, जातीय एवं सांस्कृतिक अधिप्रचार का विवेचनात्मक परीक्षण कर पाने की आपकी योग्यता को बढ़ाना है, ताकि किशोरों के विचारों एवं आचरण पर इसके प्रभावों की पहचान कर पाने में आप उनकी सहायता कर सकें। इस जटिल विषय पर और अधिक मनन करने में निम्नलिखित अभ्यास आपकी सहायता कर सकते हैं :

1. विज्ञापनों में भाषा और छवियों का इस प्रकार प्रयोग किया जाता है जिससे साधारण उत्पादों को उत्तेजना के स्त्रोत में परिवर्तित किया जा सके। वस्तुओं एवं घटनाओं को उनकी योग्यता से कहीं अधिक बढ़कर महत्व देने के लिये प्रतीकों का उपयोग किया जाता है। उदाहरण के लिये, एक पेय पदार्थ जैसा होता है, उसे केवल वैसा ही वर्णित नहीं किया जा सकता – कि वह प्यास बुझाने वाली कोई वस्तु है। पर इसे आनंद और पूर्ति दायक के रूप में दर्शाया जाता है। पहनावे और सौन्दर्य प्रसाधनों को मोहक बनाने के लिए फैशन और भव्यता के प्रतीकों का इस्तेमाल किया जाता है। कैंडीबार की बिक्री करने के लिए युवापूर्ण उल्लास के प्रतीकों का उपयोग किया जाता है। रोमांच और खेल भावना के प्रतीक शराब की बिक्री में सहायक होते हैं। क्या आप कुछ विशेष विज्ञापनों तथा उनमें प्रयोग में लाये गये वाक्यांशों और छवियों का उदाहरण दे सकते हैं जिनका प्रयोग वे किसी वस्तु को ऐसा बनाने के लिए करते हैं जो असम्भव हो ?

____

____

____

____

____

2. किसी भी उत्पाद को खरीदने पर होने वाली खुशी के भ्रम को क्षणिक रखा जाना होगा अन्यथा हम उसी में संतुष्ट रहेंगे जो हमारे पास है। अतः, विज्ञापन को लगातार इच्छाओं का पुर्ननिर्माण करते रहना होगा और यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारे पास जो कुछ है, उससे हम पूरी तरह कभी संतुष्ट और तृप्त न रहें। यह कैसे प्राप्त किया जाता है ?

____

____

____

____

____

3. हम यह उल्लेख कर चुके हैं कि सामाजिक मुद्दों को भी कई बार उपभोग्य पदार्थों में बदल दिया जाता है। क्या आप इसके कुछ उदाहरण दे सकते हैं ?

____

____

____

4. वर्तमान मीडिया परिवेश में, दुर्भाग्य से व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए उच्च आकांक्षाओं का शोषण किया जा रहा है। उत्पादों का विज्ञापन करने के लिए हमारे अंदर महान भावनाओं को जगाने वाले शब्दों और वाक्यांशों का उपयोग किया जा रहा है, और मानवता की आध्यात्मिक विरासत के विभिन्न पहलुओं को खरीदे जाने वाले सामान के रूप में माना जा रहा है। क्या आप कुछ उदाहरण दे सकते हैं ?

5. उन सोशल मीडिया मंचों के बारे में सोचें जिनके साथ आपके क्षेत्र के किशोर जुड़ते हैं। ऐसे मंचों पर उनकी भागीदारी उनके द्वारा बनाई गई मित्रता की प्रकृति, स्वयं के प्रति उनके दृष्टिकोण और उनकी आशाओं और आकांक्षाओं को कैसे प्रभावित करती है ? इस प्रकाश में, निम्नलिखित कथन की वैधता पर विचार करें: सोशल मीडिया में अपनी भागीदारी के माध्यम से किशोर अनजाने में खुद को उत्पादों के रूप में समझ और प्रस्तुत कर सकते हैं।

भाग 14

यहां पर सावधान करना आवश्यक है। किशोरों पर वर्तमान समाज के प्रभाव भले ही कितने भी हानिकारक हों, फिर भी आपके स्वयं के उद्यमों में इन पर बहुत अधिक बल देना गलत होगा। किशोरों को ऐसे कोमल प्राणियों के रूप में समझने की आदत डाल लेना बहुत सरल होता है, जिन्हें वातावरण के दुष्प्रभावों से निरन्तर बचाये रखने की आवश्यकता रहती है। ऐसी पहल उनको आध्यात्मिक सशक्तिकरण की ओर कभी नहीं पहुँचा सकती। सामाजिक परिवर्तन के कृतसंकल्प एजेंट बनने के रूप में कार्य करने की उनकी क्षमता के उपयोग पर तथा एक बेहतर समाज के निर्माण में योगदान करने की उनकी तत्परता पर ही आपके प्रयासों को केन्द्रित होना चाहिए। वर्तमान अशान्त दुनिया में भी, प्रत्येक संस्कृति के असंख्य किशोरों के ऐसे उदाहरण मौजूद हैं जो उन परिवेशों की दुःखद अवस्थाओं से ऊपर उठ चुके हैं जिनमें वे जी रहे हैं और जिन्होंने निरन्तरता के साथ सेवा के प्रति उत्साह, सीखने के प्रति उत्सुकता, न्याय का तीक्ष्ण बोध तथा परोपकारिता के प्रति गहरा झुकाव जैसे गुण प्रदर्शित किये हैं।

अनेक शिक्षाविद् उन छिपी हुई बौद्धिक एवं आध्यात्मिक शक्तियो को संदर्भित करते हैं, जो किशोरावस्था परिवर्ती चरण में अपने आप को प्रकट करने लगती हैं। उदाहरण के लिए कुछ हैं जो किशोरों द्वारा दर्शाई जाने वाली सैद्धांतिक समस्याओं के प्रति उनकी रूचि को रेखांकित करते हैं। एक शिक्षाविद ने सामाजिक परिवर्तन में उनके द्वारा निभायी जा सकने वाली भूमिका पर बल देते हुए किशोरों की प्रत्येक पीढ़ी को "क्रमिक विकास की प्रक्रिया में एक सक्रिय पुनरुद्धारक" बताया है, जो अपनी "निष्ठा एवं ऊर्जा, को उसके संरक्षण के लिये अर्पित कर सकते हैं जो निरन्तर सच्चा महसूस होता है, एवं उसके क्रान्तिकारी सुधार के लिये जिसने अपना पुनरुद्धारक महत्व खो दिया है"। एक अन्य विचारक ने यह कह कर किशोरावस्था में परिवर्तन की क्षमता की ओर ध्यान आकर्षित किया है कि किशोर "जैविक पात्र होते हैं, पूर्णतया निर्मित किन्तु विकसित होते हुए," जो अपने सम्पूर्ण "अस्तित्व" के साथ ग्रहण करने में सक्षम होते हैं। वह रूपांतरण लाने में उनकी अंतःशक्ति की ओर ध्यान भी आकर्षित करता है और जोर देता है कि शिक्षा को प्रत्यक्ष ज्ञान की विभिन्न विधाओं का लाभ उठाना चाहिये जिसमें युवाओं द्वारा किसी भी अनुभव में लाई जा सकने वाली तीव्रता भी शामिल है, ऐसी तीव्रता जो "अस्तित्व की निष्ठा के साथ" मानव समाज को "एक निर्जीव, मशीनी, खोखली, सैद्धान्तिक अवधारणा के बजाय एक सजीव, फलते–फूलते, सचमुच प्रेममयी, आनंद से भरी और उल्लासित सजीव–इकाई में परिवर्तित कर सकती है।" "यही परिवर्तन का जादू है," उसके शब्द हैं, "और यही किशोरावस्था की अन्तर्निहित क्षमता है।"

उपरोक्त कुछ सन्दर्भों के साथ–साथ, पिछले कुछ भागों के विश्लेषण, यह दर्शाते हैं कि किशोरावस्था की अवधारणा को सुस्पष्ट करने में आपको कितनी सावधानी बरतने की आवश्यकता है। हालाँकि आने वाले वर्षों में इस विषय पर आप सूक्ष्म रूप से भिन्न विचारों की जाँच करेंगे, फिर भी, मानव जीवन की इस महत्वपूर्ण अवधि के महत्व की आपकी अपनी समझ मुख्यतः पिछली एवं इस इकाई में उद्धृत किये गये उद्धरणों द्वारा आकार पायेंगी। इसमें कोई सन्देह नहीं हो सकता कि किशोर समूहों को आपके स्वयं के अनुभवों द्वारा आपके विश्वास की पुष्टि होगी।

भाग 15

किशोर समूहों के अध्ययन के लिये जिन पाठ्यक्रमों को रूही संस्थान विकसित करता है, मुख्य श्रृंखला की पुस्तकों की तरह ही, विशेषकर कुछ प्रारंभ वाले जो आरम्भिक झलक में भ्रामक तौर पर सरल दिख सकते हैं। यह सरलता अधिकतर प्रयोग में लायी जाने वाली भाषा और सम्बन्धित अभ्यासों की होती है। विचाराधीन अवधारणाएँ जटिल और गहरी दोनों हैं। पाठ्य सामग्री में व्याप्त विचार बचकानेपन से बहुत दूर वास्तव में, मुददों का गहन अध्ययन करने वाले बहुत से किशोरों के लिये चुनौतीपूर्ण सिद्ध होगी। किशोरों की क्षमता का आकलन करने के उददेश्य से इस और आगे के दो भागों में हम आपके समक्ष कई किशोरों द्वारा उनकी अपनी जुबानी उनके कुछ विचारों को प्रस्तुत कर रहे हैं। ये उद्धृत अंश ऐसे युवाओं के हैं जो किसी न किसी तरह से हिंसा से प्रभावित हुए हैं। ऐसे किशोरों के हिंसक बर्ताव के इतने सारे दृश्यों का चित्रण मीडिया में किया जा रहा है कि आशा और हानि की उनकी अनकही कहानी को सुनना आवश्यक हो गया है।

पहला अंश एक तेरह वर्षीय लड़के से सम्बन्धित है जिसकी वास्तविक पहचान को छुपाने के लिए हम उसे पीटर बुलायेंगे, जिसने आठ वर्ष की आयु से ही हिंसा और युद्ध के प्रभावों को देखा है। वह जब तेरह वर्ष का था, स्कूलों और युवा संगठनों में शान्ति को बढ़ावा देने लगा। अपने कुछ संगी–साथियों के कठिन तानों को भी इस कार्य के परिणामों के रूप में उसने स्वीकारा :

इन सबसे मैं प्रभावित नहीं हुआ। मेरे परिवार का मानना था कि समुदाय की देखभाल करना और उसकी मदद के लिए जो कुछ भी हो सके करना महत्वपूर्ण था। हालाँकि मैं केवल तेरह वर्ष का

था, फिर भी मैं देख पा रहा था कि हमारे सामने सबसे बड़ी समस्या हिंसा और युद्ध की थीं। किसी भी चीज़ से अधिक आवश्यकता शांति की थी। एक बच्चे के लिए शांति लाने का प्रयास करना अवश्य ही कठिन काम है, लेकिन कुछ भी पाने का एक मात्र रास्ता है प्रयास ...।

मेरे देश में इतने वर्षों तक इतने सारे झूठ बोले गये हैं कि लोगों को अब यह नहीं पता कि वे किसे और किसका विश्वास करें। अखबारों, रेडियो या टेलीविजन, राजनीतिज्ञों, सशस्त्र समूहों पर वे हमेशा भरोसा नहीं कर सकते, लेकिन जब वे बच्चों को हिंसा के बारे में कहते हुए सुनते हैं और यह कि इससे हम किस तरह प्रभावित होते हैं और हमें किस हद तक शान्ति की चाह है, तब उन्हें कहीं न कहीं पता होता है कि वे सत्य सुन रहे हैं ...।

कुछ लोग कहते हैं कि वे गरीबों के लिये लड़ रहे हैं, लेकिन युद्ध में अन्य किसी से अधिक, गरीब ही पीड़ित हुए हैं। मुझे लगता है कि कुछ लोग बदला लेने के लिये, या ताकत पाने के लिए लड़ रहे हैं, या फिर इसलिये कि उन्हें लगता है कि उनके पास कोई दूसरा चारा नहीं है। कुछ युवा इन सशस्त्र समूहों में इसलिये शामिल होते हैं क्योंकि उनके परिवार गरीब हैं और उन्हें अन्य कोई रास्ता दिखाई नहीं देता।

गृह युद्ध के बीच पीटर और उसके परिवार को धमकाया गया और उन्हें नगर छोड़कर जाना पड़ा। उसके पिता अपने कार्यालय और अन्य शहर स्थित नये निवास के बीच आना–जाना करते थे, लेकिन यह अपेक्षाकृत शान्ति कायम नहीं रखी जा सकी। शान्ति की प्रक्रिया में उसके पिता के सक्रिय समर्थन के परिणामस्वरूप अन्ततः उनकी हत्या कर दी गयी :

मुझे लगता था कि मैं युद्ध के बारे में समझता था क्योंकि मैं भीषण संघर्ष के बीचों–बीच जी रहा था। सड़कों पर रात भर लड़ाई होती थी। बन्दूकों की आवाज से मैं प्रायः जाग जाया करता। सुबह जब मैं स्कूल जाता तो लड़ाई के प्रमाणों को देख पाता – सड़क पर पड़े खून के धब्बे, गोलियों से छलनी इमारतें। इस हिंसा के शिकार लोगों को मैं मुर्दाघर में देखा करता, जो मेरे पिता के कार्यालय से दूर नहीं था।

इसके बारे में मैं आत्मविश्वास के साथ बोला करता था, मानो मुझे पता हो कि युद्ध का अर्थ क्या होता है। लेकिन जब मेरे पिता की हत्या कर दी गयी, तब मैं न केवल शोक के कारण टूट गया, बल्कि इससे भी कि तब मैं समझ पाया कि युद्ध क्या होता है। मैंने जाना कि युद्ध करने की चाह क्या होती है। मैंने यह समझा कि आप चाहे कितनी ही शान्ति क्यों न चाहें, जब युद्ध की हिंसा व्यक्तिगत तौर पर आप पर प्रहार करती है तो आप हिंसा की ओर एक कदम बढ़ाते हैं। यह वही जाल है जिसमें मेरे देश के इतने लोग फँस चुके हैं ...।

इसके बाद कुछ भी पहले जैसा नहीं रहा। घर एक मृत खोखले ढांचे जैसा लगने लगा। सड़कें जो इतनी जानी–पहचानी थीं अब अजीब लगने लगी थीं। कुछ भी और कहीं भी सुरक्षित महसूस नहीं होता था। मैं सोचता था कि शान्ति के लिए किये गये मेरे सभी कार्य बेकार थे क्योंकि मेरे पिता को ये नहीं बचा सके थे। जिस भयंकर हिंसा ने हमारे नगर को निगल लिया था, अन्ततः उसने मेरे परिवार के हृदय पर प्रहार किया और इसे रोकने में मैं असफल रहा था। मैंने अपने आप को जिम्मेदार ठहराया। मैंने अपने आप से पूछा, "मैंने ऐसा क्या किया था कि मेरे पिता को इस तरह की हिंसात्मक मृत्यु प्राप्त हुई ?"

इस परिवार को धमकियाँ मिलती रहीं और अपने प्रियजन की रक्षा करने के लिए पीटर ने एक बन्दूक खरीद ली। उसके पिता की हत्या हो जाने के दस दिन बाद, एक शाम, पीटर का परिवार अपने घर की ऊपरी मंज़िल के एक कमरे में एकत्र हो कर बैठा था। जैसे ही पीटर रसोई घर में जाने के लिए

नीचे आया, उसने बगीचे में एक घुसपैठिये को देखा जो हाथ में बंदूक लिये ऊपर की मंज़िल की खिड़कियों की ओर देख रहा था :

मैं जानता था कि मैं अपनी बंदूक लेकर उस आदमी को मार सकता था ...। यही मेरे पिता की मृत्यु का बदला होता। मैं अपने परिवार की रक्षा कर रहा होता। और ... में ऐसा लगभग कोई भी नहीं था जो उसे गोली मारने के लिए मुझे दोषी ठहराता ... लेकिन, यद्यपि यह सब सही था, फिर भी मैंने कुछ नहीं किया ...। मेरे पिता चाहते थे कि मैं शान्ति के लिए काम करूँ। अब मैं हिंसक कैसे हो सकता था ? अपने पिता के प्रति आदर और प्रेम दर्शाने का केवल एकमात्र रास्ता और अपने परिवार को बचाने में मदद करने का सिर्फ एक ही तरीका शान्ति को बढ़ावा देने में सहायक बनना था। उसे मारकर मुझे, मेरे परिवार को या मेरे देश को शांति प्राप्त नहीं होती। वास्तव में, उसकी हत्या कर मैं सबकुछ खो देता। मैं उससे भी गया गुज़रा होता।

पीटर चुपचाप घुसपैठिये को देखता रहा, जो कुछ देर बाद और बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के, मुड़ा और चला गया। थोड़े दिनों के बाद पीटर ने अपनी बन्दूक फेंक दी और फिर कभी बन्दूक न उठाने का उसने निर्णय लिया।

अगली कहानी को पढ़ने से पहले, आप शायद पीटर के कुछ प्रमुख गुणों की पहचान करना तथा गहन विषयों पर मनन करने की उसकी क्षमता के बारे में कुछ शब्द कहना चाहेंगे।

____

____

____

____

____

____

____

भाग 16

मैरी – बदला हुआ नाम – को ऐसे वातावरण में पाला–पोसा गया जहां झगड़े का भय हमेशा व्याप्त था। मैरी ने छोटी उम्र में ही मित्रों के एक समूह से असहमत होने की कीमत समझ ली :

जब मैं 11 वर्ष की थी, तब मेरे साथ भी उदासीनता का बर्ताव किया गया क्योंकि तब मैंने एक बहस में किसी का पक्ष लेने से इन्कार कर दिया था। मेरे मित्रों के एक समूह ने हमारी कक्षा की एक लड़की पर चोरी का इल्ज़ाम लगाया था, जिससे बहुत बड़ा झगड़ा खड़ा हो गया। स्थिति यह थी कि या तो आप इस लड़की के पक्ष में होते, या फिर इसके विरोध में, और मेरे सभी मित्र उसके विरोध में गये थे। सभी ने यह मान लिया था कि मैं उनका साथ दूँगी, लेकिन इसका कोई सबूत नहीं था कि वह लड़की चोर थी। मुझे पूरा विश्वास नहीं हो पा रहा था। हालाँकि मैं अपने मित्रों का विरोध भी नहीं करना चाहती थी, इसलिये मैंने कुछ भी नहीं कहा। सब बहुत नाराज़ हुए और पूरे साल भर तक किसी ने मुझसे बात नहीं की।

एक लड़के के साथ मैरी की दोस्ती थी और यद्यपि उसे लेकर बहुत सी लड़कियाँ उसे चिढ़ाती थीं, फिर भी उसके मन में अपने दोस्त के प्रति चाहत थी। वे प्रायः काफी दूर तक पैदल सैर करते और अपने भविष्य की बातें करते। एक दिन मैरी ने उसे एक बन्दूक साफ करते हुए देखा, जो वह नहीं जानती थी कि उसके पास थी :

जब मैं अंदर आई तो वह मुझे देख कर ऐसे मुस्कुराया मानो वह कुछ असामान्य काम नहीं कर रहा था। मैं हमेशा ही हिंसा से नफरत करती थी, बन्दूकों से घृणा करती थी और युद्ध से नफरत करती थी। उसने बहाने बनाने की कोशिश की, जैसा इस तरह के लोग किया करते हैं, लेकिन मैंने उसे साफ–साफ कह दिया कि हमारे बीच अब सब–कुछ खत्म हो गया है। मैंने कहा, "मैं अपने लिये और अपने बच्चों के लिये इस तरह का जीवन नहीं चाहती।" मैं इतनी कम उम्र थी कि अब यह हास्यास्पद लगता है, लेकिन तब मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मेरी दुनिया दो टुकड़ों में टूट रही हो।

इस घटना के बाद कक्षा में मैरी के अंकों के प्रतिशत गिरने लगे और उसकी माँ चिन्तित होने लगी। तब मैरी ने अपने एक शिक्षक से बात की :

मैंने अपने दोस्त और उस बन्दूक के बारे में, अपने मित्रों की खामोशी और लड़कियों द्वारा मुझे चिढ़ाये जाने के बारे में, मेरी लज्जा और टूटे दिल के बारे में पूरी कहानी बता दी। उन्होंने मेरा मज़ाक नहीं उड़ाया न ही मुझे छोटा या हास्यास्पद महसूस होने दिया ...।

उन्होंने मुझसे कहा, "तुम्हें समझना चाहिये कि तुम्हारा भविष्य तुम्हारे अपने हाथों में है। तुम्हारा भविष्य किसी और की सम्पत्ति नहीं है, यह तुम्हारे माता–पिता का नहीं और खासकर इस लड़के का नहीं है। यह तुम्हारा है और तुम इसे जैसा चाहो वैसा बना सकती हो।"

चौदह वर्ष की आयु में ही, मैरी अपने साथियों के बीच शान्ति को प्रोत्साहन देने वाली अपने स्कूल की छात्र–नेता बन चुकी थी। उन दिनों जो विचार उसके मन–मस्तिष्क को घेरे रहते थे, वे इस प्रकार हैं :

हम जानते थे कि गरीबी हटाने से युद्ध समाप्त करने मे सहायता मिल सकती है, लेकिन हम इसके बारे में कुछ नहीं कर सकते थे। हम यह जानते थे कि बेरोज़गारी कम करने से मदद मिल सकती है, लेकिन हम इसके बारे में भी कुछ नहीं कर पा रहे थे। हम गोलियों और छुरों को नहीं रोक सकते थे। हम हिंसा का अन्त नहीं कर सकते थे। लेकिन हमें विश्वास था कि हम अपने बीच में शान्ति का निर्माण प्रारंभ कर सकते थे ...।

मुझे पता था कि शांति के लिये कार्य करना खतरनाक हो सकता है और मैं हर ऐसी बात के प्रति संवेदनशील थी जो सामान्य से हटकर थी। कभी–कभी केवल इस डर से कि कुछ भी बुरा हो सकता है, खासकर मेरे परिवार को, मुझे रोना आ जाता और कहीं दूर भाग जाने की इच्छा होती थी। लेकिन दूसरे बच्चे मुझ पर निर्भर थे और एक तरह से मुझे लगता था कि मेरे अपने अजन्मे बच्चे भी मुझ पर आश्रित थे। मैं चाहे जितनी भी डरी हुई थी, फिर भी मुड़कर जा न सकी। मैं केवल सावधान होकर सुरक्षित रहने की कोशिश कर सकती थी।

मैरी के कुछ विशिष्ट गुण क्या हैं ?

____

____

भाग 17

तीन अन्य नवयुवकों के उद्धरण नीचे दिये गये हैं जिसमें वे श्रेष्ठतम विचारों तथा कोमलतम् मनोभावों को व्यक्त करते हैं। इसमें पहला, एक सोलह वर्षीय लड़की के कथन हैं, जिसने बारह वर्ष की आयु में अपने एक अभिन्न मित्र को खोने का अनुभव किया जो एक गिरोह के झगड़े में उलझकर छुरे से मार दिया गया था। वह अपने मित्र को कभी नहीं भुला पायी और शान्ति को बढ़ावा देने के लिये उसने स्वयं को समर्पित करने का निर्णय लिया। बाद में, वह उन बच्चों की सहायता करने लगी जो हिंसा से प्रभावित हुए थे :

आठ या नौ वर्ष के कम उम्र वाले बच्चे गिरोहों में शामिल हो जाते थे क्योंकि वे इसे अपनी शान समझते थे या फिर यह सोचते थे कि उनका गिरोह उन्हें सड़कों पर सुरक्षा प्रदान करेगा। अधिकांश स्थितियों में, वे केवल अपने घर में हो रही हिंसा से बचने का प्रयास कर रहे थे, लेकिन सड़कों पर वे कुछ इससे भी बदतर पाते थे।

मुझे ... जाने के लिये बस पकड़नी पड़ती है, लेकिन अधिकांश बस ड्राईवर जानते हैं कि मैं क्या काम करने का प्रयास कर रही हूँ। वे केवल उतना ही किराया लेते हैं जितना मैं दे पाती हूँ और प्रायः बगैर किराये के ही मुझे ले जाते हैं ...। तक जाने वाली सड़क, खड़ी चट्टानों के पास खतरनाक रूप से टिकी कच्ची झोंपड़ियों से होती हुई ऊपर की ओर घूमती है। पहाड़ियों के उन स्थानों पर गहरे निशान पड़ चुके हैं जहाँ से निर्माण परियोजनाओं में उपयोग के लिये चट्टानों को हटाया गया है। इस तरह का काम कठिन है, कमर तोड़ने वाला है और बहुत कम आय वाला है, लेकिन विस्थापित परिवारों के बहुत से बच्चे इन स्थानों पर काम करते हैं। उनके परिवार गरीबी में इतनी गहराई तक धंस चुके हैं कि बच्चे स्कूल छोड़ कर पैसे कमाने के लिये जो भी हो सके, करते हैं।

सड़क से आगे, एड़ियों तक गहरी गीली मिट्टी में चलकर, एक बद्बूदार और दूषित नदी पर लटकते हुए कामचलाऊ पुल को मैं पार करती हूँ। टीन की छत वाला आधे दर्जन टूटे–फूटे कमरों का समूह वाला हमारा स्कूल था। लकड़ी की बेंचें टूटी फूटी पड़ी हैं। कक्षाओं के इर्द–गिर्द कचरा फैला हुआ है। बिजली नहीं है। एक कक्षा में केवल एक रोशनदान है और कोई खिड़की नहीं है। फ़र्श मिट्टी का बना है। बारिश इतनी ज़ोर से पड़ती है कि सुने जाने के लिये सबको चीखना पड़ता है, और हर जगह से पानी रिसता है। एक कक्षा की दीवार बच्चों द्वारा बनाये गये ऐसे सुन्दर घरों वाले चित्रों से सजायी गयी है जो उनके आसपास की हालत से बिल्कुल भिन्न हैं। शायद ये उन घरों की छवियाँ हैं जो कभी उनके हुआ करते थे या जिन्हें भविष्य में पाने के लिए वे तरसते हैं ...।

बहुत से अभिभावकों के चेहरों पर उदासी है। वे अपने बच्चों के साथ अपशब्द कहकर आक्रामक ढ़ंग से बात करते हैं। लेकिन कार्यशाला के दौरान कभी–कभी उनमें बदलाव आने लगता है।

उनमें से कुछ का सोचना हैं कि अच्छा व्यवहार करवाने के लिये अपने बच्चों को मारना—पीटना ज़रूरी होता है, लेकिन वे यह समझने भी लगते हैं कि मार—पीट बच्चे को उनसे दूर कर सकती है और उन्हें सड़कों पर ला सकती है।

अगला अनुच्छेद एक कम उम्र वाली लड़की के शब्द हैं जो ग्यारह वर्ष की आयु में घर छोड़कर चली गयी, वह मादक पदार्थों की आदी हो गयी, एक मित्र की समर्पित सहायता की मदद से बच गयी और अन्ततः शान्ति को समर्पित एक युवा आन्दोलन से जुड़ गयी :

इसका वर्णन करना बहुत कठिन था कि हमारा जीवन कैसा हुआ करता था। मैं इस बात को स्वीकार करने से कतराती थी कि शान्ति बनाने के लिये आप चाहे कितने ही प्रयास करें, फिर भी आप हिंसा में पुनः घसीटे जा सकते हैं ...। मैं हमेशा ही इस तरह के जीवन से भाग पाने के लिये तरसती रही हूँ। यह स्वीकार करना कठिन है, लेकिन इस समय भी मैं फिर से शान्ति आन्दोलन से दूर होती जा रही हूँ। मैं अपने आप से झूठ बोलती आयी हूँ और अपने मित्रों के साथ यह ढोंग करती रही हूँ कि सब कुछ ठीक है। यह सच नहीं है। कभी—कभी मैं नशे में धुत्त हो जाती हूँ। घर पर हर रात झगड़े होते हैं। मेरी माँ और सौतेले पिता मुझ पर नहीं तो एक दूसरे पर चिल्ला रहे होते हैं। इसलिये मैं सड़कों पर भाग जाती हूँ, और वहाँ ऐसा बहुत कुछ है जो एक जवान व्यक्ति को हानि पहुँचा सकता है ...। मैं एक साथ दो राहों पर चलती हूँ और अब भी यही कामना करती हूँ कि काश हर समय शान्ति के पथ पर ही चल पाती। मुझे लगता है कि मेरा संघर्ष और जिस तरह मैं जीवित बच पायी हूँ, इन सब का कुछ तो मूल्य होना चाहिये ...। मेरा यह मानना है कि यदि सहयोग देने, हमारे द्वारा सीखी गयी बातों को सुनने और हमारे साथ कार्य करने के लिए और अधिक वयस्क लोग सहयोग के लिये तैयार हो जायें, तो शान्ति की ओर सहायता करने के लिये युवा और बहुत कुछ करते। यदि हमारे घर में शान्ति होती, तो यह एक बहुत बड़ी शुरूआत होती।

अन्तिम अनुच्छेद एक ऐसे पन्द्रह वर्षीय लड़के का कथन है जिसके भाई का, एक क्रान्तिकारी समूह द्वारा अपहरण कर लिया गया था। कुछ समय बाद, जिस दौरान उसे बन्दी बना कर रखा गया था, उसके परिवार को उसकी सूचना मिली और उससे पत्र—व्यवहार करने की अनुमति भी :

मैंने उसे कुछ कविताएँ भेजी हैं, ताकि वह आश्वस्त और आशावान् बना रहे। मैं उससे कहता हूँ कि मैं उसकी सलाह मानकर मेहनत के साथ पढ़ाई करता हूँ। मुझे बहुत खुशी हुई जब हाल ही में उसने पत्र का उत्तर भेजा और कहा, "मैं खुश हूँ कि तुम स्कूल में इतना अच्छा कर रहे हो ...। मैंने यहीं पर गलती की थी। मुझे इस बात का खेद है कि मैंने अपनी पढ़ाई पर पूरा—पूरा ध्यान नहीं दिया ...। उदाहरण के लिये, मुझे किताबें पढ़ना अच्छा नहीं लगता था, फिर भी, यहाँ मैंने तीस से भी अधिक विभिन्न प्रकार की किताबें पढ़ ली हैं और पढ़ने के लिये अभी और भी बहुत कुछ है। मैं शब्दकोश भी उपयोग करता हूँ और ऐसे अनोखे शब्दों के अर्थ खोज लेता हूँ जिन्हें नहीं जानता ...। मैंने पहले अपने आप ऐसा कुछ कभी नहीं किया होता।"

यद्यपि वह सुरक्षित प्रतीत होता है, फिर भी मैं चिन्तित रहता हूँ। यदि मैं उन लोगों से बात कर सकता जो मेरे भाई को पकड़कर रखे हुए हैं, तो मैं उनसे सहानुभूति रखने और उनके द्वारा उत्पन्न किये गये कष्टों को समझने के लिये कहता।

मैं सोचता हूँ कि यदि हम शान्ति पाना चाहते हैं तो क्षमाशीलता इसकी एक बुनियादी आवश्यकता है। क्षमाशीलता के बिना युद्ध समाप्त नहीं हो सकता। खासकर हम जैसे लोगों के लिये जिन्होंने कष्ट उठाये हैं, क्षमा कर पाना महत्वपूर्ण है।

मैं सोचता हूँ कि यह वही है जिसके लिये मैं काम कर रहा हूँ – मैं क्षमाशीलता के लिये कार्यरत् हूँ।

इस भाग में उद्धृत अंशों में युवाओं द्वारा प्रदर्शित कुछ गुणों पर अपने समूह में विचार करें और अपने कुछ विचारों को लिखें।

भाग 18

अन्त में, किशोरावस्था के स्वरूप का अन्वेषण कितना ही संक्षिप्त क्यों न हो, प्रभुधर्म के उस नवयुवक वीर, रूहुल्लाह के जीवन की उपेक्षा नहीं कर सकता, जिसने बारह वर्ष की आयु में ही शहादत के प्याले से आनन्दित होकर पान किया। सात वर्ष की छोटी उम्र में, अपने पिता, ईश्वर के धर्मभुजा श्री वर्गा तथा अपने बड़े भाई के साथ रूहुल्लाह को तीर्थ के लिये पवित्र भूमि जाने का सौभाग्य प्रदान किया गया। उस पावन परिवेश में रूहुल्लाह आध्यात्मिक रूप से फलने–फूलने लगे और बहाउल्लाह की उपस्थिति के प्रकाश से संपोषित हुए। बताया जाता है कि एक दिन बहाउल्लाह ने रूहुल्लाह से पूछा, "आज तुमने क्या किया ?"

उन्होंने उत्तर दिया, "मैं [किसी शिक्षक] से पाठ ग्रहण कर रहा था।"

बहाउल्लाह ने आगे पूछा, "तुम कौन सा विषय पढ़ रहे थे ?"

"[अवतारों की] वापसी के विषय में", रूहुल्लाह ने कहा।

"क्या तुम बताओगे कि इसका अर्थ क्या है ?" बहाउल्लाह ने मांग की।

उन्होंने उत्तर दिया : "वापसी से तात्पर्य है वास्तविकताओं एवं गुणों की वापसी।"

बहाउल्लाह, उससे आगे, बोले : "ये तो तुम्हारे शिक्षक के शब्द हैं। इस विषय की तुम्हारी अपनी समझ के बारे में अपने शब्दों में मुझे बताओ।"

रूहुल्लाह ने उत्तर दिया : "यह इस साल किसी पौधे से एक फूल को काटने के समान है। अगले साल का फूल बिल्कुल इसके जैसा ही दिखेगा, पर वह यह नहीं होगा।"

आशीर्वादित सौन्दर्य ने इस विवेकपूर्ण उत्तर के लिये उस बालक की प्रशंसा की और वे उसे प्रायः जनाब–ए–मुबाल्लिग़ (आदरणीय बहाई शिक्षक) कह कर बुलाते थे।

ऐसी कई अन्य घटनायें हैं जो रूहुल्लाह के श्रेष्ठ गुणों को प्रकाश में लाती हैं। यह निश्चित रूप से सही है कि वह कोई साधारण बालक नहीं था और कोई भी यह अपेक्षा नहीं करता कि आपके द्वारा संघटित समूहों से जुड़ने वाले किशोर भी आत्मत्याग की उन्हीं उँचाईयों तक पहुँचें जिन्हें रूहुल्लाह ने बारह वर्ष की आयु में प्राप्त किया था। फिर भी, पिछले कुछ भागों में उद्धृत किये गये अंश उस श्रेष्ठता का संकेत देते हैं जिसे कोई मनुष्य एक बहुत छोटी उम्र से ही प्रकट कर सकता है। प्रभुधर्म के प्रति समर्पण और उस परम प्रिय के मार्ग में त्याग का अंत शहादत में ही हो, यह ज़रूरी नहीं है, पर त्याग के रहस्य का वर्णन किस सीमाहीन आनंद और ललक द्वारा नीचे उद्धृत रूहुल्लाह की प्रख्यात कविता के अंश में व्यक्त किया गया है।

> दिव्य आशीष के प्याले से मुझे पिला
> और पाप व दुर्बलता से मुझे मुक्ति दिला;
> क्योंकि भले ही मेरे पाप हों बहुत बड़े
> मेरे स्वामी की दया है उससे अधिक परे।
>
> स्वागत है तेरा, दिव्य भोज के साक़ी !
> आओ तुम, मेरी आत्मा को दो ताज़गी
> बलिदान के योग्य बना तू मुझे
> पथ पर अपने परम् प्रियतम के।

आपके द्वारा जल्द ही प्रारंभ किये जाने वाले समूह के किशोर रूहुल्लाह के जीवन को नहीं जियेंगे। तथापि, इस तथा पिछले कुछ भागों में उद्धत अंश उस कुलीनता का संकेत देते हैं जो कि एक व्यक्ति बहुत ही कम आयु से प्रकट कर सकता है। हमें इस इकाई के प्रारम्भिक कथन को पुनः याद दिलाया गया है कि किशोरों में बढ़ती हुई जागरुकता को दो दिशाओं में प्रवाहित किया जा सकता है, एक ईश्वर की इच्छा के प्रति आधीनता और जो मानवजाति की आत्म – त्यागी सेवा की ओर ले जाता है और दूसरा, अहम और वासना की क़ैद की ओर। इसके बाद के अनेक भागों में हमारी चर्चा हमें किशोरावस्था के स्वरूप, किशोरों की अन्तर्निहित क्षमता एवं उनके जीवन पर वातावरण के प्रभावों की खोज की ओर ले गयी। अब आप जिन्हें एक किशोर की स्वाभाविक संभावनायें मानते हैं तथा उनके आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास के लिये जो करना आवश्यक समझते हैं उस पर रुक कर कुछ परिच्छेद लिखने हेतु आपके लिये यह एक उपयुक्त समय हो सकता है।

भाग 19

इस इकाई का अधिकांश भाग किशोरावस्था की अन्तर्निहित सम्भावनाओं के अन्वेषण को समर्पित करने के पश्चात, अब हमें किशोरों के लिये आपके द्वारा आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम में प्रतिभागिता के बारे में कुछ शब्द कहने चाहिये। किशोरों की सबसे गहरी लालसाओं में से एक है अपने ही हम उम्र साथियों के समूह का हिस्सा बनना। सलाह के लिये अपने ऐसे मित्रों की ओर मुड़ने से किशोरों को आश्वासन मिलता है जो उन्हें समझते और उनके प्रति सहानुभूति रखते हैं। अतः, यह एक वैध आवश्यकता का स्वाभाविक उत्तर होगा कि रूही संस्थान के द्वारा संस्तुत किये जा रहे इस कार्यक्रम का आयोजन "किशोर समूह" की अवधारणा के इर्द–गिर्द किया जाये। एक ऐसा कार्यक्रम जिसके सदस्य करने तथा सीखने के लिये साथ नियमित रूप से मिलते हैं और सुनियोजित ढंग से मार्गदर्शन पाते हैं। बैठकों का वातावरण, आनंदमय, मैत्रीपूर्ण एवं आत्मीय हो, पर यह ओछा नहीं होना चाहिये। यह उन गुणों और अभिवृत्तियों को बढ़ावा देने में योगदान करे जिनकी आवश्यकता प्रभुधर्म और मानवजाति की सेवा के निमित्त जीवन के लिये होगी। अपनी बैठकों में समूह के सदस्य, उपहास या निन्दा के भय से मुक्त हो कर, अपने विचारों को व्यक्त कर सकेंगे और अपने खोज भरे प्रश्नों के उत्तर ढूंढ़ पायेंगे। वे सुनना, बोलना, मनन करना, विश्लेषण करना, निर्णय लेना एवं अपने निर्णयों पर अमल करना सीखेंगे।

प्रत्येक समूह में, एक अधिक उम्र वाले व्यक्ति की आवश्यकता होती है जो युवाओं के सच्चे मित्र की भांति उनकी क्षमताओं के विकास में उन्हें सहायता कर सके। जो इस प्रकार के कार्य को पूरा करते हैं, वे किशोर समूहों के "अनुप्रेरक" के तौर पर जाने जाते हैं। अनुप्रेरकों की उपस्थिति प्रत्येक समूह के सदस्यों को इसके लिए आशावान् एवं आश्वस्त बने रहने में सहायता करती है कि वे, उन्हें घेरे हुए समाज में कार्यरत नैतिक विघटन की शक्तियों से स्वयं को न सिर्फ सुरक्षित रख पायेंगे बल्कि इसके सुधार में भी योगदान दे पायेंगे। यद्यपि इस रूप में सेवा करना किसी विशेष उम्र के लोगों का ही परमाधिकार नहीं है, फिर भी 17 से बड़ी उम्र के युवा सहज ही उत्कृष्ट अनुप्रेरक बन जाते हैं क्योंकि उन्हें किशोरों के प्रति बच्चों जैसा नहीं बल्कि उनसे समानता का व्यवहार करना, और प्रश्न करने के लिये, स्पष्टता प्राप्त करने के लिये, एवं वास्तविकता का अन्वेषण करने के लिये किशोरों को प्रोत्साहित

करना सरल लगता है। निम्नलिखित अनुच्छेद में अब्दुल बहा अपनी आशा व्यक्त करते हैं कि तरुण आत्माओं का इस प्रकार पोषण हो :

> **"अब्दुल बहा की यह आशा है कि गहनतर ज्ञान की पाठशाला की वे तरुण आत्माएँ ऐसे व्यक्ति की देख–रेख में रहें जो उन्हें प्रेम करना सिखायेगा। वे सभी, चेतना के विस्तार में सर्वत्र, छिपे हुए रहस्यों को अच्छी तरह जान सकें; इतनी अच्छी तरह से कि सर्वमहिमामय के साम्राज्य में, उनमें से प्रत्येक, वाणी से प्रदत्त कोकिला की भाँति, स्वर्गिक वास्तविकता के रहस्यों को उजागर करेगा तथा एक लालायित प्रेमी की तरह परम्–प्रियतम की अपनी अत्यावश्यक ज़रूरत और चरम इच्छा को उड़ेल देगा।"[32]**

एक किशोर समूह बच्चों की कक्षा नहीं है। इसमें अध्ययन वृत कक्षा की कुछ विशेषताएँ होती हैं, लेकिन इसका प्राथमिक कार्य अपने सदस्यों के लिये आपसी सहयोग का वातावरण प्रदान करना है, ऐसा वातावरण जिसमें वे अपना आध्यात्मिक बोध तथा विचार एवं आचरण का ऐसा प्रतिमान विकसित कर सकें जो उन्हें जीवन भर विशिष्ट बनायेगा। रूही संस्थान के विभिन्न पाठयक्रमों में भाग लेने से आपको अध्ययनवृत कक्षा के सदस्य का प्रत्यक्ष अनुभव है और संभवतः तीसरे पाठयक्रम का अध्ययन पूर्ण कर बच्चों की की कुछ कक्षाओं का शिक्षण भी किया है। निम्नलिखित विशेषताओं की सूची को देखें और अपने पाठ्यक्रम के साथी प्रतिभागियों के साथ चर्चा करें कि एक किशोर समूह, बच्चों की कक्षा तथा अध्ययनवृत कक्षा के बीच आप किस प्रकार की समानताएं एवं भिन्नताएं पाएंगे।

- गतिविधि की प्रकृति
- प्रतिभागियों के बीच परस्पर सम्बन्ध
- बैठकों का वातावरण
- सेवा कार्य करने वाले व्यक्ति की भूमिका – शिक्षक, अनुप्रेरक अथवा सहशिक्षकं

भाग 20

इस सेवा क्षेत्र में स्वयं को समर्पित करने पर, आप शीघ्र ही यह जान लेंगे कि जिस किशोर समूह का निर्माण करने में आप मदद करेंगे उसके सदस्यों के साथ आपके द्वारा बनाये गये सम्बन्धों की गुणवत्ता पर आपके प्रयासों की सफलता निर्भर करेगी। उनकी बातें सुनने, उन्हें सलाह देने और आवश्यकता पड़ने पर उन्हें सांत्वना देने के लिये आप बेशक तैयार रहेंगे। उनकी सत्यनिष्ठा में आपका विश्वास और उनमें से प्रत्येक के लिये आपका आदर एवं सच्चा प्रेम, उत्कृष्टता के लिए प्रयास करने में उनको प्रोत्साहित करेगा। आपके लिये यह जरूरी होगा कि पैतृकवाद, दम्भ या अधिकारवादी नियंत्रण जैसी अभिवृत्तियाँ जो किशोरों के फलने–फूलने के लिए कोई अवसर नहीं छोड़तीं, की ज़रा सी भी झलक दिखाये बिना, उनके कल्याण एवं प्रगति के प्रति अपनी वचनबद्धता को आप दर्शायें। साथ ही, उनके मन–मस्तिष्क में सच्ची आस्था की नींव मज़बूत करने तथा उनमें एक उज्जवल भविष्य की आशा जगाने के लिये आपको प्रत्येक अवसर का लाभ उठाना होगा। अब्दुल–बहा हमारा आहवान करते हैं :

> **"सर्वप्रथम, एक–दूसरे के लिये अपने जीवन का त्याग करने के लिये, व्यक्तिगत कल्याण के स्थान पर सभी के कल्याण को महत्व देने के लिये तैयार रहो। ऐसे सम्बंध बनाओ जिन्हें कुछ भी डिगा न सके; ऐसी सभा संगठित करो जिसे कुछ भी भंग न कर सके; ऐसा मस्तिष्क धारण करो जो उन सम्पदाओं को प्राप्त करने से कभी नहीं रुकता जिसे कुछ भी नष्ट न कर सके।**

यदि प्रेम का अस्तित्व नहीं होता, तो वास्तविकता से क्या बचा रहता ? यह ईश्वर के प्रेम की अग्नि ही है जो मनुष्य को पशु से श्रेष्ठ बनाती है। इस श्रेष्ठ शक्ति को सुदृढ़ बनाओ, जिसके माध्यम से संसार में समस्त प्रगति होती है।"[33]

विचार–विमर्श करें कि किस प्रकार निम्नलिखित अभिवृत्तियां किशोर समूह के सदस्यों को शक्तिहीन करेंगी तथा कौन से विचार, भावनायें तथा व्यवहार एक अनुप्रेरक की मदद इस प्रकार की प्रवृत्तियों का प्रतिरोध करने में करेंगे।

पैतृकवाद : ____________________

____

____

____

____

____

____

दम्भ : ____________________

____

____

____

____

____

____

अधिकारवादी नियंत्रण : ____________________

____

____

____

____

____

____

भाग 21

आपके द्वारा दर्शाये उदाहरण पर भी किशोर समूह के सदस्यों के साथ आपके संबंध प्रभावित होंगे। एक युवा के जीवन पर उदाहरण के प्रभाव का अधिमूल्यांकन नहीं किया जा सकता। तब, इस संबंध में, अपने हृदय स्वच्छ करने के हमारे स्वयं के प्रयास एक अतिरिक्त महत्व धारण कर लेते हैं। "घोर भौतिकवाद," "वैश्विक वस्तुओं के प्रति आसक्ति जो मनुष्यों की आत्माओं को ढक देती हैं; भय और चिन्ताएँ जो उनके मन के ध्यान को भंग करता हैं; भोग–विलास एवं अपव्यय जो उन्हें व्यस्त रखते हैं,

पूर्वाग्रह एवं द्वेष जो उनके दृष्टिकोण को धुँधला बनाते हैं, उदासीनता एवं सुस्ती जो उनकी आध्यात्मिक कार्यशक्ति को गतिहीन कर देती हैं", "ऐसे भयानक अवरोधों" में से हैं जिनके बारे में धर्मसंरक्षक कहते हैं, "कि ये बहाउल्लाह के प्रत्येक भावी योद्धा के सेवामार्ग में बाधक हैं"। आगे उन्होंने हमें याद दिलाया है कि इन अवरोधों को हटाने की हमारी क्षमता इस बात पर निर्भर करेगी कि हम स्वयं किस हद तक "इन अपवित्रताओं" से शुद्ध हैं, इन "ओछी व्यस्तताओं एवं नष्ट कर देने वालीं चिन्ताओं" से मुक्त हैं, इन "पूर्वाग्रहों एवं द्वेषों" से स्वतंत्र हैं, "अहम् से रिक्त" होकर तथा "ईश्वर की आरोग्यदायी एवं सम्पोषित करने वाली शक्ति से भरे हुए हैं"।

किशोरों के आध्यात्मिक सशक्तिकरण में योगदान देने की दृष्टि से आपके द्वारा किये जाने वाले प्रयासों के लिये धर्मसंरक्षक के इन उपदेशों के कुछ आशय क्या हैं ?

____

____

____

____

____

____

____

भाग 22

किशोरों के एक सच्चे मित्र के साथ–साथ उनके विवेकशील सलाहकार होने के नाते, आपके लिए यह आवश्यक होगा कि खुशी के समय और कठिनाई भरे काल में आप उनके साथ रहें। उत्कृष्टता की महान से महान ऊँचाईयों को पार करने के लिये उन्हें सदा ही प्रोत्साहन की आवश्यकता होगी। आप किस हद तक उनकी उपलब्धियों पर ध्यान देते हैं उनकी गल्तियों के स्थान पर, आप उनकी सहायता कर पायेंगे। आप उन्हें प्रोत्साहन तो देंगे पर इस तरह नहीं कि उनके अहं को बढ़ावा मिले। आप उनके द्वारा किये कार्य पर ध्यान केन्द्रित करेंगे तथापि सलाह देने से भी डिगेंगे नहीं यदि आप उन्हें ऐसी परिस्थिति में पाते हैं जहां उनकी नैतिक निष्ठा खतरे में पड़ सकती हो।

समूह के साथ आपके मित्रता के संबंधों की प्रकृति पर विचार करने के लिये संरक्षक की ओर से लिखे गये पत्र से उद्धृत नीचे दिये अंश को पढ़े। यद्यपि यह धर्म की संस्थाओं की एक अनुयायी के साथ संबंध की व्याख्या करता है, यह किशोर–समूह के अनुप्रेरक के रूप में आपके प्रयासों के लिये भी प्रासंगिक है :

> **"प्रभुधर्म में अनुयायी अधिकांशतः नवयुवा हैं, और यदि वे गलतियाँ करते हैं, तो यह उतना महत्व नहीं रखता जितना यदि उनके उत्साह को सदा यह कह कर कुचल दिया जाये कि ऐसा करो और वैसा मत करो !"**[34]

इस पर चर्चा करें कि एक युवा को बार–बार उसकी गलतियाँ याद दिलाना और निरन्तर यह कहा जाना कि वह क्या करे और क्या ना करे, उसके उत्साह को क्यों कुचल देगा ? अपने कुछ विचारों को यहां लिखें।

प्रोत्साहन का अर्थ विवेकहीन प्रशंसा नहीं होता; इसे सच्चा और पाखण्ड से मुक्त होना चाहिये, अन्यथा यह अहंकार या अविश्वास की ओर ले जाता है। प्रभुधर्म की सेवा के लिये अनुयायियों को अब्दुल बहा जिस तरह प्रोत्साहित करते थे, उसके कुछ उदाहरण नीचे दिये गये हैं।

"वस्तुतः मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि उसने अपनी महान बगिया में प्रभुधर्म की सेवा करने में तुम्हारी सहायता की।"[35]

"सत्यतः, मैं अपने सर्वोच्च स्वामी का गुणगान करता हूँ कि उसने लोगों के बीच अपने नाम का स्मरण करने के लिये तुम्हें चुना, सर्वमहिमावंत के सौन्दर्य के प्रति आकर्षित किया और अपने धर्म को विजयी बनाने के लिये तुम्हें शक्ति प्रदान की।"[36]

"वस्तुतः ईश्वर ने तुम्हारे पापों से तुम्हें शुद्ध कर दिया जब उसने अपनी दया के सागर में विसर्जित किया तथा पहचानने की पवित्र मदिरा के प्याले से पान कराया। अति उत्तम ! अति उत्तम ! कि तुमने स्वयं की इच्छा को ईश्वर की इच्छा में समर्पित करने की अभिलाषा की है तथा ईश्वर के लिये अपने प्रेम को बढ़ाने, उसके प्रति ज्ञान में वृद्धि करने, तथा उसके पथ में दृढ़ रहने की चाहत की है।"[37]

"हे मेरे आध्यात्मिक प्रियजनों ! ईश्वर का गुणगान हो, तुमने आवरणों को अलग हटा दिया है और दयालु परमप्रियतम् को पहचान लिया है तथा इस निवास से दूर उस स्थान–रहित साम्राज्य की ओर बढ़ने की शीघ्रता की है। तुमने ईश्वर के जगत में अपने खेमों को स्थापित किया है तथा उस स्वयंजीवी का महिमागान करने के लिये, तुमने मधुर स्वरों को गुंजरित किया है और हृदय–भेदी गीत गाये हैं। शाबाश ! हज़ार बार शाबाश ! क्योंकि प्रकटित प्रकाश के दर्शन तुमने किये हैं एवं अपने पुनर्जीवित अस्तित्वों से तुमने पुकार लगायी है, 'धन्य है वह स्वामी, समस्त रचयिताओं में सर्वश्रेष्ठ !'"[38]

"हे तुम जो सच्चे हो, तुम जो लालायित हो, तुम जो इस तरह आकर्षित हो मानो चुम्बकित हुए हो, तुम जो प्रभुधर्म की सेवा के लिये, उसके शब्दों की प्रशंसा के लिये एवं उसकी सुमधुर सुरभि को चतुर्दिक फैलाने के लिये उठ खड़े हुए हो ! मैंने तुम्हारा उत्कृष्ट पत्र पढ़ा, जो शैली में सुन्दर, शब्दों में गम्भीर, अर्थ में गहरा है, और मैं ईश्वर की प्रशंसा करता हूँ कि उसने तुम्हें सहायता प्रदान की और विस्तार पाती हुई अपनी बगिया में तुम्हें सेवा देने योग्य बनाया है।"[39]

"तुम्हारा पत्र सुगंधित पुष्प गुच्छे की भांति था आस्था तथा विश्वास की सुगंध उड़ेलता हुआ। अति उत्तम ! अति उत्तम ! तुमने अपना मुख अदृश्य साम्राज्य की ओर किया है। उत्कृष्ट ! उत्कृष्ट ! तुम सर्वशक्तिशाली के सौंदर्य की ओर आकर्षित हुये, बहुत खूब ! बहुत खूब ! कितने भाग्यशाली थे तुम इस सर्वोच्च उपहार को पाकर !"[40]

अब्दुल बहा जिस प्रकार मित्रों की प्रशंसा करते थे उससे प्रेरित होकर, कुछ शब्दों में यह वर्णन करें कि जिस समूह को आप शीघ्र ही सहायता देंगे, उसके सदस्यों को आप किस तरह प्रोत्साहित करेंगे।

भाग 23

अन्त में, आपको यह याद रखना होगा कि किशोरों के समूह के साथ प्रेममयी मित्रता के प्रगाढ़ बन्धन स्थापित करने और उत्कृष्टता के लिये प्रयास करने के लिये उन्हें प्रोत्साहित करना उसी हद तक फलदायी होगा जितना आनंदमय वातावरण आप निर्मित करेंगे।

> **"आनंद हमें पंख लगा देता है। आनंद के समय हमारी शक्ति अधिक बलशाली, हमारी बुद्धि अधिक तीक्ष्ण और हमारी सूझ–बुझ कम धुँधली होती है। दुनिया का सामना करने तथा अपनी उपयोगिता का क्षेत्र ढूँढ़ने के लिये हम बेहतर ढंग से सक्षम प्रतीत होते हैं।"[41]**

समूह के लिये आनंद का वातावरण निर्मित करने हेतु, आपको आनंद अनुभव करना ज़रूरी है। ऐसे किशोरों के बारे में सोचें जिन्हें आप जानते हैं और जिस किशोर समूह को आप जल्द ही निर्मित करने की आशा करते हैं, उसका भाग हो सकते हैं। आप के मन में उनके बारे में ऐसे कौन से विचार आते हैं जिनसे आपको आनंद होता है ?

ऐसे समूह की सभाओं के वातावरण को ओछा बनाये बिना आनंदमय बनाने के लिए आप कौन से कुछ व्यावहारिक उपाय कर सकते हैं ?

इन विचारों को मन में रखते हुए, विश्व न्याय मंदिर की ओर से लिखे पत्र के अंश को पढ़ें :

"आंतरिक आनंद जो प्रत्येक व्यक्ति प्राप्त करना चाहता है, क्षणिक भावना से विपरीत, बाह्य प्रभावों पर निर्भर नहीं है; निश्चितता तथा सजग ज्ञान से उत्पन्न, शुद्ध हृदय से पोषित, यह वह दशा है जो स्थायी तथा सतही के मध्य अंतर कर पाने योग्य है।"[42]

आइए इस इकाई के अध्ययन का अंत अब्दुल बहा के निम्न शब्दों पर विचार करते हुए करें :

"सार्वभौमिक प्रेम मनुष्य का महानतम उपहार है — वह लौहमणि जो अस्तित्व को शाश्वत बनाता है। यह वास्तविकताओं को आकर्षित करता है तथा जीवन को अनंत आनंद से भर देता है। यदि यह प्रेम मानव के हृदय को भेद दे, ब्रहमांड की सभी शक्तियां उसमें प्राप्त हो जायेंगी क्योंकि यह दैवीय शक्ति है जो उसे दैवीय स्थान पर पहुंचाती है और वह तब तक कोई विकास नहीं करेगा जब तक कि वह इससे प्रकाशित न हो जाये। वास्तविकता की प्रेम–शक्ति में वृद्धि करने का प्रयत्न करो, ताकि तुम्हारे हृदय आकर्षण के महानतर केन्द्र बन सकें तथा नये आदर्शो तथा संबंधों को उत्पन्न कर सकें।"[43]

संदर्भ

1. From the Riḍván 2010 message written to the Bahá'ís of the world, published in *Framework for Action: Selected Messages of the Universal House of Justice and Supplementary Material, 2006–2016* (West Palm Beach: Palabra Publications, 2017), no. 14.16, p. 82.

2. From a talk given on 17 November 1912, published in *The Promulgation of Universal Peace: Talks Delivered by 'Abdu'l-Bahá during His Visit to the United States and Canada in 1912* (Wilmette: Bahá'í Publishing, 2012), par. 3, p. 617.

3. *Selections from the Writings of 'Abdu'l-Bahá* (Wilmette: Bahá'í Publishing, 2010, 2015 printing), no. 111.7, p. 192.

4. *Abdul Baha on Divine Philosophy* (Boston: The Tudor Press, 1918), pp. 131–32.

5. *Gleanings from the Writings of Bahá'u'lláh* (Wilmette: Bahá'í Publishing Trust, 1983, 2017 printing), CLIII, par. 6, p. 370.

6. Ibid., I, par. 5, p. 3.

7. *Tablets of Bahá'u'lláh Revealed after the Kitáb-i-Aqdas* (Wilmette: Bahá'í Publishing Trust, 1988, 2005 printing), no. 4.7, pp. 34–35.

8. Bahá'u'lláh, *The Hidden Words* (Wilmette: Bahá'í Publishing Trust, 2003, 2012 printing), Arabic no. 13, pp. 6–7.

9. *Selections from the Writings of 'Abdu'l-Bahá*, no. 34.2, p. 100.

10. Ibid., no. 35.7, p. 104.

11. *Tablets of Abdul-Baha Abbas* (New York: Bahá'í Publishing Committee, 1909, 1930 printing), vol. 1, p. 136. (authorized translation)

12. 'Abdu'l-Bahá, *The Secret of Divine Civilization* (Wilmette: Bahá'í Publishing, 2007, 2017 printing), par. 186, p. 136.

13. *Selections from the Writings of 'Abdu'l-Bahá*, no. 68.3, pp. 147–48.

14. Ibid., no. 155.4, p. 253.

15. From a talk given by 'Abdu'l-Bahá on 26 May 1912, published in *The Promulgation of Universal Peace*, par. 3, p. 205.

16. From a talk given by 'Abdu'l-Bahá on 11 June 1912, ibid., par. 4, p. 258.

17. 'Abdu'l-Bahá, in *Bahai Scriptures: Selections from the Utterances of Baha'u'llah and Abdul Baha* (New York: Bahá'í Publishing Committee, 1928), no. 992, p. 548.

18. From a talk given by 'Abdu'l-Bahá on 11 June 1912, published in *The Promulgation of Universal Peace*, par. 6, p. 261.

19. *The Call of the Divine Beloved: Selected Mystical Works of Bahá'u'lláh* (Haifa: Bahá'í World Centre, 2018), no. 2.22, p. 21.

20. From a talk given on 28 October 1911, published in *Paris Talks: Addresses Given by 'Abdu'l-Bahá in 1911* (Wilmette: Bahá'í Publishing, 2006, 2016 printing), no. 15.12, p. 53.

21. *Selections from the Writings of 'Abdu'l-Bahá*, no. 36.5, p. 111.

22. *The Call of the Divine Beloved*, no. 2.19, p. 19.

23. *Selections from the Writings of 'Abdu'l-Bahá*, no. 195.5, p. 327.

24. Bahá'u'lláh, in *The Kitáb-i-Aqdas: The Most Holy Book* (Wilmette: Bahá'í Publishing Trust, 1993, 2013 printing), par. 64, pp. 42–43.

25. *Selections from the Writings of 'Abdu'l-Bahá*, no. 223.1, pp. 388–89.

26. Ibid., no. 35.4, p. 102.

27. Ibid., no. 206.9, p. 354.

28. *Prayers and Meditations by Bahá'u'lláh* (Wilmette: Bahá'í Publishing Trust, 1987, 2008 printing), XXXVI, par. 4, p. 47.

29. Ibid., CLXXXIV, par. 2, p. 324.

30. From a letter dated 23 November 1983 written on behalf of the Universal House of Justice to an individual, published in *Lights of Guidance: A Bahá'í Reference File* (New Delhi: Bahá'í Publishing Trust, 1988, 2010 printing), no. 1206, pp. 359–60.

31. From a letter dated 8 December 1935 written on behalf of Shoghi Effendi to an individual, published in *Prayer and Devotional Life: A Compilation of Extracts from the Writings of Bahá'u'lláh, the Báb, and 'Abdu'l-Bahá and the Letters of Shoghi Effendi and the Universal House of Justice*, compiled by the Research Department of the Universal House of Justice (Wilmette: Bahá'í Publishing, 2019), no. 71, p. 30.

32. *Selections from the Writings of 'Abdu'l-Bahá*, no. 107.1, p. 188.

33. *Abdul Baha on Divine Philosophy*, p. 112.

34. From a letter dated 30 June 1957 written on behalf of Shoghi Effendi to a National Spiritual Assembly, in "The National Spiritual Assembly", published in *The Compilation of Compilations* (Maryborough: Bahá'í Publications Australia, 1991), vol. 2, no. 1502, p. 128.

35. *Tablets of Abdul-Baha Abbas*, vol. 1, p. 11. (authorized translation)

36. Ibid., p. 18. (authorized translation)

37. *Tablets of Abdul-Baha Abbas* (New York: Bahá'í Publishing Committee, 1915, 1940 printing), vol. 2, pp. 266–67. (authorized translation)

38. *Selections from the Writings of 'Abdu'l-Bahá*, no. 236.4, p. 439.

39. Ibid., no. 199.1, pp. 332–33.

40. *Tablets of Abdul-Baha Abbas* (New York: Bahá'í Publishing Committee, 1916, 1930 printing), vol. 3, p. 530. (authorized translation)

41. From a talk given by 'Abdu'l-Bahá on 22 November 1911, published in *Paris Talks*, no. 35.2, p. 135.

42. From a letter dated 19 April 2013 written on behalf of the Universal House of Justice to a small group of individuals, published in *Framework for Action*, no. 51.7, p. 292.

43. *Abdul Baha on Divine Philosophy*, pp. 111–12.

एक अनुप्रेरक के रूप में सेवा

उद्देश्य

किशोर आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम को आकार देने वाली अवधारणाओं पर चिन्तन करना।

भाग 1

इस पुस्तक की दूसरी इकाई में, हमने चर्चा की कि किशोरों के जीवन में सामाजिक वातावरण एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उसी के अनुरूप रूही संस्थान द्वारा अनुमोदित किशोर आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम को, "किशोर समूह" की अवधारणा के इर्द–गिर्द संगठित किया गया है। हमने कहा था कि एक किशोर समूह, बच्चों की कक्षा नहीं है। इसमें एक अध्ययन वृत कक्षा की कुछ विशेषताएँ होती है, परन्तु इसका प्राथमिक कार्य है अपने सदस्यों के लिये आपसी सहयोग के वातावरण के रूप में कार्य करना, ऐसा वातावरण जिसमें वे आध्यात्मिक बोध तथा विचार एवं आचरण का ऐसा प्रतिमान विकसित कर सकें जो जीवन भर उनके चरित्र को विशिष्टता प्रदान करेगा।

एक किशोर समूह सप्ताह में कम से कम एक बार नियमित रूप से मिलता है, और तीन साल की अवधि में आयोजित कई वार्षिक शिविरों में भाग लेता है। सदस्यों द्वारा एक समूह के रूप में एक साथ बिताया गया समय उन सामग्रियों के अध्ययन पर केंद्रित होता है जिन्हें विशेष रूप से बारह और पंद्रह वर्ष की आयु के बीच के लोगों के लिए विकसित किया गया है। युवा समुदाय में सेवा परियोजनाओं पर परामर्श करते हैं, योजना बनाते और निष्पादित करते हैं, खेल खेलते हैं, और अपने आस पास के परिवेश के अनुकूल नाटक और शिल्प जैसी सांस्कृतिक गतिविधियां, करते हैं। शिविरों में, जो कई दिनों तक चलते हैं, वे एक व्यक्तिगत समूह के रूप में गहन अध्ययन में संलग्न होते हैं और सामूहिक कार्यक्रमों और गतिविधियों में अपने पड़ोस या गांव के अन्य समूहों के साथ भाग लेते हैं। इस इकाई में, हम आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं की जांच करेंगे जिनसे आपको अच्छी तरह परिचित हो जाना चाहिए।

भाग 2

हम पहले समूह की सदस्यता पर विचार करें। जब किसी समुदाय के किशोर इस कार्यक्रम में रूचि दिखाते हैं, इस से दस से पंद्रह सदस्यों वाले समूह का गठन करना अधिकतर संभव होता है। जहां अधिकतर सदस्यों की आयु बारह से तेरह वर्ष की होगी, कुछ युवा बारह वर्ष से कुछ कम होंगे तो कुछ चौदह वर्ष के भी हो सकते हैं। अनुभव दर्शाता है कि आयु चाहे कुछ भी हो, कार्यक्रम सर्वाधिक प्रभावकारी तब होता है जब इसके सदस्य पूरे तीन वर्ष तक साथ रहते हैं तथा एक समूह के रूप में इसे पूरा करते हैं। इस बिंदु पर जो चाहें, वे शैक्षिक प्रक्रिया के अगले स्तर पर जा सकते हैं और संस्थान प्रक्रिया के मुख्य क्रम में अध्ययन कर इसके द्वारा उपलब्ध कराये गये सेवा पथ को अपना सकते हैं।

कुछ स्थानों पर युवा जो एक समूह का भाग बनेंगे, बच्चों की बहाई कक्षा में भाग ले चुके होंगे, पर यह याद रखा जाना चाहिये कि कई परिस्थितियों में किशोर जो इस कार्यक्रम में आयेंगे उनका धर्म से कोई पूर्व परिचय नहीं रहा होगा। आयु में अंतर के अतिरिक्त अनेक बार उनकी पृष्ठभूमि तथा अनुभव में भी अंतर होगा। कोई भी समूह सदैव एक सा नहीं होता तथा अनुप्रेरकों को लगातार युवाओं की अभिरूचियों का उत्तर देने की चुनौती होगी। बड़ी मात्रा में लचीलेपन तथा रचनात्मकता की आवश्यकता होगी और आपको प्रत्येक बार जब भी आप समूह के साथ होंगे इस चुनौती का सामना करने के लिये तैयार रहने की आवश्यकता होगी। उदाहरण के लिये, आप किस प्रकार निम्न परिस्थितियों का सामना करेंगे ?

- जिस किशोर समूह की आप सहायता कर रहे हैं, उसके कुछ सदस्य, पढ़कर समझने में कठिनाई अनुभव करते हैं।

- समूह के कम उम्र वाले सदस्यों के साथ जब आप अलग से कार्य करने का प्रयास करते हैं तो वे शर्मिंदा महसूस करते हैं।
- एक या दो अधिक बड़े सदस्य, समूह की कुछ गतिविधियों को चुनौतीपूर्ण नहीं पाते हैं।
- समूह के कुछ सदस्य किसी खास गतिविधि में भाग लेने से इन्कार करते हैं।
- समूह के कुछ सदस्य, अन्य सदस्यों की तुलना में अध्ययन सामग्री को अधिक जल्दी पूरा करने की क्षमता दर्शाते हैं।
- समूह के लड़के और लड़कियाँ कुछ गतिविधियों में एक साथ भाग लेने के लिये इच्छुक नहीं होते।
- समूह के कुछ सदस्यों के पास किसी सामूहिक भ्रमण के लिये अंशदान करने का पर्याप्त साधन नहीं होता।
- एक या दो सदस्य उपस्थिति में अनियमित होते हैं।
- एक सदस्य बैठकों के दौरान अनुचित ढंग से मज़ाक करता है।
- समूह के कुछ सदस्य बैठकों में अपने छोटे भाई–बहनों को साथ लाते हैं।
- समूह के एक या दो सदस्य सामूहिक चर्चाओं में भाग नहीं लेते।

अपने समूह में इन पर व इसी प्रकार की अन्य परिस्थितियों पर चर्चा करें। निश्चित ही जब आप इस सेवा क्षेत्र में अनुभव प्राप्त करेंगे, आप इन चुनौतियों पर बार–बार साथी अनुप्रेरकों के साथ समय–समय पर होने वाली समीक्षा बैठकों में खोज करेंगे तथा नई अर्न्तदृष्टियां प्राप्त करेंगे।

भाग 3

वे पुस्तकें, जिनका अध्ययन कार्यक्रम के केन्द्र में स्थित है, जिनमें से कुछ को आप संभवतः पुस्तक 2 में दिए सुझाव के बाद पढ़ चुके होंगे, भाषा के स्तर पर और विचार की जा रही अवधारणाओं की कठिनाईयों दोनों के स्तर पर शिथिल क्रमबद्ध किया गया है। इन्हें दो वर्गों में बांटा गया है। पहला वर्ग बहाई परिपेक्ष के विषयों से संबंधित है, पर धार्मिक आदेशों के रूप में नहीं। इस रूप में उन्हें "बहाई–प्रेरित" कहा जा सकता है। वे इस कार्यक्रम का वृहद अंग हैं। दूसरे वर्ग में कम संख्या में पाठ्यसामग्री है जो विशिष्ट बहाई भाग उपलब्ध कराती है। हम इस अंग पर अगले भाग में विचार करेंगे तथा अभी बहाई–प्रेरित पाठ्यसामग्री के स्वरूप पर ध्यान केन्द्रित करेंगे।

साधारणतया इस प्रकार की शैक्षणिक सामग्री का निर्माण इस विश्वास के साथ होता है कि बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के महासागर में विवेक के असंख्य मोती हैं जिन्हें रूचि रखने वाले व्यक्तियों को प्रदान करना चाहिये चाहे वे अभी उनके स्थान को न भी पहचानते हों। आप पूर्व से ऐसी अवधारणा से परिचित हैं जैसा कि पुस्तक 2 की दूसरी इकाई "उल्लसित वार्तालाप" में आपने अब्दुल बहा के भाषणों तथा पातियों से उद्धृत अंशों को पढ़ा है जिससे आप प्राप्त आध्यात्मिक ज्ञान तथा अंतर्दृष्टियों को प्रतिदिन के वार्तालाप में जोड़ने की क्षमता विकसित कर सकें।

जैसा कि आप स्वयं के अनुभव से जानते हैं कि उस इकाई में जिन विषयों की खोज की थी, उन्हें दूसरों के साथ विचार विमर्श करते समय कुछ अवसरों पर अपनी प्रेरणा के स्त्रोत से आप सहज तरह से बता सकते हैं, यद्यपि कुछ अवसरों पर इसका उल्लेख न करना उचित समझ सकते हैं – यह प्रत्येक परिस्थिति की मांग पर निर्भर है। यही सिद्धांत बहाई प्रेरित सामग्री पर भी लागू होता है। इस संबंध में विश्व न्याय मंदिर की ओर से लिखा गया पत्र बताता है :

> **"बहाई सामाजिक एवं आर्थिक विकास निर्देशित करने वाले मूलभूत सिद्धांतों में से एक सिद्धांत है कि मित्रगण मानवता को बहाउल्लाह की शिक्षायें उदारता से तथा शर्तरहित रूप से प्रदान करें ताकि लोग सभी जगह उनका उपयोग अत्यावश्यक समाजिक बिंदुओं पर कर सकें तथा अपने व्यक्तिगत तथा सामूहिक जीवन को भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों आयामों से बेहतर बना सकें। ईश्वर के शब्द तक पहुंच बहाउल्लाह को इस युग का अवतार स्वीकार करने की शर्त पर नहीं होनी चाहिये। जहां परिस्थितियां मांग करें वहां पर शैक्षणिक कार्यक्रम जो उसकी शिक्षाओं के आधार पर विकसित किये गये हैं, उस प्रेरणा स्त्रोत स्पष्ट का उल्लेख करने से दूर रहना अनुचित नहीं होगा। इस प्रकाश में, अनेक उपाय उपलब्ध हैं जिनका उपयोग मित्र शैक्षणिक सामग्री का निर्माण करने में कर सकते हैं जो धर्म की शिक्षाओं तथा सिद्धांतों पर आधारित है।"**[1]

विश्व न्याय मंदिर की ओर से लिखे एक अन्य पत्र में कहा गया है :

> **"हमें आपको सूचित करने के लिये कहा गया है कि यदि ऐसा न करना विवेकपूर्ण हो तो बहाई प्रेरित पाठ्यक्रम सामग्री में बहाई लेखनी से उद्धृत अंश में लेखक का नाम वर्णित करने की कोई आवश्यकता नहीं है।"**[2]

इस प्रकार जहां सभी बहाई प्रेरित सामग्री बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के सीधे प्रभाव के अन्तर्गत विकसित की जाती है, प्रत्येक सामग्री का चरित्र तथा इसका भावी उपयोग निर्णीत करता है कि धर्म का स्पष्ट उल्लेख किस हद तक करना है। कुछ में, पवित्र लेखों से अनुच्छेदों को समाविष्ट करना बिल्कुल उचित होता है। कुछ अन्य में, बिना उद्धरणों के, बहाई शिक्षाएँ समझायी जाती हैं। दोनों परिस्थितियों में मूल स्त्रोतों का सन्दर्भ दिया जा भी सकता है और नहीं भी। फिर भी, यह समझना महत्वपूर्ण है कि, जहाँ प्रभुधर्म का सुस्पष्ट उल्लेख नहीं किया जाता, वहाँ पर भी, सीखने–सिखाने के अनुभव का सन्दर्भ यह स्पष्ट कर देता है कि यह सामग्री वास्तव में बहाउल्लाह के प्रकटीकरण से प्रेरित हैं।

यहाँ जिन बहाई–प्रेरित अध्ययन सामग्रियों पर विचार किया जा रहा है, वह एक ओर पवित्र लेखों से प्रत्यक्ष रूप में उद्धरण लेकर और दूसरी ओर बौद्धिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विषयों वाले प्रस्तुतिकरणों के ताने–बाने में प्रभुधर्म की शिक्षाओं को बुन कर ईश्वर के शब्दों की शक्ति को ग्रहण करते हैं। सामग्री मूल स्त्रोतों के सन्दर्भों का उल्लेख नहीं करती। यह साधारणतया अनुप्रेरकों के विवेक पर छोड़ दिया जाता है कि वे समूह की इच्छा और रूचि तथा परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लें कि वे उद्धरणों के स्रोत को बतायें अथवा नहीं, यदि उचित है तो किस बिन्दु पर इसे बतायें। किशोर समूहों द्वारा प्रायः प्रथम पढ़ी जाने वाली *सम्पुष्टि की सुरभि* पुस्तक के एक पाठ से लिया गया अंश नीचे दिया गया है। इसे पढ़ें और इसके बाद आने वाले प्रश्नों पर चर्चा करें।।

गाडविन के एक सहपाठी और बहुत अच्छे मित्र का नाम चिशिम्बा है। वह अक्सर मुलेंगा परिवार से मिलने आता है और आज रात को वह भोजन के लिए उनके घर पर रूकेगा। भोजन करते समय एक के बाद दूसरे विषय पर चर्चा हो रही है। मुसोण्डा 'सम्पुष्टि' का विषय उठाना चाहती है और वह अधीर हो रही है। अंततः कुछ क्षणों के लिए शान्ति छा जाती है। "रोज़ और मैं 'सम्पुष्टि' के बारे में बातें कर रहे थे," मुसोण्डा बोली।

"लो शुरू हो गई मेरी छोटी बहन," गाडविन ने गला खखार कर कहा। लेकिन उसे बहुत आश्चर्य हुआ जब चिशिम्बा ने रूचि दिखाई।

"तुम्हारे लिए इस शब्द का क्या अर्थ है ?" उसने मुसोण्डा से पूछा।

मुसोण्डा हैरान होकर रोज़ की तरफ इस आशा से देखने लगी कि वह उत्तर देगी।

"सम्पुष्टि ... ईश्वर हमारी सम्पुष्टि करता है और हमारे कामों में हमारी सहायता करता है।" रोज़ ने कहा।

चिशिम्बा थोड़ी देर तक कुछ नहीं बोला। उसकी आँखों में दुःख झलकने लगा। "कुछ महीने पहले," वह धीरे से कहना षुरू करता है, "मेरे पिताजी की नौकरी चली गई। वह बहुत ही ईमानदार और जिम्मेदार व्यक्ति हैं और सभी इस बात को जानते हैं। अठ्ठारह सालों तक वह एक कम्पनी में चौकीदार की नौकरी करते रहे और एक दिन अचानक ही उन्हें नौकरी से निकाल दिया गया। हम सबको इसका कारण पता है। अगर वह उन्हें और दो सालों तक नौकरी पर रखते तो वह रिटायर हो जाते और कम्पनी को उन्हें पेन्शन देनी पड़ती। हमारे पास बहुत जमा पूँजी भी नहीं है। हालाँकि मेरा बड़ा भाई हमारी सहायता करता है, तब भी ऐसा लगता है कि मैं अगले साल पढ़ाई पूरी करने के लिए

वापस स्कूल नहीं जा पाऊँगा क्योंकि मैं पढ़ाई का खर्च नहीं दे पाऊँगा। मुझे स्कूल से सचमुच बहुत प्यार है। मैं सोचता हूँ कि ईश्वर मेरी सहायता क्यों नहीं करता है ?"

सभी ने इस आशा के साथ श्री मुलेंगा की ओर देखा कि इस प्रश्न का उत्तर वह देंगे।

श्री मुलेंगा ने मुस्कुरातें हुए कहा, "जब हम कोशिश करते हैं तब ईश्वर हमारी इच्छाओं की सम्पुष्टि करता है पर इसका अर्थ यह नहीं है कि हमारा जीवन आसान है। तुम्हारा जीवन कठिनाइयों से भरा होगा और दुर्भाग्यवश उनमें से अधिक अन्याय के कारण से होंगी। परन्तु तुम्हें कठिन परिश्रम करना होगा और अगर कुछ समय के लिए तुम्हारी इच्छा के अनुसार चीजें न भी हों तब भी आश्वस्त होना होगा कि तुम्हें ईश्वर की सम्पुष्टि मिलेगी। अन्याय को हटाने की तुम्हारी कोशिशों में वह तुम्हें विशेष सम्पुष्टि देगा।" उन्होंने चिशिम्बा की ओर देखते हुए कहा, "तुम्हारे परिवार में एकता है और वह मेहनती है। मेरा दिल कहता है कि तुम्हारी स्थिति बदलेगी। मेरा यकीन करो, तुम अपनी पढ़ाई जरूर पूरी करोगे।"

भाग 20 व 21 में हम *सम्पुष्टि की सुरभि* पर कुछ विस्तार से ध्यान देंगे। अभी आप अपने समूह में निम्नलिखित प्रश्नों पर चर्चा कर सकते है :

1. उपरोक्त बातचीत में चर्चा की मुख्य आध्यात्मिक अवधारणा क्या है ?

2. क्या इस अवधारणा को इस तरह प्रस्तुत किया गया है जिसे किशोर समझ सकें ?

3. इस पुस्तक की दूसरी इकाई में हमने "स्व" पर आवश्यकता से अधिक बल देने के खतरों के बारे में सोचा। किस प्रकार एक शैक्षणिक प्रक्रिया जो प्रयासरत होकर ईश्वर की संपुष्टियों को आकर्षित करने की महत्ता पर जोर देती है, उस प्रक्रिया से भिन्न है जो आत्मबोध, आत्मखोज एवं आत्मसम्मान के विचारों पर आयोजित है जैसा कि उस इकाई में वर्णित है ?

4. क्या इस प्रकार की बहाई प्रेरित सामग्री का अध्ययन करना जो यहाँ विचाराधीन है बहाई परिवारों सहित सभी पृष्ठभूमि वाले किशोरों के लिये लाभदायक है ? क्यों ?

भाग 4

दूसरे वर्ग की पाठ्य सामग्री बच्चों की बहाई कक्षा में प्राप्त आध्यात्मिक शिक्षा को जारी रखने के लिये सामग्री उपलब्ध कराती है। वे मूलभूत बहाई मान्यताओं के प्रयोग में सुस्पष्ट हैं और किस प्रकार इन मान्यताओं को सामूदायिक जीवन के परिपेक्ष में कार्य में रूपांतरण किया जाए इस पर चर्चित हैं। इस युग के लिए ईश्वर के प्रकटरूप के रूप में बहाउल्लाह द्वारा प्राप्त स्थान, मानवता के लिए उनके उद्देश्य की अंततः प्राप्ति में पूर्ण विश्वास, सीमारहित स्वतंत्रता और आनंद का आश्वासन जो हम उनके विधानों के पालन के माध्यम से प्राप्त करते हैं, उनकी संविदा की शक्ति में निश्चितता – ये उन दृढ़ विश्वासों में से हैं जो यह सूचित करते हैं कि पाठय सामग्री में विषय–वस्तुओं को कैसे प्रस्तुत किया गया है।

सामग्रियों के इस वर्ग के बारे में विचार करते समय हम धर्मसंरक्षक की ओर से लिखे गये निम्नलिखित अनुच्छेद को मददगार पायेंगे :

"... आधुनिक युवा के समक्ष प्रस्तुत खतरे निरन्तर गम्भीर होते जा रहे हैं तथा तत्काल समाधान की मांग करते हैं। परन्तु, जैसा अनुभव स्पष्ट रूप से दर्शाता है, इस सचमुच दुःखद एवं जटिल परिस्थिति का समाधान परम्परागत एवं पुरोहितवादी धर्म में प्राप्त नहीं होगा। चर्च की हठधर्मिता को हमेशा के लिये अस्वीकारा जा चुका है। बहाउल्लाह द्वारा दुनिया को प्रकटित एक यथार्थ, रचनात्मक एवं सजीव धर्म की शक्ति ही युवा को नियंत्रित कर सकती है और इस युग की मूर्ख भौतिकवादिता के फन्दों से उसे बचाया जा सकता है। पूर्व की भाँति, आज भी धर्म ही दुनिया की एकमात्र आशा है, लेकिन धर्म का वह स्वरूप नहीं जिसका प्रचार हमारे पुरोहितवर्ग के अगुआजन करने का व्यर्थ प्रयास करते हैं। यथार्थ धर्म से पृथक होकर, नैतिकताएँ अपनी प्रभावशीलता खो देती हैं और मनुष्य के व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन को मार्गदर्शित एवं नियन्त्रित करना बन्द कर देती हैं। लेकिन, जब यथार्थ धर्म को वास्तविक नैतिकताओं के साथ जोड़ा जाता है, तब नैतिक प्रगति महज़ एक आदर्श न होकर एक सम्भावना बन जाती है।"[3]

उपरोक्त गद्यांश यह स्पष्ट करता है कि परंपरागत धर्म के घटते प्रभाव के विपरीत, सजीव धर्म की शक्ति समाज में इतने अधिक व्याप्त "मूर्खतापूर्ण भौतिकवादिता के फंदों" से युवाओं को बचा सकती है। यह शक्ति युवाओं की पठन सामग्री में तथा जिस प्रकार उनकी आध्यात्मिक क्षमता विकसित करने में मदद की जाती है में परिलक्षित होनी चाहिये। इन विचारों को आगे सोचने के लिये, आईये *आस्था की चेतना* – जो यहां विचार की जाने वाली इस वर्ग की एक पाठय सामग्री है, पर ध्यान दें।

आस्था की चेतना दार्शनिक चरित्र के विषयों पर ध्यान देती है, क्योंकि इस आयु के युवा अस्तित्व के ऐसे मौलिक प्रश्नों से जूझते हैं जिनका उत्तर उन्हें उचित प्रकार दिया जाना चाहिये यदि हम उन्हें आगे जीवन में संशय तथा यहां तक कि आस्था की हानि से बचाना चाहते हैं। मानव मन को विस्मित करने वाले अनेक गूढ़–प्रश्नों के उत्तर बहाई शिक्षाओं में पाये जाते हैं : मानव मात्र की वास्तविक प्रकृति, अच्छाई तथा बुराई, स्वतंत्र इच्छा तथा नियति, क्रमिक विकास तथा मानव चेतना का प्रकटन, मानव बुद्धि और आस्था की चेतना। पुस्तक इन विषयों पर प्रकाश डालने के लिये पवित्र लेखों, विशेषकर अब्दुल बहा के *कुछ उत्तरित प्रश्न* की भेदक व्याख्याओं से अंतर्दृष्टि प्राप्त करती है। यह पुस्तक प्रत्येक विषय का विकास किशोरों द्वारा, नियमित साप्ताहिक मीटिंग और बाद में जब वे एक कैंपसाइट में सप्ताहांत बिताते हैं, में किये जा रहे वार्तालाप के द्वारा करती है। निम्न भाग उस पाठ से लिया गया है जिसमें किशोर युवा अपने समूह की अनुप्रेरक नटालिया पेट्रोवा के साथ भाग्य के बारे में चर्चा कर रहे हैं :

"आओ देखें कि अभी तक हमने क्या समझा है," नटालिया ने कहा। "हमारे पास स्वेच्छा है जिसके सहारे हम अच्छे या बुरे कर्म कर सकते हैं और एक उदात्त जीवन जीने के लिए हमें अपनी संकल्पशक्ति का प्रयोग करना होता है। लेकिन स्वेच्छा के होने का अर्थ यह नहीं है कि हम सभी चीजों पर नियन्त्रण कर सकते हैं। हमारे साथ ऐसा कुछ हो सकता है जिन पर हमारा बहुत नियन्त्रण नहीं होता। अब मैं तुमसे एक अन्य विचार के बारे में पूछती हूँ 'भाग्य' शब्द से तुम क्या समझते हो ?"

"मेरे ख्याल से भाग्य वह है जिसे हम, कुछ भी हो जाये, बदल नहीं सकते।" इगोर ने कहा।

"सुनने में यह अच्छा लगता है। क्या कोई कुछ उदाहरण दे सकते हो ?" नटालिया ने पूछा।

"हम अपने माँ–बाप को नहीं चुन सकते," नादया ने कहा।

"हम उस जगह को चुन नहीं सकते जहाँ हमारा जन्म होता है," अंटन ने कहा।

"मेरे माता–पिता बराबर यह कहते रहते हैं कि मेरे भाग्य में एक महान पियानोवादक बनना है," वाडिक ने कहा।

"लेकिन ऐसा करना तुम्हारे लिए जरुरी नहीं है। तुम चाहो तो कुछ और भी बन सकते हो," मरिना बोली।

"यह सही है। भाग्य इतना सरल नहीं है," नटालिया ने कहा। "एक उचित उदाहरण है जिसके द्वारा हम भाग्य को बेहतर समझ सकते हैं। क्या तुममें से किसी ने यह देखा है कि एक कालीन कैसे बुनी जाती है ?"

सभी के चेहरे खाली–खाली नजर आ रहे थे, इसलिए नटालिया ने बोलना जारी रखाः "इसमें एक ढांचा होता है। इस ढांचे पर मजबूत धागे एक छोर से दूसरे छोर तक कस कर बांधे जाते हैं। बुनकर अलग–अलग रंगों के इन धागों का इस्तेमाल कर एक आकृति बनाता है। आरम्भिक अनुयायियों में एक ने अब्दुल बहा को एक बार यह कहते हुए सुना था कि हम बुनकरों के समान हैं। हमें ढांचा दिया गया है जिसमें धागे लगे हुए हैं। बुनने के लिए हमें सूत भी दिये गये हैं जिनकी तुलना तुम उन प्रतिभाओं और शक्तियों से कर सकते हो जिन्हें लेकर हम जन्म लेते हैं। यह हमारा भाग्य है। लेकिन करघे पर बुनी जाने वाली आकृति को हम चुनते हैं। अपने कार्यों में हमें स्वतन्त्रता होती है। हमारा हर कार्य उस आकृति के छोटे से भाग का निर्माण करता है। जब हम बड़े हो जाते हैं तो हम बुनकर तैयार हुए कालीन की तरह होते हैं। स्वेच्छा और संकल्पशक्ति के सहारे हम उन शक्तियों और प्रतिभाओं का विकास करते हैं जो ईश्वर ने हमें दी है।"

चिन्तन :

ईश्वर ने हमें विभिन्न क्षमतायें दी है। कोई जीवविज्ञान में अच्छा हो सकता है, जबकि अन्य किसी की प्रतिभा संगीत में हो सकती है। लेकिन हम सब को वह सब कुछ दिया गया है जो एक श्रेष्ठ मानव बनने के लिये आवश्यक है। इसलिये, अपनी खामियों के लिये भाग्य को कोसना सही नहीं है। जब हम ऐसा करते हैं, तब सुधरने के लिए प्रयास करना हम बन्द कर देते हैं। नीचे दी गई हर स्थिति के लिये उस विचार को चुनें जिससे किसी व्यक्ति को अपनी परिस्थिति को बदलने में मदद मिलती हो :

क. कोई व्यक्ति हानिकारक भोजन करने के कारण प्रायः बीमार पड़ जाता है। वह सोचता है :

_____ यह मेरे भाग्य में है कि मैं बीमार और कमजोर रहूँ।

_____ मुझे बहाना बनाना छोड़ देना चाहिये और अपने खाने की आदतों को बदलना चाहिये।

ख. कोई व्यक्ति पढ़ता नहीं और इस कारण परीक्षा में अच्छे अंक नहीं प्राप्त करता। वह सोचता है :

_____ मैं सर्वश्रेष्ट छात्र नहीं भी बनूँ, पर कड़ी मेहनत से मैं और अच्छा कर सकता हूँ।

_____ पास होना मेरे भाग्य में ही नहीं है।

ग. कोई व्यक्ति मुसीबत में पड़ने पर शराब पी कर धुत्त हो जाता है। जब वह नशे में नहीं होता तब वह सोचता है :

_____ शराब के नशे में धुत्त होने के लिये जीवन मुझे बाध्य करता है।

_____ जीवन की समस्याओं का सामना करना मैं सीख सकता हूँ। मुझे शराब की जरुरत नहीं है।

घ. किसी को अपने मित्रों की निन्दा करने की आदत है, इसलिये वे उसके पास नहीं जाते। वह सोचता है :

_____ कोई भी मुझे पसंद नहीं करता।

_____ मुझे निन्दा करना छोड़ देना चाहिये और अपने मित्रों की अच्छाइयों को देखना चाहिये।

च. कोई व्यक्ति परीक्षा में नकल करता है और पकड़ा जाता है। वह सोचता है :

_____ यह मेरी किस्मत है। दूसरे भी नकल करते हैं, लेकिन कभी पकड़े नहीं जाते।

_____ ऐसा काम मैं कैसे कर सकता हूँ ? मुझे ईमानदारी के वस्त्र से विभूषित होना चाहिये।

"क्या हम यह कह रहे हैं कि किसी के भाग्य में अपराधी बनना नहीं होता ?" इवान ने पूछा।

"बिल्कुल नहीं," नटालिया ने उत्तर दिया। "जो उदाहरण अभी मैंने दिया, उसमें उसे दिये गये ढांचे और धागों के साथ हर कोई एक सुंदर आकृति बुन सकता है। भिन्न ही सही, पर हम में से प्रत्येक में वह क्षमता है कि हम अच्छे बनें।"

जो कुछ भी कहा जा रहा है, उससे इवान सहमत है। लेकिन उसे कोई बात परेशान कर रही है, पर वह ठीक तरह से नहीं जान पा रहा है कि वह क्या है। तब, एकाएक वह कह उठता है, "लेकिन यह सब बहुत कठिन है।"

कोई ठीक तरह से नहीं समझ पा रहा था कि इवान क्या कह रहा है।

"क्या कठिन है ?" नटालिया ने पूछा।

"सशक्त और अच्छा बनने के लिए हर समय प्रयास करते रहना," इवान ने कहा।

"तुम ठीक कहते हो, इवान," चेहरे पर मुस्कुराहट के साथ नटालिया ने कहा। "लेकिन याद रखो कि ईश्वर हर समय हमारी सहायता कर रहा है। वह हमें कभी भी अकेला नहीं छोड़ता। यह तैरती हुई नाव के समान है; नाव को आगे ले जाने की शक्ति स्वयं नाव से नहीं बल्कि हवा से प्राप्त होती है। लेकिन वह नाविक ही है जो हवा के सहारे नाव को उसके गन्तव्य तक ले जाता है। समस्त शक्तियाँ ईश्वर से प्राप्त होती हैं। उसकी सहायता के बिना हम शक्तिहीन होते हैं। जब हम केवल अपनी ओर देखते हैं, हमें केवल कमजोरी दिखायी देती है। लेकिन जब हम ईश्वर की ओर उन्मुख होते हैं और उससे मदद व सहायता की याचना करते हैं, तब हम वह करने की ताकत पाते हैं जो ईश्वर को प्रिय है।"

इसके बाद, नीचे लिखे उद्धरण को याद करने के लिए समूह को दो–दो के जोड़ों में बांटा जाता है :

> ***"अतुलनीय रचयिता ने समस्त मानव को एक ही सार तत्व से रचा है और अपने अन्य प्राणियों से उसकी वास्तविकता को उच्च बनाया है। अतः, सफलता या विफलता, लाभ या हानि मनुष्य के अपने प्रयासों पर ही निर्भर होना चाहिए। जितना अधिक वह प्रयास करेगा, उतनी ही महान उसकी प्रगति होगी।"***
>
> ***"हे मेरे ईश्वर ! हे मेरे ईश्वर ! अपनी दीनता ओर दुर्बलता में सर्वोत्तम उद्यम में लगा हुआ, जनसमूहों के बीच तुम्हारी वाणी को ऊँचा उठाने और तेरी शिक्षाओं को लोगों के बीच फैलाने का संकल्प लिये हुए तू देखता है मुझे। मैं कैसे सफल हो सकता हूँ जब तक पावन चेतना के श्वास से तुम मेरी मदद नहीं करोगे, अपने महिमामय साम्राज्य के समूहों द्वारा मेरी सहायता नहीं करोगे और मुझ पर अपनी उन संपुष्टियों की वर्षा नहीं करोगे जो अकेले ही एक पतंगे को विशाल पक्षी, पानी के बूंद को नदी और सागर तथा अणु को नक्षत्रों और सूर्यों में बदल सकता है ? हे मेरे स्वामी ! अपनी विजयपूर्ण और प्रभावशाली शक्ति से मेरी सहायता कर ताकि समस्त लोगों के बीच मेरी जिह्वा तेरी प्रशंसाओं और गुणों का बखान कर सके और मेरी आत्मा तुम्हारे प्रेम और ज्ञान की मदिरा से उमड़ पड़े।***
>
> ***"तुम्ही हो सर्वशक्तिमान और वह सब कुछ करने वाला जो तुम्हारी इच्छा है।"***

यद्यपि आप *आस्था की चेतना* की पूरी पुस्तक भाग 22 में पढ़ने का अवसर पायेंगे, तथापि यहां कुछ देर ठहर कर उपरोक्त अंश की विषय वस्तु का परीक्षण निम्न बिंदुओं पर चर्चा करके आपके लिये लाभकारी होगा :

1. यह सामग्री भाग्य की अवधारणा को किस प्रकार प्रस्तुत करती है ? क्या यह हठधर्मिता दर्शाती है ?

2. इस अवधारणा की एक हठधर्मी प्रस्तुति कैसी होगी ?

3. क्या यह सामग्री, आध्यात्मिक अवधारणाओं की खोज करने में किशोरों की सहायता पर उचित ज़ोर दे रही है, अथवा क्या विचारों को सख्ती से प्रस्तुत किया गया है ?

4. भाग्य एवं स्वतन्त्र–इच्छा से सम्बन्धित पवित्र लेखों के आशयों को उनके अपने जीवन में समझने के लिए यह सामग्री किस प्रकार उनकी सहायता करती है ?

5. इन अवधारणाओं को समझने का प्रयास कर रहे युवा जनों के भिन्न विचारों और मनोभावों के प्रति क्या यह कहानी सहनशीलता दर्शाती है ? यदि हाँ, तो यह किस प्रकार दर्शाया गया है ?

6. यदि किशोर समूह के सदस्यों को अपने विचारों को मुक्त रूप से व्यक्त करने न दिया जाता तो क्या होता ?

7. नटालिया पेट्रोवना किस तरह विचारों की स्पष्टता विकसित करने में अपने युवा मित्रों की सहायता करती है ?

8. क्या कहानी के युवा जनों द्वारा विचार किए गए प्रश्न किशोरों से संबंधित हैं, चाहे वे किसी भी पृष्ठभूमि के हों ?

भाग 5

प्रारम्भिक किशोरावस्था जीवन का ऐसा समय होता है जिसके दौरान हम बाहरी स्वरूपों के परे जाने तथा जिसे हम देखते और अनुभव करते हैं, उसके बारे में अधिक गहरी समझ पाने की अपनी क्षमता को बहुत अधिक बढ़ाते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि किशोरों को आध्यात्मिक बोध की आवश्यकता होती है तथा आध्यात्मिक शक्तियों को पहचानने, प्रत्येक परिस्थिति की आध्यात्मिक वास्तविकता को देख पाने तथा सम्बन्धित आध्यात्मिक सिद्धान्तों का पता लगाने में उन्हें सहायता की जानी चाहिए। पवित्र लेखों में हम ऐसी क्षमताओं जैसे "आंतरिक दृष्टि", "आंतरिक नेत्र" तथा "आत्मा की आँख" के लिए संदर्भ पाते हैं। उदाहरण के लिये, नीचे दिये गये उद्धरण में, तेहरान के तरबियत स्कूल को अब्दुल बहा यह सलाह देते हैं :

> **"उन्हें कम से कम समयावधि में अधिकतम् प्रगति करने दो, उन्हें अपनी आँखे पूरी तरह से खोल कर सभी वस्तुओं की आन्तरिक वास्तविकता को प्रकट करने दो, प्रत्येक कला एवं कौशल में उन्हें प्रवीण होने दो तथा सभी वस्तुओं के वास्तविक रहस्यों की समझ पाने दो – यह क्षमता पावन देहरी के स्वामीभक्ति के स्पष्ट रूप से प्रत्यक्ष प्रभावों में से एक है।"[4]**

अब्दुल बहा आध्यात्मिक बोध को उन शक्तियों में से एक बताते हैं जो मनुष्य को पशुओं से अलग करता है :

"यह स्पष्ट रूप से प्रकट है कि मनुष्य शारीरिक बल में पशुओं के समान ही है, फिर भी, बौद्धिक उपलब्धियों, आध्यात्मिक बोध, सद्गुणों की प्राप्ति, दैवत्व के वरदानों, प्रतापी उदारता एवं स्वर्गिक दया के आशीष प्राप्त करने की क्षमता के कारण वह पशु से विशिष्ट है। यह मनुष्य का श्रंगार है, उसका सम्मान एवं उत्कृष्टता है। मानवजाति को इस सर्वोच्च स्थान को पाने का प्रयत्न करना चाहिए।"[5]

एक अन्य उद्धरण में, वे हमारी अन्तर्दृष्टि एवं आत्मा की आवाज को सुन सकने को आध्यात्मिक कृपाबताते हैं :

"उसने हमें भौतिक उपहार एवं आध्यात्मिक कृपा प्रदान की है, सूरज को देखने के लिये बाह्य दृष्टि एवं ईश्वर की महिमा के बोध के लिये अन्तर्दृष्टि दी है। ध्वनि के माधुर्य का आनंद लेने के लिये उसने बाहरी कर्ण की रचना की है एवं आन्तरिक श्रवणशक्ति दी है, अपने रचयिता की आवाज़ को सुन सकने के लिये।"[6]

अब्दुल बहा का निम्नलिखित कथन हमें याद दिलाता है कि अपनी आंतरिक दृष्टि को खोलना कितना आवश्यक है :

"हमारा आध्यात्मिक बोध, हमारी आंतरिक दृष्टि अवश्य खुल जानी चाहिये, ताकि हम सभी वस्तुओं में ईश्वर की आत्मा के चिन्हों एवं संकेतों को देख सकें। प्रत्येक वस्तु हमारे लिये परमात्मा के प्रकाश को प्रतिबिम्बित कर सकती है।"[7]

इस उद्धरण में अब्दुल बहा हमारे लिये एक उदाहरण का वर्णन करते हैं जिसमें आध्यात्मिक दृष्टि समझ को बढ़ाती है :

"विनाश की अवधारणा मानव की अवनति का एक कारक है, उसके पतन और निम्न होने का कारण है, उस के भय एवं दुर्दशा का स्त्रोत है। यह मनुष्य के विचार के बिखरने एवं कमज़ोर होने में सहायक रहा है, जबकि अस्तित्व एवं निरन्तरता के बोध ने मनुष्य को आदर्शों की परमोच्चता की ओर ऊपर उठाया है, मानव की प्रगति के आधार की स्थापना की है एवं स्वर्गिक गुणों के "विकास को प्रेरित किया है। अतः, मनुष्य को चाहिए कि वह विनाश एवं मृत्यु के विचारों का परित्याग करे, जो पूर्ण रूप से काल्पनिक होते हैं और उसकी सृष्टि के दिव्य उद्देश्य में स्वयं को अमर एवं अनन्त पाए। उसे ऐसे विचारों से मुँह मोड़ लेना चाहिये जो मानव की आत्मा को गिरा देते हैं ताकि दिन–प्रतिदिन और घंटा दर घंटा वह मानव यथार्थ की निरन्तरता के आध्यात्मिक बोध की ओर ऊपर एवं अधिक ऊँचाई की ओर बढ़े।"[8]

नीचे दिये गये रिक्त स्थान में क्या आप यह वर्णन कर सकते हैं कि किस प्रकार आध्यात्मिक बोध, मानव समझ को एक ऐसा नया आयाम प्राप्त कराता है जो केवल साधारण मानसिक शक्तियों के अभ्यास द्वारा प्राप्त नहीं होता ?

____

____

____

____

____

भाग 6

आध्यात्मिक बोध की आवश्यकता का अन्वेषण करने के बाद, अब हमें अपने आप से यह पूछना चाहिए कि हम इसे विकसित कैसे कर सकते हैं। इस प्रश्न का कोई सरल उत्तर नहीं है और यहाँ हम कुछ सम्बद्ध विचारों की खोज मात्र ही कर सकते हैं।

यह स्पष्ट है कि आध्यात्मिक बोध शुद्ध हृदयों की विशिष्टता है। अब्दुल बहा कहते हैं :

"मनुष्य का हृदय जितना अधिक शुद्ध एवं पवित्र होता है, यह उतना ही अधिक ईश्वर के निकट पहुँचता है और वास्तविकता के सूर्य का प्रकाश इसमें प्रकट होता है। यह प्रकाश हृदयों को ईश्वर के प्रेम की अग्नि से ज्योतिर्मय करता है, उनमें ज्ञान के द्वार खोलता है तथा दिव्य रहस्यों को उजागर करता है, जिससे आध्यात्मिक खोजों को सम्भव बनाया जा सके।"[9]

आध्यात्मिक बोध के विकास के लिये निश्चय ही ईश्वर का ज्ञान महत्वपूर्ण है :

"वस्तुओं की वास्तविकता की समझ अस्तित्व जगत में भौतिक लाभ प्रदान करती है और वाह्य सभ्यता का विकास करती है, परन्तु ईश्वर का ज्ञान आध्यात्मिक विकास एवं आकर्षण, सच्ची दृष्टि एवं अंतर्दृष्टि, मानवजाति का उन्नयन, दिव्य सभ्यता का प्रकटन, नैतिकता का परिशोधन, अंतःकरण की प्रदीप्ति प्राप्त कराता है।"[10]

साथ ही, यह स्पष्ट है कि आंतरिक दृष्टि विकसित करने के लिए ईश्वर का प्रेम अनिवार्य है :

"हे मेरे मित्र ! ईश्वर को धन्यवाद दो कि उसने तुम्हारी दृष्टि को सत्य के सूर्य से दीप्तिमान किरणों से प्रकाशित किया है, और जीवन–जल से तुम्हें जीवन दिया तथा ईश्वर के प्रेम की ज्वाला से दीक्षा दी है।"[11]

"ईश्वर के प्रेम को अग्नि कहा जाता है, क्योंकि यह पर्दों को भस्म कर देती है, जल की तरह क्योंकि यह जीवन स्रोत है। संक्षेप में, ईश्वर का प्रेम मानवता के विश्व के गुणों की अंर्ततम वास्तविकता है। इसके द्वारा मानव स्वभाव शुद्ध किया जाता है। ईश्वर के प्रेम द्वारा, व्यक्ति मानव संसार की त्रुटियों से छुटकारा पाता है। ईश्वर के प्रेम के द्वारा व्यक्ति गुणों के संसार में विकास करता है। ईश्वर का प्रेम विश्व की जगमगाहट का कारण है।"[12]

1. ऊपर दी सलाहों के महत्व पर विचार करते समय आप इन अभ्यासों को सहायतापूर्ण पर सकते हैं :

   क. हृदय की पवित्रता : ____________________

ख. ईश्वर का ज्ञान : ____________________

____

____

____

ग. ईश्वर का प्रेम : ____________________

____

____

____

2. निर्णय करें कि क्या निम्नलिखित कथन सही हैं :

____ ईश्वर की शिक्षाओं के बिना, केवल तर्क से ही हम सही–गलत के बीच का अन्तर समझ सकते हैं।

____ ईश्वरीय अवतारों का ज्ञान और उनकी शिक्षाओं के प्रति आज्ञाकारिताही हमें सत्य को समझने की योग्यता प्रदान करती है।

____ हृदय की पवित्रता मनुष्य को सरल एवं निश्छल बना देती है।

____ हृदय जितना अधिक पवित्र होता है, उतना ही अधिक निष्ठापूर्वक दिव्य गुणों को प्रतिबिम्बित करता है, जिसका प्रकाश उसे वस्तुओं की आन्तरिक वास्तविकता का बोध कराता है।

____ प्रभु के प्रेम की अग्नि अह्म के आवरण को भस्म कर देती है और इस तरह अन्तर्दृष्टि को सत्य की पहचान करने की योग्यता प्रदान करती है।

____ प्रभु के प्रेम की शक्ति हमें स्पष्ट दृष्टि के साथ उसकी इच्छा एवं उद्देश्यपूर्त्ति के प्रयासों में सहायता करती है।

____ विनाश का डर हमारी बौद्धिक एवं आध्यात्मिक क्षमताओं को कमज़ोर बना देता है और जब हमें अपने अस्तित्व की निरन्तरता का विश्वास होता है तो हमारा आध्यात्मिक बोध तीक्ष्ण हो जाता है।

____ पावन देहरी पर निःस्वार्थ सेवा आन्तरिक वस्तुओं की वास्तविकता देख पाने में हमारी सहायक होगी।

____ अन्तर्दृष्टि से हम दिव्य सम्पुष्टियों को देख सकते हैं।

भाग 7

पिछले भाग का अन्तिम उद्धरण हमारे अन्वेषण से विशेष तौर पर सम्बन्धित इस मौलिक अवधारणा की ओर संकेत करता है कि वस्तुओं की वास्तविकता को देखने में असंख्य आवरण हमारे आन्तरिक नेत्र को बाधित करते हैं। आध्यात्मिक बोध के विकास के लिये इन आवरणों को हटाना आवश्यक है। अब्दुल बहा कहते हैं :

> "समस्त दृश्य जीवों में प्रकटित ईश्वरीय कृपा कभी–कभी मानसिक एवं नश्वर दृष्टि के बीच आने वाले आवरणों के कारण छिपी रहती हैं जो मनुष्य को आध्यात्मिक रूप से अन्धा और अक्षम बना देती हैं, लेकिन जब उन परदों को हटा कर आवरणों को चीर दिया जाता है, तब ईश्वर के महान चिन्ह दृष्टिगत हो जाते है और मनुष्य संसार को अनन्त प्रकाश से परिपूर्ण होता देखता है। समस्त कृपाएँ ईश्वर की हैं और सदा प्रकट रहती हैं। स्वर्ग का आश्वासन सदा विद्यमान रहता है। ईश्वर के अनुग्रह सर्वव्याप्त हैं, परन्तु यदि मनुष्य की आत्मा के सचेतन नेत्र ढके एवं अंधकारमय हों, तो इन सार्वभौमिक चिन्हों को नकारने पर वह विवश हो जाएगा तथा दिव्य अनुकम्पा के इन प्रकटीकरणों से वंचित रह जाएगा। अतः, हमें हृदय और आत्मा के साथ प्रयास करना चाहिए कि आन्तरिक दृष्टि के नेत्र को ढँकने वाले आवरणों को हटाया जा सके, जिससे ईश्वर के चिन्हों के प्रकटीकरण को हम देख सकें, उसकी रहस्यमय कृपाओं का बोध पा सकें और यह अनुभूति प्राप्त कर सकें कि आध्यात्मिक आशीषों की तुलना में भौतिक वरदान नगण्य हैं।"[13]

> "प्रत्येक आत्मा को यह प्रयास करना चाहिए कि की मनुष्यों के नेत्रों को ढकने वाले आवरण नष्ट हो सकें और सूर्य तुरंत दिखाई दे और उससे हृदय एवं दृष्टि को प्रकाशित हो सके।"[14]

शाब्दिक व्याख्याएँ, कोरी कल्पनाएँ, अन्धानुकरण, स्व, वासनाओ और इच्छाओं का अनुसरण, लालच तथा ईर्ष्या, पूर्वाग्रह पवित्र लेखनी में उल्लिखित आवरणों में से हैं। वैसे ही हमारी भौतिक इन्द्रियाँ भी आवरण बन सकती है।

> "तुम्हारे लिये मेरी प्रार्थना है कि तुम्हारी आध्यात्मिक क्षमताएँ और आकांक्षाएं प्रतिदिन बढ़ें और तुम कभी भी अपनी दृष्टि से दिव्य प्रकाश की महिमा को भौतिक लिप्साओं के कारण ओझल मत होने दो।"[15]

> "इन आवरणों में एक है कोरी शाब्दिक व्याख्या। अन्तर्निहित वास्तविक अर्थ के संप्रेषण के लिये महान प्रयासों की आवश्यकता होती है।"[16]

> "ईश्वर का गुणगान करो कि तुमने भव्यता के साम्राज्य में प्रवेश प्राप्त कर लिया है एवं कोरी कल्पनाओं के आवरणों को छिन्न–भिन्न कर दिया है तथा आन्तरिक रहस्यों के मूल का तुम्हें ज्ञान कराया गया है।"[17]

> "मैं उत्साहपूर्वक ईश्वर से याचना करता हूँ कि तुम्हारे आंतरिक नेत्र से पर्दों को दूर कर दे, तुम्हारे समक्ष अपने सर्वशक्तिशाली चिन्हों को प्रकट कर दे; तुम्हें मार्गदर्शन की पताका बना दे, उसके अतिरिक्त सभी से पूर्णतया अनासक्त कर, अपने प्रेम की ज्वाला से दीप्त, उसकी याद में व्यस्त, समस्त वस्तुओं की वास्तविकता के प्रति सजग, ताकि तुम स्वयं के नेत्रों से देख सको, स्वयं के कानों से सुन सको तथा अपने किसी भी पूर्वज की नकल करने से बच सको। अपने स्वामी के धर्म में अंर्तदृष्टि से देख सको, क्योंकि लोग अंधकार के आवरण से ढके हुये हैं।"[18]

"... क्योंकि अहंकार से अधिक बड़ा कोई आवरण नहीं है और चाहे यह आवरण कितना ही सूक्ष्म क्यों न हो, अन्ततः यह मनुष्य को पूर्णतया ढँक देगा और अनन्त कृपा का भाग प्राप्त करने से उसे वंचित कर देगा।"[19]

"वासना और इच्छाओं का अनुसरण, हृदय से निकलने वाले हज़ार पर्दों से नेत्रों को ढक देगा जो दृष्टि और अन्तर्दृष्टि को भी बाधित कर देगा।"[20]

"ओ समझ की संतानों ! जब पलक, चाहे कितनी भी नाजुक क्यों न हो, मनुष्य की बाहरी आँख को संसार और उसमें जो कुछ भी है, को देखने से वंचित कर सकती है, तो विचार करो कि यदि लोभ का पर्दा उसकी आंतरिक आँख पर उतर जाए तो क्या होगा। कहोः ऐ लोगो ! लालच और ईर्ष्या का अंधेरा आत्मा की चमक को प्रभावित करता है, जैसे बादल सूर्य के प्रकाश को बाधित करते हैं।"[21]

"मुझे आशा है कि तुम पृथ्वी की वस्तुओं को न देखते हुए सत्य के सूर्य की ओर निर्मल नेत्रों से मुड़ोगे। ... य वह सूर्य तुम्हें अपनी शक्ति दे, तब पूर्वाग्रह के बादल तुम्हारी आँखों से उसकी रोशनी को नहीं ढकेंगे ! तब सूर्य तुम्हारे लिये बादलों से ढका नहीं होगा।"[22]

ऊपर उल्लिखित उद्धरणों में से प्रथम में अब्दुल बहा कहते हैं कि, "समस्त कृपाएँ ईश्वर की है और सदा प्रकट रहता है", "स्वर्ग का आश्वासन सदा विद्यमान रहता है," और "ईश्वर के अनुग्रह सर्वव्याप्त हैं।" वे आगे वर्णन करते हैं कि, "यदि मनुष्य की आत्मा के सचेतन नेत्र ढँके एवं अंधकारमय हों", तो वह ईश्वर की कृपाएँ एवं स्वर्गिक आश्वासन के सार्वभौमिक चिन्हों को नकारने पर विवश हो जायेगा।

1. आपके विचार से वे अनुकंपाएँ और अनुग्रह क्या हैं जिनका उल्लेख अब्दुल–बहा करते हैं ?

____

____

____

____

2. अब इसका वर्णन करें कि निम्नलिखित आवरण हमें इन अनुकंपाओं और अनुग्रहों को देखने से किस प्रकार वंचित करते हैं।

क. पवित्र लेखों की शाब्दिक व्याख्या : _______________________

____

____

____

ख. कोरी कल्पनाएँ : _______________________________

____

____

____

ग. अन्धानुकरण : ____________________

____

____

____

घ. स्व : ____________________

____

____

____

ड़ः कामवासनाओं और इच्छाओं का अनुसरण : ____________________

____

____

____

चः लालच तथा ईर्ष्या : ____________________

____

____

____

छः पूर्वाग्रह : ____________________

____

____

____

3. निर्णय करें कि क्या निम्नलिखित कथन सही हैं :

____ हमारे आन्तरिक नेत्र, हमारे मानसिक और नश्वर नेत्रों के बगैर भी देख सकते हैं।

____ हमारी भौतिक इंद्रियां और मानसिक शक्तियाँ, आध्यात्मिक वास्तविकता को समझने से हमें सदा ही बाधित करती हैं।

____ अपनी भौतिक इंद्रियों को उन सब से पावन कर लेना, जो ईश्वर से सम्बद्ध नहीं है, सत्य को समझने में हमारी आन्तरिक क्षमताओं को सहायता मिलती है।

4. अन्त में, आध्यात्मिक बोध को बाधित करने वाले आवरणों की प्रकृति के बारे में अधिक अन्तर्दृष्टि पाने के लिये, अब्दुल बहा के इस उद्धरण पर मनन करें। यदि आप चाहें तो इसे कंठस्थ करें।

"तुम निश्चित रूप से जान लो, सत्य को आवृत करने वाले कई आवरण हैं : अंधकारमय आवरण; सूक्ष्म और पारदर्शी आवरण; प्रकाश आवरण जिसके एक दृश्य से आंखें चौंधिया जाती हैं जिस

प्रकार केवल अपने ही प्रकाश से आवृत सूर्य को देखने पर भी दृष्टि बाधित हो जाती है और आँखें चौंधिया जाती है।

"ईश्वर से मैं याचना करता हूँ कि वह सभी आवरणों को हटा दे तथा सभी आँखों का परिचय प्रकाश से करा दे, ताकि सत्य के सूर्य का साक्षी बनने से मनुष्य वंचित न हो।"[23]

भाग 8

किशोरों द्वारा अध्ययन की जाने वाली एक अन्य बहाई–प्रेरित पाठयसामग्री, *आशा की किरण* के पाठों से लिया गया एक पाठ नीचे प्रस्तुत है। यह एक बारह वर्षीय लड़के किबोमी, की कहानी है जो अपने माता–पिता को खो देने के बाद अपनी बहन की तलाश में निकल पड़ता है। किबोमी अदुम्बा जनजाति का है। एक गृहयुद्ध के बीच उसके माता–पिता को कुंगु जनजाति के लोगों ने मार डाला था। पिछले पाठ में कुंगु जनजाति के एक वृद्ध व्यक्ति से उसकी भेंट का वर्णन दिया गया था, जो उससे बहुत दयालुता का व्यवहार करता है। यहां उसकी मुलाकात अपनी जनजाति के सैनिकों के समूह से होती है।

शरीर में कुछ भोजन जाने के बाद, किबोमी के अंदर अब थोड़ी और ताकत आ गई है, और वह तेजी से आगे बढ़ता है। जब वह अपने गाँव से भागा था, तब उसे मुख्य रूप से भय और क्रोध महसूस हो रहा था। अब उसके मन में वे अच्छी भावनाओं फिर से लौट रही हैं जो उसके दिल में हमेशा से लोगों के प्रति रही हैं। वह वृद्ध व्यक्ति भले ही कुंगु था, लेकिन दयालु और बुद्धिमान था। उसने उसके साथ अपना भोजन बाँटा। जो शब्द उसने कहे थे, वे सुंदर और आशा से भरे थेः "हमें जीवन में कई चयन करने होते हैं। हमें प्रेम करने के लिए उत्पन्न किया गया है, घृणा करने के लिए नहीं।"

नदी के किनारे–किनारे नांगाटा की ओर बढ़ते हुए किबोमी चलता रहता है। थोड़ी दूर चलने के बाद, उसे कुछ आवाजें सुनाई देती हैं और वह तुरन्त एक विशाल पेड़ के पीछे छिप जाता है। कुछ नौजवानों का एक समूह नज़दीक आ रहा है। वे अदुम्बु भाषा बोल रहे हैं। अपनी भाषा सुन कर किबोमी खुश है, और वह धीरे से पेड़ के पीछे से बाहर कदम रखता है। वे नौजवान वर्दी पहने हुए हैं। वे अदुम्बु विद्रोही दल के सैनिक हैं। उनमें से कुछ काफी जवान हैं और एक तो किबोमी की उम्र का मालूम होता है। उसे देखते ही सैनिक रूक जाते हैं और अपनी बंदूकें तान देते हैं। "रूकिए !" किबोमी कहता है। "मैं भी तुम्हारी तरह अदुम्बु ही हूँ।"

"तुम यहाँ अकेले क्या कर रहे हो ?" उनके अगुआ ने अधीर हो कर पूछा।

"कुंगु जाति के लोगों ने हमारे गाँव पर हमला कर दिया, और उस में मेरे माता–पिता मारे गए। मुझे गाँव छोड़कर भागना पड़ा," किबोमी उत्तर देता है।

"तो फिर आओ, हमारे साथ शामिल हो जाओ," उनका अगुआ कहता है। हमें कुंगुओं को सबक सिखाना होगा। उन्होंने तुम्हारे परिवार के साथ जो किया है उसका उनसे बदला लो।"

किबोमी को ये विचार लुभाने लगा है। वह कुछ देर सोचता है और स्वीकार करने ही वाला होता हे। वह बाल–सैनिक आगे आता है और किबोमी की ओर अपना हाथ बढ़ाता है। किबोमी उसकी आँखों में देखता है और उनमें जो निराशा उसे दिखाई देती है, उससे वह व्याकुल हो उठता है। वह हिचकिचाता है, "मैं शायद बाद में तुम्हारे साथ शामिल हो जाउँगा" वह काँपती आवाज़ में कहता है। "लेकिन अभी मुझे अपनी बहन को ढूँढ़ने जाना है।"

जब वे सैनिक जाने लगते हैं, तो उनमें से एक मुड़कर कहता है, "याद रखना ! लड़ाई करना ही एकमात्र रास्ता है।" किबोमी कोई उत्तर नहीं देता है।

प्रश्न

1. जब किबोमी ने अपना गाँव छोड़ा, तो उसे क्या महसूस हुआ था ?
2. उस वृद्ध व्यक्ति से मिलने के बाद उसकी भावनाएं क्यों बदल गई हैं ?
3. किबोमी पेड़ के पीछे क्यों छिपता है ?
4. वर्दी वाले जिन नौजवानों से उसकी मुलाकात होती है, वे कौन हैं ?
5. अगुआ ने किबोमी से क्या करने को कहा ?
6. उस बाल–सैनिक की आँखों में किबोमी क्या देखता है ?

गतिविधियाँ

1. उस बाल–सैनिक की आँखों में, किबोमी को निराशा दिखाई देती है, जो उसी की तरह भयभीत और क्रोधित है, इसीलिए उसने युद्ध और हत्या करने का चयन किया है। हम सभी के जीवन में दुःख और निराशा के क्षण आते हैं। ऐसे क्षणों में हमें अँधेरे रास्तों का चयन नहीं करना चाहिए बल्कि उस प्रकाश की खोज करनी चाहिए जो फिर से आशा जगा सके। निम्नलिखित प्रार्थना को पढ़ें और उसके शब्दों पर मनन करें :

   "वह करूणामय, सर्वकृपालु है ! हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर ! तू मुझे देखता है, तू मुझे जानता है, तू ही मेरी शरण और मेरा आश्रय है, मैने तेरे अतिरिक्त किसी और की न कामना की है, न करूँगा। तेरे प्रेम–पथ के सिवा मैंने अन्य किसी पथ पर न पाँव रखा है न रखूँगा। निराशा की अंधियारी रात में मेरी आँखें, अपेक्षा और आशा से भरी हुई, तेरे असीम अनुग्रह के प्रभात की ओर लगी हैं और अरूणोदय की बेला में मेरी मुरझाई हुई आत्मा तेरे सौन्दर्य और तेरी परिपूर्णता के स्मरण से नवस्फूर्ति और शक्ति प्राप्त करती है।"

   संभवतः अब आप इस प्रार्थना को याद करना चाहेंगे।

2. निर्णय करें कि नीचे दी गई प्रत्येक परिस्थितियों में कौनसे विचार और कार्य निराशा लाएंगे और कौनसे पुनः आशा जगाएंगे :

क. एक परीक्षा में किसी एक विषय में आप पर्चा अच्छा नहीं कर पाते हैं।	*आशा*	*निराशा*
– आप पढ़ाई छोड़ देते हैं और अपना अधिकाँश समय खेलने में बिताते हैं।	☐	☐
– आप खुद को बेवकूफ कहने लगते हैं।	☐	☐
– आप किसी अन्य छात्र से आपकी सहायता करने को कहते हैं।	☐	☐
– आप अपने साथ धैर्य से काम लेते हैं और विषय को समझने की और अधिक कोशिश करते हैं।	☐	☐
– आप अपने शिक्षक को यह दोष देते हैं कि उन्होंने आपकी और अच्छे से सहायता नहीं की।	☐	☐

ख. आप अकेला महसूस करते हैं और ऐसा लगता है कि आपका कोई दोस्त नहीं हैं।	*आशा*	*निराशा*
– आप अकेले रहते हैं और अधिकतर समय उदास महसूस करते हैं।	☐	☐
– आप अपने बारे में सोचने में कम समय बिताते हैं और दूसरों का अधिक ध्यान रखते हैं।	☐	☐
– आप हमेशा दूसरों के दोषों के बारे में सोचते रहते हैं।	☐	☐
– आप दूसरों में अच्छाइयाँ ढूँढते हैं।	☐	☐
– आप दूसरों के साथ बातचीत और दोस्ती करने के लिए पहला कदम खुद उठाते हैं।	☐	☐

ग. आप अपने कुछ रिश्तेदारों के बीच ईर्ष्या और लड़ाई–झगड़ा देखते हैं।	*आशा*	*निराशा*
– आप भी ईर्ष्या महसूस करते हैं और उनके साथ लड़ाई करते हैं।	☐	☐

– आप उनके प्रति और अधिक उदार बनने की कोशिश करते हैं।	☐	☐
– आप अपने परिवारजनों के बीच एकता के लिए प्रार्थना करते हैं।	☐	☐
– आप अपने परिवार के बच्चों को प्रेम और उदारता क बारे में सिखाते हैं।	☐	☐
– आप स्वयं से कहते हैं कि अपने रिश्तेदारों में बदलाव लाने के लिए आप कुछ नहीं कर सकते।	☐	☐
घ. एक मित्र आपको दुखी करने के लिए कुछ करता है।	*आशा*	*निराशा*
– आप बदला लेने और अपने मित्र को दुखी करने का निर्णय लेते हैं।	☐	☐
– आप अपने मित्र को क्षमा कर देते हैं।	☐	☐
– आप निर्णय लेते हैं कि किसी को भी इस तरह दुखी नहीं करेंगे।	☐	☐
– आप दूसरों को बताते हैं कि आपका मित्र कितना बुरा व्यक्ति है।	☐	☐
– आप अपनी दोस्ती खत्म कर देते हैं।	☐	☐

ऐसी कुछ आध्यात्मिक सच्चाइयों का उल्लेख करें जिन्हें इस पाठ का अध्ययन करने पर किशोर खोज सकेंगे। आशा और निराशा, जिनकी तुलना प्रकाश और अंधकार से की गयी है, के विषयों का विवेचन किस प्रकार किया गया है ? किस प्रकार यह कहानी और इसके साथ की गतिविधियाँ वास्तव में किशोरों को आध्यात्मिक बोध विकसित करने के उनके प्रयासों में सहायता कर पायेंगी ?

भाग 9

"आशा" और "सम्पुष्टि" किशोरों के आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम से जुड़े उन अनेक विषयों में से दो उदाहरण हैं जिन्हें संबोधित किये जाने की आवश्यकता है। इन विषयों पर सतर्कतापूर्वक विचार–विमर्श, आध्यात्मिक बोध को स्पष्ट करता है और चैतन्यता विस्तार में सहायक होता है, अब्दुल बहा कहते हैं :

> **"प्रभुधर्म के स्थिर आलम्बन के रूप में विशिष्ट स्तम्भ स्थापित किये गये हैं। इनमें सर्वाधिक सशक्त है – सीखना और मस्तिष्क का उपयोग तथा चेतना का विस्तार, इस सृष्टि की वास्तविकताओं और सर्वशक्तिमान ईश्वर के छिपे रहस्यों के भीतर पैठने की अंतर्दृष्टि।"[24]**

एक मनुष्य चेतना के विभिन्न स्तरों पर रह सकता है। दिव्य इच्छा और उद्देश्यों के अवगत होने के लिए, हमें और हमारे समुदाय को प्रभावित करने वाली शक्तियों को समझने के लिये और एक नये विश्व के निर्माण में अपनी मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियाँ समर्पित कर सकने के लिये भौतिक चिंताओं में केन्द्रित जीवन की तुलना में चैतन्यता के उच्च स्तर की आवश्यकता होती है। किशोर समूह के अनुप्रेरक के सामने मुख्य चुनौतियों में से एक है, समूह सदस्यों के चैतन्यता के उच्च से उच्च स्तर तक पहुँचने में मदद करना। युवाओं के ऐसा कर पाने के लिये आवश्यक है कि वे उन अवधारणाओं को समझें जो एक आध्यात्मिक जीवन के केन्द्रीय विषयों से जुड़ी हैं। अतः उन्हें इन अवधारणाओं की समीक्षा करने, उनको विश्लेषित करने और उनको अपने जीवन में लागू करने की उनकी क्षमता अवश्य ही बढ़ानी होगी। आशा और संपुष्टि के अतिरिक्त वे कौन से कुछ विषय और संबंधित अवधारणाएँ हैं जिन्हें किशोरों को अपनीसमीक्षा का लक्ष्य बनाना चाहिए ?

भाग 10

पिछले कुछ भागों में हमने आध्यात्मिक बोध तथा इससे संबंधित कुछ गुणों – हृदय की पवित्रता, ईश्वर का ज्ञान तथा ईश्वर का प्रेम का परीक्षण किया है। हमने उन "आवरणों" पर भी विचार किया जो हमें अपनी आंतरिक आंखों से देखने से रोक सकते हैं और यह भी सोच है कि कैसे कुछ अवधारणाओं की समझ हमारे आध्यात्मिक बोध को प्रबल तथा हमारी चैतन्यता को विस्तार दे सकती है।

मनुष्य की आत्मा में निहित शक्तियाँ किशोरावस्था के दौरान ही स्वयं को अधिक प्रकट करती हैं। इनमें विचार और अभिव्यक्ति की शक्तियाँ विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं और इन्हें पोषित करना चैतन्यता को विस्तार देने के लिये आवश्यक है। भाषा और विचार के बीच एक गहरा सम्बन्ध है। विचार की शक्ति उदगारों से ही प्रकट होती है, और उदगार–शक्ति कोविकसित करना समझ अर्जित करने हेतु अपरिहार्य है। अभिव्यक्ति की शक्ति का विकास और वास्तविकता के प्रति समझ की गहनता ये दोनों साथ–साथ चलते हैं। समझ को आवश्यकता होती है, चिंतन–मनन तथा समीक्षा की वे गतिविधियां जो भाषा के साथ अंतरंगता से जुड़ी है। बहाउल्लाह कहते हैं :

> **"ओ बहा के लोगों ! शिल्प, विज्ञान और कलाओं, विचार और अभिवृद्धि की शक्ति का स्त्रोत है। हर सम्भव प्रयत्न करो कि इस खान से ऐसे विवेक और वाणी के ऐसे मोतियों की चमक निःस्तृत हो जो इस धरती पर समस्त जीवों की एकता और हित को बढ़ावा दे सके।"[25]**

मानव समझ तथा अभिव्यक्ति की शक्तियां दोनों को निश्चित ही दैवीय उदगार से प्रकाशित होने की आवश्यकता है। बहाउल्लाह हमें बताते हैं :

> **"वह तुम्हारी मुक्ति के लिये प्रकट हुआ है और उसने यातनाएँ सही हैं ताकि तुम वाणी की सीढ़ी के सहारे, समझ की चोटी तक पहुंच सको ...।"[26]**

अभिव्यक्ति की शक्ति का विकास केवल पढ़ने लिखने और बोलने का यांत्रिक कौशल प्राप्त करते चले जाना ही नहीं है। इसके लिये आवश्यक है पूरी तरह समझते हुए अध्ययन करना, स्पष्ट और प्रभावशाली ढंग से विचारों को व्यक्त करना तथा पर्याप्त सटीकता के साथ अवधारणाओं को व्यक्त करना। इन योग्यताओं के अभ्यास में किशोर वैज्ञानिक, नैतिक और आध्यात्मिक अवधारणाओं को अपने आसपास की दुनिया के विश्लेषण में और व्यक्तिगत संकल्पों के निर्माण में लागू करना सीखते हैं जिन पर भविष्य की सामाजिक विचारधारा निर्मित हो सकती है।

अब्दुल बहा समझाते हैं कि "जनसंख्या के बड़े हिस्से को इन महत्वपूर्ण माध्यमों की जानकारी नहीं है जो समाज की गम्भीर समस्याओं का तत्काल औषधि बन सकते हैं।" और वर्तमान में तो "अपनी अपर्याप्त शिक्षा के कारण आवश्यक शब्द ज्ञान के अभाव में आबादी का एक बड़ा हिस्सा, अपनी इच्छा को अभिव्यक्त करने में भी असमर्थ है।" ऐसे में वे कितने भाग्यशाली हैं जिन्होंने अपनी आरम्भिक युवावस्था में ही अभिव्यक्ति की शक्ति विकसित कर ली है और मानवजाति की गम्भीर रूग्णता के दिव्य निदान के प्रति सचेत हो गये हैं, अपने मन को दैवीय विचारों से भर रहे हैं, और इस प्रकार अपनी समझ को बढ़ा तथा चैतन्यता का विस्तार कर रहें हैं।

बहाई प्रेरित सामग्री *शब्दों की शक्ति का प्रयोग* जिसका उपयोग अनेक बार उन किशोरों द्वारा किया जाता है जो कई पुस्तकों का पहले ही अध्ययन कर चुके हैं, से नीचे दिये गये पाठ में एक समूह "शब्द" की अवधारणाओं पर विचार कर रहा है। इसे पढ़कर यह समझने का प्रयास करें कि यह किस प्रकार युवाओं की समझ को बढ़ाता तथा चैतन्यता का विकास करता है।

अपने गठन के पहले महीनों में अलेग्रिया के युवा–समूह द्वारा किये गये उत्साहवर्धक कार्यों में एक था पेड़ लगाने की परियोजना। युवाओं द्वारा अपने विद्यालय के चारों ओर पचास फल वाले पेड़ लगा देने के बाद उन्होंने एक छोटे से समारोह में अपने अभिभावकों, मित्रों और पड़ोसियों को आमंत्रित किया जिसमें एलीसा ने पर्यावरण को बेहतर बनाने के महत्व पर छोटी वार्ता प्रस्तुत की। समुदाय ने इस परियोजना की सराहना की क्योंकि जो पेड़ उन्होंने लगाये थे, वे आगे जाकर फल देंगे और उनके गांव को सुन्दर बनायेंगे।

इस समारोह के दूसरे दिन गांव छोड़ने से पहले एलीसा ने युवाओं की एक खास बैठक बुलाई। "आज मैं चाहूंगी कि हम ऐसे विषय पर बात करें जो आने वाले महीनों में हमारी चर्चा का केन्द्र बिन्दु बना रहेगा", उसने बड़े उत्साह के साथ उनसे कहा। "इससे आपका परिचय कराने से पहले मैं आपसे एक प्रश्न पूछती हूँ : आप के विचार से ईश्वर ने हमें क्यों बनाया ?"

मारियेला ने तुरन्त उत्तर दिया, "ईश्वर ने हमें इसलिए बनाया क्योंकि वह हमसे प्रेम करता है। "तेरा सृजन मुझे प्रिय था, इसलिये मैंने तेरी रचना की।" मैंने यह उद्धरण तब याद किया जब मैं छोटी थी और इसे आज तक नहीं भूली।

"बहुत अच्छा," एलीसा ने कहा। "ईश्वर ने हमारे प्रति अपने अनन्त प्रेम के कारण हमें उत्पन्न किया है और इसी प्रेम के कारण उसने हम में से प्रत्येक को अद्‌भुत उपहार दिये हैं। उन उपहारों में से एक अत्यधिक बहुमूल्य उपहार है "शब्द" का प्रयोग करने की योग्यता। अन्य किसी भी जीव को शब्दों का उच्चारण करने, शब्दों को पढ़ने, शब्दों को लिखने और उन्हें समझ पाने की योग्यता नहीं दी गई है। शब्दों के द्वारा ही हम एक दूसरे से बातचीत करते हैं और एक दूसरे को बताते हैं कि हम क्या सोचते और महसूस करते हैं। और इन सब से ऊपर, शब्दों के माध्यम से ही दिव्य शिक्षाऐं व्यक्त की जाती हैं। इन शिक्षाओं को सुनकर और ईश्वर के अवतारों द्वारा प्रकट किये गये ईश्वर के शब्दों को पढ़ कर ही हम इन्हें समझ पाते हैं। अतः, अब जो विषय मैंने चर्चा के लिये चुना है वह है, "शब्द की शक्ति"।"

"मैने सुना है कि शब्द तलवार से भी अधिक शक्तिशाली होते हैं," करलोटा ने कहा।

"यह सच है," एन्टोनियो ने कहा। "मगर शब्दों में शक्ति लाने के लिये उन्हें कर्म के साथ जुड़ा रहना चाहिये। अन्यथा शब्द तो खोखले होते हैं और हवा उन्हें आसानी से उड़ा ले जाती है। एक उद्धरण जो मुझे बहुत पसन्द है, कहता है कि हमें सावधान रहना चाहिए कि हम उनके रास्ते पर न चलों जिनकी कथनी और करनी में अन्तर होता है।

"हाँ," अना मारिया ने आगे जोड़ा, "तुम किसी से कह सकते हो कि वह तुम्हारा सबसे अच्छा मित्र है, मगर जब उसको तुम्हारी मदद की आवश्यकता हो और तुम उसकी मदद न करो, तब शायद तुम उसके इतने अच्छे दोस्त हो ही नहीं।"

अना मारिया की टिप्पणी ने सबकी कल्पना को जगा दिया और वे खोखले शब्द और ऐसे शब्द जो कर्म के साथ जुड़े होते हैं, के उदाहरण देने लगे।

अन्त में एलिसा ने कहा, "बहुत अच्छे। आप सब सहमत हैं कि शब्द जो कर्म के साथ–साथ चलते हैं बहुत शक्तिशाली होते हैं। शब्दों में अत्यन्त शक्ति होती है – वे दुनिया को बदल सकते हैं। इसलिये, आप लोगों को, जो एक बेहतर संसार बनाना चाहते हैं, शब्दों का उचित प्रयोग कर पाना सीखना चाहिये। इसका अर्थ है शब्दों के बारे में सोचना, शब्दों को समझना, शब्दों का उच्चारण करना शब्दों का प्रसार करना और शब्दों को अभ्यास में लाना।"

कुछ देर तक युवा एलिसा द्वारा कही गई बातों पर विचार करते हुए चुप रहे। तब डियेगो के मन में अचानक एक विचार आया। उत्साहित होकर वह समूह के सामने खड़ा हो गया और बोला, "अब मुझे पता चल गया कि हम भौतिक और आध्यात्मिक प्रगति किस तरह प्राप्त कर सकते हैं : शब्दों की शक्ति के माध्यम से जो कर्मों के साथ जुड़े हुए हों।"

सभी चुप थे। किसी ने कुछ नहीं कहा। डियेगो वहाँ खड़ा–खड़ा अटपटा–सा महसूस कर रहा था। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह बैठ जाय या खड़ा रहे। मदद के लिए वह एलीज़ा की तरफ देखने लगा। एलीज़ा धीरे से उठी, उसकी ओर बढ़ी और उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। "तुमने एक बहुत ही गहरे सत्य को खोज निकाला है," उसने उससे कहा। "समय के साथ तुम समझ पाओगे कि यह बात कितनी महत्वपूर्ण है।"

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग नीचे दिये गये वाक्यों को पूरा करने के लिये करें :

साथ–साथ, कल्पना, व्यक्त, कर्म, सम्पर्क, बेहतर, प्रदान,
उत्पन्न, पर्यावरण, चारों ओर, उपहार, प्रकट, सहमत, गहन

क. शब्दों की शक्ति के माध्यम से ही हम अपने आप को ________________ कर पाते हैं।

ख. जुलिया अपने छोटे भाई को अकेला बाजार भेजना नहीं चाहती थी इसलिये वह उसके ________________________ चली गई।

ग. डाक्टर को यह देख कर खुशी हुई कि बच्ची का स्वास्थ्य ________________ होने लगा था।

घ. कई बार पूछने के बाद ही लुईस एनरिके उसे सभा में बोलने के लिये ___________________________ कर पाया था।

ड़. ईश्वर ने हमें जीवन का ________________ दिया है और हमें उसे बरबाद नहीं करना चाहिये।

च. जब भी युआन कारलोस कोई वादा करता है, तो उसे पूरा करने का वह भरपूर प्रयास करता है। उसके शब्द हमेशा ________________ के साथ–साथ चलते हैं।

छ. हमारे प्रति अपने प्रेम के कारण ईश्वर ने हमें कई उपहार दिये हैं। शब्दों को प्रयोग कर पाने की योग्यता इनमें से सबसे महत्वपूर्ण उपहार है जो उसने हमारे समक्ष ________________ किया है।

ज. लघु कहानी पूरी तरह लेखक की ________________ के आधार पर लिखी गई थी।

झ. दूसरों से ________________ कर पाने के लिये, हमें उन्हें सुनना सीखना चाहिये।

ञ. सिसिलिया ________________ के बारे में चिन्तित है और उसने सामुदायिक केन्द्र में साफ–सफाई के विषय पर एक पाठ्यक्रम चलाने का निश्चय किया।

ट. जब भी कोई परियोजना बनाई जाती है, डियेगो सबको इसके लिये जोश में लाने की क्षमता रखता है। वह उत्साह ________________ कर पाता है।

ठ. सारा दिन काम करने के बाद रोबेर्टो इतना थक गया था कि वह सो गया और कोई भी उसे जगा नहीं सका। वह ________________ नींद में था।

ड. मेरी दादी कभी किसी को अपनी उम्र बताना पसन्द नहीं करती थी, पर जब वह सौ साल की हो गई तब अंततः उन्होंने अपनी उम्र का राज़ ________________ कर दिया।

ढ. अना ने अपने घर के चारों ओर बगीचा लगाया, इसलिये अलग–अलग रंग और आकार के सुन्दर फूल ________________ खिल गये थे।

2. नीचे दिये गये वाक्यांशों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनायें।

शुद्ध कर्म : ____

____

पर्यावरण को बेहतर बनाना : ______________________________

____

बड़े उत्साह के साथ : ______________________________

____

शब्दों को कर्म में उतारना : ______________________________

____

जो कहा गया उस पर मनन करना : ______________________________

____

3. शब्दों में हमें अच्छी या बुरी दिशा की ओर ले जाने की शक्ति होती है और जिन शब्दों का प्रयोग हम करते हैं, उस पर निर्भर करता है कि हम दूसरों को सही या गलत सलाह देते हैं। नीचे दिये गये कथन जो अच्छे सुझाव प्रस्तुत करते हैं उनके सामने "अ" लिखें और जो बुरी सलाह देते हैं उनके सामने "ब" लिखें।

_____ हमें एकता में रहकर कभी भी लड़ना नहीं चाहिये।

_____ अगर तुम्हें कुछ चाहिए तो ले लो, भले ही उसके मालिक को बुरा लगे।

_____ पीठ पीछे बुराई मत करो।

_____ हम सब कभी न कभी आलसी महसूस करते हैं; जब ऐसा अनुभव हो तो कुछ न करना ही बेहतर है।

_____ जो आज कर सको उसे कल पर मत छोड़ो।

_____ यदि तुम बैठकों में थोड़ी देर से पहुँच जाओ तो इसमें कोई बात नहीं है।

_____ काम कितना ही छोटा क्यों न हो, उसे उत्कृष्टता के साथ किया जाना चाहिये।

_____ कभी–कभी थोड़ा बहुत सफेद झूठ बोलना ठीक होता है।

_____ किसी के लिये कुछ मत करो। इससे कोई लाभ नहीं मिलता।

_____ जीवन का एक मात्र उद्देश्य मज़े करना है।

_____ हमें प्रति दिन अपने आप को बेहतर बनाने के लिये प्रयास करना चाहिये।

_____ काम एक सज़ा है।

_____ हमें नियमों का पालन करने की क्या आवश्यकता है। हम सब को पता है कि हमारे लिये क्या अच्छा है।

_____ इस संसार में आने का हमारा उद्देश्य ईश्वर को जानना और उसकी आराधना करना है।

_____ जब हम अपना काम सेवा की भावना के साथ करते हैं तो हम ईश्वर की आराधना कर रहे होते हैं।

_____ हम सब को अपने जीवन के बारे में ही चिन्तित होना चाहिये न कि दूसरों की परेशानियों के बारे में।

_____ तुम्हारे माता–पिता बूढ़े हो चुके हैं। आज के जीवन के बारे में उन्हें क्या पता है ?

_____ कभी–कभी थोड़ी सी शराब पीने से किसी को नुकसान नहीं होता।

_____ ज़िन्दगी छोटी है। अधिक काम करके अपने आप को हम क्यों मारें !

1. यह पाठ "शब्द" की अवधारणा पर मनन करने का अवसर देकर किशोरों की चैतन्यता का विस्तार करता है। यह इसे कैसे प्राप्त करता है ? ______________________________

2. इस पाठ के अध्ययन के बाद आप विचारों की शक्ति और उदगार की शक्ति के बीच किस प्रकार का सम्बंध पाते हैं ? ______________________________

भाग 11

किशोरों के लिये आवश्यक है कि वे उद्धरणों को सहजता के साथ पढ़ने और जो पढ़ा है उसका अर्थ भली–भांति समझने की क्षमता विकसित करें। विश्व के कई भागों में इस आयु के लिये शैक्षणिक पाठ्यपुस्तकों से लेकर कॉमिक्स तक कई प्रकार के साहित्य हैं। हालाँकि इस वृहद साहित्य भंडार के कई तत्व किशोर युवाओं के विकास में सहायक हैं, लेकिन इसके बावजूद इनके प्रभाव की तुलना उस प्रभाव से नहीं की जा सकती जो पावन लेखों में पाये जाने वाले सत्य के मणि–माणिक्य एक किशोर की आत्मा पर डालते हैं। हम जानते हैं कि बहाउल्लाह ने प्रत्येक शब्द को एक नये सामर्थ्य से विभूषित किया है। बहाउल्लाह कहते हैं :

> **"हमने अपनी महिमा की लेखनी से उस सर्वशक्तिमान आदेशकर्ता की आज्ञानुसार प्रत्येक मानव शरीर में एक नयी जान फूंकी है और प्रत्येक शब्द में नई क्षमता भर दी है। सभी सृजित वस्तुएँ इस विश्वव्यापी पुनःजागरण का प्रमाण प्रस्तुत करती है।"[27]**

इसलिये किशोरों की अभिव्यक्ति की शक्ति के विकास के लिये प्रयुक्त की जाने वाली सामग्री के विषयों या अवधारणाओं को बहाई लेखों से साम्य रखने वाला अर्थ प्रस्तुत करना होगा। उदाहरण के लिये न्याय की अवधारणा को लेकर हमारा ज्ञान यदि बहाउल्लाह की शिक्षाओं से आलोकित हो तो यह इतना गहन अर्थ सम्प्रेषित कर सकेगा जो आज आध्यात्मिक वास्तविकता के सम्पर्क से दूर होते जा रहे इस विश्व के लिये सहज सम्भव नहीं है। काल्पनिक रूप से विस्तारित शैक्षिक सामग्री की सहायता से लेखों में छिपे हुए विवेक के रत्नों की खोज किशोरों के मन को प्रकाशित करती है और उनके हृदय में दिव्य आनंद सृजित करती है। अब्दुल–बहा व्याख्या करते है :

> **"तुम्हारी आत्मा प्रभु वचनों के प्रकाश से आलोकित हो, और तुम ईश्वर के रहस्यों का आगार बनो क्योंकि दिव्य संदेशों की आध्यात्मिक मीमांसा से बढ़कर महज सुख और मधुर आनंद और कुछ नहीं। यदि एक व्यक्ति शेक्सपीयर जैसे महान कवियों की कविता में निहित गूढ़ अर्थ को समझ जाता है तो उसे असीम आनंद की अनुभूति होती है तो वह आनंद कितना महान और कितना बढ़कर होगा, जब वह पावन लेखों के निहितार्थ को समझ पाता है और प्रभु साम्राज्य के निगूढ़ रहस्यों से अवगत होता है।"[28]**

नीचे के अंश *शब्द की शक्ति का प्रयोग* पुस्तक से लिये गये है। पूरा पाठ्यक्रम "प्रगति" के विषय वस्तु से सम्बन्धित है। प्रस्तुत सामग्री युवा–मन को प्रभुधर्म के संदेशों के अनुरूप प्रगति की अवधारणा को समझने में सहायता करती है। आपको आज के संचार माध्यम में प्रचारित प्रगति शब्द के अर्थ और नीचे के उद्धरण में अभिव्यक्त इसके महत्व के अंतर को ढूंढने का प्रयास करना है :

कुछ समय पूर्व इस गांव में एक सम्मानित शिक्षक का आगमन हुआ। उन्होंने गांव वालों से कहा, "अलेग्रिया एक आदर्श समुदाय बन सकता है, जहां हम भौतिक एवं आध्यात्मिक प्रगति दोनों प्राप्त कर सकते हैं।" शुरू–शुरू में डियेगो को स्पष्ट रूप से समझ में नहीं

आया कि "भौतिक एवं आध्यात्मिक प्रगति" का क्या अर्थ है, मगर अपने पूरे समुदाय के उत्साह में वह भी शामिल था। तब से उसने इस विषय पर काफी कुछ सीखा है। वह इस बात से अवगत हुआ है कि यद्यपि वह शारीरिक रूप से छोटा है, लेकिन वह अब बच्चा नहीं रहा और अपने गांव को वांछित भौतिक और आध्यात्मिक प्रगति प्राप्त कराने में वह सहायता कर सकता है।

ऐसी ही एक बातचीत के दौरान डियेगो ने निश्चय किया कि भौतिक और आध्यात्मिक प्रगति के बारे में वह सभी से उनके विचार पूछेगा। मरियेला, जिसके पास हमेशा कुछ दिलचस्प कहने को रहता है, ने तुरन्त उत्तर दिया : "मुझे अच्छी तरह पता है कि भौतिक प्रगति का क्या मतलब होता है। इसका अर्थ यह है कि हम गरीब हैं और उन चीजों को पाने के लिये हमें अधिक धन की आवश्यकता है जिनसे हमें खुशी मिलती हो।"

मारियेला की टिप्पणी ने सबको उत्साह से भर दिया और वे सब अपने विचार बाँटने लगे। उनके बीच जो चर्चा हुई वह कुछ–कुछ इस तरह रही :

एन्टोनियो : "मैं यह नहीं मानता कि सुखी होने के लिये हमें अमीर होना जरूरी है। मैं ऐसे बहुत गरीब लोगों को जानता हूँ जो सुखी हैं।"

कारलोटा : "मेरा भाई छुट्टियों में विश्वविद्यालय से घर आया हुआ है और वह कहता है कि अमीर लोगों ने "खुशहाल गरीब" के विचार को जन्म इसलिए दिया ताकि गरीब उनके लिये काम करते हुए संतुष्ट रहें।"

अना मारिया : "यह बात सच हो सकती है, मगर मैं यह जानती हूँ कि सच्ची खुशी हमारे अंदर से आती है और वह इस पर निर्भर नहीं करती कि व्यक्ति के पास क्या कुछ है।"

डियेगो : "फिर भी, गरीब होने में कोई खास मज़ा नहीं होता। हमें अपने जीवन को बेहतर बनाने की पूरी कोशिश करनी चाहिये।"

एन्टोनियो : "लेकिन ऐसा करते हुए हमें खुश रहना चाहिये। मैं अपने और अपने समुदाय के लिये मेहनत करना चाहता हूँ, मगर ऐसा करते हुए मैं खुशी का आभास भी करना चाहता हूँ। मुझे कारलोटा के भाई के साथ समय बिताना अच्छा लगता था मगर जब से उसने अमीर और गरीब के बारे में बातें करना शुरू किया है, तब से उसकी बातें सुनना मुझे अच्छा नहीं लगता। वह गुस्से से कितना भरा रहता है।"

रोबेर्टो : "मैं जानता हूँ कि सच्ची खुशी ईश्वर के निकट होने और उसके नियमों का आज्ञापालन करने में होती है।"

डियेगो : "यह सच है, मगर हम यह नहीं भूल सकते कि ईश्वर से प्रेम करने के लिये हमें अपने साथी से प्यार करना होगा और उनकी सहायता करनी होगी।"

कारलोटा : "साथ ही हमें यह याद रखना चाहिये कि ईश्वर के नियमों का पालन करने का अर्थ है एक ऐसा बेहतर संसार बनाने के लिये साथ–साथ मिलकर काम करना जिसमें कोई भी गरीब नहीं होगा।"

तभी एकाएक डियेगो को यह महसूस होता है कि अभी तक वे अधिकतर भौतिक प्रगति के विषय में ही बातें करते रहे हैं। "आध्यात्मिक प्रगति का क्या हुआ ?" उसने पूछा। लेकिन सब थक चुके थे और उन्होंने चर्चा को अगली बार आगे बढ़ाने का निश्चय किया।

युवाओं ने कई बैठकें भौतिक और आध्यात्मिक प्रगति के विषय पर चर्चा करने के लिए समर्पित कर दीं। एक महीने बाद, एलीसा के आने से ठीक पहले, उन्होंने अपने निष्कर्षों पर चर्चा करने के लिये एक विशेष बैठक का आयोजन किया। जब युवाओं ने अपने विचार एलीज़ा को बताये, तब वह बहुत प्रसन्न हुई। उसने उनके निष्कर्षों को स्पष्टता के साथ व्यवस्थित करने और निम्नलिखित घोषणा–पत्र तैयार करने में उनकी मद्द की :

युवकों की घोषणा

हम अब बच्चे नहीं रहे और हमें अपने भविष्य के बारे में गम्भीरतापूर्वक सोचना चाहिये। जिस संसार में हम रह रहे हैं वह दुखों से भरा है और फूट से पीड़ित है। हम एक नया संसार बनाना चाहते हैं जहाँ लोग मिल–जुलकर रहें और जहाँ युद्ध तथा गरीबी का अस्तित्व न हो। एक नया संसार बनाने के लिए हमें अपने समुदाय से आरम्भ करना चाहिए। इसलिए अब हम अपने छोटे से गाँव, अलेग्रिया में भौतिक और आध्यात्मिक प्रगति की बातें करते हैं। भौतिक प्रगति पाने के लिये हमें अपनी कृषि को बेहतर बनाना चाहिये, अपने स्वास्थ्य की बेहतर देखभाल करनी चाहिए, अधिक स्कूल बनाने चाहिए तथा व्यापार एवं उद्योग में हमें सक्रिय बनना चाहिए। अपनी मेहनत के द्वारा हमें अपने घरों को, अपने गाँव को और अपने आस–पड़ोस को अत्यन्त सुन्दरता से भरे स्थानों में बदल देना चाहिये जहां हम सब साफ एवं स्वस्थ वातावरण का आनंद उठा सकें।

सभी लोगों के लिये भौतिक प्रगति तब तक प्राप्त नहीं होगी जब तक हम आध्यात्मिक प्रगति प्राप्त नहीं कर लेते। आध्यात्मिकता के बिना कुछ ही लोग अमीर हो पाते ह

जबकि अनेक लोग गरीबी में ही रहते हैं। एक समुदाय के रूप में अपने लक्ष्यों तक पहुँचने के लिये हममें एकता होनी चाहिये, हमें न्याय के साथ कार्य करना चाहिये, एक–दूसरे के साथ सहयोग और मित्रता का व्यवहार करना चाहिये एवं उदार, ईमानदार और विश्वासपात्र बनना चाहिये। न्याय, उदारता, प्रेम और दयालुता, ईमानदारी एवं विश्वासपात्रता ऐसे आध्यात्मिक गुण हैं जिनके द्वारा हम भौतिक एवं आध्यात्मिक प्रगति प्राप्त कर सकते हैं।

केवल एक बेहतर संसार बनाने के लिये ही हमें आध्यात्मिक गुणों की आवश्यकता नहीं होती। हमें इनकी आवश्यकता अपनी आत्मा के जीवन के लिये भी है जिसका अन्त शारीरिक जीवन के साथ नहीं होता। भौतिक और आध्यात्मिक प्रगति का अर्थ है कि हर दिन हम अपने जीवन के भौतिक और आध्यात्मिक पहलुओं में उत्कृष्टता पाने के लिये पहल करें, एक न्यायपूर्ण और शांतिमय संसार बनाने के लिये हम कड़ी मेहनत करें और स्वयं को उल्लास और आनंद भरे शाश्वत जीवन के लिये तैयार करें।

डियेगो ने अपने भाषण के बारे में सोचते हुए काफी घण्टे बिताये थे। स्वभाविकतया, "अलेग्रिया की आध्यात्मिक और भौतिक प्रगति" के विषय पर ही वह सम्बोधन करना चाहता था। लेकिन, वह इस विषय पर न तो कोई भारी–भरकम भाषण देना चाहता था और ना ही अपने मित्रों को उपदेश देना चाहता था। अतः, उसने अपने विचार कुछ इस प्रकार व्यक्त किये :

अलेग्रिया के युवा समूह का भाग होना मेरे लिये बहुत मायने रखता है। इसके सदस्य मेरे सबसे अच्छे मित्र हैं, और मेरे सबसे खुशी के पलों में से कुछ वे हैं जब मैं उनके साथ होता हूँ। मुझे लगता है कि जब से हमने मिलना और साथ–साथ काम करना शुरू किया, हम सब में परिवर्तन आया है। जब हमने मिलना शुरू किया था, तब हम लगभग बच्चे ही थे और हमारे एक साथ मिलने से हमें अपने जीवन के अगले चरण में अर्थपूर्ण रूप से प्रवेश करने में सहायता मिली है। अपनी गतिविधियों और चर्चाओं की बदौलत हम अपनी युवावस्था में उलझन या निराशा की अवस्था में प्रवेश नहीं कर रहे हैं। हम जानते हैं कि हमारे जीवन का एक उद्देश्य है और हम एक दूसरे की सहायता अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में करेंगे। मुझे लगता है कि हम हमेशा के लिए मित्र बने रहेंगे।

एक विषय जिसके बारे में हमने अपने समूह के गठन से लेकर अब तक हमेशा चर्चा की है, अलेग्रिया का आध्यात्मिक और भौतिक विकास है। मेरे विचार में शुरू में हम सिर्फ इसके अर्थ को समझने के लिए लालायित मात्र ही थे। मगर अब हममें से अधिकांश के लिये, अपने समुदाय की प्रगति वह लक्ष्य है जिसकी ओर हम अपनी पूरी शक्ति के समर्पण हेतु इच्छुक हैं। हम आशा करते हैं कि हमारा उत्साह फैले और इसका प्रभाव गाँव में रहने वाले हर व्यक्ति पर पड़े।

एलीसा के प्रेमपूर्वक मार्गदर्शन के कारण अब हम प्रगति के बारे में कुछ महत्वपूर्ण बातें जानते हैं। हम जानते हैं कि हम सब में सदा एकता होनी चाहिये, अन्यथा हमारे सभी प्रयास व्यर्थ हो जायेंगे। हम जानते हैं कि हमें उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिये प्रयास करना चाहिये; प्रत्येक दिन को पिछले दिन से बेहतर बनना चाहिये। हम यह भी जानते हैं कि प्रकाशमय शब्दों और पवित्र कर्मों में बदलाव लाने की शक्ति होती है। लेकिन शब्दों में ऐसी शक्ति क्यों होती है ? इसका एक बहुत ही महत्वपूर्ण कारण यह है कि शब्दों के द्वारा हम ज्ञान की खोज, प्राप्ति और संचार करते हैं। प्रगति के मूल में ज्ञान निहित रहता है।

एक दिन मैं अपने घर के पास कुछ गायों को चरते हुए देख रहा था। मैं सोचने लगा, "इन गायों के पास वह सब कुछ है जिसकी इन्हें जरूरत है। जितनी भी घास वे सम्भवतया चाहती है, वह उनके पास है। चारागाह से होकर एक संकरी नदी गुजरती है जिसमें से वे जब भी चाहें पानी पी सकती हैं। वे जब भी चाहें धूप में या फिर छाँव में लेट सकती हैं, उन्हें और क्या चाहिये ?" लेकिन तब मुझे आभास हुआ कि उनके पास बस यही सब कुछ ही है। उनके पास ज्ञान नहीं है या यह समझने की क्षमता नहीं होती कि वे क्या कर रही हैं। प्रकृति के वे गुलाम हैं। उस समय मैंने यह निर्णय लिया कि मैं निश्चित ही एक गाय की तरह का जीवन जीना नहीं चाहता। फिर मैं अपने आप से सोचने लगा, "यदि मैं बहुत धनी और शक्तिशाली बन जाऊँ पर अज्ञानता में रहूँ तो क्या होगा ? इससे क्या लाभ होगा ? इतने धन और शक्ति के साथ मैं एक गुलाम से बढ़कर कुछ भी नहीं रहूँगा – अपने स्वयं के मनोभाव का गुलाम जो मुझसे वह सब करने के लिए प्रेरित करेगा जिन्हें मैं समझ भी नहीं पाऊँगा, लालच का गुलाम, अपने से अधिक धनी और शक्तिशाली लोगों का गुलाम।" इसी कारण ज्ञान प्रगति का आधार है। ज्ञान हमें स्वतंत्रता प्रदान करता है।

नीचे दिये स्थान पर कुछ अनुच्छेद यह बताते हुये लिखें कि आपके अनुसार किशोरों को प्रगति की विषयवस्तु के सम्बन्ध में क्या समझना चाहिये।

भाग 12

प्रभुधर्म के लेंखों में "उच्चारित शब्द" की गुणवत्ता बताने के लिए "पारदर्शी स्पष्ट", "वाग्मितापूर्ण", "मर्मस्पर्शी", "प्रभावशाली", "संयमित", "विवेकशील" और "उत्कृष्ट अर्थ से परिपूर्ण" जैसे विशेषणों का प्रयोग किया गया है और ऐसे वाक्यांश साथ में उपयोग किए गए हैं जो "संयम", "बुद्धिमत्ता" और "समझ" की आवश्यकता को इंगित करते हैं। ऐसे गुणों से युक्त शब्दों से असाधारण प्रभाव की आशा की जाती है जो "स्व और वासना के आवरण हटा सकते हैं" और "घृणा तथा शत्रुता की अग्नि को बुझा सकते हैं"। शब्दों का प्रभाव इन्हें उच्चरित करने वाले की स्थिति और आध्यात्मिक गुणों के अनुरूप होता है।

"कहो : मनुष्य के उच्चरित शब्द एक सार है जिनसे अपेक्षा की जाती है कि वे प्रभाव डालें और आवश्यक संयम बरतें। जहाँ तक इसके प्रभाव का प्रश्न है तो वह इसके परिष्कृत स्वरूप पर निर्भर करता है, जो एक पावन और अनासक्त हृदय पर निर्भर करता है।"[29]

"इससे अधिक शब्द और वाणी को प्रभावशाली और मर्मस्पर्शी होना चाहिये यद्यपि कोई भी शब्द इन दो गुणों से तब तक विभूषित नहीं हो सकता जब तक कि वह पूरी तरह ईश्वर के लिए तथा लोगों और अवसरों की आवश्यकता के प्रति पूरा आदर व्यक्त करते हुए न बोला गया हो।"[30]

"मैं ईश्वर से याचना करता हूँ कि वह तुम्हारे सिरों पर अपने उपहार के मोती बिखरा दे; अपने प्रेम की ज्वाला तुम्हारे हृदयों में प्रज्जवलित कर दे, तुम्हारी जिह्वाओं को सदाचारी की सभा में सर्वाधिक वागम्यपूर्ण शब्दों को तथा सर्वाधिक आश्चर्यजनक रहस्यों को उच्चरित करने हेतु स्वतंत्र कर दे; आभा के स्वर्ग के पुष्प तथा आकाश के देवदूत बना दे, विचारों में एक तथा सोच में अनुरूप कर दे, सभी जनों के मध्य तुम्हारे मुखड़ों में उसके साम्राज्य के पवित्र चिन्ह प्रकट कर दे।"[31]

"यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारी वाणी और शब्द कठोर हो चुके हृदयों में प्रवेश कर सकें तो विश्व की समस्त आसक्तियों से स्वयं को मुक्त कर लो तथा अपने मुखड़ों को ईश्वर के साम्राज्य की ओर मोड़ लो।"[32]

1. ऊपर दिये गये उद्धरणों से कुछ ऐसे गुणों की पहचान करें जो मनुष्य की वाणी को, शक्ति संपन्न बनाते हैं। ____________________

____

____

____

2. आपके विचार से आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम में किशोरों द्वारा अध्ययन की गई सामग्री में खोज की गई अवधारणाएं उन्हें इन गुणों को विकसित करने में कैसे मदद करती है ? ____

____

____

____

भाग 13

पवित्र लेखों में कहा गया है कि वाणी की शक्ति को महान आदर्शों की दिशा में निर्दिष्ट किया जाना चाहिये :

"यह समय है उस सर्वोच्च लेखनी से निःसृत अनासक्ति के पावन जल से स्वयं को शुद्ध और पवित्र कर लो तथा पूर्णतः ईश्वर के लिये, उन प्रकटीकरणों पर विचार करो, जो समय–समय पर इस धरती पर अवतरित हुए हैं, और इसके बाद अपने विवेक और वाणी की शक्ति से जितना तुमसे हो इस दुनिया के लोगों के हृदय में सुलग रही घृणा और शत्रुता की अग्नि को शांत करने का प्रयास करो।"[33]

"यह सेवक प्रत्येक कर्मठ और लगनशील आत्मा से अपील करता है कि वह उस एकमेव, सर्वशक्तिमान, सर्वकृपालु, अद्वितीय, ईश्वर के प्रति अपने असीम प्रेम की कृपा से समस्त धर्मों की स्थिति में पुनरुत्थान लाने, और मृत प्रायः लोगों को अपने ज्ञान और वाणी की संजीवनी जल बूंदों से जीवित करने का हर सम्भव प्रयास करें।"[34]

"प्रत्येक शब्द चेतना से सम्पन्न है इसलिए बोलने वाले या व्याख्याकार को उचित समय और उचित स्थान पर सावधानी पूर्वक शब्दों का प्रयोग करना चाहिये क्योंकि प्रत्येक शब्द स्पष्ट और प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है। इस महान अस्तित्व ने कहा है – "एक शब्द की तुलना अग्नि से हो सकती है दूसरे की प्रकाश से, और इन दोनों का प्रभाव विश्व को ज्ञात है। इसलिए एक प्रबुद्ध व्यक्ति को दूध की तरह सौम्य और मधुर शब्दों का प्रयोग करना चाहिये ताकि मनुष्य की संतान पोषित और सन्मार्ग पर शिक्षित हो सके और मानव अस्तित्व का वह परम लक्ष्य प्राप्त कर सके जो सच्ची समझ और विनम्रता का परम पद है।" इसी प्रकार वे कहते हैं "एक शब्द बसंत ऋतु के समान है जो ज्ञान की गुलाब वाटिका में कोमल नई टहनियों को हरा भरा व समृद्ध करती है, जो बाद में फूलों से लदे पौधे में बदलता है जबकि दूसरा शब्द जीवन का अंत कर देने वाले विष की तरह हो सकता है। इसलिये एक ज्ञानी व्यक्ति को चाहिये कि वह अत्यंत नरमी और सहनशीलता के साथ अपनी वाणी का प्रयोग करे ताकि हर एक को जो मानव स्थान के लिए योग्य है, उसे प्राप्त करने के लिए प्रेरित करें।"[35]

1. निर्णय करें कि क्या निम्नलिखित कथन सही हैं। अभिव्यक्ति की शक्ति का उद्देश्य होना चाहियेः

____ किसी बहस में जीतना।

____ स्पष्ट तर्क प्रस्तुत करके सत्य की खोज करना।

____ लोगों के हृदयों से द्वेष, घृणा और शत्रुता की अग्नि को बुझाना।

____ दूसरों पर हावी होना।

____ सच को छुपाना।

____ सृष्टि के रहस्यों की व्याख्या करना।

____ जटिल विषयों को उद्धृत करना।

____ भ्रम को दूर करना तथा दृष्टिकोण में एकरूपता लाना।

____ अपने विचारों को श्रेष्ठ दर्शाना।

____ प्रशंसा तथा समादर प्राप्त करना

____ वास्तविकता की खोज करना।

____ लोगों की परिस्थितियों में सुधार लाना।

____ शोषितों के अधिकारों की सुरक्षा।

2. इस बारे में कुछ शब्द लिखें कि किशोरों की अभिव्यक्ति की शक्ति का विकास उनके व्यक्तिगत रूपांतरण और साथ–साथ सामाजिक की दिशा में किये जा रहे प्रयासों में किस तरह सहयोग करता है।

____

____

____

____

____

____

भाग 14

अभिव्यक्ति की शक्ति को विकसित करने के लिये किशोरों की सहायता करते समय हमें यह कदापि नहीं भूलना चाहिये कि ईश्वर के शब्द ही मनुष्य की वाणी को शक्तिसम्पन्न बनाते हैं और उसके मन–मस्तिष्क को सच्ची समझ से आर्शीवादित करते हैं। आपसे यहाँ विराम लेकर नीचे दिये उद्धरणों पर चिंतन करने को कहा जाता है।

> **"दिव्य प्रकटीकरण के दिवा बसंत से दीप्त वाणी के दिवानक्षत्र ने इन उद्धरणों और पातियों को इस प्रकार आलोकित किया है कि वाणी का साम्राज्य और ज्ञान का पावन राज्य आनंद और उल्लास से स्पंदित है और उस दिव्य प्रकाश की भव्यता से दैदीप्यमान है ...।"[36]**

> **"कहो : हमने दिव्य वाणी की सरिता को अपने सिंहासन से प्रवाहित किया है ताकि तुम्हारे हृदय की भूमि से विवेक की कोमल औषधि तथा समझ प्रस्फुटित हो सके।"[37]**

> **"उसकी वाणी के श्वास–प्रश्वास से बुद्धि का स्वर्ग सुशोभित कर दिया गया है, और उसकी लेखनी के प्रवाह से प्रत्येक धूल–धूसरित हो रही अस्थि को अनुप्राणित कर दिया गया हैं।"[38]**

> **"इस प्रकार यह स्पष्ट और प्रकट है कि ईश्वर का प्रथम वरदान है शब्द और इसकी अन्वेषक और प्राप्तकर्ता है समझ की शक्ति। यह शब्द अस्तित्व की पाठशाला का प्रथम प्रशिक्षक और सर्वव्यापी ईश्वर को प्रकट करने वाला है। आज जो कुछ भी दृष्टि की सीमा में है, वह इसके विवेक के प्रकाश से ही दृष्टिगोचर है। जो कुछ भी प्रकट है वह इसी के ज्ञान का प्रतीक है। समस्त नाम इसके ही नाम हैं और समस्त वस्तुओं का आरम्भ और अंत इस पर ही निर्भर है।"[39]**

आप इन उद्धरणों में से अधिकाधिक को कंठस्थ करना चाहेंगे।

भाग 15

आज हम ऐसे समय में हैं जब मानवता के समक्ष नैतिकता के भारी अभाव का संकट है। जिन मापदंडों ने सदियों से मानवजाति का मार्गदर्शन किया, वे धीरे–धीरे अपना प्रभाव खोते जा रहे हैं और उनके स्थान पर निरंकुश भौतिकवाद की मान्यताएँ तथा अति–सापेक्षवाद और अनियंत्रित व्यक्तिवाद पर

निर्मित विचारधारा धीरे–धीरे जड़ें जमाती जा रही है। आईये युवाओं पर इसके प्रभाव पर मनन करने से पूर्व इस तथ्य के बारे में और अधिक विचार करें।

पिछली कुछ शताब्दियों के इतिहास के प्रवाह से यह देखा जाना संभव है कि लंबे समय से अनेक जंजीरों से जकड़ी मानवता किस प्रकार धीरे–धीरे इससे मुक्ति पा रही है, इनमें से कुछ हैं – मतान्धता से, निरंकुशता से और अंधविश्वास से। यद्यपि बहुत कुछ करना बाकी है, गहराई में बैठे पूर्वाग्रह पर विजय पाई गई है, न्याय करने के लिये कानून बनाये गये हैं, व्यक्तियों तथा समूहों के अधिकारों को स्वीकारा गया है। दुर्भाग्य से यह मूल्यवान ऐतिहासिक आंदोलन अब विपत्ति में है, और यह लगातार बढ़ रही है, अतिवादिता के कारण है। केन्द्र में आ रहे हैं, अति–सापेक्षवाद तथा अनियंत्रित व्यक्तिवाद, तथा परम–पूर्णताओं के अस्तित्व को किनारे किया जा रहा है। व्यक्तिगत वरीयताओं का अनुसरण करने के लिए स्वतंत्र होने को सर्वोपरि आदर्श माना जा रहा है। सही व गलत के बीच की विशेषता परिणामस्वरूप अस्पष्ट होती जा रही है। अधिकाधिक स्थानों पर अत्यंत भिन्न–भिन्न मूल्यों पर आधारित व्यवहार के प्रतिमानों को समान स्तर पर माना जाता है तथा एक समुदाय को परंपरागत रूप से जोड़कर रखने वाले बंधनों ने अपनी शक्ति लगभग खो दी है।

ऐसे माहौल में युवा अनेक बार बिना किसी नैतिक मार्गदर्शन के रह जाते हैं और सत्य को असत्य से अलग करना कठिन पाते हैं। ईश्वर के शब्द के सिवाय और कोई भी शक्ति आध्यात्मिक भावनायें नहीं जगा सकती जो मनुष्य को यह अंतर कर पाने में समर्थ बना सके। अब्दुल बहा कहते हैं कि ईश्वर के शब्द ही विचारों और नैतिकता के साम्राज्य को आलोकित करते हैं :

> **"... बुद्धि और आदर्श के आध्यात्मिक साम्राज्य में प्रकाश का एक केंद्र होना चाहिये और यह केन्द्र है अनन्त, सदासर्वदा आलोकित सूर्य, प्रभुवाणी। इसका आलोक वास्तविकता का आलोक है जो मानवता पर प्रकाशित है, विचारों और नैतिकता के साम्राज्य को आलोकित करते हैं।"[40]**

नैतिक निर्णय ले सकने में समर्थ होने के लिए मनुष्य के सामने केवल नियमों का समूह ही नहीं एक युवा के मन मस्तिष्क में दृढ़ सामाजिक उद्देश्य के साथ एक पूर्ण नैतिक ढांचा बनाना होगा, एक ऐसा ढांचा जो आध्यात्मिक अवधारणाओं, व्यवहार के प्रतिमानों और इनसे जुड़े परिणामों के बोध को आपस में जोड़ता हो और साहस और दृढ़ संकल्प शक्ति से मज़बूत हो। ऐसा नैतिक ढांचा, व्यक्ति के मन को संचालित करने वाली भाषा के ढांचेसे समीपता से जुड़ा दिखाई पड़ता है। यह भाषा, जैसा कि पिछले कुछ खंडों में बताया जा चुका है, काफी समृद्ध होनी चाहिये ताकि युवा जन विघटित हो रहे विश्व में लोगों के मूल्यों को आकार देने वाले सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आदर्शवादी ताकतों को पहचान सके और उन्हें परिवर्तित करने के लिए आवश्यक आध्यात्मिक शक्तियों के स्वरूप को समझ सकें।

व्यक्ति जिस भाषा में अपने विचारों को प्रकट करता है उस भाषा की संरचना और उसके विचारों तथा आचरण को मार्गदर्शित करने वाली नैतिक संरचना के बीच गहन सम्बन्ध, भाषा और नैतिक शिक्षा को पढ़ाने के अपेक्षित ढंग में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। भाषा के शिक्षण के लिए प्रयुक्त होने वाली पाठ्य सामग्री, उन्हें तैयार करने वालों के नैतिक मूल्यों के अनुरूप निश्चित हो अलग–अलग होगी। यह स्पष्ट नैतिक विचारों को संप्रेषित कर सकती है, विरोधाभासी नैतिकता दे सकती है या फिर आध्यात्मिक हानि भी पहुँचा सकती है। नैतिक शिक्षा की विषयवस्तु भी प्रचारित की जाने वाली नैतिक अवधारणा के अनुरूप भिन्न हो सकती है। उदाहरण के तौर पर अनेक शैक्षणिक सामग्री में देखा जा सकता है कि आचरण में सुधार के उद्देश्य से नैतिक अवधारणाएँ केवल गुणों, दायित्वों, नियमों और तथ्यों की श्रृंखला के रूप में ही प्रस्तुत कर दी गई हैं, भाषा और विचारों के उन तत्वों के बिना, जो आध्यात्मिक बोध में वृद्धि करते हैं और सामाजिक रूपांतरण के संकल्प में तीव्रता लाते हैं। आप नैतिक शिक्षा के ऐसे कार्यक्रम भी पा सकते हैं जो इस मान्यता के साथ विद्यार्थियों से अपने पसन्द व प्राथमिकताओं पर विचार करने को कहते हैं ताकि इनको स्पष्ट करते हुए वे खोज पाएं कि वे क्या हैं तथा अपनी संभाव्यताओं को पा

सकें। नैतिक शिक्षा को दोनों में से किसी एक दृष्टिकोण तक लाना अनुचित है। किशोरों के लिए अर्पित आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम निशचित ही उच्च नैतिक स्तर से दूर नहीं हो सकता, न ही यह इस बात को अनदेखा कर सकता है कि इस प्रकार का स्तर व्यक्ति से संशय रहित होने की मांग करता है। इसके साथ ही इस प्रकार के कार्यक्रम को, जैसा हमनें पहले देखा था, आध्यात्मिक अवधारणाओं पर अत्यंत विचार विमर्श करने की अनुमति दनी होगी। इसे हालांकि और भी आगे जाने की आवश्यकता होगी। विशेष कर नैतिक संरचना बनाने में इसे भाषा की भूमिका पर ध्यान देना होगा और हम अगले दो भागों में इस पर ध्यान देंगे।

भाग 16

आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम के लिये प्रयुक्त सामग्री की भाषा सुग्राही और अन्वेषणात्मक होनी चाहिये किन्तु इसमें किसी भी तरह के सापेक्षवाद को दर–किनार किया जाना होगा जिसने हाल के दशकों में नैतिक शिक्षा को संक्रमित कर रखा है।

सीधी राह पर चलना एक और बहाई प्रेरित पाठ्यक्रम है जो किशोर कार्यक्रम का भाग है। इसमें नैतिक विषयों से जुड़ी 20 कहानियाँ हैं। अनेक संस्कृतियों में कहानियाँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक विवेक पहुँचाने के माध्यम के रूप में प्रयोग की जातीं है। इस पाठ्यक्रम में कुछ जानी मानी कहानियों को उस ढंग से फिर लिखा गया है ताकि पारंपरिक रूप से संप्रेषित अस्पष्ट संदेशों को दूर किया जा सके। प्रत्येक पाठ के साथ भाषा से जुड़े कुछ अभ्यास भी दिये गये हैं ताकि भाषागत कौशल और योग्यता को बढ़ाया जा सके, जो नैतिक संरचना के ठोस विकास के लिये आवश्यक हैं। नीचे दिया गया पाठ एक ऐसी कथा से शुरू होता है जिससे आप भलीभाँति परिचित हैं। इसे विचार तथा व्यवहार की ऐसी शैली को बढ़ावा देने के उददेश्य से पुनः लिखा गया है जो स्पष्ट नैतिक संदेश के अनुरूप हो। इसे पढ़कर विचार करें कि इस कहानी में संप्रेषित संदेश मिथ्या सांस्कृतिक मानदंडों से बचता है।

बुद्धिमान झूठी प्रशंसा से भ्रमित नहीं होते। हालाँकि प्रशंसा सुन कर सभी प्रोत्साहित होते हैं। परन्तु हमें यह याद रखना चाहिये कि प्रशंसा की चाह हमारी सूझ–बूझ को कमजोर बना देती है।

एक दिन एक लोमड़ी ने एक कौवे को चोंच में पनीर का टुकड़ा दबाये उड़ते देखा। “मुझे वह पनीर चाहिए ही,” यह सोच कर लोमड़ी कौवे की परछाई का तब तक पीछा करती रही, जब तक वह एक पेड़ की डाल पर नहीं जा बैठा।

“नमस्कार, प्रिय मित्र,” लोमड़ी ने अपने सबसे अच्छे व्यवहार का प्रदर्शन करते हुए कहा। “आज तो आप बहुत सुन्दर लग रहे हैं। आपके पंख चमकदार हैं और आँखें तो मणियों जैसी चमक रही हैं आपकी आवाज भी अवश्य ही बहुत सुरीली होगी। काश ! मैं एक बार आपको गाते हुए सुन पाती।

ये शब्द, कौवे की प्रशंसा पाने की प्यास को संतुष्ट करने वाला शीतल जल जैसे थे। उसने अभिमान से अपनी गर्दन उठाई और अपने मोहक मित्र के सम्मान में एक गाना गाने को वह तैयार हो गया।

किन्तु, जैसे ही उसने गाने के लिए चोंच खोली, पनीर का टुकड़ा नीचे गिर गया। लोमड़ी ने उसे जमीन पर गिरने से पहले ही लपक लिया और भाग निकली। कौवे की बेसुरी आवाज़ हवा में लहराने लगी।

ज्ञान–बोध

पूर्ण वाक्यों द्वारा नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखें।

1. लोमड़ी ने क्या देखा ? ______________________________

   ____

2. कौवे ने चोंच में क्या दबा रखा था ? ______________________________

   ____

3. लोमड़ी ने पनीर पाने के लिए क्या किया ? ______________________________

   ____

4. क्या कौवे की प्रशंसा करने में लोमड़ी सच्ची थी ? ______________________________

   ____

5. क्या कौवे की प्रशंसा करने में लोमड़ी सच्ची थी ? ______________________________

   ____

6. यह कहानी किस जगह घटित हुई – शहर, गाँव या जंगल में ? ______________

   ____

शब्द–सामर्थ्य

नीचे दिए गए शब्दों की सहायता से निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करें :

प्रोत्साहित, चाह, मोहक, परछाई,
प्रशंसा, संतुष्ट, अभिमान, सुहावने,
सूझ–बूझ, कमजोर

1. अध्यापिका को लगता था कि उनके विद्यार्थी बहुत मेहनती थे, इसलिए वह हमेशा उनकी ______________ करती थी।

2. आरमाण्डो और उसके भाई ने एक ______________ दिन साथ खेतों मे काम करते हुए अपने भविष्य की योजनाओं पर बातें की।

3. हाँगमें को घूमना बहुत अच्छा लगता था और उसे नई जगह देखने की ______________ थी।

4. वह बहुत अच्छा गाती थी, इसलिए उसकी अध्यापिका ने संगीत सीखने के लिए उसका ______________ किया।

5. पहली बरसात के बाद ही बीज बो कर किसान ने अच्छी ____________________ का परिचय दिया।

6. चंदू अपनी परीक्षा के परिणाम से ______________ नहीं था, इसलिए उसने अधिक मेहनत से पढ़ने का निर्णय लिया।

7. जाँग जियाँग परेशानी में था, लेकिन उसमें अधिक ______________ होने के कारण उसने सबकी मदद को अस्वीकार कर दिया।

8. दिन ढलते समय बगीचे पर पेड़ों की ______________ लम्बी होने लगती है।

9. यह एक बहुत ही _____________ कहानी थी और बच्चे उसे बार–बार सुनना चाहते थे।

10. बीमारी की वजह से वह बहुत ______________ हो गया था, पर यह जानते हुए वह शीघ्र ही काम पर जाने लगा कि समय के साथ उसकी ताकत वापस आयेगी।

चर्चा–परिचर्चा

हम यह कैसे सुनिश्चित करें कि झूठी प्रशंसा के कारण बेवकूफ न बनें ?

कंठस्थ करें

"अत्यन्त सतर्कता के साथ अपनी रक्षा करो, ताकि तुम छल और धोखे के जाल में फँस न जाओ।"

अपने समूहों में इन प्रश्नों पर विचार करें :

1. यदि आप सतर्क नहीं है तो यह कहानी इस तरह कही जा सकती है और यह इस तरह कही भी जा चुकी है। जिसमें लोमड़ी की चालाकी की प्रशंसा प्रतीत होती है। कहानी के यहाँ दिये गये रूप में किस तरह इससे बचा गया है ?

____

____

____

____

____

2. इस कहानी का प्रमुख नैतिक संदेश क्या है ? ____________________

3. इस मुख्य संदेश से सम्बन्धित कुछ अवधारणाऐं क्या हैं ? ____________________

4. किशोर युवाओं को नैतिक अवधारणाएँ समझाने में ऐसी नीति कथाएँ कितनी प्रभावकारी हैं ?

5. ये अभ्यास किशोर युवाओं में किन योग्यताओं का विकास करते हैं ? ____________________

6. विचार विमर्श का अभ्यास जब असंदर्भित नहीं बल्कि कहानी में दिए गए नैतिक संदेश के संदर्भ में किया जाता है विचार और मनन शक्ति के विकास में कैसे योगदान करता है ? यह अभिव्यक्ति की शक्ति किस तरह बढ़ाता है ?

7. पाठ के अंत में याद करने वाले उद्धरण किस प्रकार इन शक्तियों के सशक्तिकरण में सहायक है ?

भाग 17

किशोर युवाओं को उनके निर्णयों से जुड़े नैतिक नियमों की पहचान कर पाने में सहायता के लिये यह महत्वपूर्ण है कि उनकी वास्तविकता से जुड़ी स्थितियाँ उनके समक्ष रखी जायें। यहाँ यह तात्पर्य नहीं है कि यथार्थवादी बनने के नाम पर मनुष्य की तुच्छ प्रवृत्तियों को उजागर करने पर ध्यान दिलाया जाये। परखी जाने वाली स्थितियों से किशोर अवगत तो हों, लेकिन आवश्यक नहीं है कि वे पतन हो रहे समाज में आसानी से फैली हुई हो बल्कि उन्हें विचार और आचरण के उन आदर्शों का प्रतिनिधित्व करना चाहिये जो युवाओं को उत्कृष्टता के लिये प्रेरित करें। इस हेतु उनके आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम के लिये उपयोग की सामग्री को एक ओर पैतृक–व्यवहार तथा बचकानी बातों तथा दूसरी ओर अच्छे व्यवहार हेतु उपदेशात्मक भाषा से बचना होगा। किशोर युवाओं के लिये एक अन्य बहाई प्रेरित पाठ्यक्रम *उकृष्टता के बारे में सीखना* से लिये गये इस पाठ पर विचार करें। पाठ में श्रीमती चेन अपने नाती–पोतों को शुद्धता की अवधारणा का वर्णन करती है और उसकी महत्वता की पूर्ण समझ को प्राप्त करने में कुछ अभ्यासों की सहायता से मदद करती है।

श्रीमती चेन बताती हैं कि उत्कृष्टता पाने की दूसरी आवश्यकता है एक पवित्र और पावन जीवन, जिसका तात्पर्य है विनयशीलता, पवित्रता, संयमशीलता, शालीनता, शुद्ध विचार। पवित्रता, जिस पर एक शुद्ध जीवन का आधार रखा जाता है, के विवरण से वे प्रारम्भ करती हैं :

"एक दर्पण की कल्पना करो। यदि तुम उसके ऊपर की धूल को साफ़ कर दो, तो वह प्रकाश को प्रतिबिम्बित करेगा। उसी प्रकार, जब किसी हृदय से ईर्ष्या, घृणा और घमण्ड की धूल को साफ कर लिया जाता है तब वह शुद्ध बन जाता है और स्वर्गिक प्रकाश को प्रतिबिम्बित करने योग्य बनता है। मेन्सियस का कहना है कि एक उदात् व्यक्ति बच्चों जैसे अपने हृदय को कभी खोता नहीं है। यह बात सच है, किन्तु हमें यह याद रखना चाहिये कि एक बच्चे का हृदय अपने भोलेपन के कारण शुद्ध होता है और बच्चे के हृदय की शुद्धता की अभी तक परीक्षा नहीं ली गई होती है। तुम अब ऐसी उम्र में हो कि तुम अब बच्चे नहीं कहलाये जा सकते। जैसे–जैसे तुम बढ़ते रहोगे, तुम बुद्धिमान और बलशाली बनोगे। फिर भी, तुम में से हर एक को सतर्क रहना होगा और इस बात के प्रति ध्यान देना होगा कि अपने हृदय की शुद्धता को खो न दो। तुम्हें अपने हृदय रूपी दर्पण को इस संसार की गन्दगी से अशुद्ध नहीं होने देना चाहिए। ऐसा तुम्हें आस्था और तर्क की शक्ति से करना चाहिये। तुम केवल प्रयत्न और इच्छाशक्ति के प्रयोग से ही शुद्ध रह सकते हो।"

श्रीमती चेन तब बताती हैं कि शुद्धता की अवधारणा को प्रायः गलत समझा जाता है। वे नव ताजगी से भरे नाती–पोतों को नीचे दी गई सूची में से उन गुणों को चिन्हित करने को कहती हैं जो शुद्धता को प्रतिबिम्बित करते हैं और उन्हें अनुचित से अलग करने को कहती हैं :

– सच्चा होना

– सत्यनिष्ठ होना

– भोला–भाला होना

– पाखंडरहित होना

– स्वच्छ मन का होना

– स्वच्छ शरीर का होना

– मूर्ख होना

– अहं से मुक्त होना

– कट्टरपंथी होना

– सरल हृदय वाला होना

– कपट रहित होना

– निःस्वार्थी होना

– कमजोर होना

– भावुक होना

– बुद्धिमान होना

– दयालु होना

– महत्वाकांक्षा से रहित होना

किशोर नीचे दिये गये उद्धरणों को याद करके उसके नीचे दिये गये प्रश्नों पर अपने नाना–नानी के साथ चर्चा करते हैं :

"मेरा प्रथम परामर्श यह है; एक शुद्ध दयालु एवं प्रकाशमय हृदय धारण कर, ताकि पुरातन, अमिट एवं अनन्त श्रेष्टता का साम्राज्य तेरा हो।"

"मनुष्य की जीवनशैली में सर्वप्रथम पवित्रता होनी चाहिये, तत्पश्चात् ताजगी, स्वच्छता और आत्मा की स्वच्छन्दता। पहले सरिता–तल को साफ करना होगा, तब नदी का मीठा जल उस तक प्रवाहित किया जा सकता है।"

1. पाखंडी वह होता है जो ईमानदार न होते हुऐ भी ऐसा होने का ढोंग करता है। क्या अधिक बुरा है, अनेक कमजोरियों से ग्रस्त होना या पाखंडी होना ?
2. ऐसी कौन सी अशुद्धताएँ हैं जिनसे हमें अपने विचारों को साफ रखना चाहिये ?
3. इस संसार में किसकी वास्तविक उपलब्धियाँ अधिक होती हैं, शुद्ध हृदय वाले लोगों की या कुटिल लोगों की ?

समूह में इन प्रश्नों पर विचार करो :

1. यह पाठ शुद्धता की अवधारणाओं को लेकर प्रचलित ग़लतफ़हमियाँ दूर करने में किस तरह सहायता करता है ? ______________________________

____

____

____

2. श्रीमती चेन द्वारा प्रयुक्त भाषा की कुछ विशेषताएँ क्या हैं ? ______________

____

____

____

3. यह पाठ किस तरह किशोर युवाओं को आध्यात्मिक उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करने में मदद करता है ? ______________________________

____

____

____

भाग 18

पिछले दो भागों में संक्षेप में ही हमने नैतिक संरचनाओं के सृजन में भाषा की भूमिका पर ध्यान दिया है। *सीधी राह पर चलना* तथा *उत्कृष्टता के बारे में सीखना* पुस्तकों से दो पाठों की विवेचना से हमें मदद मिली है कि किस प्रकार कुछ विषयों तथा अवधारणाओं पर विचार करने तथा इससे जुड़े अभ्यासों को करने से जो भाषा संबंधी क्षमताओं तथा कुशलताओं को विकसित करने के लिये बनाये गये हैं, उचित नैतिक चुनाव करने में मददगार विचारों के प्रतिमानों को सशक्त कर सकते हैं। इस प्रकार भाषा की प्रवीणता में वृद्धि कितनी भी महत्वपूर्ण हो, हमें याद रखना चाहिये कि एक व्यक्ति की नैतिक संरचनायें अनेक एक दूसरे के साथ क्रियाशील कारकों पर निर्भर हैं। विशिष्टतया, यहां पर विचार विमर्श किये जा रहे सोच के प्रतिमानों को वैज्ञानिक सोच से परे रखना कठिन है। युवा जनों को वास्तविकता की खोज वैज्ञानिक प्रकार से करने के लिये तैयार करने की आवश्यकता है। अनेक सामग्री का वे अध्ययन करेंगे, तत्पश्चात् गणित

और विज्ञान के क्षेत्रों में प्रवेश करेंगे – उन्हें एक विषय के रूप में पढ़ाने का प्रयास करने के लिये नहीं बल्कि उनके द्वारा जनित तार्किक क्षमता को सशक्त बनाने के लिए। वे जो किशोरों के साथ कई वर्षों के लंबे समय तक कार्य करने की इच्छा रखते हैं, के साथ इस पुस्तक के शाखा पाठ्यक्रम के रूप में इस सामग्री पर कुछ विस्तार से विचार–विमर्श किया जायेगा। अभी के लिये यह पर्याप्त होगा कि आप किशोरों द्वारा अपनाई जाने वाली शैक्षिक प्रक्रिया के इस तत्व से परिचित रहें।

भाग 19

आध्यात्मिक बोध विकसित करना, अभिव्यक्ति की शक्ति बढ़ाना और एक दृढ़ नैतिक संरचना तैयार करना – ये सभी आध्यात्मिक सशक्तिकरण की प्रक्रिया के लिए महत्वपूर्ण हैं। दुर्भाग्यवश शक्तिसम्पन्न होने को ऐसी बातों से जोड़ा गया है जो मनुष्य की आध्यात्मिक प्रकृति के विपरीत है। शक्ति सम्पन्न होने की बात करते ही जो छवि दिमाग़ में आती है वह है नियंत्रण, जोड़–तोड़, आधिपत्य, शासन, प्रभुसत्ता और आधीनता। आपका लक्ष्य किशोर युवाओं को एक भिन्न प्रकार की शक्ति विकसित करने में मदद करना है। नैतिक शक्ति, प्रेम, न्याय, ज्ञान, समझदारी, तीक्ष्ण बोध और सेवा भाव और इन सबसे ऊपर विनय से उपजती है। हम जिस सशक्तिकरण की प्रक्रिया की बात कर रहे हैं, वस्तुतः उसके लिए विनम्रता एक आवश्यक शर्त है क्योंकि यह ईश्वरीय सहायता से ही है कि वह एक मच्छर को एक बाज़ बना सकता है, जल की एक बूंद को नदी और समुद्र तथा एक अणु को प्रकाशपुंज और सूर्य। बहाउल्लाह और अब्दुल बहा की प्रार्थनाओं के कुछ अंशों पर मनन करने पर, जिसमें हम ईश्वर से विशिष्ट गुणों के लिये याचना करते हैं, यह हमें आध्यात्मिक और नैतिक सशक्तिकरण के बारे में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है :

> **"ओ समस्त नामों के स्वामी, पृथ्वी और स्वर्ग दोनों के सम्राट ! मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि वे लोग जो तुझे प्रिय हैं उन्हें अपनी करूणा का प्याला प्रदान कर ताकि वे तेरे सेवकों के हृदय में प्रवेश पा सकें। ओ मेरे प्रभु ! उन्हें सशक्त बना ताकि वे तेरी महिमा के बादलों से बरसने वाले वर्षा–जल की बूँदें बन सकें, और तेरी प्रेमपगी दयालुता की सुगंध को ले जाने वाली बसंती बयार बन सकें, ताकि उनके माध्यम से तेरे समस्त जीवों के हृदय की माटी पर हरियाली छा सके और उससे ऐसी वस्तुएँ सामने लायें, जो तेरे पूरे साम्राज्य को सुवासित कर सकें ताकि हर एक को तेरे प्रकटीकरण के लिबास की मधुर सुगंध मिल सके।"**[41]

> **"ओ मेरे प्रभु ! हमें सशक्त बना ताकि मैं तेरे जीवों के बीच तेरे प्रतीक–चिन्हों का प्रसार कर सकूँ और तेरे जगत में तेरे धर्म की संरक्षा कर सकूँ।"**[42]

> **"ओ मेरे ईश्वर मुझे शक्ति प्रदान कर कि मैं उनके बीच समझा जाऊँ जो तेरे मुखड़े पर दृष्टि टिकाकर केवल तेरे लिये तेरे आदेश और विधानों को समर्पित हैं।"**[43]

> **"ओ मेरे प्रभु हमें सशक्त बना कि हम अपने अहम् का परित्याग कर तीव्रता से उसकी ओर बढ़ें जो सर्वप्रशंसित, सर्वोच्च्य तुम्हारे स्वरूप का प्रकटीकरण है।"**[44]

> **"मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि वह जो तेरे नामों का दिवास्त्रोत और है तेरे दिव्य गुणों का अवतरण–स्थल, वह मुझे ऐसा आदेश प्रदान करे जो मुझे तेरी सेवा के लिए तत्पर होने में और तेरे गुणगान में समर्थ बना सके।"**[45]

> **"मुझे अपनी उन सेविकाओं में से एक बन पाने में समर्थ बना जो तेरे सानिध्य का सुख पाने में सफल हो सकें।"**[46]

"इन बालकों की रक्षा कर। इन्हें सहायता दे ताकि ये मानवजाति की सेवा के योग्य बन सकें।"[47]

"ओ मेरे प्रिय, मुझ पर अपने पावन आशीष की वर्षा कर जो मुझे प्रभुमार्ग पर सुदृढ़ बना सके, ताकि अनिष्ठावानों की शंकाएँ मुझे तुम्हारी ओर उन्मुख होने से न रोक सकें।"[48]

"मुझे अपनी उपस्थिति में सत्य का पद प्राप्त करने में समर्थ बना, मुझ पर अपनी कृपा की वृष्टि कर, मुझे अपने उन सेवकों में शामिल कर ले जिन्हें न तो कोई भय है और न ही किसी दुःख की आशंका।"[49]

"हे मेरे ईश्वर ! अपने सेवक को अपने पावन शब्दों का प्रसार करने में, व्यर्थ और मिथ्या बातों को प्रतिकार करने में, सत्य को सिद्ध करने में देश–देशांतर तक तेरे वचनों को फैलाने में, तेरा गुणगान करने में और सदाचारियों के हृदयों को तेरे अरूणिम प्रकाश से आलोकित करने में सहायता कर।"[50]

"अपने सेवकों को अपने लोगों के बीच विलक्षणता प्रदान कर ताकि वे तेरे वचनों का यशोगान कर सकें और प्रभुधर्म का प्रसार कर सकें। ओ मेरे प्रभु उन्हें तेरी इच्छा और आनंद सम्पन्न करने में सहयोग प्रदान कर।"[51]

भाग 20

पिछले अनेक भागों के विचार विमर्श को ध्यान में रखते हुये आध्यात्मिक बोध के स्वभाव में हमारी विवेचना जो वास्तविकता की समझ के लिये इतनी आवश्यक हैं, अभिव्यक्ति की शक्तियों में हमारा अन्वेषण जो उच्च उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये इतना महत्वपूर्ण है; भाषा तथा नैतिक ढांचे के बीच के संबंधों का हमारा विश्लेषण जो चुनाव करने के लिये इतना निर्णायक है तथा नैतिक सशक्तिकरण की प्रक्रिया पर हमारे विचार आइये किशोरों द्वारा अध्ययन की जाने वाली दो पुस्तकों पर कुछ विस्तार से ध्यान दें। इस भाग में तथा अगले भाग में हम *संपुष्टि की सुरभि* पर नजर डालेंगे तथा भाग 22 व 23 में हम *आस्था की चेतना* का परीक्षण करेंगे। दोनों ही साधारणतया आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम के प्रथम वर्ष में अध्ययन की जाने वाली सामग्रियां हैं।

बहाई प्रेरित सामग्री *संपुष्टि की सुरभि* एक किशोर लड़की मुसोण्डा, जो अभी–अभी 13 वर्ष की हुई है और उसकी चचेरी बहन रोज़ की कहानी है, जो स्कूल की छुट्टियों में आई है। मुसोण्डा के भाई गॉडविन और उसके मित्र चिशिम्बा के साथ दोनों लड़कियाँ अपने भविष्य के बारे में विचार करती हैं, अपनी आशा–आकांक्षाओं और सम्भावनाओं की चर्चा करती हैं। आपके समूह को इस पुस्तक के कई विषयों पर विचार–विमर्श करने की आवश्यकता है। लेकिन इसके पहले आपको प्रोत्साहित किया जाता है कि इसे पूरा पढ़ लें, इसके बाद फिर एक बार सर्तकता पूर्वक पढ़ें और अभ्यासों को पूरा कर लें। जब पुस्तक से अच्छी तरह परिचित हो लें, तब नीचे दिये पुनरावलोकन को पढ़ें।

आपने निश्चित ही देखा होगा कि पूरे पाठ्यक्रम की मूल विषय वस्तु है – "सम्पुष्टि"। नीचे पुस्तक के वे अंश दिये गये हैं, जो विषय वस्तु को प्रकट करते हैं – चाहे मुख्य पात्रों की बातचीत के माध्यम से या फिर उन घटनाओं के माध्यम से जो कार्य कर रही दिव्य सम्पुष्टि को प्रकट करते हैं। अंश एक पाठ से लिया गये हैं और उसी क्रम में है जैसे वे पुस्तक में हैं। रिक्त स्थानों में लिखें कि प्रत्येक में सम्पुष्टि की अवधारणा को किस तरह प्रस्तुत किया गया है और कैसे किशोरों की समझ हर पाठ के अध्ययन के साथ विकसित होती चली जाती है।

"मैं सेवा के बारे में सोचती हूँ। मैं ऐसा कुछ करना चाहती हूँ जिससे दूसरों को सहायता मिले। मैं नर्स बनना चाहूँगी, पर इसके लिये बहुत मेहनत से पढ़ना पड़ता है। इसमें खर्च भी बहुत आता है और मेरे विचार से मेरे माता–पिता के पास इतना पैसा नहीं है।" मुसोण्डा ने स्पष्ट किया।

"हाँ, यह तो है, पर मुसोण्डा तुम कोशिश तो कर सकती हो," रोज़ बोली, "एक शब्द है 'सम्पुष्टि' जिसे मैंने कुछ सप्ताह पहले अपनी एक कक्षा में सीखा था। मेरी शिक्षिका कहती हैं कि ईश्वर हमारी इच्छाओं की सम्पुष्टि करते हैं और हमारे कामों में हमारी सहायता करते हैं। मुझे अब यह शब्द बहुत अच्छा लगता है। मुझे पूरा विश्वास है कि अगर तुम नर्स बनने की इच्छा रखती हो तो तुम्हें ईश्वर की सम्पुष्टि मिलेगी।"

उस रात, जब लड़कियाँ सोने के लिये बिस्तर में लेटीं तो मुसोण्डा फुसफुसा कर रोज़ से बोली, "रोज़, तुमने 'सम्पुष्टि' शब्द कहा था। क्या इसका यह मतलब है कि मैं अगर स्कूल का काम पूरी मेहनत से करूँ तो ईश्वर हमारे लिए पैसे भेज देगा जिससे मैं नर्स बनने की पढ़ाई कर सकूँ ?"

रोज़ ने करवट बदल कर मुसोण्डा को देखा। "वैसे बिल्कुल ऐसा तो नहीं है। मेरा मतलब है कि मुझे पता नहीं है। हमें कोशिश करके देखना चाहिये कि कौन से अवसर मिल रहे हैं। पर मुझे यह पक्का पता है कि ईश्वर ने हम सबको प्रतिभाएँ दी हैं। हमें यह पता करना चाहिये कि हमारी प्रतिभाएँ क्या हैं और तब उनका उपयोग करना सीखना चाहिये।" रोज़ ने उत्तर दिया।

गाडविन के एक सहपाठी और बहुत अच्छे मित्र का नाम चिशिम्बा है। वह अक्सर मुलेंगा परिवार से मिलने आता है और आज रात को वह भोजन के लिए उनके घर पर रूकेगा। भोजन करते समय एक के बाद दूसरे विषय पर चर्चा हो रही है। मुसोण्डा 'सम्पुष्टि' का विषय उठाना चाहती है और वह अधीर हो रही है। अंततः कुछ क्षणों के लिए शान्ति छा जाती है। "रोज़ और मैं 'सम्पुष्टि' के बारे में बातें कर रहे थे," मुसोण्डा बोली।

"लो शुरू हो गई मेरी छोटी बहन," गाडविन ने गला खखार कर कहा। लेकिन उसे बहुत आश्चर्य हुआ जब चिशिम्बा ने रूचि दिखाई।

"तुम्हारे लिए इस शब्द का क्या अर्थ है ?" उसने मुसोण्डा से पूछा।

मुसोण्डा हैरान होकर रोज़ की तरफ इस आशा से देखने लगी कि वह उत्तर देगी।

"सम्पुष्टि ... ईश्वर हमारी सम्पुष्टि करता है और हमारे कामों में हमारी सहायता करता है।" रोज़ ने कहा।

चिशिम्बा थोड़ी देर तक कुछ नहीं बोला। उसकी आँखों में दुःख झलकने लगा। "कुछ महीने पहले," वह धीरे से कहना षुरू करता है, "मेरे पिताजी की नौकरी चली गई। वह बहुत ही ईमानदार और जिम्मेदार व्यक्ति हैं और सभी इस बात को जानते हैं। अठ्ठारह सालों तक वह एक कम्पनी में चौकीदार की नौकरी करते रहे और एक दिन अचानक ही उन्हें नौकरी से निकाल दिया गया। हम सबको इसका कारण पता है। अगर वह उन्हें और दो सालों तक नौकरी पर रखते तो वह रिटायर हो जाते और कम्पनी को उन्हें पेन्शन देनी पड़ती। हमारे पास बहुत जमा पूँजी भी नहीं है। हालाँकि मेरा बड़ा भाई हमारी सहायता करता है, तब भी ऐसा लगता है कि मैं अगले साल पढ़ाई पूरी करने के लिए वापस स्कूल नहीं जा पाऊँगा क्योंकि मैं पढ़ाई का खर्च नहीं दे पाऊँगा। मुझे स्कूल से सचमुच बहुत प्यार है। मैं सोचता हूँ कि ईश्वर मेरी सहायता क्यों नहीं करता है ?"

सभी ने इस आशा के साथ श्री मुलेंगा की ओर देखा कि इस प्रश्न का उत्तर वह देंगे।

श्री मुलेंगा ने मुस्कुरातें हुए कहा, "जब हम कोशिश करते हैं तब ईश्वर हमारी इच्छाओं की सम्पुष्टि करता है पर इसका अर्थ यह नहीं है कि हमारा जीवन आसान है। तुम्हारा जीवन कठिनाइयों से भरा होगा और दुर्भाग्यवश उनमें से अधिक अन्याय के कारण से होंगी। परन्तु तुम्हें कठिन परिश्रम करना होगा और अगर कुछ समय के लिए तुम्हारी इच्छा के अनुसार चीजें न भी हों तब भी आश्वस्त होना होगा कि तुम्हें ईश्वर की सम्पुष्टि मिलेगी। अन्याय को हटाने की तुम्हारी कोशिशों में वह तुम्हें विशेष सम्पुष्टि देगा।" उन्होंने चिशिम्बा की ओर देखते हुए कहा, "तुम्हारे परिवार में एकता है और वह मेहनती है। मेरा दिल कहता है कि तुम्हारी स्थिति बदलेगी। मेरा यकीन करो, तुम अपनी पढ़ाई जरूर पूरी करोगे।"

अगले सोमवार वे दोनों श्रीमती फिरी के साथ स्वास्थ्य केन्द्र जाती हैं। जब माताओं की कक्षा का समय आया तो मुसोण्डा और रोज़ बच्चों को बाहर ले जाकर एक छायादार पेड़ के नीचे बैठीं। वे सब साथ में गीत गाते हैं और खेल खेलते हैं और रोज़ उन्हें कहानी सुनाती है। जब कहानी समाप्त होने वाली होती है उसी समय माताएँ अपने बच्चों को लेने आती हैं। सब बहुत खुश हैं। श्रीमती फिरी और अन्य स्वास्थ्य सेवक भी प्रसन्न हैं और वह दोनों लड़कियों से अगले सप्ताह फिर आने को कहते हैं।

घर लौटते समय मुसोण्डा अपने विचारों में खोई थी। आखिर वह चुप्पी तोड़ कर रोज़ से कहती है, "क्या तुम्हें लगता है कि आज जो भी हुआ उसका सम्बन्ध 'सम्पुष्टि' से है ? तुम शिक्षिका बनना चाहती हो और मैं नर्स, और आज हम यहाँ स्वास्थ्य केन्द्र में बच्चों को पढ़ा रहे थे और उनकी देखभाल कर रहे थे।"

पिछले कुछ हफ्तों से जबसे रोज़ मुसोण्डा के यहाँ आई है, दोनों ने अनेक विषयों पर बातचीत की है और मुसोण्डा के मन में बहुत सारे विचार घूम रहे हैं। इसलिये एक सुबह वह अपनी पसन्दीदा जगह पर जाने का निर्णय लेती है। वह चट्टान पर लेट कर स्वास्थ्य केन्द्र वाला दिन याद करती है। "कुछ उपयोगी काम करना कितना अच्छा था", वह अपने मन में विचार करती है। उसे याद आ रहा है कि उसके पिता अक्सर कहते हैं कि पेड़ों पर फल लगने ही चाहिये। तब वह सोचती है, "मैं यह किस तरह सुनिश्चित कर सकती हूँ कि मेरा जीवन भी फलदायी हो ?" उसके दिमाग में तुरन्त 'सम्पुष्टि' शब्द उभरता है।

उसी समय तेज हवा का एक झोंका आता है और कुछ पत्तियों को उड़ा देता है। उन्हीं पत्तियों में मुसोण्डा को एक छोटी सी पीली चिड़िया दिखाई देती है। जब हवा रूक जाती है, तो सभी पत्तियाँ पानी में गिर जाती हैं, पर वह चिड़िया हवा में उड़ती रहती है। चिड़िया को देखते हुए मुसोण्डा के दिमाग में एक विचार आता है। हवा के झोंकों ने चिड़िया को धीरे से धक्का देकर उड़ा दिया और अब वह ऊँची से ऊँची उड़ान भर रही है। शायद 'सम्पुष्टि' का यही अर्थ है। चिड़िया ने उड़ने की कोशिश की और हवा ने उड़ने में उसकी सहायता की।

"गाडविन क्या तुम अपने भविष्य के विषय में सोचते हो ?" मुसोण्डा ने पूछा। "तुम क्या बनना चाहते हो ?"

गाडविन साईकिल ठीक करते हुए बोला, "मुझे नहीं पता। मैं पैसा कमाना चाहता हूँ। मैं अपने माता–पिता की भी मदद करना चाहता हूँ साथ ही, एक दिन अपना घर बसाना भी चाहता हूँ।" उसने उत्तर दिया।

"पर क्या तुम कभी अपनी प्रतिभाओं के बारे में सोचते हो कि तुम किस तरह उनका उपयोग कर सकते हो ?" मुसोण्डा ने पूछा और आगे कहा "मैं और रोज़ इस बारे में बहुत बातें करते हैं।"

"पता है' पता है ," उसने औजार उठाते हुए कहा, "साथ ही तुम लोग हमेशा *'सम्पुष्टि'* के बारे में बात करती हो ... ईश्वर हमारी सहायता करता है जब हम कोशिश करते है।"

"पर गाडविन, यह बिल्कुल सच है।" तब वह उसे पीली चिड़िया और हवा की कहानी सुनाती है। वह उसे स्वास्थय केन्द्र पर बच्चों के लिये अपने और रोज़ द्वारा किए जा रहे काम के विषय में भी बताती है।

तभी चिशिम्बा वहाँ आ जाता है। "नमस्कार", वह कहता है। "साईकिल के क्या हाल हैं ? पता चला कि आखिर खराबी क्या है ?" उसने पूछा।

"खराबी इसके गियर में थी। मैं अभी भी इस पर ही काम कर रहा हूँ।" गाडविन ने एक बोल्ट कसते हुए उत्तर दिया।

"मुझे पता था कि तुम इसे ठीक कर सकते हो !" चिशिम्बा ने यह कह कर मुसोण्डा की ओर देखा, "क्या तुम जानती हो कि तुम्हारा भाई एक मेकैनिक है ?"

रोज़ तब तक घर के बाहर आकर बातचीत का एक भाग सुन चुकी थी। "गाडविन" वह बोली, "यही तो तुम्हारी एक प्रतिभा है। तुम चीजों की भली भाँति मरम्मत कर लेते हो। तुम तो बहुत अच्छे मेकैनिक बन सकते हो !"

"बस क्योंकि मैं एक साईकिल ठीक कर लेता हूँ", गाडविन ने कहा, "इसका मतलब यह नहीं है कि मैं एक मेकैनिक हूँ। मुझे इसके लिये प्रशिक्षण लेना होगा।"

बाकी तीनों मुस्कुरा कर कहते हैं, "तो फिर कोशिश करो !" सब जोर से हँसने लगते हैं और गाडविन भी हँसने लगता है।

"गाडविन, तुम चियेसू मेकैनिक, जिनकी दुकान बाजार के पास है, से बात क्यों नहीं कर लेते ? शायद वही तुम्हें सिखा दें", चिशिम्बा ने बहुत उत्साहित होकर कहा।

"हाँ, शुरूआत करने का यह एक तरीका हो सकता है", रोज़ ने बात आगे बढ़ाई।

"क्या ?" गाडविन ने पूछा, "मैं ऐसे ही जाकर उनसे कैसे पूछ सकता हूँ। मैं तो उनको जानता तक नहीं हूँ।"

"मैं जानता हूँ उन्हें। मैं उनसे तुम्हारा परिचय करा सकता हूँ। हम दोनों कल साथ चल सकते हैं", चिशिम्बा ने कहा।

बाद में जब केवल वह दोनों ही रह गई तो रोज़ ने मुसोण्डा से कहा, "कल गाडविन को 'सम्पुष्टि' का अर्थ समझ में आ जाएगा।" वे दोनों हँस पड़ीं पर उन्होंने निर्णय लिया कि वह लड़कों से कुछ भी नहीं कहेंगी।

छोटे कद के वृद्ध व्यक्ति चियेसू अपनी दुकान के बाहर बैठे, एक गीत गुनगुनाते हुए एक छोटे से इंजन के पुर्जों की सफाई कर रहे हैं। चिशिम्बा को देखकर उनका चेहरा खिल उठता है और वह आगे बढ़ कर उसे गले लगाते हैं।

चिशिम्बा उनका परिचय गाडविन से यह कह कर कराता है कि वह चीजों की अच्छी तरह मरम्मत कर लेता है। गाडविन घबरा रहा था, फिर भी वह हिम्मत जुटाता है और गला साफ कर वह कहता है, "चियेसू जी, मेरी इच्छा है कि मैं एक अच्छा मेकैनिक बनूँ। इसलिये मैं सोच रहा था कि शायद मैं आपकी दुकान में आपसे कुछ सीख सकूँ।"

"वैसे मुझे भी एक सहायक की जरूरत है," चियेसू ने कहा, "पर मेरे पास तुम्हें देने के लिए पैसे नहीं हैं।"

"उससे कोई फर्क नहीं पड़ता है, मैं केवल सीखना चाहता हूँ," गाडविन ने कहा और पूछा "मैं कब से काम करना शुरू करूँ ?"

"इस समय से अच्छा कोई समय नहीं है !" चियेसू ने उत्तर दिया। "क्या तुम आज सुबह से ही काम शुरू कर सकते हो ? इन पुर्जों को अच्छी तरह से तेल से साफ करना है और फिर हमें इंजन को बाँधना है।"

"अभी ? मैं अभी शुरू कर सकता हूँ ?" आश्चर्यचकित होकर गाडविन ने पूछा।

"बिल्कुल !" चियेसू ने हँस कर कहा, "चलो अपनी कमर कसो और काम पर लग जाओ।"

गाडविन बहुत उत्साह के साथ नए काम में जुट गया। कुछ समय बाद चिशिम्बा वापस जाने के लिए खड़ा हो जाता है। वह चियेसू को नमस्कार करता है और झुक कर गाडविन के कान में फुसफुसाता है ''सम्पुष्टि''।

घर जाते समय चिशिम्बा स्वास्थ्य केन्द्र के सामने से गुजरता है तो उसे बच्चों की देखभाल करती हुई रोज़ और मुसोण्डा दिखाई देती हैं। वे दोनों गाडविन के विषय में जानने को बहुत इच्छुक हैं, "कैसा रहा सब कुछ ?" दोनों पूछती हैं।

"गाडविन ने कोशिश की और सफल हुआ। अभी वह वहीं पर है। मुझे लगता है कि चियेसू उसकी परीक्षा लेना चाहते थे।" चिशिम्बा ने उत्तर देते हुए कहा।

एक दिन सवेरे चिशिम्बा अपनी माँ के लिए कुछ सामान और सब्जियाँ लेने बाजार गया। वह बहुत दिनों से सोच–विचार कर रहा है कि स्कूल के खर्च के लिए वह किस तरह पैसे कमा सकता है। उसने पहले कुछ अनाज उगाने की बात सोची, पर बुआई का समय निकल चुका है। उसने सड़क पर कोयला बेचने का विचार किया पर गाँव में बहुत से लोग ऐसा ही कर रहे हैं। उसे रोज़ की कही वह बात याद आ रही है, “कुछ ऐसा करो जो कोई और न कर रहा हो।”

जब वह श्रीमती मुसोले की दुकान पर पहुँचा तो पता चला कि वह तो वहाँ पर थी ही नहीं। पास के दुकानदार ने बताया, “वह फार्म की ताजी सब्जियाँ लाने शहर की मण्डी गई हुई हैं। वह हफ्ते में दो बार शहर जाती हैं।” चिशिम्बा को पता था कि चियेसू भी अपनी दुकान के लिये कल–पुर्जे लाने अक्सर शहर जाते हैं।

यह सुन कर उसके मन में एक विचार आया, “क्यों न मैं शहर जाकर लोगों की जरूरत का सामान खरीद कर लाने का प्रस्ताव उनके सामने रखूँ।” “इस तरह वह यहीं रह कर अपना काम करेंगे और उनका नुकसान भी नहीं होगा।”

उस रात घर पहुँच कर चिशिम्बा ने अपने माता–पिता से परामर्श किया तो उन्हें भी यह विचार पसंद आया। इसलिए अगले दिन वह वापस बाजार जाकर चियेसू और श्रीमती मुसोले से बात करता है। “अगर आप दोनों मुझे केवल वह पैसे दें, जो प्रायः बस के किराए में खर्च करते हैं तो मैं आधा पैसा लगाकर शहर से आपकी जरूरत का सामान ला सकता हूँ। बाकी बचे पैसे मैं स्कूल खर्च के लिए बचा लूँगा।” वे यह सुनकर इस बात पर सहमत हो जाते हैं और उसे दो दिन बाद आने के लिए कहते हैं। “अगर तुम्हारी योजना कारगर होती है” श्री चियेसू ने कहा, “तो समझो तुम्हें पक्की नौकरी मिल गई !”

अपने माता–पिता को यह खुशखबरी सुनाने जाते समय चिशिम्बा रास्ते में गाडविन और उसके परिवार से मिलने जाता है। वह अपनी योजना के बारे में उनसे कहने के लिए बहुत उत्सुक है। उसकी बात सुनने के बाद श्रीमती मुलेंगा भी चिशिम्बा को एक खुशखबरी

सुनाती हैं। वह उसे बताती हैं कि एक दिन पहले श्री मुलेंगा को काब्वे जाना पड़ा था और उन्होंने उनकी बहन के परिवार से बात कर ली है। उन्होंने अपने परिवार के साथ रहने के लिए चिशिम्बा का स्वागत किया है। "वह अपने परिवार के साथ स्कूल से एक किलोमीटर की दूरी पर रहती हैं। खाने और रहने के बदले में तुम उनके खेतों के काम में उनकी मदद कर देना।"

"यह तो बहुत बढ़िया खबर है।" चिशिम्बा खुशी से उछल कर बोला। "धन्यवाद।"

श्री मुलेंगा ने कहा, "अब लगता है कि तुम कुछ ही दिनों में पैसा कमाने लगोगे। तुम्हें यह सुनिश्चित करना होगा कि तुम उन पैसों की बचत स्कूल के लिए ही करोगे, चाहे कभी–कभी यह कितना भी कठिन क्यों न लगे। उसे बेकार की चीजों में खर्च करने का लालच मत करना।"

"आप चिन्ता मत कीजिए," चिशिम्बा ने गाडविन के पिता से कहा, उसका चेहरा खुशी से दमक रहा था, "मैं वादा करता हूँ कि मैं ऐसा नहीं करूँगा।" जब वह हाथ हिला कर उनसे विदा ले रहा होता है तो रोज़ और मुसोण्डा की ओर देख कर कहता है, "रास्ते खुल रहे हैं !"

छुट्टियाँ समाप्त हो रही हैं। अब रोज़ का वापस जाकर स्कूल में पढ़ने का समय आ गया है। जब वह वापस जाने की तैयारी कर रही थी तब वह और मुसोण्डा बातें करती हैं।

"काश तुम्हें वापस नहीं जाना होता," मुसोण्डा कहती है।

"मुझे भी ऐसा ही लग रहा है", रोज़ कहती है, "छुट्टियाँ बहुत ही अच्छी बीतीं। मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा है कि इतना कुछ हो चुका है।"

"हाँ", मुसोण्डा ने कहा, "गाडविन को देखो। उसे अपनी नौकरी इतनी अच्छी लगी कि अब वह स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद तकनीकी प्रशिक्षण लेने की सोच रहा है। और चिशिम्बा की योजना तो बहुत सफल हुई। उसके पास तो इतने ग्राहक हो गए कि उसे लगभग प्रतिदिन शहर जाना पड़ रहा है।"

"और हमें भी तो देखो", रोज़ बोली, "स्वास्थ्य केन्द्र पर काम करना भी एक अनूठा अनुभव था। अब तो मुझे पूरा विश्वास है कि मैं शिक्षिका ही बनूँगी। मेरे गाँव की पंचायत अलग–अलग उम्र के बच्चों के लिए हर हफ्ते कक्षाओं का आयोजन करती है। इस साल मैं भी एक कक्षा को पढ़ाने के लिए अपनी सेवाएँ दूँगी।"

"और मैं भी स्वास्थ्य केन्द्र पर काम करना जारी रखूँगी", मुसोण्डा बोली, "मैं स्कूल खुलने पर हर सोमवार को तो नहीं जा सकती, पर शायद कभी–कभी दोपहर को मैं वहाँ मदद कर सकती हूँ। जानती हो रोज़, जब हमने पहली बार 'सम्पुष्टि' के बारे में बात की थी, तब मैं सोच भी नहीं सकती थी कि यह कितना महत्वपूर्ण है और इसको समझने से हमारा जीवन कैसे बदल जाएगा।"

"यह सच है", रोज़ ने कहा, "देखो तो, तब से हम सब कितना बदल गए हैं जब से हमने प्रयत्न करने और 'सम्पुष्टि' पाने के विषय में जाना है।"

वापस जाते समय मुसोण्डा पूछती है कि क्या वह नदी के तट पर जा सकती है। वह दौड़कर अपनी विशेष जगह जाती है और चट्टान पर पीठ के बल लेट कर आसमान की ओर देखती है। उसके दिमाग में अनेक विचार दौड़ रहे हैं। वह स्कूल की छुट्टियों के बारे में सोचती है और विचार करती है कि आने वाला वर्ष क्या लेकर आएगा। आज बहुत ही सुहाना दिन है और उसे वह पीली चिड़िया याद आ जाती है। "मैं जो भी प्रयत्न

करूँगी", वह धीरे से स्वयं से कहती है, "ईश्वर उसमें मेरी मदद करेगा।" जब वह उठ कर वापस चलती है तो मानो हवा उसकी पीठ थपथपा कर उसकी हिम्मत बढ़ाती है।

भाग 21

सामान्यतया इस पुस्तक की विषय वस्तु से अच्छी तरह अवगत होने—इस संदर्भ में, *संपुष्टि की सुरभि* और इस बात को समझने से कि यह कैसे अपने लक्ष्यों को पूरा करने का प्रयास करती है, आपको एक किशोर समूह के अनुप्रेरक के रूप में अपने दायित्वों को पूरे आत्मविश्वास के साथ निभाने में मदद मिलेगी। इसके अतिरिक्त आपको उन तरीकों पर भी विचार करना होगा जिन्हें आप इस समूह को पुस्तकों के अध्ययन में सहायता देने के लिए और और उनमें संबोधित मुख्य अवधारणाओं को समझने में लाभान्वित होने के लिए उपयोग करेंगे। इस उददेश्य के लिए जिन कौशलों और योग्यताओं की आवश्यकता आपको होगी, उन्हें निश्चय ही धीरे—धीरे आप विकसित करेंगे जैसे—जैसे आप अनुभव प्राप्त करेंगे, किन्तु नीचे दिये गये अभ्यास जो स्पष्टतया *संपुष्टि की सुरभि* से संबधित हैं, इस संबंध में अनेक अंर्तदृष्टि उपलब्ध करायेंगे।

1. इस पुस्तक से पढ़े जाने वाले अंशों को वाक्य विन्यास और प्रवाह की दृष्टि से अत्यंत सरल रखा गया है। हालाँकि जहाँ कहीं आवश्यक है कठिन शब्द और उक्तियाँ प्रयोग में लाई गई हैं। पाठ ऐसे शब्दों का अर्थ उसे विभिन्न संदर्भों में रखकर और अभ्यास के माध्यम से समझाते हैं। समृद्ध शब्दावली होने से कहानी में बचकानापन और कृत्रिमता नहीं आ पायी है। उदाहरण के तौर पर अन्याय जटिल अवधारणा है हालाँकि बातचीत में अक्सर इसका प्रयोग होता है। पाठ 6 की विषयवस्तु और अभ्यास किशोर को इस अवधारणा की समझ प्राप्त करने में मदद करते हैं। क्या आप तरूणाई प्रारंभ कर रहे किशोरों को कुछ निश्चित अवधारणाएँ स्पष्ट करने की इस विधा को असरदार मानते हैं या फिर आपका विचार है कि उन्हें "कठिन" शब्दों को समझाना आपके लिये आवश्यक है ?

2. इस पुस्तक के अध्याय सहज गति तथा आंनददायक वातावरण किंतु साथ ही विचारपूर्ण माहौल में अध्ययन किये जाने के उद्देश्य से लिखे गये हैं। यह माना जाता है कि किशोर कहानी को पढ़कर अभ्यासों को पूरा करते चलेंगे जिन्हें उनके भाषा कौशल को तीव्र गति किन्तु आवश्यक सावधानी के साथ विकसित करने और शब्दों तथा अवधारणाओं की उनकी समझ को प्रबलित करने के लिए निर्मित किया गया है। क्या होगा यदि आप प्रत्येक पाठ के उद्देश्य के दायरे से बाहर जाकर – प्रत्येक बिन्दु को विस्तार से समझने का प्रयास करेंगे ?

3. किशोरों की एकाग्रता अवधि छोटी नहीं होती, जैसा कि अक्सर मान लिया जाता है। जीवन की छोटी सरल बातों का आनंद उठाने की क्षमता के साथ–साथ उनमें जटिल विषयों पर गहराई से सोचने की क्षमता भी है। यदि समूह का माहौल विश्वास तथा अवलंबन का है – प्रतिस्पर्धा से उत्पन्न तनाव तथा पूर्वनिर्धारित परिणामों को प्राप्त करने के दबाव से मुक्त – संपुष्टि की सुरभि के पाठों का अध्ययन विचार विमर्श तथा समीक्षा के ऐसे स्तर को बढ़ावा देगा जो किशोरों की आवश्यकताओं और क्षमताओं के उपयुक्त होगा। वांछित वातावरण सृजित करने के लिए आप क्या कदम उठा सकते हैं ?

4. इस पुस्तक के अध्ययन में "गृहकार्य" का कोई प्रावधान नहीं है। अभ्यासों को समूह की बैठक में पूरा किया जाना है और अनुप्रेरक की सहायता से विचार विमर्श किया जाना है। घर पर अभ्यास पूरा करने के लिए किशोरों पर छोड़ देने के बजाय इस तरीके को अपनाने का क्या फायदा है ?

5. इस पुस्तक के अधिकांश पाठों के साथ एक गतिविधि दी गई है जिनमें किशोरों द्वारा पढ़ी गयी कहानी के उस भाग के बारे में या फिर किसी प्रस्तुत विचार और किस तरह यह उनके जीवन में लागू हो सकता है – इस बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखनी होती हैं। इस तरह की गतिविधि सम्पन्न कराने में आप किशोरो को किस तरह सहयोग दे सकते हैं, कि वे स्वयं को स्पष्टता के साथ अभिव्यक्त कर सकें ?

6. पुस्तक के पाठ 2, 5, 9, 10, 13 और 14 का अंत बहाई लेखों के एक उद्धरण के साथ होता है। आप इसमें से एक या दो को देखना सहायक पा सकते हैं यह देखने के लिए कि पिछली गतिविधि, पाठ में अभिव्यक्त की जा रही अवधारणाओं को किस तरह प्रबलित करती है।

7. मूल विषय के अतिरिक्त पुस्तक कई नैतिक अवधारणाओं को भी शामिल करती है और प्रशंसनीय गुणों और प्रवृत्तियों को मजबूत करने का प्रयास करती है। जैसे रोज़ बस में एक बच्चे के साथ अपने भोजन को बाँटती है। गॉडविन और चिशिम्बा एक महिला को लकड़ी का बोझ उठाने में मदद करते हैं। रोज़ और मुसोण्डा क्लिनिक में बच्चों को पढ़ाती हैं, जब उनकी माताएँ पौष्टिकता संबंधी अपनी कक्षाओं में स्वास्थ्य केन्द्र में व्यस्त होती हैं। फुटबॉल के मैच का मैत्री आयोजन जहाँ "जीतना" ही एकमात्र उद्देश्य नहीं है। इन विषयों पर कितना ध्यान दिया जाना चाहिये ? क्या इनमें से हर एक की पहचान और चर्चा की विस्तार में आवश्यकता है ? या फिर विचार विमर्श के दौरान स्वाभाविक रूप से इन्हें उभरने दिया जाना ही पर्याप्त है ?

8. यह कहानी एक अफ्रीकी गाँव में घटित होती है। किशोरों के आध्यात्मिक सशक्तिकरण के लिए अनुमोदित ये पुस्तकें विभिन्न महाद्वीपों के अनेक सांस्कृतिक और सामाजिक परिवेशों की वास्तविकताओं का चित्रण करती हैं। यह कार्यक्रम के धनाढ्यता को बढ़ाती है। कुछ लोग सुझाव दे सकते हैं कि "इन पुस्तकों को प्रत्येक देश के युवाओं की वास्तविक परिस्थितियों के अनुरूप बदले जाने की आवश्यकता है," उदाहरण के लिये कहानियों में नामों को बदलकर। तथापि लोग सदियों से अपनी संस्कृति से पृथक संस्कृतियों की पुस्तकें पढ़ते, उनका आनंद उठाते हैं और उनसे बहुत कुछ सीखते रहे हैं। निश्चय ही ऐसा प्रयास सचेतन स्तर पर हुआ है। आप कार्यक्रम के इस आयाम से किशोरों को कैसे अवगत करायेंगे ? कुछ लोगों की इन मान्यताओं के बारे में आपका विचार क्या है कि बच्चे और युवा सिर्फ अपनी संस्कृति के सन्दर्भ में लिखित सामग्री से ही सीख पाते हैं ?

भाग 22

जैसा कि हमने पहले देखा है, *आस्था की चेतना*, अनेक पाठ्य सामग्रियों में से एक है जो बहाई बच्चों की कक्षाओं को जारी रखने के लिए विषय वस्तु प्रदान करता है एवं जिसमें धर्म की केन्द्रीय विभूतियों के बारे में स्पष्ट उल्लेख है। इस बात का उल्लेख पहले ही किया जा चुका है कि किशोरावस्था जीवन की एक ऐसी अवस्था है जब दार्शनिक स्वरूप से जुड़े प्रश्नों का उत्तर तलाशने की अभिरूचि अधिकतम होती है, विशेष रूप से वे प्रश्न जो मानव अस्तित्व के उद्देश्यों और प्रकृति से जुड़े होते हैं। *आस्था की चेतना* का आरम्भ ही इस प्रश्न के साथ होता है कि "एक मनुष्य होने का अर्थ क्या है ?" इस प्रश्न का उत्तर देने के प्रयास में पुस्तक के विभिन्न खंड सम्बद्ध विचारों की एक पूरी श्रृंखला की परख करते हैं, जैसे मनुष्य की कुलीनता, मनुष्य की उच्च और निम्न प्रकृति, बुराई की अस्तित्वहीनता, स्वतंत्र इच्छा, संकल्प, भाग्य, बौद्धिक शक्ति, वैज्ञानिक खोज, भौतिक क्रम विकास, मानव चेतना और अंत में आस्था की चेतना।

सम्पुष्टि की सुरभि की तरह ही आपके लिये एक बार इस पूरी पुस्तक को पढ़ना आवश्यक होगा और फिर समीक्षायें शीर्षक वाले हिस्सों पर विशेष ध्यान देते हुए इसे दुबारा अधिक ध्यान से पढ़ना होगा। इसके बाद आपको विश्लेषण करना है निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देकर कि यह इकाई अपने उद्देश्यों को किस तरह प्राप्त करती है :

1. पाठ–1 में "बहाउल्लाह के लेखों स" उद्धरित अनेक अनुच्छेदोंमें रूपक हैं किशोरों को अपनी सच्ची पहचान के विषय में विचार करने में मदद करते है। इस संबंध में प्रत्येक रूपक क्या अंर्तदृष्टि प्रदान करता है ? किस तरह यह समीक्षा इस पाठ में उनकी विषय की समझ को पुष्ट करेगा ?

2. पाठ–2 के पहले भाग से किशोर किस तरह ईश्वर की सृष्टि और मनुष्य की कुलीनता के प्रति प्रशंसा का भाव ग्रहण करते हैं ?

3. इस पाठ की पहली समीक्षा किस तरह उन्हें अपने जीवन में कुलीनता की अवधारणा को उतारने में मदद करता है ?

4. पाठ के अगले भाग में वे उस मुख्य कारण के बारे में सोचते हैं जिसके लिये मनुष्य स्वयं को गिरा देता है। वह क्या है ?

5. आप क्या आशा करते हैं कि मनुष्य की उच्च और निम्न प्रकृति के संक्षिप्त अध्ययन से, एक किशोर क्या समझ हासिल करेगा ?

6. इस पाठ के दूसरे समीक्षा से किशोर अपनी उच्च प्रकृति के विकास के बारे में क्या सीखते हैं ?

7. यह समझ किस तरह किशोरों को हर बार ग़लती होने पर होने वाले अपराध – बोध से बचाती है कि मनुष्य की निम्न प्रकृति शैतानी नहीं है ? इस विषयवस्तु की समझ गहन करने के लिये क्या उदाहरण दिये गये हैं ?

8. पाठ–2 का अंतिम भाग और अंतिम दो समीक्षायें मनुष्य की निम्न प्रकृति को कैसे नियंत्रण में रखा जाये, उसके बारे में क्या अंर्तदृष्टि उपलब्ध कराती हैं ?

9. पाठ–3 में इच्छा की अवधारणा का वर्णन किस प्रकार किया गया है ? क्या आप मानते हैं कि पाठ में वर्णित स्थितियाँ नवयुवकों के जीवन से सम्बन्ध रखती हैं ?

10. पाठ–3 से किशोर अपनी उच्च प्रकृति के विकास में स्वतंत्र इच्छा की भूमिका के बारे में क्या सीखते हैं ?

11. अपने जीवन के किन क्षेत्रों में किशोर समझ पाते हैं कि वे स्वतंत्र इच्छा का उपयोग कर सकते हैं ? अपनी स्वतंत्र इच्छा की सीमाएँ ज्ञात होना उनके लिये क्यों महत्वपूर्ण है ?

12. पाठ के दूसरे समीक्षा से अपनी स्वतंत्र इच्छा की व्यावहारिकता के बारे में वे और क्या अंतर्दृष्टियाँ प्राप्त करते हैं ?

13. किशोरों के लिये यह क्यों महत्वपूर्ण है कि वे दूसरों पर नियंत्रण रखने और उन पर एक सकारात्मक प्रभाव डालने के बीच का अंतर समझें ? आपके विचार से तीसरी समीक्षा में आया विचार–विमर्श, उनके अपने माहौल पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकने के प्रयासों में कैसे सहायक होगा ?

14. पाठ–3 किशोरों को भाग्य के बारे में क्या समझाता है ?

15. भाग्य को लेकर प्रचलित भ्रमों और मिथ्या अवधारणाओं को वह पाठ किस तरह दूर करने का प्रयास करता है ?

16. जीवन में अपने प्रयासों और दिव्य सहयोग की शक्ति का महत्व समझाने में किशोरों की मदद के लिये पाल–नौका का रूपक कितना प्रभावशाली है ?

17. पाठ–4 का पहला भाग किशोरों को प्रकृति की सीमाएँ जानने समझने में किस तरह मदद करता है ?

18. इन सीमाओं के मनुष्यों द्वारा अतिक्रमण के बारे में यह पाठ क्या कहता है ?

19. पाठ में यह तर्क दिया गया है कि विज्ञान समस्त मानवता के लिए है। यह तर्क क्या है ?

____

____

____

20. पाठ 4 में उद्धृत विज्ञान से संबंधित गद्यांश में यह कथन दिया गया है, "ईश्वर ने वास्तविकता के इस प्रेम को मनुष्य में सृजित या सँजोया है।" किशोरों में वास्तविकता के इस प्रेम का पोषण करना कितना महत्वपूर्ण है ?

____

____

____

____

21. किशोरों के लिये अवलोकन की शक्ति का वर्णन किस प्रकार किया है ? ____________

____

____

____

22. पाठ–4 में प्रस्तुत उदाहरण विज्ञान की प्रगति का अवलोकन और प्रयोगों की भूमिका की सराहना करने में किशोरों को किस प्रकार सहायता करता है ? ____________________

____

____

____

23. क्या पाठ का आशय है कि वे जीवन के सभी क्षेत्रों में अवलोकन करने की शक्ति का उपयोग कर सकते हैं ? आपके विचार से तीसरे समीक्षा में पूछे गए प्रश्नों में जो इस शक्ति के उपयोग के लिए उन्हें प्रोत्साहित करते हैं, वे सब मानव अस्तित्व के उच्च प्रकृति पर क्यों केन्द्रित हैं ?

____

____

____

24. चौथी समीक्षा में आये उदाहरण यह बतलाते हैं कि जीवन के हर क्षेत्र में प्रयोग नहीं किया जा सकता। ये उदाहरण इस सिद्धांत का महत्व समझने में किशोरों की किस प्रकार सहायता करते हैं ? _____

____

____

____

25. पाठ–5 और 6 के विभिन्न उदाहरण प्रजातियों के क्रमिक विकास के जटिल सिद्धांत को किशोरों को समझने में किस प्रकार सहायक हैं ? ________________________________

26. इस क्रमिक विकास की प्रक्रिया में मानवीय चेतना के प्रकटन का वर्णन कैसे किया गया है ?

27. पाठ छह में अनुप्रेरक, नटालिया पेट्रोवना किशोरों के समूह के लिए अब्दुल–बहा के लेखों के दो उद्धरणों को पढ़ती है और कहानी में उन्हें अध्ययन करने एवं समझने में सहायता करती है। इसे वह किस प्रकार करती है उसका कोई संकेत नहीं है। आप इन उद्धरणों की कैसे व्याख्या करेंगे ?

28. पाठ–7 के पहले भाग में वर्णित मानवीय चेतना की मुख्य विशेषता क्या है ? ____________

29. इस पाठ के पहले समीक्षा में चैतन्यता का किस प्रकार परिचय कराया गया है ? इस समीक्षा के दो अभ्यास किशोरों के जीवन से किस प्रकार सम्बद्ध हैं ? ______________________

30. मानव मन की शक्ति उच्च प्रकृति के लिए माध्यम किस प्रकार बन सकती है ? क्या विरोधाभासों की प्रस्तुति, जैसा कि दूसरे समीक्षा में है, यह स्पष्ट करने का एक उपयोगी माध्यम है कि मनुष्य की बौद्धिक शक्तियों के लिए मार्गदर्शन आवश्यक है ?

31. आस्था की चेतना क्या है ? ____________________

32. पाठ–7 की अंतिम दो समीक्षाओं में प्रस्तुत उदाहरण और अभ्यास किशोरों को उनके जीवन में आस्था की चेतना के कार्य करते हुये देख पाने में किस प्रकार सहायक हैं ? ____________________

भाग 23

आस्था की चेतना पाठ्य सामग्री के केंद्र में विज्ञान और धर्म के बीच सामंजस्यता का सिद्धांत है। मानवता के जीवन के लिए इस सिद्धांत के निहितार्थ गहन हैं, और हममें से प्रत्येक को इसके संचालन में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। बेशक, विज्ञान और धर्म के बारे में कुछ ऐसे विचार हैं, जो उन्हें सीधे संघर्ष में नहीं लाते, पर स्पष्ट रूप से उनके बीच एक सामंजस्यपूर्ण संबंध की आवश्यकताओं को पूरा नहीं करते – उदाहरण के लिए, दावा कि आज जो भी रहस्य धर्म द्वारा संबोधित किए जाते हैं, वे अंततः विज्ञान द्वारा समझाए जाएंगे क्योंकि यह विकसित हो रहा है या, इसके विपरीत, यह विश्वास कि सभी वैज्ञानिक सत्य अंततः धार्मिक ग्रंथ पढ़ने से खोजे जा सकते हैं क्योंकि यह एक सर्वज्ञ ईश्वर से आते हैं। प्रत्येक दृष्टिकोण में अंतर्निहित भ्रांतियों में पड़े बिना, हम आसानी से देख सकते हैं कि, दोनों में, ज्ञान के एक स्रोत को दूसरे के अधीन बना दिया जाता है, जिसे शायद ही सच्चा सामंजस्य माना जा सकता है। लेकिन, इस तरह के विचारों को खारिज करते हुए भी, हमें खुद से यह पूछने की जरूरत है कि हम विज्ञान और धर्म को एक दूसरे के पूरक की कल्पना कैसे करते हैं। इस आलोक में आपके विचारार्थ नीचे दिया गया विवरण उपलब्ध कराया जा रहा है। इसे पढ़ें और उसके बाद दिए गए अभ्यासों को पूरा करें।

> *एक संभावना यह तर्क देना है कि विज्ञान और धर्म में निहित सत्य अनुभव के दो अलग और परस्पर अनन्य क्षेत्रों से संबंधित हैं। विज्ञान भौतिक ब्रह्मांड का अध्ययन करता है, न केवल प्रकृति की कार्यप्रणाली बल्कि मानव समुदायों, संस्थानों और अंतःक्रियाओं से जुड़ी कुछ घटनाओं का भी अध्ययन करता है। यह जो ज्ञान उत्पन्न करता है वह तकनीकी प्रगति का आधार बन जाता है, और प्रौद्योगिकी को या तो मानवता की भलाई के लिए या उसके नुकसान के लिए उपयोग किया जा सकता है। कोई फर्क नहीं पड़ता कि सामाजिक विज्ञान कितना आगे बढ़ गया है, विज्ञान के पास यह निर्धारित करने की सीमित क्षमता है कि उसके उत्पादों को किस उपयोग में लाया जाना चाहिए। धर्म, इसके विपरीत, मानव अस्तित्व के आध्यात्मिक आयाम से संबंधित है। इसका उद्देश्य व्यक्ति के आंतरिक जीवन पर प्रकाश डालना, प्रेरणा की जड़ों को छूना और मानव व्यवहार का मार्गदर्शन करने के लिए एक नैतिक संहिता का निर्माण करना है।*

सभ्यता की प्रक्रिया ज्ञान की दोनों प्रणालियों पर निर्भर है, जब तक प्रत्येक अपनी प्रतिभा के दायरे में रहता है, तब तक उनके संघर्ष में आने का कोई कारण नहीं है।

विज्ञान और धर्म के बीच सामंजस्य का यह दृष्टिकोण मान्य है, लेकिन ज्यादातर उपयोग के स्तर पर। अंततः, इस दृष्टिकोण में, विज्ञान और धर्म को अलग कर दिया जाता है और उन्हें अपने तरीके से आगे बढ़ने की अनुमति दी जाती है, और जो महत्व रखता है वह है प्रौद्योगिकी और नैतिकता के बीच का वार्तालाप। किन्तु विज्ञान और धर्म के बीच संबंधों का ऐसा विश्लेषण जल्द ही अपनी सीमा तक पहुंच जाता है, क्योंकि वास्तव में, ऐसी अनेक घटनाएं हैं जिन्हें वे दोनों समझने और समझाने की कोशिश करते हैं। जबकि प्रकृति के संबंध में यह कम ध्यान में आता है, वहीं मनुष्य और समाज के अध्ययन में यह स्पष्ट है। इसके अलावा, जिस तरह से वे वास्तविकता तक पहुंचते हैं, उसमें विज्ञान और धर्म के बीच कई समानताएं हैं। उदाहरण के लिए, दोनों सृष्टि में व्यवस्था के अस्तित्व में विश्वास रखते हैं और मानते हैं कि, कम से कम कुछ हद तक, मानव मन इस व्यवस्था को समझने में सक्षम है। ब्रह्मांड के कामकाज की खोज में विज्ञान के तरीके बेहद प्रभावी साबित हुए हैं। लेकिन धर्म को भी इन विधियों का उपयोग करना पड़ता है जब यह मनुष्य को एक निरंतर आगे बढ़ने वाली सभ्यता में योगदान करने के लिए मार्गदर्शन करने का प्रयास करता है। विज्ञान और धर्म समान नहीं हैं, लेकिन उनमें एक–दूसरे से बात करने, सद्भाव में रहने, प्रभावित करने और एक–दूसरे के पूरक होने के लिए पर्याप्त समानता है। इसलिए, यह उचित है कि विज्ञान और धर्म को ज्ञान और व्यवहार की दो पूरक प्रणालियों के रूप में देखा जाए, जो उनके द्वारा संबोधित किए जाने वाले परस्पर व्याप्त प्रश्नों और उनके द्वारा उपयोग की जाने वाली विधियों मे।

1. उपरोक्त कथन में वर्णित विज्ञान और धर्म के बीच संबंध ज्ञान के उन क्षेत्रों की कल्पना करता है जो विज्ञान और धर्म दोनों ही खोजते हैं। इनमें मानव मन की शक्तियों, मानव प्रजातियों के क्रमिक विकास और बौद्धिक एवं नैतिक विकास से संबंधित मुद्दे हैं। चर्चा करें कि कैसे, ऐसे मामलों पर ध्यान देने में, *आस्था की चेतना* विज्ञान की वैधता का सम्मान करती है, साथ ही साथ धर्म के प्रकाश को समझ को रोशन करने की अनुमति देती है।

____

____

____

____

____

____

2. विज्ञान और धर्म की सामंजस्यता का सिद्धांत निरूपित करता है कि आवश्यकता के अनुरूप शिक्षण सामग्री में आध्यात्मिक और वैज्ञानिक अवधारणाओं को एक सूत्र में पिरोकर समाहित किया जाये, हाँ निश्चित रूप से यह ध्यान रखा जाये कि इसमें कोई कृत्रिमता और अव्यवस्था न आने पाये। ज्ञान का ऐसा एकीकरण समझ को बढ़ाता है और मिथ्या दुविधाओं को दूर करता है। जांच करें कि *आस्था की चेतना* किस प्रकार एकीकरण के इस स्तर को प्राप्त करती है। आप पाठ 5 और 6 के समीक्षाओं का विशेष रूप से संदर्भ ले सकते हैं।

____

____

3. आप *आस्था की चेतना* का एक बार फिर विश्लेषण कर यह सुनिश्चित करना चाहेंगे कि यह किस सीमा तक सत्य और वास्तविकता की खोज करने वालों के लिए आवश्यक अभिवृत्तियों को उत्पन्न करती है। ये अभिवृत्तियां कौन–कौन सी हैं, और प्रस्तुत सामग्री कितनी सफलतापूर्वक इनको खोज करती है ?

भाग 24

किशोर आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम से संबंधित सामग्री के संबंध में भाग 3 से प्रारंभ किये अपने विचार–विमर्श को हम यहां समाप्त करते हैं। *संपुष्टि की सुरभि* तथा *आस्था की चेतना* की हमारे द्वारा की गई विस्तारपूर्ण विवेचना आपको इंगित कराती है कि कार्यक्रम की प्रत्येक पुस्तक के साथ आपको किस प्रकार की सुविज्ञता प्राप्त करनी होगी। पुस्तक 5 के शाखा पाठ्यक्रमों में भी हम अन्य सामग्री के लिये इस प्रकार का विचार–विमर्श करेंगे जो इस संबंध में आपकी मदद करेंगे; तथापि इस प्रकार के अध्ययन से अलग आपको उस अन्य सामग्री को पढ़ने में आवश्यक समय समर्पित करना चाहिये और इसकी जांच करें कि यह अपना उद्देश्य प्राप्त करने में कैसे प्रयत्न कर रहे हैं। अनुप्रेरकों के रूप में सेवा दे रहे अन्य जनों के साथ समय–समय पर समीक्षा बैठकें आपको सामग्री की समझ बढ़ाने के सर्वोत्तम अवसर उपलब्ध करायेंगी। आप और आपके साथी अनुप्रेरक इन अवसरों पर बांटे गये अनुभवों का ऐसा भंडार पायेंगे जिन से वह लाभ उठा सकते हैं। अंतिम विशलेषण में, यह आपसी सहयोग तथा सहायता के वातावरण का निर्माण है जहां सीखने का समर्पण दूसरों के उद्यमों में उनका साथ देने की इच्छा व्यक्त करता है, में ही सामग्री की क्षमता पूर्णतया अन्वेषित की जाती है तथा अंततः प्राप्त होती है।

भाग 25

इस इकाई में पहले ही इसका उल्लेख हो चुका है कि किशोर पाठ्य सामग्री के अध्ययन के साथ सेवा की गतिविधियों, खेल–कूद एवं कला और शिल्प के विभिन्न रूप, विशेष रूप से उनकी स्थानीय संस्कृति से संबंधित में जुडते हैं। इस पुस्तक की दूसरी वाली इकाई में आप युवाओं पर सामाजिक वातावरण के प्रभावों पर कुछ हद तक विचार करने का अवसर प्राप्त हुआ था और आपको इसके कुछ हानिकारक प्रभावों के प्रति विशेष रूप से चेताया गया था। वहां पर समाज की खराब होती दशा दिये गये ध्यान को इस तथ्य को धूमिल नहीं करने देना चाहिये कि प्रत्येक वातावरण के अनेक तत्व ऐसे हैं

जिन्हें सही ढ़ंग से उपयोग में लाने पर अभिव्यक्ति की शक्ति, सामाजिक प्रक्रिया के विश्लेषण की योग्यता और समाज सेवा की इच्छा में अभिवृद्धि कर सकते हैं। नीचे दिया समाचार पत्र का लेख एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करता है कि किस प्रकार सामाजिक हित को बढ़ावा देने में मीडिया का उपयोग किया जा सकता है :

मूक की वाणी

पश्चिम अफ्रीका में ट्रांजिस्टर रेडियो आज भी समुदाय की आवाज़ है।

गिनी के वन क्षेत्र में एन. ज़ेरेकोर के ग्रामीण रेडियो स्टेशन के छोटे–से स्टूडियो में एक माइक्रोफोन के इर्द–गिर्द तीन युवा लोग 'लड़कियों की शिक्षा' विषय पर विचार विमर्श कर रहे हैं।

"लड़कियों को स्कूल जाना चाहिये क्योंकि एक दिन वे माँ बनेंगी और यदि वे स्वयं शिक्षित होंगी तो वे अपने बच्चों को शिक्षित कर पायेंगी और बेहतर ढंग से उनका पालन–पोषण कर सकेंगी।" मोरिको काके ने कहा ! "यदि आप एक लड़की को शिक्षित करते हैं तो इसका अर्थ यह हुआ कि आपने पूरे राष्ट्र को शिक्षित किया।" उन्होंने जोर देकर कहा ! कार्यक्रम के 16 वर्षीय संचालक लैन्सी टोरे ने सहमति में सिर हिलाया हालाँकि स्वयं उसके माता–पिता भी चाहते हैं कि वह खेतों में काम करने के लिए स्कूल जाना छोड़ दे।

जब युवाओं के स्पष्ट और अकाट्य तर्क लायबेरियन और आइवरी तट की सीमा के नजदीक तक के गांवों में प्रसारित होते हैं। धुंधलका हो चला है और मिट्टी के तेल के लैम्प मिट्टी से बनी झोंपड़ियों के अन्दर टिमटिमा रहे हैं। गाँव के लोग खेती और हाटों से वापस लौट चुके है। वे सभी खाना पकाते हुए तथा रात की तैयारी करते हुए रेडियो पर आ रही बातों को ध्यान से सुनते हैं ...।

गिनी जैसे देशों में जहाँ वयस्क आबादी का एक बड़ा हिस्सा अशिक्षित है, बच्चे स्कूल तक नहीं जा पाते हैं, बिजली कभी कभार आती है, वहाँ जेनरेटर के पॉवर से चलने वाले ग्रामीण समुदाय के लिये रेडियो स्टेशन ही लोगों की जीवन रेखा है।

एन. ज़ेरेकोर ग्रामीण रेडियो स्टेशन के कार्यक्रम निदेशक नौमा कामारा बतलाते हैं – "यहाँ रेडियो ही सब कुछ है," जिससे 100 किलोमीटर के दायरे में सप्ताह में छः दिन, पाँच क्षेत्रीय भाषाओं में से एक में तथा फ्रेंच में कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। यहाँ तीन में से दो परिवारों के पास ट्रांजिस्टर है। जल्दी सुबह और शाम जब स्टेशन प्रसारण करता है तो पूरा गांव सुनता है।

"हम उनकी अपनी भाषा बोलते हैं, हम उनके रीति–रिवाजों और परम्पराओं को जानते हैं, हम उनके संदेशों को प्रसारित करते हैं, जन्म और मृत्यु की घोषणा करते हैं, उनकी खेती–बाड़ी के मुद्दों और सामुदायिक समस्याओं पर विचार करते है" कमारा बतलाते हैं "हम इस समुदाय की आवाज़ हैं। मूक की वाणी हैं।"...

एक 15 वर्षीय युवक मामाडऊ मलिक स्थानीय बोली पुलार में बोलता है "मैं इसलिये इन कार्यक्रमों को सुनता हूँ क्योंकि इसे बच्चे प्रस्तुत करते हैं और वे मेरी अपनी भाषा बोलते हैं, जब भी कार्यक्रम शुरू होता है, मैं अपने सभी भाई–बहनों को बुला लेता हूँ और हम सब साथ मिलकर सुनते हैं। इससे मैं बहुत कुछ सीखता हूँ।"

"माता–पिता और समुदाय के नेता भी कार्यक्रमों को सुनते हैं," कमारा बतलाते हैं "हमारी संस्कृति में अक्सर बच्चों की बातों पर ध्यान नहीं दिया जाता लेकिन अब बड़े भी इनकी बातें सुनने लगे हैं। बच्चे अपने माता–पिता को साफ़ सफ़ाई की बुनियादी बातों में सलाह देते हैं, उदाहरण

के लिये अब कोई पिता यदि अपने बच्चों को मारता–पीटता है तो पड़ोसी उससे कहते हैं – 'श्क्या तुम रेडियो नहीं सुनते ?'"

यह कहानी उन असंख्य रास्तों में से केवल एक रास्ता बताती है जिससे मौजूदा सामाजिक स्थितियों के विभिन्न तत्वों का उपयोग युवाओं की प्रतिभाओं और योग्यताओं को उनके समुदाय की सेवा को दिशा देने में किया जा सकता है। आज विश्व के प्रत्येक भाग में संगीत प्रसार माध्यम और तकनीक का असर तेजी से युवाओं के जीवन पर पड़ रहा है। एक समूह के अनुप्रेरक के रूप में आपको इन शक्तिशाली तत्वों के प्रति जागरूक रहना है तथा किशोरों को उपयुक्त गतिविधियों में इन्हें उपयोग करने में मदद करना सीखना है। अपने सामाजिक वातावरण के बारे में सोचें ? इस संबंध में अपने विचारों पर चर्चा करे और नीचे दिये गये स्थान में इस बारे में अपने विचार लिखें :

संगीत : ______________________________

प्रसार माध्यम : ______________________________

तकनीकी : ______________________________

भाग 26

यदि किशोरों को अपने स्वयं के विकास और अपने समुदायों को प्रगति में योगदान का दायित्व उठाने योग्य सशक्त बनना है तो उन्हें अपने समुदाय के लिए अर्थपूर्ण गतिविधियाँ न सिर्फ लागू करने में बल्कि सृजित करने में भी प्रभावशाली ढ़ंग से भागीदारी निभानी होगी। सेवा परियोजनाओं और कला एवं शिल्प के अतिरिक्त, उदाहरण के लिए, इस तरह की गतिविधियों में भी शामिल हो सकते हैं, किसी पाठ्य सामग्री के पूरा होने का जश्न मनाने के लिए विशेष सभाएं, जिसमें किशोर नाटक प्रस्तुत करते हैं, गीत गाते हैं, कविता पढ़ते हैं और भाषण देते हैं। आप सदैव ही इस ओर उत्साहित रहेंगे और अन्य

अनुप्रेरकों के साथ विचार–विमर्श करेंगे कि इन युवाओं को किस प्रकार प्रोत्साहित किया जाये कि वे अपने बौद्धिक तथा आध्यात्मिक संकायों को प्रशिक्षित करने वाली गतिविधियों के निर्माण तथा उन्हें लागू करने में भाग लें। उन्हें अपनी सोच को सेवा की व्यावहारिक गतिविधियों के रूप में अभिव्यक्त करने, उत्कृष्टता की ओर बढ़ने के उनके प्रयासों को पुनः प्रबलित करने में उनकी मदद करें। आपको साथी अनुप्रेरकों के साथ आपस में कैसे प्रश्नों के बारे में विचार करना है, उनमें से यह भी हैः आप किस प्रकार किशोरों की मदद सेवा कार्यों का निर्माण करने, उन्हें लागू करने तथा इनके अनावृत होते समय समीक्षा करने में करते हैं ? किशोर युवाओं को आलेख लिखने और साधारण नाटकों को आयोजित करने में आप किस प्रकार मदद करते हैं ? यह कैसे सुनिश्चित किया जाये कि बचकाने खेलों को कला और शिल्प के बदले अनुमति न मिले और युवाओं में मानव जगत की प्रगति तथा इसको उच्च करने के लिये उपयुक्त वातावरण बनाने में "सहायक, कला, शिल्प" और "विज्ञान के प्रति सच्ची समझ का भाव विकसित करने में किस प्रकार सहायता की जाये ?"

यद्यपि यह कलात्मक गतिविधियों पर विचार करने का अवसर नहीं है, आपको यह जानना महत्वपूर्ण होगा कि ऐसी गतिविधियाँ, संस्कृति की अभिव्यक्ति में मूल्यों की वाहक होती हैं। अपनी प्रकृति के कारण यह शैक्षिक प्रक्रिया को अत्यंत प्रभावित कर सकती हैं। किशोर समूह के अनुप्रेरक के रूप में आप युवा मित्रों की मदद में ध्यान रखना चाहेंगे कि वे उचित कलात्मकताओं की पहचान करें जो अनजाने में उनके द्वारा चुनी गई शैक्षिक प्रक्रिया में सूक्ष्म रूप से विरोधी मूल्यों को शामिल न कर दें।

भाग 27

अनुभव से पता चलता है कि दस से पंद्रह सदस्यों का किशोरों का एक समूह अक्सर कुछ ऐसे व्यक्तियों के साथ शुरू होता है जिन्होंने अपने दोस्तों को एक सुयोग्य उद्देश्य के लिए एकत्र करने की क्षमता का प्रदर्शन किया है। जब ये कम उम्र वाले लोग दूसरों को शामिल होने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं, तब ही वे अनुप्रेरक के साथ नियमित रूप से मिलना शुरू कर देते हैं। एक समूह की सदस्यता को पड़ोस या गाँव में काम करने वाले दोस्तों के बढ़ते नाभिक की सहायता से भी मजबूत किया जा सकता है, विशेष रूप से उन युवाओं की सहायता से जो संस्थान के प्रारम्भिक पाठ्यक्रमों के अध्ययन में आगे बढ़ रहे हैं। विश्व के कुछ भागों में, समूहों की औपचारिक स्थापना से पहले एक गांव या पड़ोस के युवा सदस्यों को कार्यक्रमों की एक श्रृंखला में आमंत्रित करना भी एक प्रभावी तरीका साबित हुआ है। एक और तरीका, कार्यक्रम को एक विद्यालय में आरंभ करना भी है। जब विद्यालय इस विचार के प्रति ग्रहणशीलता दिखाता है, तो संबंधित ग्रेड के छात्रों और शिक्षकों के लिए एक या एक से अधिक प्रस्तुतियाँ आमतौर पर कई किशोर समूहों के गठन में परिणित होती हैं। फिर, वे कार्यक्रम को एक पाठ्येतर गतिविधि के रूप में शुरू कर सकते हैं, चाहे वे विद्यालय परिसर में मिलते हों या नहीं। विद्यालय किसी भी मामले में, अपने छात्रों की नैतिक और बौद्धिक क्षमताओं के उत्तम विकास के लिए कार्यक्रम के मूल्यवान योगदान को मान्यता देता है।

आप अपनी परिस्थितियों के बारे में सोचकर लिखें कि एक किशोर समूह गठित करने के लिए आप कौन–कौन सा तरीका अपनायेंगे।

भाग 28

एक गतिशील किशोर समूह को बनाए रखने के लिए एक महत्वपूर्ण आवश्यकता माता–पिता के साथ विश्वास और मित्रता का संबंध बनाना है। अनुप्रेरकों को समूहों के गठन से पहले या बाद में माता–पिता से मिलने और उन्हें कार्यक्रम का उद्देश्य समझाने की आवश्यकता है। उन्हें नियमित रूप से हर परिवार का भ्रमण करना जारी रखना चाहिए और इसके सदस्यों के साथ किशोरों की आकांक्षाओं और संभाव्यताओं और उनके आध्यात्मिक सशक्तिकरण के लिए कार्यक्रम को आकार देने वाली अवधारणाओं और तरीकों पर चर्चा करनी चाहिए – विषय–वस्तुएं जो पुस्तक 2 की तीसरी इकाई में उल्लिखित हैं, पर उनकी यहाँ विस्तार से जांच की गई है। इस तरह के भ्रमण माता–पिता के साथ उनके बेटों और बेटियों की भलाई और प्रगति के बारे में परामर्श करने का अवसर भी दे सकते हैं। अक्सर, जैसा कि पुस्तक 2 में सुझाया गया है, अनुप्रेरक माता–पिता को कार्यक्रम में अध्ययन किए गए एक या दो पाठ्यपुस्तक दिखाएंगे ताकि वे देख सकें कि उनके बच्चे क्या सीख रहे हैं। यद्यपि प्रत्येक अनुप्रेरक को कई महीनों की विस्तारित अवधि में माता–पिता के साथ मित्रता के ऐसे बंधनों को विकसित करने की आवश्यकता होगी, पहले कुछ भ्रमणों में उनके साथ एक अधिक अनुभवी व्यक्ति जा सकता है।

आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम में युवाओं के माता–पिता के साथ चल रही बातचीत का आधार बनने वाली अवधारणाओं को याद दिलाने के लिए आपको पुस्तक 2 की तीसरी इकाई के भाग 14 को देखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। फिर, इस पाठ्यक्रम के अन्य प्रतिभागियों के साथ, अपने गांव या पड़ोस में किशोरों के परिवारों का भ्रमण करने के अनुभव पर चर्चा करें। इस पुस्तक के आपके अध्ययन से कौन से अतिरिक्त विचार ऐसे भ्रमणों के दौरान वार्तालाप को समृद्ध कर सकते हैं ?

भाग 29

प्रारंभ में किशोरों के एक समूह के बीच एक अनुप्रेरक के द्वारा शुरू की जाने वाली बातचीत विशेष रूप से महत्वपूर्ण होती है। यह आवश्यक है कि, पहली तीन या चार बैठकों में, सदस्य समूह के उद्देश्य पर पूरी तरह से चर्चा करें और कुछ लक्ष्यों की पहचान करें जिन्हें वे सामूहिक रूप से पूरा करना चाहते हैं। उन्हें उन गतिविधियों की प्रकृति के बारे में कुछ निष्कर्ष पर भी पहुंचना चाहिए जो वे करना चाहते हैं। इन बैठकों में संबोधित विषय अलग–अलग समूहों में भिन्न हो सकते हैं। फिर भी "उत्कृष्टता" और "सेवा" जैसी कुछ अवधारणाएँ हैं, जिन पर ऐसी सभी बैठकों में जोर दिया जाना चाहिए। नीचे दिए गए बिंदु, उन समूहों, जिन्हें आप बनाने में मदद करते हैं, के सदस्यों के साथ पहले कुछ वार्तालापों को व्यवस्थित करने मे आपकी सहायता कर सकते हैं। आपको इस पाठ्यक्रम में अपने साथी प्रतिभागियों के साथ इनमें से प्रत्येक की अच्छी तरह से जांच करनी चाहिए और आप जिस किशोर समूह के साथ जल्द ही जुड़ने की आशा करते हैं उनके साथ कैसे चर्चा करेंगे, अपने प्रारम्भिक विचारों में से कुछ को लिखना चाहिए।

- अनेक अनुप्रेरक समूह को एक ऐसे स्थान के रूप में देखने के लिए किशोरों को प्रोत्साहित करने में उपयोगी पाते हैं जिसमें वे आध्यात्मिक और बौद्धिक उत्कृष्टता की ओर बढ़ने की आकांक्षा कर सकते हैं। वे बताते हैं कि आध्यात्मिक उत्कृष्टता हेतु प्रयास करने के लिए, हमें उन गुणों को विकसित करने की आवश्यकता है जो हमारे उच्च स्वभाव से संबंधित हैं जैसे कि प्रेम, उदारता, ईमानदारी और विनम्रता। बौद्धिक उत्कृष्टता के लिए प्रयास करने के लिए, हमें ज्ञान और व्यावहारिक कौशल हासिल करने की आवश्यकता है जो हमें अपने जीवन और दूसरों के जीवन को बेहतर बनाने में मदद करेगा। उद्धरणों पर विचार करना जैसे "प्रत्येक सुबह अपनी पूर्व संध्या से बेहतर हो और प्रत्येक आगामी कल अपने पूर्व कल से समृद्ध हो" और उन्हें कंठस्थ करना उत्कृष्टता की अवधारणा की समझ को बढ़ाने में अक्सर प्रभावी होता है।

- समूह के उद्देश्य के बारे में कुछ स्पष्टता प्राप्त करने के बाद, इसके सदस्यों को अनुप्रेरक द्वारा यह तय करने में मदद की जा सकती है कि वे कौन सी विशिष्ट बौद्धिक, खेलकूद और सांस्कृतिक गतिविधियां उत्कृष्टता की ओर बढ़ने के लिए वे अपनाना चाहते हैं।

- बौद्धिक और आध्यात्मिक उत्कृष्टता के संबंध में, विचार के पैटर्न से जुड़े भाषा के प्रश्न पर कुछ हद तक चर्चा करने की आवश्यकता होगी। किशोरों के साथ इस विषय पर बातचीत में आमतौर पर यह समझाना पर्याप्त होगा कि, उच्च से उच्चतर स्तर की उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए, हमें अपनी अभिव्यक्ति की शक्तियों को विकसित करना होगा। हमें पढ़ने में सक्षम होना चाहिए और हमने जो पढ़ा है उसका अर्थ समझने में सक्षम होना चाहिए, हमें अपने विचारों को स्पष्टता के साथ व्यक्त करना सीखना चाहिए। इस संदर्भ में, अनुप्रेरका अक्सर उन पाठ्यपुस्तक का परिचय देना प्रभावी पाते हैं जिन्हें किशोर पढ़ेंगे, जिनमें से कुछ का आपने पहली इकाई में, पूर्ण या आंशिक रूप से, परीक्षण किया था।

- किशोरों के आध्यात्मिक सशक्तिकरण के कार्यक्रम में पवित्र लेखों से अंशों को कंठस्थ किए जाने को उचित महत्व दिया जाना चाहिए। तब, कंठस्थ करने का विषय समूह की प्रारंभिक बैठकों में से एक में बातचीत का बिंदु होना चाहिए। अनुप्रेरकों को अपने कम उम्र के मित्रों को, जब वे उत्कृष्टता के लिए प्रयास करते हैं, ईश्वर के शब्दों की अनूठी शक्ति और उनके जीवन पर इसके प्रभाव के बारे में जागरूक होने में मदद करनी चाहिए। इस तरह की चर्चा के माध्यम से, वे पवित्र लेखनी के कई अंशों को हृदयागम करने के लाभों को पहचानेंगे।

- अनुप्रेरकों के लिए पहली कुछ बैठकों में इस बात पर जोर देना उपयोगी होता है कि, समूह को आध्यात्मिक उत्कृष्टता के लिए प्रयास करने के लिए, इसके सदस्यों को मित्रता के मजबूत बंधन विकसित करने और अधिकाधिक एकता प्राप्त करने की आवश्यकता है। अनुप्रेरक अक्सर किशोरों को पवित्र लेखों से उद्धरणों के आलोक में मित्रता, एकता और सद्भाव के विषयों का अन्वेषण करने में मदद करना उपयोगी पाते हैं, जिन्हें कंठस्थ करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया जा सकता है।

- मित्रता और एकता की विषयवस्तुओं पर चर्चा इस बारे में एक स्वाभाविक रूपसे शुरू करने का अवसर प्रदान कर सकती है कि समूह के सदस्य एक दूसरे के साथ कैसे बातचीत करेंगे। वे एक दूसरे की बात ध्यान से सुनेंगे; कि वे हमेशा एक दूसरे को समझने की कोशिश करेंगे, भले ही उनमें से एक को कोई विचार व्यक्त करने में कठिनाई हो; कि वे किसी की बात को कभी कमतर नहीं समझेंगे, ये कुछ ऐसे निष्कर्षों के उदाहरण हैं जिनपर वे इस तरह की बातचीत के माध्यम से एक समूह के रूप में एक साथ पहुँच सकते हैं।

- सेवा समूह की आरम्भिक बातचीत के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है। आपको किशोरों को याद दिलाना है कि मनुष्य के रूप में हम सभी एक दूसरे पर निर्भर हैं। हम सभी एक ही मानव परिवार के सदस्य हैं और हमें अपने समुदायों की स्थितियों को सुधारने का हर सम्भव प्रयत्न करना चाहिये। कभी–कभी यह कल्पना करना कि अगर हमें अपने आस–पास के लोगों से सहायता न मिले तो कैसा होगा, किशोरों को सेवा के महत्व को पहचानने में मदद दे सकता है।

- सेवा के बारे में चर्चा को दूसरों की सेवा के लिए एक व्यक्ति के प्रयास के प्रश्न से अधिक होना आवश्यक है एवं यह विचार किया जाना चाहिए कि किशोर एक समूह के रूप में क्या कर सकते हैं। निश्चय ही उनका आरंभिक प्रयास आसानी से कम अवधि में प्राप्त किए जाने वाले लक्ष्यों

का होना महत्वपूर्ण है। इस प्रकार वे अपनी सामूहिक क्षमता में विश्वास प्राप्त करेंगे तथा एक साथ कार्य करना सीखेंगे, और इससे उनके लिए अधिक सतत सेवा परियोजनाओं को हाथ में लेने की संभावनाएँ खुल जाएँगी। आरम्भ से ही अनुप्रेरकों को युवाओं को एक ऐसी प्रक्रिया को प्रारंभ करने में मार्गदर्शन करना चाहिए जिसमें वे अपने सामुदायिक जीवन के बारे में एवं उसके कल्याण के लिए वे किस प्रकार योगदान कर सकते है पर विचार करते हैं। इस संदर्भ में उनसे ऐसे प्रश्न पूछना जिनके लिए उन्हें समुदाय के बारे में अवलोकन कथन बनाना पड़े, उनकी सहायता करेगा। वे साधारण गतिविधि जैसे समुदाय में किसी रोगी से मिलने जाने से प्रारंभ कर सकते हैं, और धीरे–धीरे एक परियोजना को हाथ में ले सकते हैं – उदाहरण के लिए वृक्षारोपण जिसमें उन्हें उचित स्थानीय संस्थानों से परामर्श करने की आवश्यकता है, मित्रों एवं अभिभावकों से सहायता लेने एवं दीर्घकालिक व्यवस्था करने की आवश्यकता है। स्वाभाविक रूप से समूह के कुछ आरंभिक बैठकों में प्रभावशाली सहयोग के लिए आवश्यक कुछ कौशलों एवं योग्यताओं एवं अभिवृत्तियों और गुणों की चर्चा की जाती है।

____

____

____

____

____

____

____

- किशोर समूह की आरम्भिक बैठकों में विचार–विमर्श का एक अन्य विषय है स्वस्थ मनोरंजन, विशेषकर खेलकूद। एक बार फिर सम्बंधित अवधारणाओं और विषयों की समीक्षा के अतिरिक्त आप समूह को उन मनोरंजनक गतिविधियो की पहचान करने में मदद करें जो वे अपनी बैठकों के दौरान या विशिष्ट अवसरों पर आयोजित कर सकते हैं। इस सन्दर्भ में सतर्कता रखना आवश्यक हैः शारीरिक गतिविधियाँ किशोरो की स्फूर्ति और ऊर्जा की एक स्वभाविक अभिव्यक्ति है। विश्व भर के अनुभव ने स्पष्ट कर दिया है कि समूह में खेलकूद पर कलात्मक गतिविधियों को वरीयता देने से चयन की एक प्रक्रिया शुरू हो जाती है, जिसमें कुछ युवा अंततः अपनी भागीदारी जारी रखने के अनिच्छुक रहते हैं।

____

____

____

____

____

____

____

ऊपर प्रस्तुत सभी बिंदुओं के संबंध में, यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि, जैसे जैसे अनुप्रेरकों को अनुभव प्राप्त होता है, वे एक दूसरे की पूरक गतिविधियों को तैयार करने और चलाने में किशोरों की बेहतर तरीके से सहायता करने में सक्षम होते हैं – ऐसी गतिविधियाँ जो विभिन्न पाठ्यपुस्तकों के अध्ययन

और उन उच्च आदर्शों को बनाए रखने का प्रयास कर रहे हैं, के माध्यम से प्राप्त अंतर्दृष्टि की एक व्यावहारिक अभिव्यक्ति हैं।

भाग 30

इस पुस्तक की पहली दो इकाइयों में हमारी चर्चाओं से, जो प्राथमिक रूप से प्रकृति में अवधारणात्मक थीं, एक अनुप्रेरक के रूप में काम करने की आपकी तैयारी ने, इस इकाई में, कुछ व्यावहारिक आयाम प्राप्त कर लिए हैं। जैसे–जैसे आप सेवा के इस क्षेत्र में अनुभव प्राप्त करेंगे, इस पुस्तक के पृष्ठ आपको समीक्षा के लिए विचार प्रदान करते रहेंगे। अनेक अनुप्रेरक पूर्ववर्ती भाग में दिए गए बिंदुओं को विशेष रूप से उपयोगी पाते हैं और उन्हें बार–बार संदर्भित करते हैं, एक नोटबुक बनाए रखते हैं जिसमें वे अपने साथी अनुप्रेरकों के साथ अपने अनुभव और चर्चाओं को लिखते हैं। इस बीच, यह सुझाव दिया जाता है कि आप इस इकाई को उस प्रयास के निहितार्थों पर विचार करके समाप्त करें जिसे आप अभी प्रारंभ करने जा रहे हैं। दुनिया भर के युवाओं को संबोधित विश्व न्याय मंदिर के शब्द उन सभी पर लागू होते हैं जो सेवा के इस मार्ग का अनुसरण करना चाहते हैं :

> **"कोई आश्चर्य की बात नहीं, कि वह आप ही का आयु–वर्ग है जो किशोरों और बच्चों को भी, उनके नैतिक और आध्यात्मिक विकास में सहायता करने में सबसे अधिक अनुभव प्राप्त कर रहा है और उनके भीतर, सामूहिक सेवा तथा सच्ची मित्रता की क्षमता के विकास को बढ़ावा दे रहा है। आखिरकार, उस दुनिया से अवगत रहते हुए, जिस में से इन युवा आत्माओं को अपना रास्ता निकालना है, तथा जिसके अपने ही खतरे हैं और अपने ही अवसर भी, आप आध्यात्मिक दृढ़ीकरण और तैयारी के महत्व को तत्परता से समझ सकते है। इस बात के प्रति जागरूक रहते हुए, कि बहाउल्लाह मानवजाति के आंतरिक जीवन और बाहरी परिस्थितियों में परिवर्तन लाने के लिये आये है, आप अपने से छोटी उम्र वालों को उनके चरित्र के परिष्करण में तथा उनके समुदायों के कल्याण की जिम्मेदारी उठाने की तैयारी करने में सहायता प्रदान कर रहे हैं। जब वे किशोरावस्था में प्रवेश करते हैं, तब आप उनकी अभिव्यक्ति की शक्ति के विकास में उनकी सहायता करते हैं, तथा उनके भीतर नैतिक बोध की जड़े मजबूत करने में सहायता करते है। ऐसा करके जब आप बहाउल्लाह की इस निषेधाज्ञा का पालन करते है कि : 'शब्दों को नहीं, कर्मों को अपना आभूषण बनाओ' तब उददेश्य के संबंध में आपका अपना बोध भी अधिक स्पष्ट रूप से परिभाषित होता जाता है।'"[52]**

संदभ

1. From a letter dated 11 June 2006 written on behalf of the Universal House of Justice to an individual, in *Social Action: A Compilation Prepared by the Research Department of the Universal House of Justice* (Wilmette: Bahá'í Publishing Trust, 2020), no. 117, p. 62.

2. From a letter dated 19 July 2006 written on behalf of the Universal House of Justice to two individuals.

3. From a letter dated 17 April 1936 written on behalf of Shoghi Effendi to an individual, published in *Directives from the Guardian* (New Delhi: Bahá'í Publishing Trust, 1973), p. 84.

4. 'Abdu'l-Bahá, in the compilation *Social Action*, no. 190, pp. 112–13.

5. From a talk given on 20 September 1912, published in *The Promulgation of Universal Peace: Talks Delivered by 'Abdu'l-Bahá during His Visit to the United States and Canada in 1912* (Wilmette: Bahá'í Publishing, 2012), par. 9, p. 471.

6. From a talk given by 'Abdu'l-Bahá on 4 May 1912, ibid., par. 9, p. 125.

7. Report of 'Abdu'l-Bahá's words as cited by J. E. Esslemont, *Bahá'u'lláh and the New Era: An Introduction to the Bahá'í Faith* (Wilmette: Bahá'í Publishing, 2006, 2017 printing), p. 101.

8. From a talk given by 'Abdu'l-Bahá on 4 May 1912, published in *The Promulgation of Universal Peace*, par. 7, p. 123.

9. From a talk given by 'Abdu'l-Bahá on 26 May 1912, ibid., par. 1, p. 204.

10. 'Abdu'l-Bahá, in *Some Answered Questions* (Wilmette: Bahá'í Publishing, 2014, 2016 printing), no. 84.2, p. 440.

11. *Tablets of Abdul-Baha Abbas* (New York: Bahá'í Publishing Committee, 1915, 1940 printing), vol. 2, p. 276. (authorized translation)

12. *Khitábát: Talks of 'Abdu'l-Bahá* (Hofheim-Langenhain: Bahá'í-Verlag, 1984), pp. 131–32. (authorized translation)

13. From a talk given by 'Abdu'l-Bahá on 4 May 1912, published in *The Promulgation of Universal Peace*, par. 8, p. 124.

14. *Selections from the Writings of 'Abdu'l-Bahá* (Wilmette: Bahá'í Publishing, 2010, 2015 printing), no. 230.1, p. 428.

15. From a talk given on 10 November 1911, published in *Paris Talks: Addresses Given by 'Abdu'l-Bahá in 1911* (Wilmette: Bahá'í Publishing, 2006, 2016 printing), no. 29.41, p. 113.

16. Abdul Baha on *Divine Philosophy* (Boston: The Tudor Press, 1918), p. 30.

17. *Selections from the Writings of ‘Abdu’l-Bahá*, no. 24.1, pp. 78–79.

18. *Tablets of Abdul-Baha Abbas* (New York: Bahá’í Publishing Committee, 1909, 1930 printing), vol. 1, p. 63. (authorized translation)

19. *Selections from the Writings of ‘Abdu’l-Bahá*, no. 155.4, p. 253.

20. ‘Abdu’l-Bahá, *The Secret of Divine Civilization* (Wilmette: Bahá’í Publishing, 2007, 2016 printing), par. 118, p. 83.

21. *The Tabernacle of Unity: Bahá’u’lláh’s Responses to Mánikchí Ṣáḥib and Other Writings* (Haifa: Bahá’í World Centre, 2006), no. 1.11, pp. 7–8.

22. From a talk given by ‘Abdu’l-Bahá on 27 October 1911, published in *Paris Talks*, no. 12.8, p. 42.

23. *Tablets of Abdul-Baha Abbas*, vol. 1, pp. 71–72.

24. *Selections from the Writings of ‘Abdu’l-Bahá*, no. 97.1, pp. 177–78.

25. *Tablets of Bahá’u’lláh Revealed after the Kitáb-i-Aqdas* (Wilmette: Bahá’í Publishing Trust, 1988, 2005 printing), no. 6.40, p. 72.

26. *The Proclamation of Bahá’u’lláh to the Kings and Leaders of the World* (Haifa: Bahá’í World Centre, 1967, 1978 printing), p. 78.

27. *Gleanings from the Writings of Bahá’u’lláh* (Wilmette: Bahá’í Publishing, 1983, 2017 printing), XLIII, par. 2, p. 104.

28. From a talk given by ‘Abdu’l-Bahá on 3 December 1912, published in *The Promulgation of Universal Peace*, par. 3, pp. 648–49.

29. *Tablets of Bahá’u’lláh Revealed after the Kitáb-i-Aqdas*, no. 9.20, p. 143.

30. Ibid., no. 11.28, p. 172.

31. *Tablets of Abdul-Baha Abbas*, vol. 1, p. 31. (authorized translation)

32. Ibid., p. 194. (authorized translation)

33. Bahá’u’lláh, *Epistle to the Son of the Wolf* (Wilmette: Bahá’í Publishing Trust, 1988, 2016 printing), p. 12.

34. *Tablets of Bahá’u’lláh Revealed after the Kitáb-i-Aqdas*, no. 11.27, p. 172.

35. Ibid., no. 11.30, pp. 172–73.

36. Ibid., no. 13.15, p. 199.

37. *Gleanings from the Writings of Bahá’u’lláh*, XVIII, par. 1, p. 47.

38. *Prayers and Meditations by Bahá'u'*lláh (Wilmette: Bahá'í Publishing Trust, 1987, 2008 printing), XXXII, p. 41.

39. *The Tabernacle of Unity*, no. 1.2, p. 4.

40. From a talk given by 'Abdu'l-Bahá on 5 May 1912, published in *The Promulgation of Universal Peace*, par. 3, p. 130.

41. *Prayers and Meditations*, CXIII, p. 191.

42. Bahá'u'lláh, in *Bahá'í Prayers: A Selection of Prayers Revealed by Bahá'u'lláh, the Báb, and 'Abdu'l-Bahá* (Wilmette: Bahá'í Publishing Trust, 2002, 2017 printing), pp. 181–82.

43. *Prayers and Meditations*, CLXXVIII, p. 299.

44. Ibid., LXXIX, pp. 131–32.

45. Bahá'u'lláh, in *Bahá'í Prayers*, pp. 219–20.

46. 'Abdu'l-Bahá, ibid., pp. 243–44.

47. Ibid., p. 28.

48. Bahá'u'lláh, ibid., p. 183.

49. The Báb, ibid., p. 186.

50. 'Abdu'l-Bahá, ibid., p. 197.

51. *Prayers and Meditations*, XCI, pp. 154–55.

52. From a message dated 1 July 2013 written to the participants in the forthcoming 114 youth conferences throughout the world, published in *Framework for Action: Selected Messages of the Universal House of Justice and Supplementary Material, 2006–2016* (West Palm Beach: Palabra Publications, 2017), no. 27.4, p. 176